H.P.
891.4305
H6171.

vol.4

Accn. no. P2149 dt. 2.11.74.

(Formerly v.1, 2, 3 & 4
were bound in one
and named as v.1)

605
H1

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st Sept. 1880. [Vol. IV. No. 1.]

प्रयाग भाद्रपद कृष्ण १२ सं० १९३७ [जि० ४ संख्या १]

वर्षारम्भ।

मङ्गल मूर्ति जगदीश्वर की मङ्गलमयी कृपा रूपी स्नेह का सहारा पाय इस प्रदीप ने अक्षत कलेवर रह एक वर्ष को और भी कलेवा कर डाला ; विशेष धन्यवाद जगदीश का इस बात के लिए है कि गत वर्ष में किसी प्रकार के झकोर इस की अखण्ड दीप शिखा को बाधा न पहुंचा सके और अब क्या अब तो राम राज्य के दिन फिर चले आते हैं क्योंकि वे सब राहु केतु और अढ़ैया शनैश्चर जी समाचार पत्रों पर अढ़ाई तीन वर्ष के लिए आ गए थे सब के सब बिदा हुए जब वे महा सङ्कट के दिन बीत गए तो सुख के दिन तो बहुत आराम से कटैंगे एक प्रेमी

ग्राहकों के प्रेम का प्रकाश होना चाहिए; प्रेमी लोगों की कृपा हम इस लिए चाहते हैं क्योंकि जिन्हे रस नहीं उन्हे लुभाने की चेष्टा ही करना व्यर्थ है; "अन्धे के आगे रोवै अपनी दीदा खोवै" "अरसिकेषु कवित्व निवेदनं शिरसि मा-लिख मालिख मालिख" युवजन मोहन विद्या परम रमणीया रमणी एक अल्पवय बालक को जो काम कला कोविद नहीं है न रमा सकै तो रमणी के रमणीयता गुण की क्या हानि है "यथायूनस्तद्वत्पर मरमणीयापिरमणी कुमाराणामन्तःकरण हरणंनैवकुरुते" उसे आदर देने वाले कितने पड़े हैं और कितने नए पैदा हो जांयगे 'कालोह्ययंनिरवधिर्विपुलाचपृथ्वी' परिशेष में ईश्वर से यही सविनय निवेदन है कि वह कुछ ऐसी प्रेरणा करे जिससें लोगों के जी में हिन्दी की चाह बढ़ती जाय बहुत हो जांयगे तो रसिकता की कसौटी में कसते कसते कहां तक प्रेमी न निकल आवेंगे; दूसरी बात और भी हम कहा चाहते हैं कि ट्रिब्यून के अस्त होने पर अब "पबलिक सरवेन्ट" सरकारी नौकरों के लिए यहां कोई द्वार न रह गया जिसके वसीले अपने दुःख का निवेदन सरकार तक करें यद्यपि हेरल्ड का प्रारम्भ में यही लक्ष्य था पर अब तो उसे केवल अपनी भलाई का ख्याल रह गया है पयोनियर साहब का सहोदर भाई बन केवल यूरोपियनलोगों को प्रसन्न किया चाहता है जिसमें पत्र की बिक्री अधिक हो तो आमदनी बढ़ै; इससे इन प्रान्तों के सरकारी नौकरों से यदि हमें भरपूर सहायता मिलती तो हम उनके grievances दुःख को सरकार के कानों तक पहुंचाने में यावत् शक्य कसर न रखते; खेद की बात है कि हमारा पत्र उन्हीं लोगों के विशेष पढ़ने योग्य रहता है जो शिक्षित कहलाते हैं क्योंकि इसके आशय बहुधा इसी लक्ष्य से लिखे जाते हैं जो शिक्षितों को मनोरञ्जक हों सो शिक्षितों की यह दशा है कि यहां जिन की इन दिनों और २ शहरों की अपेक्षा बहुत कुछ ज्यादती है वहां हमारा केवल १० पत्र बिकता है; दबीर हिन्द हो भले कि लोगों को डांट डूंट दो सौ कापी सिर्फ शहर में बेचते हैं और छिपे छिपे अपनी कौम मुसलमान भाइयों का भला भी भरपूर कर रहे हैं॥

(अपूर्व बिज्ञापन)

बड़े बड़े तान्त्रिक मन्त्रशास्त्र वेत्ता जादूगर मायावी भूतिया म सान जगाने वाले अघोरपंथी वामाचारी सिद्ध साबर और उड्डीस तथा दत्तात्रेय के पटल के तन्त्री योग टोटका वाले ओझा नेउतिया जानकार भभूतिया टोना टमान वालों को यह शुभ समाचार दिया जाता है कि यहां एक क्रूर कंटकादमन कम्पनी ने बड़ी मेहनत और यत्न से कुछ धन इकट्ठा कर यह इरादा किया है कि जो लोग अङ्गरेजी की बड़ी बड़ी किताबें पढ़ साहबों के समान बुद्धिमान् बन गए तीरथ व्रत पूजा पाठ कथा पुराण आदि पुरानी रीतों और धर्म कर्म को मिथ्या वा निरर्थक समझ उनसे बिमुख हो गए और इस बात की डींग मारने लगे कि हम बड़े देशहितैषी बंधुवत्सल और दयावान हैं क्या जलसा क्या कमेटी क्या इन्स्टिटूट क्या क्लब घर हर एक जगह इसी की धूम मचाते हैं कि अखबार जारी करो पुस्तक बनाओ शिक्षा फैलाओ मेल बढ़ाओ ऐसी ऐसी बातों की झड़ बांध देते हैं परन्तु जब कोई बिद्वान् वा कई विद्वान् परिश्रमी उनके कथन के अनुसार बड़ा क्लेश और परिश्रम तथा जामिनदारी अपने ऊपर उठाय वास्तविक देश हितैषी कार्य समाचार पत्र आदि जारी करने मे प्रवृत्त होतेहैं और पचि पचि के उसको बढ़ाते हैं और तन मन धन से उसमे तत्पर रहते हैं तो वेही झूठे देशहिताभिमानी अङ्गरेजी के बड़े बड़े मौलाना ख्वैयांकाटन और विश्वासघात करने लगते हैं अपनी प्रतिज्ञा और बचन का कुछ ख्याल नहीं रखते विद्वान् समझ उनका कुछ मान या प्रतिष्ठा करना एक

ओर रहा एक छपी पुस्तक के बदले बर्ष में दो एक रुपया देना सो भी बज्राघात सा हो जाता है जब उनसे दाम मांगा गया दो चार बार आनाकानी दे निर्लज्ज हो कह बैठते हैं कि हम ने तो पहले ही से मना कर दिया था बस ऐसी ऐसी बातों से यारों का दिल ऐसा बिगड़ा है कि अब सिवा इसके कोई दूसरा उपाय नहीं है कि जो कोई सिद्ध वा देवतहा अनुष्ठानी या टोना टनमन वाला कोई ऐसा प्रयोग वा कृत्या उत्पन्न करे जिस्से पूर्वोक्त मिथ्या देशहितैषी और सभाओं में टांय टांय करने वाले लेक्चरियों की जीभ कट के गिर पड़े या नाक उनकी सड़ कर जाती रहे जिसमें नकटे हो जांय और खोटे खरे तथा झूठे सच्चे की परख हो जाय तो उन प्रयोग वालों को कम्पनी की ओर से यथेष्ट दक्षिणा वा इनाम दिया जायगा॥

क्रूरकंटक कम्पनी के सेक्रेटरी

भरभण्डदास।

पायोनियर की इण्डोमेनियाक्स॥

हिन्दुस्तानी मात्र के पूरे बैरी काल स्वरूप पायोनियर साहब ने हाल में इण्डोमेनियाक्स शीर्षक एक आशय छापा है जिसमें उनसे जहां तक हम लोगों के हक में बुराई करते और बिष उगलते बन पड़ा बाकी नहीं रख छोड़ा और जो कुछ बुद्धि तत्व की जमापूंजी उनके पास थी सब कि सब खर्च कर डाला; यह आशय ऐसे ढङ्ग की लिखावट से लिखा गया है जिसमें बिलकुल ताना है जिसमें इसे पढ़ हम सब चिढ़ें और जिसका यही तात्पर्य है कि हिन्दुस्तानी लोग जो लिबरल मिनिस्ट्री के हो जाने से फूले नहीं समाते और समझते हैं कि प्रेस ऐक्ट आर्म्स ऐक्ट आदि दुखदायी कानून सब उठ जांयगे इस बात का "मेनिया" जनून सबों पर सवार है और बार बार स्टेट सेक्रेटरी लार्ड हार्टिङ्गटन साहब को इसकी दरखास्तों से बहुत कुछ तकलीफ दे रहे हैं सो हाल के डिपूटेशन की कारवाई से इनके जनून को भरपूर इलाज कर दी गई; "बड़े खुशी की बात है कि बिलायत में यहां के हिन्दुस्तानी जो "डिपूटेशन" दरखास्त उक्त स्टेट सेक्रेटरी साहब के पास गुज़रानी थी उसके

इनकार करने से सेक्रेटरी महाशय यावत् बुद्धि बलोदय असर न रक्खा; ये सब जनूनी समझते हैं कि लार्ड हार्टिङ्गटन साहब निरे गबुचर ही हैं जो बिना सोंचे समझे और अच्छी तरह दरयाफ़ किए एकबारगी Series of orders हुक्मों का सिलसिला निकाल देंगे और ये सब मनमानता बे रोक टोक अपनी असभ्यता और जनूनपने की बातें पहले के समान फिर कहने और करने लगेंगे" वाह भाई पायोनियर खूब उड़ान उड़े। यार इतने ही में कुप्पा सा फूल उठे यह नईं तो तब सोहती जब लार्ड हार्टिङ्गटन कुछ कर गुजरते अभी तो इन मामिलों को उक्त साहब ने सिफ़ ग़ौर तजवीज़ रख छोड़ा है क्या मि० ग्लैडस्टोन को उन बातों की याद कर कुछ शरम न आवेगी कि लिबरल मिनिस्ट्री हो जाने के पहले हम कैसे गरजे थे अब फिस बोले देते हैं; पायोनियर साहब बेवकूफी को दूर बहाय ज़रा दूरंदेशी को काम में लावें हमारा क्या बिगड़ना है "न शयान: पतत्य ध:" पर हम लोगों के साथ कुछ भलाई इस वर्तमान मिनिस्ट्री में जो न की गई तो बड़ी दुविधा लिबरल दल वालों के लिए भी तैयार है जैसा कनसरवेटिवों को मिली थी कि यहां और विलायत दोनों ठौर अनपप्युलर हुए; मसल है, "देर आये दुरुस्त आये" यद्यपि लिबरल मिनिस्ट्री ने प्रेस ऐकृ के उठाने में देर किया है तो भी हम लोगों को निराश न होना चाहिए लिबरल इस नाम के अनुसार कहां तक कुछ न करेंगे। और देर होने का एक कारण यह भी है कि श्रीमान लार्ड रिपन साहिब जब से यहां पधारे हैं तब से उनको अफगानिस्तान के झगड़े से इतनी फ़ुरसत नहीं मिली कि इस पर ध्यान देवें॥

म्युनिसिपालिटी की खूबियां।

वाह रे म्युनिसिपालिटी तू सच २ मनुष्य खपेटी है यह तेरी ही खूबी है कि अब का सावन महा भयावन शोक बढ़ावन त्रास उपजावन हो गया ज्यों ज्यों यहां आबादी बढ़ती जाय त्यों त्यों तू सफाई की जड़ पेड़ से सफाई करती जा जिसमें मियां हैज़ा साहब को खूब वसत टांग फैलाने के लिए मिलता रहै हज़ारों के प्राण की बाधा पहुंचाय, सैकड़ों घर तो उजाड़ डाला अब और क्या बीबी म्युनिसिपालिटी तुम चाहती हो; हम

अब सब कहते हैं कि अब कि साल यहां हैज़े का इतना ज़ोर केवल सफ़ाई के न रहने और गन्दगी के बढ़ जाने के बाइस हुआ कहने को दो एक मियां भाई (हिंदू इस नौकरी से भी खारिज़) सफ़ाई की निगरानी के लिए मुक़र्रर हैं पर दरयाफ़्त किया जाय मियां साहब कभी दसवें पांचवें भी अपनी सूरत दिखलाते हैं; हां तभी जब मैजिस्ट्रेट या कोई असिसटेंट मैजिस्ट्रेट की किसी मोहल्ले में किसी कारण से आमदनी की खबर हुई सबेरे से आप मियां यमराज से मुस्तैद हुए और लगी खाकरोबों की डण्डों पीटने जन्म का कोढ़ एक एतवार में कब जा सक्ता है ज्यों त्यों गलियों की ऊपर से कतई करार वूरी को लीप ताप साहब बहादुर को दिखला दिया साहब के चले जाने के बाद फिर वही हाल नालों और पहचों की जड़ पेड़ से कभी सफ़ाई होती नहीं बरसात में एकबारगी बरसों का सड़ा पानी और कीचड़ बहता है सो अब कि बार बरसात खुल के हुई नहीं कीचड़ अच्छी तरह न बहने पाया नाबदानों से निकल जहां का तहां सूख कर रह गया उसी की दुर्गन्धि के कारण हवा बिगड़ हज़रत हैज़ा को बुला भेजा इनका आगमन सफ़ाई वाले मियां के आगमन से भी हम लोगों को अधिक कड़ा और त्रास जनक हुआ मियां तो किसी का प्राण नहीं लेते हां जब कभी आय किसी गरीब को सांसत और धमकी दे दिलाय अधमुआ कर रवाना होते हैं पर हैज़ा साहब प्राणही लेकर छोड़ते हैं इनमें और मियां में इतना फ़र्क है कि धनवान रुपए वाला जो मियां को मानता हो उसे बचाए रहेंगे मिस्टर कलेरा के यहां कुछ निर्ख नहीं चाहो धनवान हो या गरीब इन्हें मानो या न मानो पुजो या न पुजो जिस पर दांत लगाया उसे लिनी लेते हैं; हमारे कहने सुनने से कुछ होता है आगे बढ़ेंगे हमारी भी सांसत की जायगी इस्से सब से भली चुप की होता जाय भोगते रहें हिंदुस्तानी ही तो हैं बनाए ही जो गए हैं इसी लिए॥

मृच्छकटिक नाटक।

The toycart.

सुगृहीत नामधेय गुरुवर श्रीपण्डित गदाधर कृतानुवादित॥

यह नाटक कविवर शूद्रक नृपति ने विक्रमाब्द के कुछ पहले निर्माण किया

है अन्यान्य दृश्य काव्यों की अपेक्षा इस नाटक की रचना बहुत सुललित और सदुपदेश पूर्ण है; प्राचीन समय की रीति नीति साधारण मनुष्यों के बोल चाल का ढङ्ग भले आदमी दुर्गति में फस कैसे उद्धार पाते हैं और होनहार इसे कहते हैं उस समय के हाकिमों की शासन प्रणाली कैसी थी और न्याव कचहरी दरबारों में किस तरह का किया जाता था इन सब बातों का वर्णन इसमें अति उत्तम रीति से किया गया है ॥

इसके रचयिता कवि कुल तिलक पृथ्वीपति शूद्रक किस समय और देश में हुए इसका ठीक पता नहीं लगता कोई कोई अंध्र देशोत्पन्न मगध के राजाओं में पहिला इसे निर्णय करते हैं कोई शूद्रक की राजधानी पटना कोई अवन्ती बतलाते हैं जो हो पर यह नाटक शकुन्तला आदि से भी प्राचीन है इसमें कुछ संदेह नहीं ॥

इस नाटक के प्रधान नायक धीर प्रशान्तादि गुणग्राम गुम्फित विप्र वंशावतंस चारुचरित्र चारुदत्त नामा हैं जो राजधानी उज्जयिनी में बस "सार्थवाह" सौदागर की वृत्ति से असंख्य धन उपार्जन कर अनेक तालाव बाग देवमन्दिर प्रभृति बनवाय और अपनी उदारता से दुर्गत अवस्था में प्राप्त मनुष्यों की दुर्गति दूर करने को अनन्त द्रव्य के व्यय से पीछे स्वयं दरिद्र हो गए तथापि गुणग्राहिणी बसन्त सेना नाम्नी कोई गणिका इन पर साध्वी सहधर्मिणी के समान अनुरागवती हुई इन्हीं दोनों के चरित्र को लक्ष्य कर लोकोत्तर रचना चतुर इस कवि ने अपनी अत्यद्भुत बुद्धि कौशल से माधुर्य्य प्रसादादि काव्यों के गुणगण और रूपक उपमादि अलङ्कार पूर्ण इस प्रकरण को १० अङ्कों में निर्माण किया है। इसमें जहां तक हो सका है संस्कृत और प्राकृत के मुहाविरे और शब्दार्थों का ठीक ठीक अनुवाद कर दिया गया है और ठौर २ संस्कृत श्लोक भी रख दिए गए हैं, इति आमुखम् ॥

नान्दी ॥

पर्य्यङ्कग्रन्थिबन्धद्विगुणितभुजगाश्लेषसम्वीतजानो। रन्तःप्राणावरोधव्युपरतसकलज्ञानरुद्धेन्द्रियस्य ॥ आत्मन्यात्मानमेवव्यपगतकरणं पश्यतस्तत्वदृष्ट्या। शम्भोर्वःपातु शून्येक्षणघटितलय ब्रह्मलग्नःसमाधिः ॥ पातुवोनीलकण्ठस्य कण्ठःश्यामांबुदोपमः गौरीभुजलतायत्र विद्युल्लेखेवराजते ॥

सोरठा।

नीलमेघसमश्याम शंभुकण्ठरचाकरै।
गौरीभुजअभिरामराजतचपलासोजहां॥

सूत्रधार का प्रवेश।

सभासदों के उत्साह को कम करने वाले इस परिश्रम से क्या है आर्य्य जनों को प्रणाम कर मैं यह विज्ञापन करता हूं कि हम लोग मृच्छकटिक नाटक का खेल करने को आज उद्यत हुए हैं इस नाटक के कर्ता कवि गजगामी चकोरनेत्र चन्द्रमुख गम्भीर स्वभाव अति बलशाली क्षत्रियों में मुख्य शूद्रक नामा हैं जो ऋग्वेद सामवेद गणित वैशिकी कला अर्थात तरह २ का भेख बना लेने की कला हस्तिशिक्षा इन सब विद्याओं को सीख श्री महादेव जी की कृपा से ज्ञान दृष्टि पाय बेटे को राज दे अश्वमेध यज्ञ कर १० दिन अधिक १०० बर्ष जो अग्नि में प्रवेश कर गए; ये राजा बड़े युद्ध प्रिय सावधान वेद के जानने वालों में श्रेष्ठ बाहु युद्ध में परम प्रवीण थे; जिन की इस रचना में अवन्ती निवासी वैश्य वृत्ती युवा परन्तु दरिद्र दशा को प्राप्त ब्राह्मण चारुदत्त और उनके गुणों पर अनुरक्त बसन्त की शोभा समान बसन्त सेना वेश्या इन दोनों की परस्पर प्रीति नीति का प्रचार बिबाद में लोगों की दुष्टता खलों का स्वभाव और होनहार किसे कहते हैं इन सबों का बर्णन है (चारो ओर घूम कुछ चल कर) अरे मेरी सङ्गीतशाला आज क्यों सूनी पड़ी है नट लोग सब कहां चले गए (कुछ सोच कर) हां जाना दरिद्र को सब सूना ही सूना रहता है॥

श्लोक। शून्य मपुत्रस्य गृहं चिर शून्यं नास्तियस्य सन्मित्रं। मूर्खस्य दिशःशून्या सर्वंशून्यं दरिद्रस्य॥ निपूती को घर शून्य; उसे चिरकाल लों सब सूना जिसको भले लोगों के साथ मैत्री न हो; मूरख को दिशाएं सूनी; और दरिद्र को सभी सूना॥

आज मैं बड़ी देर तक नाचता गाता रहा इस कारण "गरमी के प्रचण्ड सूर्य्य की किरणों से सूखे कमलगट्टे जैसे खट खट करते हैं वैसे ही मारे भूख के मेरी आंख खटखटा रही है" * अच्छा तो नटी को बुला कर पूछूं घर में कुछ कलेऊ

* यह एक मुहाविरा है जिसको संस्कृत यह है "ग्रीष्म समये प्रचण्ड दिनकर किरणो च्छुष्क पुष्कर बीजमिव प्रचलित तारके क्षुधा ममाक्षिणी खटखटायेते"॥

करने को है या नहीं (आगे बढ़) यह मेरा घर है (भीतर जाय और देखकर) आहा आज तो मेरे घर बड़ा सामान दिखलाई देता है चावल का धोअन जल के बहने से बिछलहर हो गया है लोहे के कड़ाहों की रगड़ से काली धरती श्यामसज्जनी दिए युवती सी सोहती है हींग ज़ीरे की छौंक की महक पाय मेरी भूख चौगुनी भड़क उठी अब इस समय जगत सब मुझे भात मय जान पड़ता है ; मेरे घर तो एक दिन के खाने को भी न था यह सब समान कहां से आ गया एक केसर कस्तूरी पीसती है दूसरी फूल की माला गूंथ रही है तीसरी दोना पतरी साज रही है यह है क्या ? क्या मेरी नटी को कहीं की गड़ी गड़ाई सम्पत्ति मिल गई अच्छा बुला कर पूछूँ, आर्यें कहां हो ॥

नटी (आकर) क्या आज्ञा होती है ॥

सू० आर्यें आओ तुम्हारा स्वागत हो आज मैं बहुत देर तक नाचता गाता रहा सो परिश्रम के कारण बड़ी भूख लग आई है कहो घर में कुछ खाने को है ?

नटी० हां सब कुछ है ॥

सू० बताओ क्या क्या ?

नटी० गुड़ का मीठा भात घी दूध टटकी दही पका चावल आदि सभी रसायन हैं ॥

सू० ये सब घर में मौजूद हैं या तू हँसी करती है ॥

नटी० (मन में) अब हँसी ही करूंगी (प्रकाश) आर्य्य सब कुछ है हाट में ॥

सू० (क्रोध से) दुष्टे ऐसेही तेरी भी सब मनोकामना कभी पूरी न हो जैसा तू ने मुझे इस समय लड़ाकर में बँधे मिट्टी के ढेले समान दूर फेंक पटक दिया ॥

नटी० आर्य क्षमा कीजिए मैंने हँसी किया है ॥

सू० तो फिर क्यों यह नई नई तैयारियां हो रही हैं एक सुगन्धि पीसती है दूसरी माला गूथती है मानो किसी ने रङ्ग रङ्ग के फूलों से पृथ्वी की पूजा किया हो ॥

नटी० नाथ आज मैं उपासी हूं ॥

सू० इस उपवास का नाम क्या है ॥

नटी० अभिरूप पति ॥

सू० इस लोक का या परलोक का ॥

नटी० नहीं २ परलोक का ॥

सू० (क्रोध कर सभासदों की ओर) आर्यमिश्र देखिए २ मेरे अन्न का संहार कर यह परलोक के भर्ता को ढूंढ़ती है ॥

नटी० आर्य आप क्रोध न करैं तुम्ही जिस्से मेरे परलोक के भी भर्ता हो इस लिए यह व्रत है ॥

सू० यह उपवास तुझे किस ने बतलाया है ?

नटी० आप ही के प्रिय मित्र चूर्णहृद ने ॥

सू० (क्रोध कर) आ: धूर्त दासीपुत्र चूर्णहृद तू सरल स्वभाव भोली भाली स्त्रियों को बहकाय ऐसा ही ठगा किया करता है; सुगन्ध बासित नव बधू के केश समान राजा पालक से मैं तुझे कब काटे जाते देखूंगा ॥

नटी० (चरण पर गिर) नाथ क्षमा कीजिए यह व्रत आप ही के कल्याण के निमित्त है ॥

सू० प्यारी उठो उठो कहो इस उपवास में और क्या क्या सामग्री तुम्हैं चाहिए ॥

नटी० नाथ सामग्री तो सब कुछ है एक मेरे योग्य ब्राह्मण चाहिए जो मेरे घर भोजन कर सके ॥

सू० अच्छा तो अब तू जा मैं ब्राह्मण खोज लाता हूं ॥

नटी० जो आज्ञा (बाहर गई)

सू० (चल कर) भला इस सम्पन्न उज्जैनी नगरी में मुझ अधम चारण जाति के यहां भोजन कर ले ऐसा ब्राह्मण कहां मिलेगा (आगे देख) यह चारुदत्त का मित्र मैत्रेय इधर ही आ रहा है चलो इस्से पूछूं (कुछ चलकर) आर्य मैत्रेय आज आप मेरे घर चल कर भोजन कीजिए ॥

(नेपथ्य से) किसी दूसरे ब्राह्मण को नेउता मैं इस समय काम में हूं ॥

सू० आर्य भोजन बहुत अच्छा मिलेगा दूसरा कोई नहीं है जो देख कर निन्दा करे और दक्षिणा भी बहुत विशेष मिलेगी ॥

(फिर नेपथ्य से) हम पहले ही कह चुके अब क्यों बार २ हठ करता है ॥

सू० इसने तो नहीं माना तो चलो अब दूसरे ब्राह्मण को नेउतौं (बाहर गया) इति प्रस्तावना ॥

अथ कथारम्भ ॥

उपरणा हाथ में लिए मैत्रेय का प्रवेश।

मैत्रेय० हाय मैं मैत्रेय हो घर घर खाता फिरूं हा दरिद्रता तू मनुष्य को तुच्छ कर डालती है जो मैं जब मान्यवर चारुदत्त की सम्पत्ति बनी थी तब जिस को डकार में बड़ी मीठी सुगन्धि आती थी ऐसे मोहनभोग और निरे लड्डू ही

को भोजन कर गली और चौराहों पर दागा सांड़ सा डकारता पागुर करता फिरता था सो अब चारुदत्त के दरिद्र हो जाने घर घर कबूतर समान चारा के लिए डोलता फिरता हूं ; चारुदत्त के मित्र चूर्णवृद्ध ने चमेली के फूलों से सुवासित यह उपरणा भेजा है कि चारुदत्त देव पूजन कर चुकें तो यह उन्हें देना सो अब जाय चारुदत्त को देखूं (चल कर और देख कर) अहा चारुदत्त तो गृह देवताओं को बलि देते आप ही इधर आ रहे हैं ॥

(चारुदत्त तत्पश्चात् पूजा का पात्र लिए रदनिका दासी का प्रवेश)

चारुदत्त० "ऊपर निहार दुःख से सांस भर" हा जिस हमारे घर के द्वार की बलि को हंस और सारस गण चुगते थे उसी को अब दरिद्रता के कारण घर की मरम्मत और सफाई न रहने से बड़े बड़े गढ्ढों से निकल निकल चींटी और मटे खाते हैं ॥

विदूषक अर्थात् मैत्रेय (पास जा) मित्र आप की कुशल हो ॥

चारु० आहा हमारे सुख दुख सब के साथी मित्र मैत्रेय हैं आइए मित्र बैठिए॥

विदू० जो आज्ञा (सब बैठ जाते हैं) आर्य आप के मित्र चूर्णवृद्ध ने चमेली के फूलों से सुवासित यह उपरणा भेजा है इसे आप लीजिए "देता है"

चारु० उसे ले सोच में डूब चुप रह जाता है ॥

विदू० मित्र क्या सोच करते हो ॥

चारु० मित्र क्या कहैं ॥

श्लोक । सुखंहिदुःखान्यनुभूयशोभते घनान्धकारेष्विवदीपदर्शनम् । सुखेनयोयाति नरोदरिद्रतां धृतःशरीरेणमृतःसजीवति ॥ "दुःख भोग पीछे सुख सोहै । घन तम बीच दीप जिमि मोहै ॥ जो सुख भोग होय नर निर्धन । मृतक समान जासु तेहि जीवन ॥"

विदू० मित्र मरण और दरिद्र दोनों में आप किसे अच्छा समझते हैं ॥

चारु० श्लोक । दारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणंममरोचते न दारिद्र्यम् । अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम् ॥

मृत्यु और दरिद्र में वर मरनो न दरिद्र । स्वल्प क्लेश है मरन में अति दुख दायि दरिद्र ॥

विदू० मित्र बहुत सन्ताप न कीजिए आप का धन असत् मार्ग में नहीं उठा किन्तु अर्थी लोगों के दुःख दूर करने में

खरच किया गया है आप की यह दरिद्रता भी सराहने योग्य है॥

चारू० वयस्य हमें द्रव्य न रहने का सोच नहीं है परन्तु यह हमें बहुत अखरता है कि मेरे घर को द्रव्य रहित जान अतिथ लोगों ने भी छोड़ दिया जैसा मद बहने का समय बीत जाने पर हाथी के कपोल को भौंरा भृङ्ग छोड़ देते हैं॥ श्लोक। एतत्तुमांदहतियद्गृहमस्मदीयं क्षीणार्थमित्यतिथय:परिवर्जयन्ति। संशुष्कसान्द्रमदलेखमिवभ्रमन्त: कालात्ययेमधुकरा:करिण:कपोलम्॥

विदू० मित्र यह तुच्छ धन जहां कहीं दान भोग से रक्षित होता है वहां ही ठहरता है॥

चारू० मित्र सच सच मुझे धन के न रहने की कुछ चिन्ता नहीं है क्योंकि भाग्य बश से धन होते हैं चले भी जाते हैं परन्तु यह मुझे अधिक दुख देता है कि धन हीन को छोड़ भी सब कोई छोड़ देते हैं; दरिद्र होने से मनुष्य बात बात में संकुचता और लजाता है लाज से तेज हीन होता है निस्तेज अनादर पाता है अनादर से खिन्नचित्त हो मेरा जीवन व्यर्थ है ऐसा सोचने लगता है शोक से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है बुद्धिहीन को नष्ट होते कितनी देर। हा निर्धनता सब विपदाओं का घर है॥ श्लोक। सत्यं नमेविभवनाशकृतास्तिचिन्ता भग्यक्रमेण हिधनानिभवन्तियान्ति। एतत्तुमांदहति नष्टधनाश्रयस्य यत्सौहृदादपिजना:शिथिलीभवन्ति॥

दारिद्र्या ह्रियमेति ह्री परिगत: प्रभ्रश्यते तेजसो निस्तेज: परिभूयते परिभवान्निर्वेद मापद्यते। निर्विण्ण: शुच मेति शोकपिहितो बुद्ध्या परिभ्रश्यते निर्बुद्धि: क्षयमेत्य हो निधनता सर्वापदामास्पदम्॥

विदू० मित्र पहले की सम्पत्ति याद कर बहुत सन्ताप न कीजिए॥

चारू० मित्र सन्ताप कैसे न करें दरिद्रता चिन्ता का तो स्थानही है दरिद्र को सदा यह सोच चढ़ा रहता है कि मेरा निर्बाह कैसे हो न उसका कोई बिश्वास मानता है अनादर बैर मित्रों से ग्लानि और भाई बंधु से द्वेष का कारण है अपनी निज अर्द्धाङ्गिनी भी मन माफिक गहना कपड़ा न पाय नित उठ तांसती रहती है और आदर नहीं देती यही मन चाहता है कि घर छोड़ बन में जा रहें; दरिद्रता यह एक ऐसी आग है जो भीतर ही भीतर सुलगा करती है पर धधक नहीं उठती॥

श्लोक॥

निवासश्चिन्तायाः परपरिभवोवैरमपरं। जुगुप्सामित्राणां स्वजनजनविद्वेषकरणं॥ वनंगंतुंबुद्धि र्भवतिचकलत्रात्परिभवो। हृदिस्थःशोकाग्नि र्नचदहति सन्तापयतिच॥

मित्र मैत्रेय मैंने गृह देवताओं को बलि दिया है तू जा कर चौराहे में मातृगणों की पूजा कर आ॥

विदू॰ न जाऊंगा॥

चारु॰ क्यों?

विदू॰ जो इतनी आराधना और पूजा से निगोड़े देवता आप पर प्रसन्न न हुए तो इनके पूजने से क्या फल है॥

चारु। मित्र ऐसा न कहो देव पूजा मनुष्य का नित्य कर्म है "मन वच करम व्रतादि से बलि से पूजित नित्य। देवत होत प्रसन्न हैं कुछ न बिचारो मित्र"॥

विदू॰ मैं तो न जाऊंगा और किसी को भेजिए मुझ दरिद्र ब्राह्मण को सब उलटा ही उलटा होता है जैसा दर्पण की छाया दहिने से बाएं और बाएं से दहिने दूसरा कारण और भी है सांझ का समय है वेश्या विट चेट शकार राजभृत्य सब घूम रहे हैं मण्डूक जोभी काल सर्प के सन्मुख गए मूसा के समान मैं मारा जाऊंगा; आप यहां बैठे क्या करेंगे॥

नेपथ्य में॰ बसन्तसेना खड़ी रह खड़ी रह॥

* विट चेट शकार से पीछा की हुई बसन्त सेना का प्रवेश।

विट॰ बसन्तसेना ठहर २ तू अपनी सुकुमारता पर नहीं ध्यान देती नृत्य बिद्या में अति निपुण चरणों को झपट कर धरती व्याकुल सी इधर उधर घेरे चली आती हम सबों को अपनी कटाक्षों से बेधती व्याध को भगाई मृगी सी कहां मारे भय के भागी जाती है॥

---

* विट॰ अमीरों के शिकार करने वाले; कसबियों के भडुए।

* चेट॰ शकार का नौकर।

* शकार॰ राजाका शाला बड़ा घमण्डी दुष्कर्मी और निपट मूर्ख नीच पात्र; यह शकार इसी नाटकमें पाया जाता है है इसका असंबद्ध भाषण और मूर्खता का काम आगे प्रगट होगा।

शकार०* खड़ी रह वसन्तसेना खड़ी रह अये काले क्यों जाती है भागती है दौड़ती है लड़खड़ाती है दया कर खड़ी रह मरेगी नहीं काम से यह दुखिया मेरा हृदय जला जाता है जैसे अङ्गार की ढेर में पड़ा मांस जले॥

शेषभागी॥

* संस्कृत में शकार का वचन है "किं यासि धावसि पलायसे प्रस्खलन्ती वासुप्रसीदन मरिष्यसि तिष्ठ तावत्" इत्यादि इसमें यासि धावसि पलायसे प्रस्खलन्ती ये चारो गमनार्थक क्रिया पद बार बार प्रयोग किए गए हैं परन्तु शकार की भाषा होने से यह पुनरुक्ति दूषित नहीं है शकार के वचन का लक्षण ही यह है यथा "अपार्थमक्रमंव्यर्थं पुनरुक्तं हतोपमम्। लोकन्यायविरुद्धञ्च शकारवचनंविदुः॥ आगम लिङ्ग विहीनं देशकाल समय विपरीतं। व्यर्थं कार्थमपार्थं भवतिह्विवचनं शकारस्य॥" अर्थ हीन क्रम विरुद्ध निष्प्रयोजन पुनरुक्ति युक्त हतोपम जैसा "रावणस्येव कुन्ती" इत्यादि आगे मिलेंगे लोक विरुद्ध न्याय विरुद्ध देश काल के विपरीत वचन शकार का होना चाहिए।

प्राप्त।

हिंदुस्तानी अभी किसी लायक नहीं हैं।

हम २३ जुलाई सन १८८० ई० के काशीपत्रिका में सम्पादक की व्याख्या Remark जो उन्होंने ज़बरदस्ती चेचक में टीका लगाने के कानून के बारे में लिखा है बहुत पसन्द करते हैं; इस कानून के कम्पल्सरी होने अर्थात् यह अवश्य जारी होना ही चाहिए इस बात पर हम अपनी निज अनुमति कुछ नहीं प्रकाश करते क्योंकि अब तो यह कानून बन गवर्नर जेनरल की कौन्सिल में मंजूर हो गज़ट में छप भी गया अब जारी हो जाने पर कुछ कहना सुनना व्यर्थ है सैयद अहमद खां की योग्यता और परिश्रम के सराहने के सिवा और कुछ कहने का अब अवसर नहीं रहा; इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ऐसा ही एक खास कानून वा हुक्म हिंदुस्तानियों के कम्पल्सरी एज्युकेशन का पास कर दिया जाय तो बहुत उत्तम हो; हम ज़बरदस्ती टीका लगा देने की अपेक्षा इस ज़बरदस्ती को कभी बुरा न समझेंगे और न इसको अपने कुलाचार वा धर्म के विरुद्ध कहेंगे॥

———

हिंदुस्तानियों को कम लियाकती कम अक्ली और कम फहमी का तो शायद किसी को कुछ सन्देह न होगा हां मुहंफट जो हमारा यह कहना अलबत्ता बहुतों को नापसन्द हुआ होगा और इसके विरुद्ध बहुत सी बातें लोग ख्याल करने लगेंगे पर एकान्त सत्यान्वेषी और दूर सोचने वाले लोग इस बात को अवश्य स्वीकार कर लेंगे कि लार्ड लिटन का विचार हिंदुस्तानियों को सिविलसरविस में भरती करने के विषय में जो था कि अभी ये लोग इस योग्यता और बुद्धि वैभव को नहीं पहुंचे कि एकबारगी एक आम हुक्म इन लोगों को सिविल सरविस में दाखिल होने का दे दिया जाय सो बहुत यथार्थ था ; खोजने से शायद दो चार शहर में कोई दो एक मनुष्य मिल जांयगे और ऐसों के वास्ते गवर्नमेण्ट भी कदर करने में चूकी नहीं ; कलकत्ता हाईकोर्ट हमारी न्यायशीला गवर्नमेण्ट की इस बात में नमूना है पर सब पढ़े लिखे मनुष्य इस देश में ऐसे नहीं होते इसी से सरकार ने भी इस बात में काले और गोरे का भेद कर रक्खा है ; अब इस बात में कुछ सन्देह नहीं कि नेटिव सामान्यत: अङ्गरेज़ों की अपेक्षा बहुधा हर तरह कम हैं न केवल बुद्धि ही में बरन विद्या बल दया क्षमा उदारता आदि सब बातों में ये उनसे न्यून हैं इसके उदाहरण सैकड़ों हैं दो एक हम इस अवसर पर लिखते हैं जिसमें हिंदुस्तानियों की अनुपम बुद्धि और समझ की सब कलई खुल जायगी ॥

इङ्गलिश गवर्नमेण्ट का यह नियम है कि दौरे के मुकद्दमों में जब सिशनकोर्ट में ट्रायल शुरू हो तो चन्द हिंदुस्तानी प्रतिष्ठित पढ़े लिखे भले आदमी जो उस नगर में हों बुला कर बैठाए जांय और अन्त में उन लोगों की भी राय ले कर अपराधी को दण्ड वा छुटकारा की आज्ञा दी जाय ; जिस उसूल पर यह प्रबन्ध किया गया है उसकी उमदगी को हम कहां तक प्रशंसा करें किसी गवर्नमेण्ट ने इस देश में ऐसा सच्चा न्याव करने का नियम और उपाय नहीं ठहराया था कि जिस्से अपराधी को यह निश्चय हो जाय कि मैं वास्तव में उस दोष के कारण जो मुझ पर लगाया गया है दण्ड के योग्य हूं या नहीं और जज को भी एक प्रकार की सहायता मिले और सच्चा छीला हुआ न्याय हो पर जो हिंदु

स्तानी महाशय अपना खुरारविन्द कचहरियों में ले जाय उस समय कुरसी पर सुशोभित होते हैं उनको न तो इतनी बुद्धि रहती है न बिद्या में इतने प्रवीण होते हैं कि उन सब काररवाइयों को जो उस समय होती हैं और जो बातें वहां कही सुनी जाती हैं उसको समझें और उन पर अपनी निष्कपट सम्मति दें बरन बहुधा उलटा ही कहते हैं नहीं तो कह दिया जैसी हुजूर की राय हो वही ठीक इन्साफ; आज हमारा बड़ा हर्ज़ हुआ मुफ़्में इतना समय हमारा व्यर्थ गया (धीरे से) आज हम कहां की बला में फसे कुछ बोलें या चले जांय तो हमी को उलटी सजा मिले, इत्यादि॥

इन्हीं अयोग्यता और असभ्यता के कारण सरकार ने असेसर और जूरी में फर्क कर दिया है जूरियों के अधिकार भी असेसरों से बढ़ कर हैं और जूरी में प्राय: अङ्गरेज ही होते हैं सच पूछिए तो यह बिवेक बहुत उचित है हम लोगों की बिद्या और सभ्यता अभी इस मरतबे को नहीं पहुंची न जल्दी पहुंचने की कोई आशा है कि वैसा ही अधिकार हिंदुस्तानियों को भी दिए जांय; हम फिर कहते हैं कि लार्ड लिटन की तजवीज़ हम लोगों की योग्यता के बिषय में बहुत ठीक है; काशीपत्रिका के लेख से मिल कर हम यह सलाह देते हैं कि हिंदुस्तानियों के लिए बहुत ज़रूर है कि सरकार इन्हें मार मार कर सुधारे और कम्पल्सरी इज्युकेशन हम लोगों में जारी करे॥

एक ए बी सी डी।

श्रीयुत हिन्दीप्रदीप प्रवर्तक महाशय से आशा है कि इस अधोलिखित आशय को प्रदीप के द्वारा प्रकाशित करेंगे।

नागरी और फारसी अक्षरों के गुण दोष॥

आज कल सूबे बिहार की तरफ इस की बहुत धूम मची है नागरी के पक्षपाती नागरी को गुणगणालंकृत और फारसी को दूषित बतलाते हैं और फारसी के तरफदार उसी की तारीफ में मसरूफ हैं; बिहारबंधु से ज्ञात हुआ कि शहर पटना के एक बड़े प्रतिष्ठित सैयद साहब फारसी अक्षरों की सहायता और नागरी अक्षरों के प्रतिकूल एक कमिटी कर गवर्नमेंट में दरखास्त दिया चाहते हैं। उनकी समझ में नागरी अक्षर

खूबसूरत नहीं हैं दूसरे उनके यार लोगों की रुचि उस पर नहीं है और यह भी उन्हों ने अपनी सम्मति प्रगट की है कि सरकार दोनों अक्षरों के गुण दोष पर यथोचित बिचार कर किसी एक के प्रचार में दृढ़ संकल्प हो; बि० बंधु ने बड़े उत्साह के साथ लिखा है कि नागरी किसी प्रकार की परीक्षा से ह टने वाली नहीं है पर बिहारबंधु नागरी के परमबंधु हैं ये उसकी प्रशंसा ही क रेंगे और दोषों पर स्वप्न में भी दृष्टि न देंगे हम लोग यद्यपि नागरी के गुणों को मानते हैं और किसी काल में उसके प्रतिकूल नहीं हुआ चाहते पर साथ ही इन्साफ की राह से हमें यह भी मंजूर नहीं है कि फारसी के प्रस्तुत गुणों के देखने से आंख मीच लें और नागरी के प्रचार जनित अवगुणों पर परदा डाल दें नहीं बात सच्ची कहना चाहिए॥ 'शत्रोरपिगुणावाच्यादोषावाच्यागुरोरपि, संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं है जिसमें गुण दोष दोनों न सने हों चांदनी रात को सब लोग अच्छा समझते हैं पर कितने ऐसे हैं जिन्हें उसमें क्लेश पहुंचता है वे अवश्य ही चांदनी की बुराई करेंगे॥

कवित्त।

भानु चरमाचल जब हौं प्रयान कीन्हों
कैरव को मण्डल प्रफुल्ल दरसात है। दु-
खी चोर चमू होत भूरि कै चकोर गण
चन्द्रमा को उदय पाय लोक हर्षात है॥
जप ध्यान कोउ करैं कोउ राम २ ररै
कोउ पिय सङ्ग भरे चम्पक सो गात है।
कोउ ग्राम नगर फिरै कोउ आलाप
भरै खैरिनो अरु चम्पक की मुह सकु-
चात है॥

ऐसे ही नागरी के प्रिय रसिक घन कई वर्ष से उसकी प्रशंसा की गीत गा रहे हैं पर उन नुकसानों पर दृष्टि नहीं देते जो उसके अधिक प्रचार से प्रगट होंगी॥

नागरी के प्रचार से बड़ी भारी हानि ब्राह्मणों को होगी यह सुन लोग चौंक उठेंगे और कहेंगे कि यह कबीर की उलटबांसी कैसी नहीं यह उलटबांसी नहीं है सुनिए आज कल के ब्राह्मण ऐसा बिद्या गुण से हीन हो गए हैं कि जिस का कुछ ठिकाना नहीं पर कुशल इतना ही है कि उनके यजमान उनसे बढ़ के हैं संस्कृत से सरोकार नहीं रखते उनके यहां चाहो ब्याह की पोथी से ब्याह कराओ चाहो ब्याह के मन्त्रों से वा ब्याक

रण या ज्योतिषसे सब करम ठकरा लो; प्राय: तो वे कुपढ़ होते हैं और पढ़ा भी तो फारसी उनके सामने जो जीमें आवे प्रोहित जी बकें और उलटा सीधा अर्थ कर कराय अपना काम निकाल लें, परन्तु जिस अवस्था में नागरी का प्रचार बढ़ा और वर्णमाला की माला सब छोटे बड़ों के गले में पड़ी इन टुटपुंजिए ब्राह्मणों की जीविका गई काहे से कि हिन्दी पुस्तकों के पढ़ने से संस्कृत की बहुत सी बातें समझना सहज हो जाता है अभी हो यह हाल हो गया है कि हलकाबन्दी वा तहसीली मदरसों के विद्यार्थी इन छोटे मोटे पण्डितों का मुह बन्द कर देते हैं न हिसाब लेखा में बर आवें न लिखने पढ़ने में अभी से वे घबराए हुए हैं फिर तो उन्हें कोई पूछेगा नहीं वेही गिनती के दो चार पण्डित माने जांयगे जो वास्तव में संस्कृत विद्वान हैं हज़ारों मूर्ख पाधा पुरोहितों की रोजी मारी जायगी और पेट पालनेको जो ढराढ कमण्डल फैलाए हुए हैं उसकी सब कलई खुल जायगी; हम सच कहते हैं कि एक तो यह देशी अक्षर हुई है जब सरकारी काम में बर्तें गए तो फिर इसकी ऐसी गरम बाज़ारी होगी कि निरक्षर ढूंढ़े न मिलेंगे हर एक आदमी दो तीन पैसे का पञ्चाङ्ग खरीद भद्रा भरणी तिथि नक्षत्र आप ही देख लेंगे ब्राह्मणों को कोई बात न पूछेगा फिर हिन्दी के प्रचार से सब साधारण प्रजा जाग उठेगी जिस प्रकार बिलायत में छोटे छोटे आदमी निधड़क सेक्रेटरी आफ स्टेट को लिख भेजते हैं इसका कारण यही है कि वहां एक ही भाषा और एक ही अक्षर का प्रचार है यहां छोटे छोटे ओहदेदार तहसीलदार थानेदार से भी लोग बात करने में डरते हैं कारण इसका यह है कि कानून और दफ़र सब अङ्गरेज़ी फारसी में हैं और उसी प्रकार की बोल चाल कठिन कठिन शब्दों से मिश्रित हुआ करती है जब देशी भाषा और देशी अक्षरों का सर्वत्र राज काज में प्रचार हुआ तो छोटे बड़े सब लोग ढीठ हो जांयगे झट पट सवाल लिखाय मुकद्दमा लगाया और अवसर पड़ने पर कह दिया कि फलाने कानून की फलानी दफा में ऐसा हुक्म है इससे साधारण लोगों का हौसिला दिन दिन बढ़ता जायगा अभी तो दूसरों की आंख से देखते हैं और डरते भी हैं फिर तो पुलीस वालों की गाली

धमकी एक भी न सहेंगी तुरन्त जवाब दे देंगी कि बस आगे न बढ़िए यह इख़्तियार आप को किस क़ानून की रू से मिला है इस्से साफ़ ज़ाहिर होता है कि देशी भाषा और देशी अक्षरों के प्रचार से राजपुरुषों के बिस्तीर्ण अधिकार में सङ्कीर्णता आ जायगी बेचारे फूंक २ पांव रक्खेंगी जैसा अब खुल खेलते हैं और शौन काफ़ की भाड़ से जो नवाबी मचाए हुए हैं वह हाथ से जाती रहेगी और वह तूमतड़ांग नादिरशाही जो फ़ारसी पुस्तकों के द्वारा प्राप्त होती है सब की सब खो बैठेंगी और सब से अधिक हानि यह होगी कि हर एक के चित्त में लपधता आ कर डेरा करेगी और फ़ारसी खांहों की फ़ज़ूलखर्ची और फ़ैयाज़ी को कहीं शरण भी न मिलेगा वह ऐश और आराम अमीरी नाज़ुक मिज़ाजी और सजावट बनावट फिर किस सौदागर की दूकान में लोग ढूंढ़ते फिरेंगे जो अभी प्रणयबर्द्धक इश्क़ उद्दीपक फ़ारसी के इक़बाल से खुदबखुद बेदामके मिल जाती है हजारों रामजनी और अप्सरा रांड़ हो जांयगी दूसरे इल्म वाले का इतना जिगर कहां कि इस अमृतवर्षिणी समाज का सत्कार कर सके फिर दिल्ली लखनौ तथा रामपुर आदि के नौवाब नामदार सलामतकी बातही जाती रहेगी दूसरे इल्म वालों के रोज़गार में इतनी बरकत कहां यह करामात तो खुदावन्द करीम ने फ़ारसी ही को बख्शा है चाहे कितनी ही कम तनखाह और क़लील आमदनी हो ऐश आश्रा इसका ख्याल ज़रूर जीमें जमा रहे हमारे एक परलोक बासी मुलाक़ाती १०) माहवारी के अहलमद थे उन के पास ३०) के तनखाह की एक तवायफ़ नौकर थी और गाड़ी बग्घी वगैरह का खर्च इसके अलावा था भला यह चमत्कारी नागरी में आ सकेगी बड़ी २ नामी गिरामी रंडियां अमलों के सहारे से चैन करती हैं व्याह शादी में हजारों रुपया पाती हैं फिर उनको कौन आदर करेगा ; फ़ारसीकी यह एक प्रत्यक्ष महिमा देखी जाती है कि फ़ारसी नवीस हरगिज़ बख़ील नहीं होता जब कुछ थोड़ा भी एख़्तियार चला चाहो घर वाले तकलीफ सहें पर एक दो मङ्गलामुखी का सत्कार होता ही रहता है जिनकी बदौलत बाहिरी रौनक और बाजारों की शोभा है जिस्को नागरी के पक्षपाती

गारत किया चाहते हैं; फ़ारसी अक्षरों की खूबसूरती जिसको पटने की कमिटी ने तजवीज़ किया है और नागरी को जो बदसूरत ठहराया उसका अभिप्राय कृपणता आदि ऊपर कही हुई बातों से है; इसमें कुछ संदेह नहीं कि उक्त कमिटी का विचार परोपकार मूलक है फ़ारसी के प्रचार से चाहो हिंदुस्तानियों का सर्वथा नुकसान हो पर पश्चिम वालों का कैसा बड़ा उपकार है जब कोई ईरानी वा काबुली हिंदुस्तान में आता है तो उसे बात चीत करने में कैसा सुबीता मिलता है और जो कदाचित् ईरान अरब काबुल वा तुर्किस्तान के लोग हिंदुस्तान में सौदागरी के कारखाने जारी करें तो उन्हें सहज में हजारों फ़ारसी खां नौकर मिल सकते हैं तो यह कितनी बड़ी बात है "परोपकाराय सतांविभूतय:" यह कोई मत समझे कि हिंदुस्तान में जो फ़ारसी अरबी की तालीम इतनी बढ़ी हुई है वह सब निरर्थक है जिस समय महारानी कैसरहिन्द की विजय पताका ईरान और अरब में चिरस्थायिनी होगी उस वक़्त यही फ़ारसी खां काम आवेंगे इन्तिज़ाम सल्तनत में सरकारी को सब तरह मदत करेंगे। हम बड़े खुश हों कि पटने के सैयद साहब की मर्जी माफ़िक सब कचहरियों में बजाय उर्दू के फ़ारसी ठूंस दी जाय और हुक्काम अपनी तजवीज़ अरबी में लिखा करें जिस से हर्फ़ों की खूबसूरती और ज़बान की शीरीनी दोनों एकट्ठी हो जाय "हंठवा चढ़ा बबूल पर गों गों तेंदू खाय" यह महावाक्य जिसमें पूरा उतरै। अलम्॥

आप का एक परोपकारी
उल्टा कहने वाला।

सरकारी राज से हिन्दुस्तानी राज की प्रजा क्यों प्रसन्न हैं।

सरकारी राज से हिंदुस्तानी राज की प्रजा क्यों रंजी पुंजी और खुश हैं इस के कई एक कारण हैं एक य है कि सरकार मजरूआ गैरमजरूआ परती ऊपर आबादी सब पर बराबर एक हिसाब से मालगुज़ारी धौंक देती है हिंदुस्तानी राज में केवल उसी पर मालगुज़ारी लगती है जो पृथ्वी जोती बोई जाती है दूसरे अङ्गरेज़ी राज में मालगुज़ारी बढ़ जाने से वेही खेत बीसों वर्ष से बराबर जोते बोए जाते हैं कहां तक धरती को

उपजाऊ शक्ति Productivepower बनी रहे अवश्य ही कम होती जाती है हिन्दुस्तानी राज में ऐसा नहीं होता जहां कोसों तक परती ज़मीन जानवरों के चरने के लिए पड़ी रहती है जिनमें किसान मनमानता अपने पशुओं को चराते हैं ; परती ज़मीन पर कुछ लगान नहीं लगता लगा भी तो बरायनाम बहुत थोड़ा सा सरकारी राज में वैसी जमीन को हर साल नीलाम कर दाम खड़े कर लिए जाते हैं ; सिवा मालगुजारी के मदरसाना सड़काना आदि फ़ज़ूल टैक्स राजाओं के राज्य में नहीं लगाए जाते कहतसाली अवर्षण अथवा किसी दूसरी तरह के कृषि विघातक उपद्रव होने पर मालगुजारी का कुछ हिस्सा या बिलकुल छोड़ दिया जाता है यहां हाल के दुष्काल के समय बम्बई में एक साल न लिया गया दूसरी साल किसानों को मार मार दाम दाम चुका लिए गए पश्चिमोत्तर में सो भी नहीं हुआ ; हिन्दुस्तानी राज में कृषक चार किश्त में देन अदा करते हैं अङ्गरेज़ी राज्य में कहीं दोही किश्त है टूटे असामी या ज़मीनदार से दो दो तीन तीन वर्ष की बाकी पड़ी रह जाती है जब उसने दिया बिलासूदी ले लिया जाता है सरकारी राज्य में बैल बदिहा तक बिकवाय जमीदार वसूल कर लेते हैं उतने से भी न वसूल हुआ तो दूसरे वर्ष मे ब्याज के भर लिया जाता है "थोड़ किहिन तुलसीदास बहुत किहिन कबिता" सरकार के कानून में इतनी सख़्ती चाहो न भी हो तहसीलदार लोग अपनी खैरखाही जनाने को अत्याचार से ग्रामीण किसान बेचारों को पीस डालते हैं कौन लच्छन से हिन्दुस्तानी राज की प्रजा से यहां की प्रजा खुश रहैं फिर पट्टा कबूलियत के लिखाने और असामी से न वसूल होने पर जमीदार का नालिश फरियाद में स्टैम्प आदि सरकारी रसूम और अदालत के राजपुरुषों के देने लेने में कितना व्यर्थ का खर्च हम लोगों को उठाना पड़ता है हिन्दुस्तानी रियासतों की प्रजा इन सब सांसतों से भी मुक्त हैं; सरकारी राज्य में और बहुत सी बातों का चाहे आराम और आसाइस हमें हो पर कृषक बेचारों की तो बड़ी ही दुर्गति है हमारा विश्वास किसी को न हो नाइनटीन्थ सेञ्चुरी नामक मासिकपत्र के हाल की जुलाई के नम्बर में देख ले ; यही कारण है कि अभी दक्षिण के अकाल में तमाम मन्दराज और बम्बई भर चापट हो गई वही

राज बरोदा और काठियावाल प्रान्तों में यह फेमिन केवल महर्घता Skarcity के आगे न बढ़ा और न वहां के लोगों को इतना गिरां गुजरा; ४० करोड़ रु० जो हिन्दुस्तान की आमदनी सरकार के खज़ाने में हर साल जमा होती है उसमें २० करोड़ के लगभग केवल ज़मीन की मालगुज़ारी का रहता है चाहो कैसा ही दुष्काल वा मँहगी हो सरकार २० करोड़ वसूल कर लेने में कसर नहीं करती तो क्यों प्रजा और देश दिन दिन दरिद्र न होता जाय; जिस साल अच्छी पैदावरी हुई दैव ने कृपा किया अस्य विथा तक कोई उपद्रव न हुए तो खेतिहरों को पेट भर अन्न और वस्त्र मिला बस सञ्चय करने की नौबत कहां पहुंच सक्ती है और सञ्चय जब न रहा तो अकाल के समय क्या खा कर प्राण पालें; पहले कभी दस बीस वर्ष में एक बार अकाल होता था अब दूसरे तीसरे साल बाद अकाल भी कमर बांधे मुस्तैद रहता है मनुष्य के कोप से तो बच भी सक्ता है दैवी कोप से भला कहां उबारा निश्चय दैवी कोप न होता तो इस दशा को न पहुंचते॥

Fashon of the day

रिवाज वक्त।

यद्यदाचरतिश्रेष्ठ स्तत्तदेवेतरोजनः।
सयत्प्रमाणंकुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते॥

संसार का क्रम है कि जैसा श्रेष्ठ अर्थात् प्रतिष्ठित जन आचरण करते हैं उसी को देख दूसरे छोटे लोग भी उसी ढर्रे पर चलने लगते हैं इसी का नाम रिवाजवक्त है जैसा रङ्ग में काला, कपड़ों में कोट, टोपियों में चक्करदार, जूतियों में बूट, सवारियों में टमटम, जानवरों में कुत्ता पालना, खुशबूओं में लवेण्डर, केश शृङ्गार में डाढ़ी रखाना अथवा ज़ेरपाई सा गल मूछ, मज़हब में लामज़हबी शून्यवाद अथवा नेचरिए बन जाना; ये सब फेशन उन लोगों के हैं जो शिक्षित आज़ाद नई रोशनी नई झलक या नई तालीम वाले कहलाते हैं सिवा इन बातों के स्त्री सेवा स्त्री शिक्षा उन्हे स्वतन्त्र करना चुरट सोडा शराब आदि भी फेशन में दाखिल है; अब जरा इधर लौटिए बिलकुल अँधियारा सब से अच्छा और पसन्द के लायक फेशन वही जिसमें टुच्चपन की बू झलकती हो; वारनिश किया हुआ गुरगावी जूता, औरेबदार पाइजामा, अँगरखा चुस्त बांह का आधा शोना खुला रहना

चाहिए, टेढ़ी टोपी आधे सिर से, लंबे २ पट्टों में तेल फुलेल टपकता हो, धोती हो तो लङ्ग कसे अखाड़ेदार, आड़ा तिलक महाबीरो का, पान के बीड़ों से एक ओर का गाल फूला हुआ मानों बतौड़ी निकली है, आराधना चांडूखाने की, तालाश इन दिनों शहर में नई कौन उभड़ी है, मुजरा न रोज़ तो आंतर देके तो होना ही चाहिए, बड़े प्रतिष्ठित हैं शाहपनाह दास के लड़के और ये दूसरे कौन राय कमबख़्तचन्द के पोते और ये तीसरे नरकू महाराज के सगे नाती हैं अक्षर से भी कभी भेंट हुई है कौन काम है "न हम पढ़े न हमरे आबा" पढ़ें लिखें क्यों क्या सुआ मैना हैं पढ़ा लिखह तू पच्च "बह बह मरें बैलवा बैठे खांय तुरङ्ग" हमारे कुल में पढ़ना नहीं सहता हमारे नगर दादा के बाबा मोटरी भर पोथी पढ़ डारिन रहा जवाने मर गए तब से हमारे बाबा का यह सिद्धान्त हो गया "हम पच्चन के बंश में कोई नहीं बिद्वान भांग पिएं गांजा पिएं जै बोलें जिजमान" जिस समूह में ऐसों की अधिकाई बरन सभी ऐसे हैं वहां सभ्यता फैशन और उन्नति सभी की कुगति है ईश्वर ही कुशल करे ॥

स्थानिक समाचार ।

हैज़ाशरीफ इस श्रावण भर इलाहाबाद का पिण्ड पकड़े थे और अभी तक कुछ न कुछ अपना बल पराक्रम प्रगटही करते जाते हैं ये तो थेही इनके दूसरे भाई ज्वरराज भी अब यथेष्ट प्रभुता को पहुंचे हुए हैं । अभी तक बर्षा कामरवाई इन प्रान्तों में अच्छी हुईहै आगे की रामहैं पर इस मघा के चैलीफाड़ घाम से कुछ अच्छी आशा नहीं पाई जा सकी । यहां बाजारों में कुली कहांर और चमार वगैरह नित्य बेगारी पकड़े जाते हैं लोगों ने अपने अपने नौकर बेयरा कहारों की बाज़ार सौदा के लिए भेजना बन्द कर दिया है पुलिस वालों की बन पड़ी है लोग अफवाह उड़ाए हुए हैं कि ये सब काबुल की लड़ाई में भेजे जांयगे हम सरकार को सलाह देते है कि इनकी एवज हट्टे कट्टे ररा भीखमंगे फकीर और बैरागियों को सरकार पकड़ पकड़ भेज दे वहां जाने से इन मुफ़्तखोरों से कुछ मेहनत कराय खाने को दिया जायगा इसमें इनकी हरामखोरी की आदत छुट जायगी और जो लड़ाई में मर गए तो इन आवारों से हमारा गला छुट जायगा जो सबेरे से उठ आधीरात तक सबों को तकलीफ दिया करते हैं या कोई ऐसा हुक्म जारी हो जाना चाहिए कि ये

सड़कों पर न घूमने पावें यह निहायत नागवार मालूम होता है कि जहां किसी को सुफेदपोश देखा दो दो तीन तीन सावन भादों की लपटौआं घास से आ कर लिपटते हैं जो कुटाते सांसत होती है सुनते हैं बहुतेरे कहारों ने जनेऊ पहन पहन ब्राह्मण चत्री बन गए पुलिस वालों से तौ भी न बचने पाए॥

प्राप्त ग्रंथ।

हमारे पास अबोध निवारण नामक एक छोटी सी पुस्तक बनारस से आई है इसमें दयानन्द के खण्डन का पुराना रामरसरा बहुत कुछ गाया गया है पर वही निरी पण्डिताई के ढङ्ग पर दयानंद के आशय पर कुछ दृष्टि नहीं है; इन दिनों के शुष्क वैयाकरणियों की लड़ाई के ढङ्ग . लेख में अशुद्धियां निकाल निकाल लिख दी गई हैं; हम दयानन्द के किसी तरह पक्षपाती नहीं हैं पर निरे संस्कृतज्ञ पण्डितों को भी सराहना नहीं कर सकते दयानन्द चाहे बहुत बुरे हों पर देश के फाइदे और शोधन की ओर तो बहुत प्रवण चित्त हैं पण्डितों की मोटी तोंद किस काम की सिवा आंख में धर झोंक प्रजा को लूटने के और फिर इस पुस्तक के अग्रसर तो चतुर्भुज हैं जिनके अगुवा भए भिखारी तिनको बाट गुसैएं भारी॥

वाक्य पञ्चाशिका और खगोलदर्पण।

काशी बासी पं० रामशङ्कर व्यास कृत यह दोनों छोटी सी पुस्तक बालकों के लिए बहुत उपयोगी है पहली में बहुत से सदुपदेश हैं दूसरी में सूर्य चन्द्रमा आदि ग्रहों का सूक्ष्म सा बर्णन है मूल्य फी पुस्तक≈) है॥

सूचना।

जिन से जो कुछ हमारा मूल्य बाकी हो कृपा कर भेज दें नहीं तो आगामी मास से पत्र उनके पास न भेजा जायगा और जो नए ग्राहक हुआ चाहें वे अग्रिम मूल्य भेज दिया करें क्योंकि बहुतेरों से हमें धोखा हो चुका है पहले पत्र लिख प्रदीप मगाने लगे पीछे से निबुआ नोन चटा दिया है ईश्वर इन पापियों का कैसे उद्धार होगा॥

गए बर्ष की पिछली संख्याएं टिकट का खर्च छोड़ दो आना फी संख्या के हिसाब से मिलेगी॥

अग्रिम मूल्य	३।≈)
पश्चात् देने से	४॥≈)
एक कापी का	।)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

7/10/80
629

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सौं मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st Oct. 1880.
[Vol. IV. No. 2.]

प्रयाग आश्विन कृष्ण १२ सं० १९३७
[जि० ४ संख्या २]

सरकार पर अपार भार ॥

हर एक बात और बात का भेद सोचने से जान पड़ता है और यह न्याय की प्रनाली है कि जब तक किसी मर्म को खूब समझ बूझ न ले तब तक उसके गुण दोष की व्यवस्था का प्राड्विवाक वा न्यायी न बने जो हम विचार करते हैं और ज्ञानदृष्टि को फाड़ फाड़ देखते हैं तो सर्वावस्था में सारा बोझा सर्कार इस शब्द के कांधे पर लदा हुआ मालूम होता है यह हम कह सक्ते हैं कि सर्कार वा राज्य वा गवर्नमेण्ट इस छोटे से शब्द का अवयव वा अङ्ग वा ढांचा बड़ा भारी और विस्तीर्ण है कि जिसकी प्रतीति पर सब बोझा और जिम्मेदारी रक्खी गई है हां

यह निश्चित बात है कि जिन अङ्ग प्रत्यङ्ग के भरोसे वा विश्वास पर सर्कार इस ग्रन्द ने बड़े भारी असह्य और कष्ट साध्य बोझ को अपने कंधे पर रख लिया यदि वे सब अङ्ग प्रत्यङ्ग धर्म और ईमानदारी और अधिकार की राह से यथाशक्य और विभागानुलब्ध कार्य को भुगतावें और सर्कार ग्रन्द पर धब्बा न लगने का ख्याल रक्खें तो कुछ असम्भवित बात नहीं है कि सर्कार यह लघु ग्रन्द अपरिमित बोझ को सँभाल सक्ता है और उसकी रक्षा का जिम्मेदार रह सक्ता और दुर्यश से बच सक्ता है परन्तु कहां तक "अति सर्वत्र वर्जयेत्" सब कामों की एक हद होनी चाहिये जब कामों की बाहुल्यता सीमातिक्रान्त हो गई और कामकाजियों को मनमाने घरजाने की हथकड़ी हाथ लगी तो न वह बोझा सँभल सक्ता है न भारवाहक को दुर्यश से बचाव हो सक्ता है इससे तो यही अच्छा है कि जगदीश्वर ने अपनी अखण्ड शक्ति से उचित रीति पर जिस जीव की रक्षा वा बचाव के लिये जो रीति वा उपाय सिरजा है चाहिये कि राजा भी उसी को कायम रक्खै और उसका बोझ उन्ही प्राकृतिक उपाय धारियों के कंधे पर रहने दे; प्रयोजन यह कि जिस प्रकार बाजे पशुओं को विधाता ने सींग इस लिए दी है कि वे उस से अपनी रक्षा करें और अपने दुखदाइयों को हटावें समर में यथाशक्य विक्रम दिखावें इसी तरह पक्षियों को चोंच दिये गए हैं कीड़ों को डंक वा दांत किसी किसी पशु को नख और दांत और किसी को लात और दांत; हमारा यह तात्पर्य है कि यदि हम राज्याभिमान वा अपने आतङ्क के भरोसे पर पूर्वोक्त जन्तुओं के अस्त्र शस्त्र स्वरूप सींग नख दांत डङ्क तुड़वा डालें और यह कहैं कि तुम को किसी का कुछ डर नहीं है तुम्हारी रखवाली का बोझ हमारे मत्थे है यद्यपि भगवान के बनाये हुए हम तुम्हारे प्राकृत रक्षोपाय को छीने लेते हैं पर तुम सोच मत करो दुनियां में हम भगवान के प्रतिनिधि स्वरूप हैं तुम्हारे हर एक रक्षा के जिम्मेदार हैं; सोचने की बात है कि जिस अवस्था में हम ने उनकी रक्षा का उपाय भी किया परन्तु अवसर कुअवसर जून कुजून ठांव कुठांव जब उन को सकट आन पड़ा वा बैरियों ने उनको अन्याय पूर्वक पछाड़ा तो उस अवस्था में हमारा राज्याभिमान और प्रतिज्ञा दोनों व्यर्थ सी हो गईं चाहे हम पीछे से कितना

ही दण्ड और यातना उनके बैरियों को करैं पर उनका वह परिताप जो प्राकृतिक रक्षोपाय न होने के कारण हुआ कभी नहीं मिट सका और दुर्यश वा बदनामी भी उस रखवाले का पीछा नहीं छोड़ सकी जिसने उनके स्वाभाविक रक्षा के उपाय को अपने हाथ में ले लिया और उन्हें परतन्त्र कर दिया यदि इसी दृष्टान्त के मूल पर ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की प्रजा कि जिसके हाथ में कोई अस्त्र शस्त्र वा रक्षा का उपाय नहीं रहा दुख पाने वा सताये जाने पर अपने समय प्रभु का गीला न करे तो क्या करे जिस समय ठगों से भेंट हो जाती है उनके सामने चाहे जिस कानून का हवा लादो कोई नज़ीर पेश करो एक भी नहीं सुनते चोर जब सेंध देते हैं उतनी बेला फ़ौजदारी की कचहरी बिलकुल बन्द रहती है जब भेड़िये उपद्रव मचाते हैं और पशु पक्षी खेती का संहार करने लगते हैं उन कुपढ़ों को कितना ही सर्कारी परवाना दिखलाओ एक भी नहीं सुनते अब कहिए उस आतङ्क की हम किस काम में लावें कि जिसके भरोसे पर हम स्वाभाविक रक्षा के उपायों से रहित किये गए, इसी तरह पढ़ाने लिखाने का बोझ भी सर्कार ने अपने हाथ में ले लिया और सौभाग्य सूचक चिन्ह की भांत एक सरिश्तेतालीम नियत करके पाक हो गई "जलमध्येस्थितागावो पिबन्तितपिबन्तिवा। उत्तीर्णोभवतिगोपालः" इस विषय का गीत हम कहां तक गावें जब ग्राम पाठशाला नाटक आदि ग्रंथ थक पड़े तो हम लोग उससे अधिक क्या कह सकते हैं राजा कहे सो न्याव, पासा पड़े सो दांव। इसी प्रकार आरोग्यता के भार से भी वैद्य हकीम हलके किये गए न उनकी पुस्तक वा किताब अच्छी न उनका इलाज काम का जो कुछ जानते हैं डाक्टर जो कुछ गुण है सो बिलायती दवा में दाम जितना चाहे उतना लगे गुण करना उन का काम है उनमें औगुण है यह कहने की सामर्थ्य किसको, शीतला के रोग में दान दक्षिणा पूजा पाठ व्यर्थ है हिन्दुस्तानी रीति का टीका कानून विरुद्ध नमक की भांत अनुचित ठहराया गया है और अङ्गरेज़ी रीत का टीका बहुत गुणदायक है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि गीयन शीतला के कानून का अभी टटका जातकर्म हुआ है ; पाप और नरक से सभी को निश्चिन्त रहना चाहिये क्योंकि हमारे हाकिमों के देवता ईसा

मसीह ने सबके पलटे पहले अपना प्राण दे दिया मद्य पीओ मांस खाओ झूठ बोलो पर धन हरण पर स्त्री गमन से परलोक को कुछ डर नहीं और यदि वह राज़ी हो जाय तो कानून भी कुछ न कहेगा बुद्धि और ज्ञान का सदावर्त रात दिन जारी रहता है खासे अच्छे हट्टे कट्टे मिशनरी इस बातपर सन्नद्ध हैं कि लाखों और किरोड़ों को मुक्ति का मनीआर्डर जारी कर दें इस नियम पर कि उनकी जूठी रोटी और जूठा मद्य पी लेवे। पूर्वोक्त वर्णन से हमारा यह तात्पर्य्य है कि इन सब बातों की भलाई बुराई का आरोपण लोगों की दृष्टि में सर्कार पर होता है चाहे यह काम पृथक पृथक् भी हों इस लिये उचित है कि सर्कार कोई ऐसा प्रबन्ध करे कि सर्कार के कांधे से कुछ बोझा हलका हो जाय और सब काम स्वतः सुधरें यदि जी लगा के इन पर दृष्टि की जायगी तो कुछ दुस्साध्य नहीं है क्योंकि स्वाभाविक रक्षा का उपाय हर एक प्रकर्ण में सब के साथ लगा हुआ है केवल संस्कार वा मरम्मत कर देना बहुत है॥

एक नया 'प्रोपोज़ल' कार्य सूचना।

जो लोग इतिहास जानते हैं और विचारशक्ति को काम में लाय पक्षपात रहित हो कार्य करने में प्रवृत्त रहते हैं वे इस बात को समझे हुए हैं कि हमारी दयाशीला सरकार हम लोगों के साथ कदापि अन्याय नहीं करती क्योंकि यह परिपाटी सदा से चली आई है कि जो जाति बलवान और बिजयी हुई है उस ने पहले अपने जाति के लोगों की भलाई का प्रबन्ध किया और जैसे हो सका सार खींच लिया फिर छाछ जो बच रहा वह वहां के निवासियों के काम में आया दूर क्यों जाते हो आप अपने ही यहां क्यों न देखिए आर्य लोगोंने आकर यहां के पहले रहने वालों को क्या दिया बल्कि उन्हे जड़ पेड़ से जब तक निर्मूल न कर डाला तब तक स्थिर हो कर न रहे और न अब तक उस पुरानी बासना से मुक्त हुए हैं अगले बाशिन्दों में जो लोग अब भी कहीं कहीं बचे खुचे रह गए हैं उन्हें दस्यु अन्त्यज अनार्य कह उन के दरस परस से भी घिनाते हैं; उपरान्त मुसलमानों ने इन आर्यों के साथ कैसा बेर्ताव किया और कैसी प्रतिष्ठा इनकी किया सो भी सब स्पष्ट है इनमें अकबर से दो एक न्यायशील बादशाहों की गिनती हम नहीं करते जब अङ्गरेज़ आए

तो इन्हीं ने मुसलमानों का अनुसरण न किया इस्का हेतु कुछ और ही था प्रथम तो ये लोग व्यापार के लिए आए थे उस में भी एक नियत समय तक का ठीका इन्हें इस मुल्क में सौदागरी करने का दिया गया था इस लिए जहां तक हो सके हर तरह की आसाइस और आराम की वृद्धि कर एतद्देशी राजा और नौवाबों की ओर से हिंदुस्तानियों का दिल हटाना मंजूर हुआ फिर इन्हें यह भी डर लगी थी कि कहीं इनका राजा इनसे अप्रसन्न न हो जाय इस लिए इन की शासन प्रणाली बहुत युक्त और न्याय के अनुकूल रही पर जब से श्री महारा-णी ने यहां के शासन का सब अधिकार अपने हाथ में लिया तो वे सब बातें दूर हो गईं अब सीधा राजा और प्रजा से काम पड़ा अब राजा जो कुछ अपने स्व जन बान्धवों और निज जाति वालों के लिए लेले उसमें तो किसी का कुछ साझा ही नहीं है जूठा कूठा बचा खुचा जो हमें कृपा कर देदें वही बहुत है और उतने ही के लिए अपनी पुरानी आदत के मुताबिक राजभक्ति Loyalty के सूत्र से बद्ध हो उसका अत्यन्त धन्य-वाद करना चाहिए खैर इस हिसाब से ८००) महीने तक की नौकरी एतद्दे-शियों को बराबर से मिलती चली आई इतने पर इनका सन्तोष न हुआ सिवि-ल सरविस की हवस जी में समाई बि-लायत जाना भी अङ्गीकार कर लिया जब इनकी संख्या बढ़ने लगी सिविल स-रविस के काइदों में रद्दबदल किया गया तिस पर भी जब संख्या कम न हुई तो अब सुनते हैं कि ग्रेडेडसिस्टेम याने दरजे बदरजे तरक्की करने का जो द-स्तूर प्रचलित था उस्के टूटने की खबर है इस्से यही निकला कि जो प्रारम्भ में सौ या दो सौ के नौकर हुए वे जन्मभर उतने ही में रहैं आगे न बढ़ने पावें तो अब हम अपने उभड़ने की कौन सी आशा करैं क्योंकि आमदनी की सूरत प्रायः सब ओर रूंधी हुई देख पड़ती है व्योपार पेटे की बस्तु यहां और देशों से जितनी आती है उतनी जाती नहीं गल्ला जब से बाहर जाने लगा केराना हो गया ज़मीन का लगान और खर्च इ-तना बढ़ गया है कि फसल पर अन्न कि-सान के घर १० दिन भी नहीं रहने पाता बेच खोच किसी तरह मालगुज़ा-री समय पर पहुंचाया चाहैं बर्तात की यह कैफीयत है इस बादल सद काबुल

में जमा हैं अगली साल जब यह लड़ाई समाप्त होगी तब इस्का खर्च भी अवश्य ही वसूल किया जायगा नहीं तो तख़फ़ीफ़ भूतिन आकर सवार होगी जिस्की अब गुञ्जाइश और कहीं तो है नहीं अलबत्ता सिरिस्ते तालीम में जब से बहुत सा काम सेक्रेटरी कमिटी तालीम के ताल्लुक हो गया है तब से इन्स्पेक्टर फ़िज़ूल रकम हो गए इसी तरह माल में कमिश्नर फ़ौज में कमसरियट के कुछ अफ़िसर और कमाण्डरेनचीफ़ कहीं कुछ कौंसिल के लोग भी इसी किस्म को फ़िज़ूल रक्खे हैं पर इनके तख़फ़ीफ़ से जाति ही का नुकसान है इस्से ऐसा कभी हो नहीं सक्ता तो अब कहिए कौन सी ऐसी बात की जाय कि जिस्में सर्कार को फ़ाइदा हो और एतद्देशियों को विशेष कष्ट भी न हो ; हमारी समझ में तो सर्कार लड़की लड़कों के व्याह के खर्च पर टैक्स लगा दे अथवा जितना व्याह में खर्च हो उस्का आधा तिहाई सर्कारी खज़ाने में पहले ही से जमा कर दिया जाय जिसमें पीछे से दिवाला पिटने पर उसी रुपए से लड़की लड़के को यावज्जीव अपना हतजीवन पार करने को कुछ अवलम्ब रहे नहीं तो यही हुक्म जारी हो जाना चाहिए कि जो जितनी छोटी लड़की का व्याह करेगा उसे उतना ही अधिक टैक्स देना पड़ेगा इस्से बाल्य विवाह की बुरी रसम भी उठ जायगी और सर्कार का भी मतलब निकल आवेगा नहीं तो यही आरडर पास हो जाना चाहिए कि पूरी युवा अवस्था की नियत संख्या के पहुंचने के पहिले नियत संख्या से अधिक सन्तान के होने पर इस हिसाब से टैक्स लिया जायगा इसमें हम लोगों को बड़े ही फ़ाइदे की उम्मेद है कि कच्चे वीर्य के जो अल्पबुद्धि अल्पायु पिल्ली पिल्ला से सन्तान हम लोगों के होते हैं सो न हो पूर्ण वीर्य्य के सिंह शावक समान पुष्ट और हट्टाकट्टा होने लगेंगी ऐसी ऐसी कितनी बातें हैं जिनके होने से सर्कार को रुपए का लाभ और हमारी कुरीतों का शोधन हो जायगा ॥

औरतों का परदा अवध पञ्च से ।

हिंदुस्तान में औरतों का परदा भी एक कयामत है हम लोगों का ख्याल है कि अगर ज़रूरत पड़ने पर हम को अपनी बीबी का ज़िकिर करना पड़े तो इस तरह करें कि सुनने वाले का ख्याल सीधा बीबी पर न जा गिरे बल्कि लुढ़क

पुढ़क कर उस तक पहुंचे; जैसा बीबी की कुछ तबियत अलील हो और हम इस लिए गमगीन हों कोई हमारे बड़े रफीक पूंछ उठें क्यों साहब आज आप उदास क्यों हैं तो पहले हम यही कहें जी हां कुछ खानगी बात है दुनियां के हर तरह के झगड़े लगे ही रहते हैं और पूछने वाले जो कोई ऐसे इनायत फरमा हुए जिनसे सब तरह की बेतकल्लुफी है तब भी साफ साफ न कहेंगे कि हमारी बीबी बीमार हैं अगर इस तरह कहें तो चटपट उस बीबी सुनने वाले के ध्यान में नक्श हो फौरन ज़ात बीबी का तसौवर कर ले बल्कि हम यों कहेंगे हमारे घर के लोगों की तबियत नासाज़ है या हवेली में तबियत अलील है या अगर कोई साहबज़ादा मौजूद हो तो उसका नाम ले कर कहेंगे इस की मा बीमार है तब सुनने वाला समझेगा कि ये इस लड़के के बाप हैं तो इसकी मा इनकी बीबी हुईं तब उस के समझ में इस पेचीदगी का भेद किसी तरह आवेगा; भला कहिए इस परदे का कुछ कहीं पर हद है अफसोस कि हिंदुस्तानियों को वख़्त की कुछ कदर नहीं है दो तीन ऐसी ऐसी फज़ूल बातों के कहने में वख़्त ऐसे अनमोल रतन को सेत मेत ज़ाया करते हैं; वही तालीमयाफ़्ह कौम के लोग झटपट किस सादगी से कह देते हैं कि हमारा वाइफ (जूरू) यह 'और वह' है हकीकत में ऐसे ऐसे फिकरे "घर के लोग या इसकी मा" को नई तालीम और नई तरक्की वाले बिलकुल खिलाफ नेचर और फजूल समझते हैं तौ भी कभी कभी मुगालते में आही जाते हैं; हम ने सुना है कि एक दफा एक मौलवी साहब एक साहब बहादुर से मिलने को गए जिन से मौलवी साहब का बहुत हेल मेल था और साहब बहादुर इन्हें एक अच्छे ओहदे की नौकरी देने का वायदा कर चुके थे साहब ने घर की खैराफियत पूछा इनकी बीबी बीमार थीं बोल उठे हुज़ूर क्या अर्ज़ करूं घर के लोगों की तबियत अलील है साहब बहादुर समझे घर में जो लोग रहते हैं लड़के बाले नौकर चाकर सब बीमार हैं बराह मिहरबानी कहने लगे कल हम ज़रूर उन के देखने को आएंगे। अब तो मौलवी साहब सिटपिटाए और सोचने लगे कि साहब की मेहरबानी तो अब इश्कमाज़ी हुआ चाहती है साहब की आख

हो क्या गया है क्या इन्हें यह मालूम नहीं है कि हिंदुस्तान में औरतें परदा करती हैं, बोले आप को तकलीफ करने करने की क्या ज़रूरत है योंही नजर इनायत काफी है। साहबने कहा नहीं नहीं यह कुछ बात नहीं हम कल जरूर आएगा मोलवी साहब घबराए हुए घर पहुंचे और मोलवाइन को जो इत्तिफ़ाक़न खूबसूरत भी थीं डोली पर लाद फांद उनके नेहरे भेज दिया लोग हैरान हुए कि कहां तो यह अखलाक़ कहां सफ़र यह माजरा क्या है। मौलवी साहब मारे शरम के गड़े जाते थे जीमें कहने लगे। हत तेरी बेकारी की दुम में नमदा, हत तेरी नफ़्स अम्मारा के उसमें वह, हत तेरे युरोपियन लोगों की चुना में चुनी, अलक़िस्सा ज्यों त्यों बीबी को रुखसत कर बैठ रहे दूसरे दिन साहब बहादुर तशरीफ लाए देखा सब लोग घर में अच्छे खासे हट्टे कट्टे तंदुरुस्त चल फिर रहे हैं कहा "वल" मौलवी साहब आप तो कहता था घर का लोग बीमार है घर का लोग तो सब हरन सा कूद रहा है। अब मौलवी साहब समझे आहा यह साहब को महज़ गलत फहमी थी हकीकत में उनकी नीयत मेरी बीबी के चेहरे से भी ज्यादा साफ है हाल वाकह सब कह सुनाया। साहब बहादुर ने मुसकिरा कर फरमाया 'वल' आप बीबी को घर का लोग शायद इस सबब से कहता है कि वह घर में रहता है और आप बाहर जाया करता है तो आप का बीबी आप को शायद बाहर का लोग कहता होगा। मोलवी साहब तो झेंप झांप चुप हो रहे पर उनका ४ वर्ष का एक लड़का खड़ा था बोल उठा नहीं अम्मा तो अब्वा को बाहर का लोग नहीं कहतीं। येजी, सुनते हो जी, वह यह कहती हैं; मौलवी साहब ने डांटा चुप मरदूद गरज़ साहब अपने घर तशरीफ ले गए बीबी नेहर से वापस आईं। सच पूछिए तो परदा की रसम ही बुरी है असल में है यह खिलाफ नेचर कि बीबी को चार दीवारों में कैद रख दुनियवी लज्ज़तों से उन्हें महरूम कर देना बेमानेदारद, अन्धेर तो यह कि जो परदा को बुरा समझते हैं वे भी इतने मर्द नहीं बनते कि घर के लोगों को बाहर का लोग कर दें अजी दूर क्यों जाओ हमी हैं यह सब ख्याल बघारते हैं आज़ादी और तालीम का दफ़्तर खोले हुए हैं मगर कोई कहे आप

अपनी लेडी साहबा को आम मजलिसों से बाहर निकालने की तहरीक करें तो हम हरगिज़ इसे पसन्द न करेंगे अौअल तो लेडी साहबा शरम और हिजाब की बेड़ियों से जकड़बन्द हैं दूसरे हम ठहरे खूसट बीबी हमारी हुईं परीज़ाद कहीं और से नजर भिड़ गई तो हम धारंधार गए. दूसरे साहब कहते हैं हम ऐसे बने ठने रहते हैं और बीबी हमारी हैं काली कोयला लोग कहेंगे बस इसी बिसात पर रण्डीबाज़ों से परहेज़ और मज़हबी पाबन्दी; एक साहब कहते हैं अजी हम ठहरे मुफलिस कलांच घर में मोटा झोटा जो मिला अपनी बीबी को पहिना ओढ़ा दिया खुद बने ठने फिरते हैं हम कहां से ऐसे जोड़े लाएं कि बीबी को उस्से आरास्ता कर सोसाइटी में अपना रोब कायम रक्खें; एक साहब कहते हैं फ़र्ज़ कीजिये हमने बेशरमी को दूर बहाया और बीबी को भी समझाय बुझाय हया की हद से बाहर किया मगर और लोग कब यकीन करेंगे कि यह इन की जौज़ाशरीफ हैं ज़रूर ही समझेंगे कि यह कोई कसबी है बस बूर घार और ताक झांक से गाकों में दम रहैगा खामखाह जवान लोग इधर उधर गटरगूं करते डोलेंगे क्योंकि आम तौर पर यही समझा जाता है कि अगर शरीफ औरत होती तो यों बेहिजाब कभी न निकलती इसका बन्दोबस्त तो शायद यों हो सक्ता है कि सरकार से इसका एक लइसेन्स ले लिया जाय और लेडी साहबा के ज़ुल्फ में लटका दिया जाय तो लोग उसे देख समझेंगे कि यह इन की व्याहुता बीबी हैं॥

नई रोशनी की पहचान।

सिर पर लाल लाल या काला काला सरपोश उस पर दुम मुंह में एक जलता हुआ फलीता हाथ में कुबड़ी साथ में कुत्ता बदन में जाकट पैरों में तोबड़ा कालों से नफरत गोरों से उल्फत मुंह में सुभर गड्डाम पांचो सवारों में नाम गुडमार्निङ्ग बजाय सलाम अपने मतलब से काम नई रोशनी की पहचान इस सब का अञ्जाम॥

मृच्छकटिक नाटक।

गत संख्या के आगे से॥

विट। बसन्तसेने ठहर ठहर, बाल कदली समान कांपती वायु से उड़ता

खाल बल फाड़े टूटती मैनशिला भरी गुफा सी दमकती तू कहां जाती है ॥

शकार। * बसन्तसेना ठहर ठहर मेरे हृदय में अनङ्ग मदन कामदेव बढ़ाती रात को शैया पर निर्दय मुझे फेंकती भय के मारे गिरती पड़ती खड़खड़ाती भागी जाती है तौ भी मेरे वशीभूत तू हो गई है जैसा रावण के बस में कुन्ती हो गई थी ॥

चेट। † अरे रे हमार मालिक राजा क सगे सार पटलें इनके साथ रमे से तोको कठौता भर अस मास और मछरी खाय को मिलिहै जैसे आगे कुत्ता सड़े मुरदौ को नै कुचत ॥

बसन्तसेना (डर कर अपने नौकरों को पुकारती है) पल्लवक पल्लवक परभृतक परभृतक ॥

शकार (भय से) भाव अब क्या करें इसके साथ तो कई एक आदमी जान पड़ते हैं ॥

विट। न डर न डर यह अपने दास दासियों को बुलाती है मूर्ख स्त्री से तू इतना डराता है ॥

शकार। उ: मैं शूर हूं सौ स्त्री हों तो भी उन्हें घास सा एक दम में काट डालूं ॥

बसन्त० (पीछे देख) हा दास दासी भी सब पीछे रह गए अब यहां अपनी रखवाली मुझे आप ही करना पड़ा ॥

विट (बसन्तसेना की ओर इशारा कर स्वगत) ढूंढ़ ले ॥

शकार। तू चाहे पल्लविका को पुकार चाहे परभृतिका को बुला चाहे संपूर्ण बसन्त मास को पुकार मैं तेरे पीछे आ पहुंचा अब तेरी रखवाली कौन करेगा क्या जमदग्नि का बेटा भीमसेन या कुन्ती का बेटा दशकन्धर मैं तेरा बाल पकड़ अभी दुश्शासन सम स करता हूं

---

* संस्कृत में शकार का वचन है "ममदनमनङ्गंमन्मथंवर्द्धयन्ती निशिचशयनकेमेनिर्द्दयंप्रक्षिपन्ती । प्रसरसिभयभीताप्रस्खलन्तीस्खलन्ती ममवशमनुयातारावणस्येवकुन्ती ॥" इसमें "मदन अनङ्ग मन्मथ" "प्रस्खलन्तीस्खलन्ती" यह सब पुनरुक्ति हैं "रावणस्येवकुन्ती" यह शास्त्र विरुद्ध होने से हतोपम है पर शकार का वचन है इस लिए जो कुछ लोक या शास्त्र विरुद्ध और बे मुहाविरे हों वही यहां पर अच्छा समझा गया है।

† चेट शकार का नौकर हुआ तो इसे उससे भी बढ़ कर मूर्ख होना चाहिये।

देख यह मेरी बड़ी चोखी तलवार है कह तेरा मूंड़ काटें या मार डालें अब तेरे भागने से क्या होगा॥

बसन्त०। आर्य मैं स्त्री को जात अब-ला हूं॥

विट। इसी से बची है॥

शकार। इसी से नहीं मारी गई॥

बसन्त०। आर्य आप लोग क्या मेरे गहनों को चाहते हो?

विट। नहीं २ कोमल लताओं की शोभा फूल तोड़ लेने योग्य नहीं होती हमें तुह्मारे गहनों से कुछ प्रयोजन नहीं है॥

बसन्त०। तो आप लोग क्या चाहते हैं॥

शकार। मैं देवपुरुष मनुष्य वासुदेव हूं मेरी इच्छा पूरी कर (कामियों के समान उस पर हाथ लपकाता है)

बसन्त० (क्रोध से पीछे को हटते) शान्तं शान्तं चल हट दूर हो मुए॥

शकार (हस कर ताली पीट) भाव यह जीसे मुझे चाहती है पर ऊपर से तुम लोगों के देखाने को नाज़ औ नखरा कर रही है देखो मुझ से कहती है कि आओ श्रान्त हो मैं न किसी दूसरे गांव में गया न नगर में थका केसे; प्यारी मैं विट के सिर को अपने पावों से छूकर शपथ करता हूं तेरे ही पीछे चलते चलते श्रान्त हो गया हूं॥

विट (स्वगत) यह निपट मूढ़ है शान्तं ऐसा कहने से श्रान्त ऐसा जानता है (प्रकाश) बसन्तसेने यह वेश्या जनों की रीति के विरुद्ध तूने कहा वेश्या जन तरुण मनुष्यों के आधीन होती हैं तू मार्ग जाता लता समान धनक्रीत इस शरीर को धारण किए वेश्या है इससे हे भद्रे प्रिय हो या अप्रिय तू दोनों का बराबर सेवन कर॥

श्लोक।

तरुणजनसहाय श्चिन्त्यतांवेशवासो। विगणयगणिकात्वं मार्गजातालतेव॥ वह सिद्धिधनहार्यं पण्यभूतंशरीरं। सममुपचरभद्रे सुप्रियंवाप्रियञ्च॥

जिस बावली में बुद्धिमान ब्राह्मण नहाता है उसी में एक मूर्ख महा नीच भी जिस फूली लता को मयूर अपने बैठने से झुका देता है उसी को कौआ भी जिस नाव पर ब्राह्मण क्षत्री वैश्य उतरते हैं उसी पर चढ़ इतर जन भी पार होते हैं तू बापी लता और नौका समान वेश्या है सबको बराबर समझ भज॥

श्लोक।

वाप्यांस्नाति विचक्षणोद्विजवरो मूर्खो-

ऽपियप्राधमः। कुलानाम्यतिवायसोपिहिस्रतां यानासितावर्हिणः॥ ब्रह्मचन्दविश्रस्तरग्निचयया नावातयैवेतरे। त्वं वापीव लतेवनौरिवजनं वेश्यासिसर्वंभज॥

वसन्त०। किसी के साथ स्नेह गुण देख कर होता है बलात्कार से नहीं॥

शकार। भाव यह गर्भ दासी उस दिन कामदेव पूजनोत्सव में नाचने गई थी वहां इसकी ताक झांक दरिद्र चारुदत्त से हो गई है इसी से मुझ से नहीं प्रीति करती सो बाएं हाथको ओर उस का घर है कुछ ऐसी जुगुत करो जिसमें सियार से डरवाई हरनी सो यह हमारे तुम्हारे हाथ से निकल न जाने पावे॥

विट (स्वगत) जिस बात को छिपाना चाहिए कि बाएं ओर चारुदत्त का घर है उसे यह मूर्ख आप ही बतलाए देता है क्या बसन्तसेना और चारुदत्त से प्रीति हो गई है? आहा रत्न ही में रत्न जा मिलता है अच्छा हो जो इस मूर्ख के हाथ से बसन्तसेना का छुटकारा हो जाय (प्रकाश) क्यों रे कुलटा पुत्र क्या बाएं ओर चारुदत्त का घर है?

शकार। हां और क्या॥

बसन्त० (स्वगत) क्या बाएं ओर उनका घर है यह तो इस दुष्ट ने बुराई करते घुणाक्षर न्याय से भलाई ही किया जो भूली हुई मुझे प्रीतम का घर बता दिया॥

शकार। भाव बड़ा अन्धकार है जैसे उर्द के ढेर में सुरमा पत्थर की बटिया छिप जाय वैसे ही बसन्तसेना देखते ही देखते गुप्त हो गई॥

विट। हां ठीक कहते हो बड़ा अँधेरा है जान पड़ता है मानो नेत्रों की दर्शन शक्ति हो नष्ट सी हो गई है देखने को आंख खोलता भी हूं पर मारे अँधियारे के ढपी सी जाती है॥

सोरठा। तमलीयत इव अङ्ग अञ्जन बर्षै मानु नभ। निष्फल नयन सुरङ्ग नीच पुरुष सेवन यथा॥

श्लोक॥

लिम्पतीवतमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनंनभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतांगता॥

शकार। भाव चलो बसन्तसेना को ढूंढ़ें॥

विट। अरे कुलटा पुत्र कोई चिन्ह है जिस्से उसे ढूंढ़ैगा॥

शकार। हां फूलों के माला जो वह पहिने है उसको गन्ध तो सुनता हूं पर अन्धकार पूरित नाक से उसके गहनों का शब्द नहीं सूंघता (सूंघने को बार बार चेष्टा करता है)

विट० (धीरे से) बसन्तसेना मेघ अन्ध में वर्तमान बिजली समान अंधियारे के कारण तू नहीं देख पड़ती परन्तु तेरे फूल के माला की सुगन्धि और शब्द क-रते तेरे नूपुर की झनकार तुझे बताय देती हैं ।

बसन्तसेना (मन में) सुना और मान भी लिया (नूपुर उतार और माला को दूर फेंक कुछ चल कर हाथ से टटोल) भीत के छूने से जान पड़ता है कि यह घर का [illegible] है पर बन्द है ॥

चारु० । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

विदू० । [illegible] ॥

चारु० । [illegible] [illegible] [illegible] मनुष्य कब दरिद्र हो जाता है तब कोई [illegible] भी [illegible] नहीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो जाते हैं [illegible] [illegible] है और [illegible] घट जाता है [illegible] [illegible] की [illegible] जाती है [illegible] [illegible] [illegible] काम किसी दू-सरे ने किया [illegible] भी [illegible] दरिद्र पर [illegible] [illegible] किया जाता है । न [illegible] कोई [illegible] करता है न आदर है [illegible] कोई [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] तुझे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लिखा है ॥

श्लोक ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

विदू० ([illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible])

चारु० । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]ट (धीरे से) बसन्तसेना मेघ मध्य में [illegible] समान बिजली समान अंधियारे के कारण तू नहीं देख पड़ती परन्तु तेरे फूल [illegible] माला की सुगन्धि और शब्द करते तेरे नूपुर की झनकार तुझे जताए देते हैं ॥

बसन्तसेना (मनमें) सुना और मान भी लिया (नूपुर उतार और माला को दूर फेंक कुछ चल कर हाथ से टटोल) भीत के छूने से जान पड़ता है कि यह घर का दरवाज़ा है पर बन्द है ॥

चारु० । मित्र जप समाप्त हो गया अब जाइए मातृगणों को चौराहे पर बलि दे आओ ॥

विदू० । मैं न जाऊंगा ॥

चारु० । हा धिक् प्रारब्ध दोष से मनुष्य जब दरिद्र हो जाता है तब कोई बंधु भाई भी उसका साथ नहीं देते परम स्नेही मित्र विमुख हो जाते हैं विपत्ति घनेरी होती है धीरज घट जाता है शील चन्द्रमा की कान्ति मैली पड़ जाती है जो चोरी आदि बुरा काम किसी दूसरे ने किया वह भी उसी दरिद्र पर निश्चय किया जाता है । न इसका कोई साथ करता है न आदर दे उससे कोई बोलता है साधारण मैला कपड़ा पहिने धनियों के पास बैठते संकुचाता है निश्चय दरिद्रता यह पञ्च महापातक के सिवा छठवां पातक है । दरिद्र मैं तेरा सोंच करता हूं कि तू मेरे शरीर में इतने दिनों तक बड़े मित्र भाव से टिका रहा मुझ मन्द भाग्य का देह जब न रहेगा तब तुझे कहां शरण मिलेगी इस की मुझे बड़ी चिन्ता है ॥

श्लोक ॥

दारिद्र्यात्पुरुषस्यबान्धवजनो वाक्येन सन्तिष्ठते । सुस्निग्धाविमुखीभवन्तिसुहृदः स्फारीभवन्त्यापदः ॥ सत्वंह्रासमुपैतिशीलशशिनः कान्तिःपरिम्लायते । पापंकर्मचयत्परैरपिकृतं तत्तस्यसम्भाव्यते ॥

सङ्गंनैवहिकश्चिदस्यकुरुते सम्भाष्यतेनादरात् सम्प्राप्तोगृहमुत्सवेषुधनिनां सावज्ञमालोक्यते ॥ दूरादेवमहाजनस्यविहरत्यल्पच्छदोलज्जया । मन्येनिर्धनताप्रकामम परं षष्ठंमहापातकम् ॥

दारिद्र्यशोचामिभवन्तमेव मस्मच्छरीरेसुहृदित्युषित्वा । विपन्नदेहेमयिमन्दभाग्ये ममेतिचिन्ताक्वगमिष्यसित्वम् ॥

विदू० (लज्जित हो) मित्र जो मुझे भेजते हो तो इस रदनिका दासी को भी मेरे साथ कर दीजिए ॥

चारु० । रदनिके मैत्रेय के साथ जा ॥

रदनिका। जो आज्ञा॥

विदू०। रदनिका तू दीपक और पूजा को समग्री लेले मैं द्वार खोलता हूं (द्वार खोलता है)

वसन्त०। द्वार तो खुल गया अब भीतर जाऊं (देख कर) क्या दीपक है (वस्त्र के आंचर से बुझा भीतर गई)

चारु०। मैत्रेय क्यों क्या हुआ?

विदू०। द्वार खोलने से हवा का झकोरा लगा इस्से दिया बुत गया रदनिका तू बाहर चल मैं भीतर के चौपाले से दिया बार आता हूं (भीतर गया)

शकार। आब बसन्तसेना को ढूंढ़ें॥

विट। ढूंढ़ ले॥

शकार (ढूंढ़ कर) आव पकड़ा २॥

विट। मूर्ख यह तो मैं हूं॥

शकार। तुम हो तो इधर खड़े हो (फिर ढूंढ़ता है पकड़ कर) आव पकड़ा पकड़ा॥

चेट। मालिक यह तो मैं अछित चेट॥

शकार। इधर आव इधर चेट अच्छा तो तुम दोनों इस ओर खड़े हो (फिर ढूंढ़ता है रदनिका को पकड़ कर) आव पकड़ा २ अब बसन्तसेना को पकड़ा॥

रदनिका (डर से) आर्य मित्र आप लोग यह क्या करते हैं॥

विट। अरे चांटी का, यह तो किसी दूसरे का शब्द है॥

शकार। नहीं २ दही भात का लोभी बिल्लार समान इसने स्वरपलट लिया है॥

विदूषक (आकर) होहो ओओ जैसा वध्य स्थान में ले जाते हुए पशु का कलेजा फुरफुराता है उसी तरह सांझ की हवा लगने से यह दिया फुरफुरा रहा है (आगे देख) यह क्यों सब लोग आर्य चारुदत्त के घर में घुसे आते हैं॥

रदनिका। आर्य मैत्रेय मुझे बचाइये ये सब न जानिए कौन हैं मेरी बेइज्जती कर रहे हैं॥

विदूषक। क्या तेरे साथ बलात्कार कर रहे हैं॥

रदनिका। और क्या दोहाई चारुदत्त की॥

विदूषक। ठहर ठहर, अपने घर में तो कुत्ता भी बली होता है क्या मैं पांच हाथ का सनसेटू कुछ न कर सकूंगा अपने भाग्य समान कुटिल इस सोटे से अभी मैं इन सबों का सिर चूर २ किए देता हूं॥

विट। महाब्राह्मण क्षमा कीजिए २॥

विदूषक (विट को देख) इनकी इस का कुछ अपराध नहीं जान पड़ता (शकार को देख) इसने अपराध किया है अरे रे राजश्यालक दुर्जन दुष्ट मनुष्य, यह उचित नहीं है, यद्यपि आर्य चारुदत्त दरिद्र हो गए हैं तौ भी क्या उनके गुणों से उज्जयिनी अलङ्कृत नहीं है, क्या तैं आर्य को दरिद्र समझ उनके नौकरों के साथ ऐसा बलात्कार कर रहा है ॥

विट। महाब्राह्मण क्षमा कीजिए क्षमा कीजिए और की शङ्का से इसने यह काम किया है, न घमण्ड से, यह किसी स्वकामा स्त्री को ढूंढ़ता है ॥

विदू॰ (रदनिका को देखाय) क्या इसे ॥

विट। नहीं २ किसी स्वाधीन यौवना को वह कहीं छिप गई है उसी के भ्रम से इसको यह शीलवञ्चना (वेइज्जती) की गई यह अपराध क्षमा कीजिए (पांव पर गिर पड़ा)

विदू॰। सत्पुरुष उठो उठो हम जानते हैं इस में तुम्हारा कुछ अपराध नहीं है ॥

विट। ब्राह्मणदेव कृपा कर यह वृत्तान्त आप आर्य चारुदत्त से न कहिएगा ॥

शकार। भाव इस दुष्ट ब्राह्मण के पांवों पर गिर तुम क्यों इतना गिड़गिड़ाए ॥

विट। डर से ॥

शकार। किस्से तुझे डर है?

विट। आर्य चारुदत्त के गुणों से ॥

शकार। दरिद्र मनुष्य में भला क्या गुण हो सक्ता है अभी उसके घर जाओ तो खाने को भी कुछ न मिलै ॥

विट। मूर्ख ऐसा न कह वे हम लोगों को देते देते दरिद्र हो गए हैं किसी अर्थी को उन्हों ने आज तक अपने यहां से बिमुख नहीं फेरा जैसा ग्रीष्म काल में सरोवर प्यासों को प्यास बुझाय आप सूख जाता है वैसा ही हम लोगों की धनतृष्णा दूर कर आप सूख गए ॥

शकार (ईर्षा से) वह दासीपुत्र कौन है शूर वीर अर्जुन या कर्ण या रावण या जयन्त या अश्वत्थामा या जटायु ॥

विट। मूर्ख वह आर्य चारुदत्त हैं — दीनन को कल्पतरु गुण फल नम्र महा सज्जन कुटुम्बो के पालक उदार हैं। गुण के परीक्षक सुशिक्षित के दर्पण रूप सुयश की कसौटी शील वेला अकूपार हैं ॥ सब को सन्मान करैं अवज्ञ नापमान कीन्हो ज्ञान के निधान पुरुष काम सुकुमार हैं। एक उज्जयिनी में कोवल सु

चारुदत्त और जन जग में सब बसुधा के भार हैं॥—सो हम तो अब यहां से जाते हैं॥

शकार। बसन्तसेना को बिना लिएही॥

विट। अरे मूर्ख वह तो छिप गई, जैसे अंधे पुरुष की दृष्टि सृष्टि बिनसात॥ जैसे रोगी पुरुष की देह पुष्टि बिलगात॥ अल्पबुद्धि व्यसनीन की जस विद्या छिप जात। तुम्हें पाय वैसे गई वह गणिका सर गात॥

शकार। तू जाता है तो जा मैं तो बसन्तसेना को बिना लिए किसी तरह न जाऊंगा॥

विट। अच्छा तू ठहर मैं जाता हूं (बाहर गया)

शकार। भाव चला गया (विदूषक की ओर) अरे धूर्त शिरोमणि दुष्ट बटुक बैठ बैठ॥

विदू॰ मुझको बिठला ही दिया है॥

शकार। किसने?

विदू॰। दैव ने॥

शकार। उठ उठ॥

विदू॰। उठूंगा॥

शकार। कब?

विदू॰। जब फिर दैव अनुकूल होगा॥

शकार। अरे रो रो॥

विदू॰। रुलाया है हम को॥

शकार। किसने?

विदू॰। दुर्गति ने॥

शकार। अरे हँस हँस॥

विदू॰। हसूंगा॥

शकार। कब?

विदू॰। जब फिर चारुदत्त की संपत्ति होगी॥

शकार। अरे दुष्ट बटुक मेरी ओर से उस दरिद्र चारुदत्त से कहना कि बसन्तसेना नए नाटक की नटी समान उस दिन जब हम और तुम दोनों कामदेव की पूजा के उत्सव में गए थे तब से तुझ पर आसक्त हो गई है हम लोगों ने बहुत कुछ बलात्कार किया और समझाया भी पर तेरे घर में चली आई है सो तू उसे मेरे पास भेज देगा तो राजद्वार में बिना नालिश फरियाद किए मेरी और तेरी प्रीति बनी रहेगी नहीं तो यावज्जीव का वैर होगा; खबरदार जैसा मैं कहता हूं वैसा ही जा कर कहना नहीं तो कैथा समान तेरे सिर को चूर चूर कर डालूंगा॥

विदू॰। सब कहूंगा॥

शकार (उसे रोक) ठहर २ चेट क्या सचमुच भाव चला गया॥

चेट। हां गङ्गलैन् ॥

शकार। तो फिर चल हम भी जल्दी भाग चलें (दोनों गए) शेषभागे।

प्रेरित।

इन लोगों के समझ की कचाहट और विचारशीलता का अभाव॥

इस समय के हिंदुस्तानी और अङ्गरेज़ी पढ़े लोगों में एक प्रकार का Prejudice कुसंस्कार ऐसा बद्धमूल हो रहा है जिस के कारण ये लोग अपने देश और यहां के रहने वालों को सब से श्रेष्ठ माने बैठे हैं ऐसे लोगों का यह हठ है कि भारत निवासी बहुत अच्छे सब विद्याओं में निपुण और बड़े योग्य हैं हिंदुस्तान की दशा किसी प्राचीन समय में बहुत अच्छी थी लोग यहां के बुद्धिमान सभ्य और वीरता में भी किसी से कम नहीं होते थे संसार की यावत् विद्या का अंकुर यहां ही से हुआ जितनी इन दिनों की यूरप वालों की शिल्पचातुरी और कलाकौशल की बनावट और सुघराहट है सब यहां विद्यमान थी राज्य शासन प्रणाली जहाज चलाना विज्ञान दर्शन चिकित्सा रसायन विद्या रण प्रवीणता इत्यादि किसी बात में यहां के लोग कम न थे यही कारण है कि यूरप की वर्तमान समय की विद्या वृद्धि के खोजने और अपने लोगों में उसे यहां लाकर प्रचार करने में लज्जा की बात समझ बाहर नहीं निकला चाहते और भांत भांत की जात पांत खान पान की कैद लगा रख छोड़ा है बरन उनकी यही चेष्टा रहती है कि उन सब सभ्यता की चरम सीमा को पहुंची हुई बातों का trace सुराख और पता अपने शास्त्रों के पुराने ग्रंथों में लगाय उन्हें सिद्ध और साबित कर दें और बिना कहीं बाहर गए आए और बिना बहुत सी जांफिशानी और श्रम के घर बैठे महन्त बने रहें इसी को वे हिंदू मत का कर्तव्य कर्म और और अपने मुल्क की मोहब्बत समझे हुए हैं जिसका फल यह हुआ कि अङ्गरेजी पढ़ने वालों में इन दिनों दो तड़ हो गई है॥

एक वे जो पुरानी चाल और रीत बर्ताव को चाहे वे कैसी ही बुरी या भली हों पसन्द करते हैं उनमें कुछ बनावट या सुघराहट करने को आर्य्य धर्म के विरुद्ध मानते हैं प्रतिदिन के प्रयोजन की वस्तुओं को सुधारने या पोशाक आदि बदलने ही को मत बदलने

का चिन्ह समझते हैं चाहो उनके यहां की रीति व्यवहार चाल चलन कैसा ही बुरे और घट के हों और विदेशी लोग उन पर हँसते हों उनको मूर्ख असभ्य अर्द्धशिक्षित कहते हों और विचार कर देखो तो मत और धर्म जो वस्तु है उससे उन रीत व्यवहारों का किञ्चिन्मात्र सम्बन्ध भी चाहो न हो पर ये चिंउटे की भांति उसी दिशा को परम्परा की लकीर पर फकीर हो चले हो जायगे उन्ही सब बातों में हिंदूपन घुसा हुआ मानते हैं नई सभ्यता की उत्तम बातों को कभी न प्रचलित करने देंगे न उनके गुण दोषों को विचारेंगे सारांश यह कि इसी परिवर्तन विमुखता ने उन्हें आगे बढ़ने और सुधरने से रोका उन्हे स्थिर stationary कर रक्खा ॥

दूसरे दल के वे हैं जो पुरानी बातों चालों और व्यवहारों को जो निस्सन्देह बुरा और घिनौना है दुरुस्त किया चाहते हैं उन विद्या और कारीगरियों को जो हमारे पुरखों को स्वप्न में भी मयस्सर न थी अपने यहां कायम और जारी किया चाहते हैं बिगड़ी बातों को सुधारने में मत से कुछ सम्बन्ध नहीं समझते जो विद्या और शिल्पचातुरी में हम लोग विदेशियों से कम हैं उसे न्याय और सच समझ स्वीकार कर लेते हैं; खाहमखाह उन चीजों का भारतवर्ष में होना आर्यों की पुरानी पुस्तकों से नहीं स्थापित करते वस्त्र आदि के फैशन बदलने को धर्म का बदल जाना नहीं विचारते कांटा चम्मच से खाने चश्मा लगाने बूट पहिनने रूमाल से नाक पोंछ जेब में रख लेने लवेण्डर वाटरों में पीतमें सोडावाटर पीने वाले हिंदुस्तानियों से उनको घृणा वा विद्वेष नहीं हो जाता वरन सच्चे मन से भारत के शुभचिन्तक हैं हिंदुस्तानी मात्र की बेइज्जती और उन पर किसी तरह की सख़्ती या अन्याय अपनीही हतक इज्जत और दुर्गति मानते हैं महाराजामल्हार रावके गद्दीसे उतारे जानेका दुःख और प्रेसएक्ट में लार्ड लिटन की हाईकोर्ट और लोकल गवर्नमेण्ट पर झिड़की के सुख दुख का असर जो इस श्रेणी के लोगों के चित्त पर हुआ है उसका शतांश भी पहिली समाज वालों को कभी न हुआ होगा ॥

इन दो तड़ों में किसकी राय ठीक है यह हम कुछ नहीं कह सके पाठक जन स्वयं विचार लें; प्रथम श्रेणी के

लोग "किमिसट्री" रसायन विज्ञान और "मेडिकल साएन्स" अर्थात् डाक्टरी की इतनी वृद्धि देख कहते हैं कि यह सब प्राचीन समय में हमारे यहां मौजूद था और आर्यों ने इससे बढ़कर इसमें खोज और तरक्की किया था जो सब ग्रंथ अब लुप्त हो गए हैं स्पिरिचुअलिज़्म और मिसमेरिज़्म को देख इन्हें पूरा विश्वास हो जाता है कि हम लोगों के तन्त्र और टोटके यही चीज़ हैं इतिहास और भूगोल भारतखण्ड क्या पृथ्वी भर का महाभारत में मौजूद है रेल औ तार से बढ़ कर पुष्पक विमान था अलबत्ते चलते चलते पुरानी थकावट के कारण अब देवलोक में विश्राम कर रहा है या हम लोगों की नालायकी और अभाग्य से नीचे न उतरता हो अथवा यूरोपीय विद्वानों की अत्युत्कृष्ट बुद्धि का फल स्वरूप रेल और जहाज़ के सामने अपने को तुच्छ जान मारे लज्जा के छिप रहा है; इन लोगों के विचार के अनुसार हम लोगों के मनु और मिताक्षरा का धर्मशास्त्र हाल के कानून से बहुत अच्छा था और निर्लज्ज हो यह भी कह डालते हैं कि उस समय में न्याय भी (Administration of justice) अब के अपेक्षा अच्छा और प्रशंसनीय होता था एक बड़े योग्य महाशय ने काशीपत्रिका में यह सिद्धान्त किया है कि बाल्मीकि रामायण में जो शतघ्नी का शब्द आया है उससे यह जान पड़ता है कि लड़ाई के युद्ध में आग निकलने वाले शस्त्र (Something like modern European guns अर्थात् तोप और गोला बारूद आदि के किस्म के शस्त्र उस समय आर्यों में प्रचलित थे; हमारे स्वामी जी दयानन्द और भी वे पर की उड़ाते हैं वेद में कहीं "तदतरं" यह वाक्य आ गया बस तार चलाने की विद्या स्वामी जी की बपौती हो गई अथवा शब्द आया कहीं "अश्विपथे" इस धातु के बल प्रताप से बेलून विमान रेल धुएं की कल आदि जितनी वेग गामी सवारियां और कलें हैं सब इन आर्यों के पुरखों को हो गईं कहां तक गिनावें अभी दो एक वर्ष की ईजाद टेलिफोन औ एलिक्ट्रिक लाइट भी वेद से सिद्ध है ईश्वर करे स्वामी जी अजर अमर हो सदा जीते रहैं जिसमें यूरोप अमरिका वालों की बुद्धि जो नई नई ईजाद करती जाय स्वामी जी उसे वेद से सिद्ध करते जांय सारांश यह कि विज्ञान पदार्थ विद्या

रसायन विद्या geology भू गर्भ विद्या botany हवायुर्वेद mechanics कल की विद्या और जितनी यूरोप के चमत्कारी माडरन साएन्स हैं सब प्राचीन आर्यों के रोम रोम में भरे थे ; हम लोग पहिले बहुत अच्छे थे हम नहीं जानते इस कहने से अब क्या लाभ है कितने लोग इसी समझ में मस्त फिरते हैं कि हमारे दादा परदादा बहुत अच्छे बड़े बुद्धिमान और विद्वान थे वही मसल कि 'बाप ने घी खाया हमारा हाथ सूंघ लो'

این جوہر ذات از شرف نست آباست
سود امت باباین قراگرچہ شیریم را *

اما فبوہ وصف اضافی ہر ذات
این فتوی ہمت بودار باب ہم را *

इसी से विदेशियों के बुद्धि वैभव को तुच्छ समझते हैं जिसका परिणाम यह हुआ कि हम लोगों में विद्या की वृद्धि स्थिर stationary रह गई दो चार विद्वान अङ्गरेज़ जो इनके काव्य नाटक और व्याकरण की थोड़ी सी तारीफ कर दी तो ये और भी फूल उठे कि बस जो कुछ हैं सो हमी हैं यूरप हेच और तुच्छ है ; वाह हम इनको बराबरी भला क्या कर सक्ते हैं "चे निसबत खाकराब आलमे पाक" संख के कुल में एक कोई पाञ्चजन्य हो गए बाकी सब तो डपोरसंख भरे हैं एक कोई कालिदास सरीखे विद्वान और विक्रम सरीखे प्रतापी हो गए तो मारे घमण्ड के फूल उठे ; वही इङ्गलैण्ड है जहां गली गली एक एक ठिकुरी विक्रम और कालिदास बनने का दावा बांधे हुए हैं ; पुराने जमाने के लोगों की योग्यता और विद्याओं को याद दिला कर हाल के हिंदू अपनी प्रतिष्ठा और न्यूनता पूरी करते हैं वास्तव में खुद कोई लायक नहीं हैं ; हम आशा बद्ध हो बड़ी खुशी के साथ उस दिन की प्रत्याशा कर रहे हैं कि कब हिंदुस्तानियों को इसका ख्याल हो और 'थी थी थो' को सब छोड़ 'है है है' के साथ बदल जाय तब उनका घमण्ड अलबत्ता उचित और यथार्थ होगा ॥

जी० पी०

गजल।

अहल यूरप पूरा जेंटिलमेन कहलाता है हम। बाबू न कहला फिर कभी मिस्टर कहा जाता है हम ॥ कोट पतलून बूट पहने टोपरी सिर पर धरे।

साथ में कुत्ते को ले कर सैर को जाता है हम ॥ गङ्गा नहाना पूजा जप तप छोड़ा यह पाखण्ड सब । घूरने मेमों को गिरजा घर में नित जाता है हम ॥ हम इयानतदार अपने कौम में मशहूर है । सैकड़ों लोगों से चन्दा ले के खा जाता है हम ॥ खाना पीना हिन्दुओं का सुझ को खुश आता नहीं । चौक कांटे चमचा से होटल में जा खाता है हम ॥ भांग गांजा चर्स चंडू घर में छिप छिप पीते थे । अब तो वे खटके हमेशा बदन डर जाता है हम ॥

अफ़गानिस्तान ।

अफ़गानिस्तान फतह हो गया वह बात जो कभी होने वाली न थी सो हुई लार्ड लिटन की क्षिप्रकारिता और बिना पहिले से सोच समझ सहसा किसी काम को कर गुज़रने की जो 'पालिसी' नीति है उसका फल यह हुआ कि हम लोग लड़ाई होने के पहले से भी अब बुरे रहे २० करोड़ रुपया लार्ड लिटन साहब के अर्पण हुआ जिनकी ज़ात खास से इस बखेड़े की बुनियाद पड़ी ; लिटन साहब को कदाचित् यह समझ थी कि काबुल फतह हो जायगा तो हमारा "एम्बेसी" राज प्रतिनिधि वहां रहा करेगा और इस द्वारे से रूस का सब हाल मालूम हुआ करेगा अन्त को एक दिन संपूर्ण काबुल अङ्गरेज़ी राज्य के अधिकार में आ जायगा और इतिहासों में हमारा नाम भी क्लाईव और हेस्टिङ्ग के समान अन्य देशों में ब्रिटिश साम्राज्य की नेव डालने वालों में गिना जायगा सो सब सपने की सी बात हो गई न काबुल फतह हुआ न एम्बेसी वहां रहा न रूस ही का कुछ हाल अब मिलेगा जो एक "नेटिव इन-वाय" यहां का एक हिन्दुस्तानी मनुष्य राज प्रतिनिधि होकर काबुल में रहता था सो भी अब नहीं है ॥

इस काबुलीय युद्ध के बारे में जो जो बेवकूफियां हुईं उन्हे हम कहां तक गिनावें पहली बेवकूफी हुई कि वे शेरअली को सलाह के मिशन भेजा गया दूसरी बेवकूफी केवेगनरी का वहां अकेले छोड़ देना था और सब से भारी बेवकूफी यह हुई कि याकूब खां कैद कर यहां भेजे गए य[illegible] इसी बेवकूफी के बर्ताव का परिणाम हुआ कि बिना सुलह किए वहां से लौट आना पड़ा सच है "आदौतावदहं मूर्खो द्वितीयःपाशबन्धकः । ततोराजाच मन्त्रीच सर्वंवैमूर्खमण्डलम्" अगर इसी

याकूब खां को फिर काबुल में बैठलाय और इनकाय राज प्रतिनिधि के साथ थोड़ी बहुत फौज कर चले आते तो सब झगड़ा वहीं का वहीं ते रहता खर्च भी बहुत कम पड़ता और होते होआते कभी को एक न एक दिन काबुल अवश्य ब्रिटिश राज्य में मिल जाता फिर Might is right ज़बरदस्त का ठेंगा सिर पर यह बात भी देखने में आई याकूब जो कमज़ोर और भाग्यहीन था उसे तो कैद में रहना पड़ा और अबदुल रहमान से कुछ न बस चला लार्ड लिटन साहब को उसे काबुल का अमीर करते ही बना बल्कि याकूब के पेनशन का खर्च और भी हिन्दुस्तान की गवर्नमेण्ट के जिम्मे हुआ अन्त को कन्दहार एक दूसरे को दे चलते चलाते अपने को पूर्ण काम समझ लिया था सो अयूब खां ने सब कामयाबी Success धूर में मिला दिया अब हाल में जेनरल राबर्ट ने सुना है कि कन्दहार फिर फतह कर लिया है यदि अब कोई दुर्घटना न हो पड़े॥

निज सम्मति।

हमारे पास कलकत्ते से किसी महाशय ने एक लेख भेजा है जिसमें लेखक महाशय ने अपना नाम नहीं दिया यह लेख शैतान की आंत सा बड़ा लंबा चौड़ा और अत्यन्त निरस है इस कारण उसे हम नहीं छाप सके किन्तु उस लेख का तात्पर्य्य यह है कि वहां एक ऐसी सभा स्थापित की गई है जिसका यही तात्पर्य है कि जैसे हो सके विधवा विवाह प्रचलित हो संपूर्ण उन्नति की नाका उन लोगोंने इसी को समझा है; हमारी समझ में विधवा विवाह से लाभ तो जो कुछ है सो हई है पर हानि लाभ की दोगुनी है पहले हम उस बुरे दस्तूर के उठाने का यत्न क्यों न करें जो विधवा हो जाने का मूल है यह क्या कि जो कोढ़ देह में हो गया है उसके साफ करने को तो कुछ उपाय न करें उसमें खाज और पैदा कर दें वह कोढ़ बाल्यविवाह है उसे हमारे धनी या सुशिक्षित कोई नहीं उठाया चाहते क्यों उठावें जो की द्रव्य धन का उन्माद बेवकूफी और नालायकी की पहचान कोरा हिन्दुस्तानीपन फिर किस तरह प्रगट हो जिस्से बल वीर्य सत्व सब का ह्रास धैर्य साहस और भावी भलाई सब रुकी हुई है विधवा विवाह तो मानो व्यभिचार के वृक्ष की जड़ का सींचना और एकबारगी प्रचलित प्रणाली का

उलट देना है ; इन दिनों की सभ्य मण्डली विधवा विवाह, स्त्री स्वतन्त्रता, स्त्री शिक्षा, और बाल्यविवाह इन चार बातों में पहिली दो बातों को दिलो जान चाहती है क्योंकि इनके किसी तरह प्रचलित हो जाने से अङ्गरेज़ों की पूरी नकल हो सक्ती है फायदा तो जो कुछ इस्से है वह केवल राम का नाम है पर दो पिछली बातें जो सर्व सम्मत और देशकाल शास्त्र सर्वथा विपरीत नहीं है पर इसमें अङ्गरेज़ी पन कुछ कम झलकता है इस्से इसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता फिर बाल विधवा कभी दस बीस घरों में कोई दो एक कभी को हो जाती हैं बाल्यविवाह वाली बाला महा दुर्भगा विधवा की भी चची तो घर घर बैठी खाक रही हैं अच्छे २ कुलीनों के घर में भी जौन २ दुर्गति इन बालाओं के बाल्यविवाह के कारण प्रतिदिन देखने में आ रही है उस्का वर्णन परम अश्लील हो जाने की डर से हम बरकाया चाहते हैं सो हमारी सम्मति यदि कोई ले तो हम यही कहेंगे कि इन प्रति दिन की विधवाओं का यत्न पहले हो जाय तो वे आकस्मिक विधवाएं कभी हुआ ही न करें॥

हिन्दी की बेल बढ़ती जाती है।

बड़े आनन्द का विषय है कि हिन्दी की बेल बढ़ती ही जाती है हाल में अपार गुणागार न्यायाधार श्रीमान् सर ऐसली ईडिन साहब बङ्गाल के लफ्टिनेण्ट गवर्नर ने यवनों का मुख मर्दन कर बिहार में हिन्दी को चिरस्थायिनी करी दिया है जिस्का तात्कालिक फल वहां के राजा प्रजा दोनों को प्राप्त हुआ कि ऐसे घोर अवर्षण के समय में जब कि हम लोग यहां विन्दुमात्र जल के लिए तरस रहे हैं बिहार में संपूर्ण जलामयी होरहा है पाठक जन देखिए पूज्य पूजा व्यतिक्रम न होने का कैसा तत्क्षण फल मिला वही हम लोगों में जो पूज्य पूजा का व्यतिक्रम हो रहा है उसका कैसा परिणाम भोग रहे हैं कि रोग शोक आधि व्याधि अवर्षण आदि उत्पात इन जिलों का पिण्ड ही नहीं छोड़ा चाहते सच है "अपूज्या यत्रपूज्यन्ते पूज्यपूजाव्यतिक्रमः। त्रीणितत्रभविष्यन्ति दारिद्र्यंमरणंभयम्" अब हमारे श्रीमान महेन्द्र महाराज पन्ना नगराधिपति ने भी अपने राज्य भर में हिंदी के प्रचार की दृढ़ आज्ञा दे दी है यद्यपि तत्रस्थ राज कर्मचारी यवन कामदारों ने उर्दू बनी रहने के लिए बहुत कुछ

सिर पीटा परन्तु श्री महेन्द्र महाराज ने न्यायकारियों अपनी विमलबुद्धि को काम में लाय उन दुष्ट यवन कर्मचारियों की एक भी न सुना और अपने न्याय में दृढ़ रहे इस उत्तम कर्म का महाराज को भी शीघ्र ही कोई बहुत अच्छा फल मिलेगा जैसा बिहार वालों को मिला है ऐसी आशा हम करते हैं यद्यपि काश्मीर जंबू सेन्धिया हुल्कर राणा राठौर बड़े २ पड़े हैं पर हमें क्या ताड़ बड़ा लम्बा पेड़ होता है उस्से एक चिड़िया को भी छांह नहीं मिलता हम सरीखे दीनहीन श्रान्त पथिकों को तो यही महाराज अब छाया दाता और कामधुक् हैं "क्लिन्नेहे-मगिरिणारजताद्रिणाश्च यनाश्रिताहित-रवस्तरवस्तएव । मन्यामहेमलयमेवयदा श्रितानि शाखोटनिम्बकुटजान्यपिचन्दना नि" ॥

[illegible] प्राप्ति।

'भक्ति कोष' अर्थात वैदिक पौराणिक साहित्य संगीत [illegible] चिकित्सा शास्त्र [illegible] शिल्पशास्त्र [illegible]तिष कर्मकाण्ड प्राचीन भूगोल इतिहास प्रसिद्ध पुरुषों का संक्षिप्त जीवनचरित्र विषयक अभिधान बङ्गाक्षर और बङ्ग भाषा में श्री राजकृष्ण राय और श्री शरच्चन्द्र देव कर्तृक संगृहीत प्रथम खण्ड लिये लेना हो नं० ३८ मुक्ताराम बाबू की गली चीत्पुर बाजार कलकत्ता में बाबू शरच्चन्द्र देव को लिखें॥

इश्तिहार।

यह इश्तिहार हमें गवर्नमेण्ट रिपोर्टर से प्राप्त हुआ है।

किताबी सरक्युलर नम्बरी २२ मौरखे २० अक्तूबर सन १८६९ ई० यानी जो सरक्युलरात हिस्से औवल सफ़हा ९८ मद १ में मौजूद है उनके सिलसिले में मुमालिक मगरबी व शिमाली की सदर बोर्ड के हुक्म गवर्नमेण्ट की मञ्जूरी से यह हिदायत फर्माते हैं कि आराज़ी मालगुज़ार जिस पर ऐसे दरख़्तों का बाग हो जिनकी लकड़ी मकान वगैरह बनाने के काम में आती है और जो ६ साल से कम मुद्दत के न हों बन्दोबस्त मौजूदा की मीआद तक क़ायम रखने का इक़रार करे॥

(२) साहब कलक्टर को इख्तियार है कि वह इस सरक्युलर के मुताबिक किसी ऐसी आराज़ी की निस्बत सरकारी जमा की मुआफ़ी का हुक्म देवें लेकिन फ़ौरन इसकी रिपोर्ट साहिब कमिश्नर के ज़रिए बोर्ड में भेजें॥

(३) सब आराज़ी पर जो इन क़ाइदों के मुताबिक मालगुज़ारी की तशखीस से बरी कर दी गई हो दरख़्तों के कट जाने पर फ़ौरन जमा लगाई जावेगी॥

द० जे० एस० मेकिण्टाय० सेक्रेटरी॥

अग्रिम मूल्य	…	…	…	२॥)
पश्चात् देने से	…	…	…	४॥)
एक कापी का	…	…	…	।)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDI PRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Nov. 1880. [Vol. IV. No. 3.]

प्रयाग कातिक कृष्ण १४ सं० १९३७ [जि० ४ संख्या ३]

पुस्तक प्राप्ति।

श्रीमन्महाराणा उदयपराधीश के सेक्रेटरी जानी मुकुन्दलाल रचित "गणित शिरोमणि" नाम गणित की पुस्तक हम धन्यबाद पूर्वक स्वीकार करते हैं हमारी समझ में गणित प्रकाश आदि पाटीगणित की पुस्तकों से विद्यार्थियों को यह विशेष लाभदायक है बारनर्डस्मिथ की अरिथमेटिक के सवालों का भी इसमें संग्रह कर दिया गया है गणित के विद्यार्थियों को चाहिए कि इसे भी अपने पास रक्खें मूल्य ।) बिना पोस्टेज के॥

नाटक प्रकाश।

नम्बर १ से ६ तक इसमें शेक्सपियर के नाटक तथा नावेलों की छाया लेकर अपूर्व रचना सङ्कलित नाटक और उप-

न्यास छापे जाते हैं अब तक इसमें भ्रमजालक और प्रपञ्चनाटक ये दो रूपक और चित्रकला और विवेकरामका नूतन चरित्र नामक उपन्यास के थोड़े २ भाग छपे हैं यह सब बाबू रतनचन्द वकील हाईकोर्ट की रचनाएं हैं और यहां ज्ञानरत्नाकर यन्त्रालय में मुनशी इमदादअली के प्रबन्ध से छपता है हमारे ग्राहकों में से बहुत से लोग नए नाटकों के लिए व्युधा हमें लिख चुके हैं उनके लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी होगी मूल्य फी नं. ।)

एक जोड़ अँगूठी A pair of rings उपन्यास योगेश्वरराम भट्ट कर्तृक बङ्गभाषा से अनुवादित भाषा इसकी खड़ी बोली उर्दू है किस्सा निस्सन्देह बड़ा मनोहर है और विहारबन्धु प्रेस बांकीपुर में छप कर प्रकाशित हुआ है दाम ॥)

नाट्य पत्र।

यह १२ पृष्ठ में प्रतिमास केशवराम पंड्या के प्रबन्ध से लखनऊ में छपता है इसके बारे में मुझे और कुछ कहना नहीं है केवल इतनाही कि यह नाटक वा उपन्यास जो एक बार किसी पत्र में प्रकाशित हो चुका उस्की पुनः पिष्ट पेषण से क्या लाभ है; संपादक महाशय को उचित था कि कोई नई कल्पना कर नाटक वा उपन्यास को ही प्रकाश करते एक तो यह अनुवाद उसे भी एक बार छप चुका "रघुरपिकाव्यं तदपि चपाठ्य" अस्तु जो हो आनन्द का विषय है कि लखनऊ ऐसे यावनिक नगर में भी नागरी ने यत् किञ्चित स्थान पाया यही सही।

उचित वक्ता।

यह उत्तमोत्तम विषयों से पूर्ण एक साप्ताहिक समाचार पत्र कलकत्ता नगर से प्रकाशित होता है सम्पादक महाशय को चाहिए कि भाषा इसकी तनिक और सरल कर दें जिससे सर्व साधारण की समझ में अच्छी तरह आ सके हिन्दी के एक नए बन्धु के जन्मका हमें बड़ा हर्ष है।

एक एक बेहूदगी सब के पीछे लगी है।

चाहे कोई कैसाही विमल बुद्धि और सर्व विद्या सम्पन्न हो पर एक २ बेहूदगी का पुछल्ला जरूर उस्के पीछे लगा रहैगा अपने जी से माने बैठे हैं कि हम बुद्धि के महा सागर सच्चरित्र और सर्व जन हितैषी हैं इस लिए बुद्धिका अजीरन जो हो गया तो यह बेहूदापन गांठ बांध लिया कि एडिटर बन पर उपदेश कुशल

हो अपने हिन्दुस्तानी भाइयों का सब भद्दापन दूर कर इन्हें कुन्दन सा निखालिस और चमकीला कर दें "प्रांशुलभ्ये फलेलोभा दुदाहुरिववामन:"। हमारे स्वामी जी दयानन्द सकल वेद वेदाङ्ग के पारङ्गत और संस्कृत में एकता हुए भी उन्हें यह बेढङ्गी और हवन्नक पन सूझा कि नए नबी बन कर पुरानी सब रीतों को उलट पुलट अपना नया शाका चलावें; विद्या और बुद्धि वैभव में साक्षात् वाचस्पति के भी बाबा हमारे युवक जो निस्सन्देह देश की भावी भलाई के अङ्कुर रूप हैं जिनका नया जोश नई तालीम नई रोशनी नया उमङ्ग सब मिल एक ऐसी नई बेढङ्गी उनमे पैदा कर दिया जिस्से पुराने खयाल के लोगों की गन्ध भी अब उन्हे नहीं पोसाती; इधर इन पुरानों को भी चाहता था कि दरीना बुजुर्ग और बहु दर्शी थे इन नयों को कदर करते सो उनके बजबजाते हुए सड़े दिमाग में जिसको याद करते घिन और उकलाई आती है इन नयों की नई रोशनी धसनेही नहीं पाती क्यों कर उन का अन्धकार दूर हो सक्ता है; जनम का कोढ़ साफ होते २ कहीं होगा आजही कैसे दूर हो; इन नए और पुरानों को बेढङ्गीयों का फल यह हुआ कि इन दिनों हमारी हिन्दू समाज डामाडोल में पड़ नोका समान बीच धार में डूब रही है—हरहटों की लड़ाई में कपिला का विनाश—वर्तमान गवर्नमेण्ट इङ्गलीशिया बड़ी न्यायशील उदार और परम सभ्य हैं पर जाति पक्षपात की बेढङ्गी का पुछल्ला उसमे भी लगा है और सदा इस बात की चौकसी रहती है कि हिन्दुस्तानी उभड़ने न पावे; हमारे राजाओं में बेढङ्गी बड़ी लम्बी चौड़ी फूला है महाराज रीवां दस हजार गुड़िया का माला जपते थे और अब भी हमारे आस पास दो एक बूढ़े खोड़े अभी मौजूद हैं जिनको सायं संध्या प्रात: काल होती है और प्रात: संध्या सांझ को; सरकार के राजकीय प्रबन्ध और मुल्की इन्तिजाम सब ठीक २ और सराहने योग्य हैं जो कुछ बेढङ्गी उनमे से छटते छटते एकट्ठी हुई वह सब मुजस्सिम हो पुलीस सिसटेम बन गई; ऐसा ही ईश्वर की सृष्टि रचना की कारीगरी में जो कुछ कूड़ा करकट भद्दापन अलग होता गया वह सब embodied आकृतिमान् हो इस देश के डिस्ट्रिकट सेठ साहूकार हुण्डीवाले महाजन की शकल बन गया;

इन ब्राह्मणों में बड़ी भारी बेहूदगी द-रिद्रा की माया वे शूद्रों के सामने हाथ पसारना है वह नहीं जानते " नित्यंप्रसारितकर: करोति सूर्योपि सन्तापम् " अच्छा किसी कवि ने कहा है " नित्यं प्रसारितकरो दक्षिणाशा प्रसाधक: । न केवलमेनैव दिवसोपि तनूकृत: " हम ने खूब जांच अनुभव पूर्वक इस बात को देख लिया है कि जब तक इनको कर के नीचे कर रखने की आदत न छूटेगी और इन्हें इसी तरह सदा वे इनी हुने सनमानता मिलता जायगा तब तक ये कभी न चेतेंगे; सब लोग देशोन्नति के लिए खूब पीट रहे हैं किसी का किया कुछ नहीं होता ब्राह्मण लोग जिस दिन निद्रा का विसर्जन कर परशुराम समान चैतन्य हो उठेंगे उसी दिन देश का दुख दरिद्र तत्काल दूर हो सक्ता है सो काहे को कभी होना है जब तक इस बेहूदगी से इनका पिण्ड नहीं छूटता; कहां तक गिनावें इस बेहूदगी ने तो देव तक को नहीं छोड़ा भला इसे कौन अजरदारी का काम कहैगा कि कहीं तो ऐसा मुशलधार पानी बरसै कि पहाड़ फट २ गिर पड़ें और सैकड़ों मनुष्य इसकर संयमिनी पुरी के पाहुने बन जांय कहीं कसम खाने को भी बरसात भर बूंद धरती पर न आवै सवेरे ही से बारहो आदित्य एक ही जो आंख फाड़ फाड़ २ एक टक चितौने लगे तो दो महीनों तक पलक भी न भांजा छषि सब ठांव ही चटपटा कर रह गई गल्ले के रोजगारियों का पेट मारे खुशी के फूल नगाड़ा हो गया "कश्चित्दोषोगुणायते " देव की बेहूदगी भी इनके लिए पारस हो गई " किसी को बैंगन बायले किसी को बैंगन पथ्य " वाला मसला ठीक उतरा ॥

हिन्दी हिन्दी हिन्दी !
नागरी नागरी नागरी ! !

हे नागरिक जनों हे ग्राम वासियो हिन्दी हिन्दी नागरी नागरी कहि के क्यों प्राण खाते हो हमने हिन्दीप्रदीप नाम क्या रक्खा अपनी लेखनी को बड़े संकट में डाला तुम लोग जानते नहीं भूखा बंगाली भात भात करै; तुम यही समझते हो कि समाचार पत्रों में जो निवेदन लिखा जायगा उसे सर्कार देखैगी सुनैगी विचार करैगी तनक आप भी तो सोचिये कि सर्कार के दोहो तो कान उधरे और पुकारने वाले हजारों लाखों

भला किसको किसको सुनै जो आप सब के जिज्ञासानुसार हमारी सर्कार राजा पृथु के समान एक ही काल में सहस्र बातों को धारण शक्ति सम्पन्न हो जाय तो भी नहीं पूरा पड़ेगा क्या आप लोग यह नहीं जानते कि हम लोग चिल्लाते चिल्लाते थक पड़े और इलाहाबाद की इन्स्टीच्यूट बुड्ढी हो गई यदि वे कागज पत्र निकाले जांय जिन पर अयुतावधि जनों से भी अधिक के हस्ताक्षर सुशोभित हैं तो वे भी ब्रह्माण्डपुराण का एक खण्ड जान पड़ें; हे पश्चिमोत्तर देशवासी भाइयो हम जानते हैं कि आप लोग सच्चे राजभक्त और श्रीमहारानी के कृपापात्र हैं और न आप घोड़ा मांगते हैं न हाथी मांगते हैं न किसी देश पर स्वतन्त्र राज्य चाहते हैं और न आप की यह प्रार्थना है कि गवर्नमेण्ट अपना अपरिमित कोष आप को सौंप दे आप लोग तो केवल इतनी बात चाहते हैं कि प्रजा के लाभ जो कागज सर्कार से निकले वह नागरी अक्षर में हो और हार जीत की डिगरी या फैसला जो कुछ हो सो ऐसे अक्षरों में लिखा जाय जिसे आप घर बैठे पढ़ लिया करें मुंशी या मोलवी ढूंढने की ज़रूरत जाती रहे बात नि:-संदेह कही जा सकती है कि जिससे तन में एक तिल मात्र व्यय होगा यह तुम्हारी प्रार्थना को अनुचित न कहेगा और न इसमें सर्कार का बड़ा खर्च है न अगले बादशाहों के साथ कोई ऐसी प्रतिज्ञा हुई है कि जरूरत आप ही के हुरूफ शरीफ को हम हमेशा काम में लावेंगे और प्रजा के सुख दुख पर कुछ दृष्टि न देंगे यह सब कुछ सही पर जबरदस्त से क्या बस लड़का रोता है चिल्लाता है लोट मारता है पर उसका मनोरथ तभी पूरा होता है जब मा बाप के दया आती है और जिसके मा बाप निठुर हुए उलटा और दो तमाचे लगाये और झुड़क दिया कि चुप रह नहीं तो और लगाऊंगा फिर अन्त को जब उन को दया आती है तो दुलार भी करते हैं सो यही दशा सर्कार की है कि जब उसका चित्त दयार्द्र हो गया तो तुरन्त सुन लेती है नहीं तो चिल्लाया करो एक भी नहीं सुनती और अधिक ढिठाई करने पर दण्ड की भी शंका रहती है इन्ही बातों को सोच समझ कर आप लोगों को चाहिये कि अब सन्तोष करें सर्कार को क्लेश न दें आखिर जब तुमको क्या पुराण सुनना होता है तो कहीं से प-

पिण्डत बुलाते हो पुरोहित जी से पाठ क राते ही हो श्राद्ध का काम तभी चलेगा जब कोई करमठ जानने वाला मिलेगा जन्मपत्री और वर्षफल के निमित्त ज्योतिषी जी का सम्मान करना ही पड़ता है व्याह शादी में गाने बजाने वाले कुछ न कुछ लेही जाते हैं वैद्य हकीम डाकृर को नज़राना देना ही पड़ता है फिर क्या जो ऐसे ऐसे सैकड़ों नेगचारी तुम्हारे साथ लगे हुए हैं तो एक फारसी वानी के पण्डों का नेग सही इसे भी मुशुत दिया करो और जो कुछ उलटा सीधा पढ़ के सुनावें उसे सुन लो फ़ेर जवर पेश के न लगाने के कारण साफ़ न पढ़ा जाय तो चूं मत करो क्योंकि ज़ेर जबर पेश का छोड़ जाना कानून नाजायज़ है और जो झिँगुरी का चिखुरी पढ़ा जाय तो कुछ उज़ुर न करना क्योंकि यह अक्षर की चमत्कारी और उस्ताद की बरकत है और जो तुम्हारे गांव में पढ़ने वाला न मिले तो सीधे तहसीलदारी में चले जाओ और इसपर भी तुम्हारा काम न निकले तो स्टाम्प के कागज पर लिख कर एक अर्ज़ी सुख़तारनामा लिख देना कि वह तुम्हारा कागज पत्र हमेशा पढ़ दिया करेगा साल में दस बीस रुपया न सही ; हम पत्र प्रवर्तक लोग तुम्हारी रुचि से बाहर नहीं हैं हमारा यही काम है कि जैसी आप लोगों की रुचि देखें वैसा लिखें और अपनी सम्मति प्रगट करें सो आप सब देखते हो बराबर कई साल से बकते आते हैं और अब भी जहां तक हो सकेगा कहते ही जांयगे पर कारण यह है कि हमारे पुण्यशील प्रभुगणों की स्वार्थ तत्परता ने ऐसा अपने आधीन कर लिया है कि वह निःस्वार्थ काम वा अल्प स्वार्थ के कामों पर पांव नहीं रखनेदेती यदि तार वा रेल वा बन्दोबस्त की भांत इस में कोई गहरी नफा की आशा होती तो देखते कैसी युक्ति करते हम क्या करें हाकिमों के प्रसन्न करने की कोई सामग्री हमारे पास नहीं है और कुछ न होता जो दो चार किराये के बँगले होते तो उसी बहाने से कुछ व्यवहार हो जाता । और न मुर्गियों का झुण्ड कि बहुत से अण्डे लेकर जा मिलते न बराण्डी की भट्टी न रोटी का तंदूर न बरफ की कल न घास की दूकान न जाकट पतलून बनाने का ढङ्ग न गाड़ी बग्घी रँगने की अकल भला कौन मुंह लगा के वहां तक पहुंचें सरिश्तेदार से

साहब सलामत होना तो बड़े भाग्य-शाली पुरुषों का काम है यदि जमादार चपरासी से भी जान पहिचान होती तो भी कुछ आशा करते एक बात आप लोग बहुत भूल गये जो पानियर को कुछ मान मनौती नहीं की आखिर फारसी वालों ने उसे अपना कर लिया जब वह कहि देता है कि हिंदुस्तान की भाषा उर्दू और अक्षर फारसी है नागरी हिन्दी नहीं है तो क्या किया जाय और यह भी ध्यान रक्खो कि जिस प्रकार पृथ्वीराज के दरबार में चन्द कवि था वैसे ही आज कल पानियर है जो बात उसके मुख से निकलैगी वही ब्रह्मा का लेख ठहरैगा उसके मुख से यदि यह भी निकल पड़े कि तुलसीदास, सूरदास, मतिराम, भूषण, पद्माकर, गिरधर, बेनी, बिहारी आदि भाषा के कवि वृन्द हिंदुस्तान में नहीं हुए तो क्या हम सब उसका छप्पर पीटैंगे चुप चाप बैठ ही रहैंगे बस यही उचित है कि राम राम जपो और चुप चाप बैठ रहो ईश्वर का ध्यान करते करते कदाचित कुछ कार्य्य सिद्ध हो जाय बस अब और क्या कहैं॥

शर्मिष्ठा नाटक।

जि० ३ संख्या १२ के आगे से।

(तृतीय अङ्क) (द्वितीय गर्भाङ्क)

स्थान

राजा का एकान्त बैठक खाना॥

(राजा और विदूषक बैठे हुए)

विदूषक० महाराज आप बड़े भाग्यमान हो निर्जन बन महर्षि के आश्रम में गए वहां भी आप को एक अपूर्व कन्या रत्न हाथ लगा सच है भाग्यवान के भूत पानी भरते हैं "अभोगमाप्नोति न भोगभाग्जन:" भला महाराज ऐसे २ रत्न क्या वहां और हैं?

राजा० वयस्य दैत्य देश जहां महर्षि का आश्रम है सो तो ऐसे ऐसे रत्नों की प्रसव भूमि है देवयानी की सखी सहेलियों में एक से एक बढ़ बढ़ कर ऐसी रूपवती वहां देखने में आईं जिनके सामने रति और उर्वसी भी झख मारती हैं॥

विदू० इसी से तो हम कहते हैं कि महाराज आप बड़े भाग्यवान हो॥

राजा० मित्र उनमें एक शर्मिष्ठा नाम की विकसित नवयौवना ऐसी रूप की खान है कि उसके लावण्य का हम तुमसे क्या बखान करें मानो साक्षात् लक्ष्मी ही

पृथ्वी पर आकर चौतरी हैं किन्तु भाई तुम हमारी सब रानियों के बहुत मुंह लगे हो इसका चर्चा कहीं रनवास में जा कर न करना नहीं तो सब खेल बिगड़ जायगा ॥

विदू० (स्वगत) उ: कुत्ते के पेट में कभी घी पचा है मैं भला बिना सूझ बूझ गाए रहूंगा ; अजी ये जो धन के मद में फूले बड़े आदमी या अमीर कहलाते हैं उनमें ऐसी ही ऐसी बातों से तो बड़प्पन आता है और कोई चाहो इन्हें जो समझाता हो मैं तो इन्हें वही बिना सींग पूंछ का माने बैठा हूं क्या करूं अपने मतलब के लिए खुशामदी टट्टू बन जाता हूं अच्छा तो हम ऐसे मुफ़्तखोरों का भी तो कहीं से गुजरान होना चाहिए ; इस हिए के फूटे को हम क्या कहें जिन्हें सूर्य चन्द्रमा भी देखने को तरसते हैं ऐसी ऐसी रानियों से घर भरा है तौ भी ऐरी गैरी दो चार शोभा के लिए लगी रहनी चाहिए यह बड़ा आदमी ही काहे का जिसने व्यभिचार या ऐयाशी में पक्के सिरे की सार्टिफिकट न हासिल की अच्छा तो अब इससे किसी तरह पिण्ड छुटाय जल्दी ही जा कर रनवास में सब कह सुनाऊं तो अब क्या उपाय करूं हां भली याद आई (प्रकाश) महाराज अब मैं जाता हूं (उठ कर चलता है)

राजा० ठहरो ठहरो सुनो सुनो ॥

विदू० नहीं अब मैं नहीं ठहरूंगा मैं आज भोर ही का घर से निकला हूं मेरी ब्राह्मणी खफ़ा होती होगी मैं क्या राजा बाबू हूं जो दो चार लगी हैं अकेली ब्राह्मणी कहीं रूठ गई तो मैं किसके द्वार लगूंगा (स्वगत) देखो मैं अभी ही जा कर सब तुम्हारी कलई खोले देता हूं (प्रस्थान)

राजा० यह तो गया यह निश्चय जा कर कुछ सूझ लगावेगा अब न जानिए उग्रकोपना ऋषि कन्या देवयानी मेरी क्या दुर्गति करै अच्छा जो होगा देख लेंगे एक बार शर्मिष्ठा को जा कर भर पेट देख आंख की प्यास तो बुझा लें (प्रस्थान) शेषभागे ।

लिबरलों के लिबरलपने की सब कलई खुल गई।

हम लिबरल हैं हम लिबरल हम बड़े उदार हैं स्वतन्त्रता हमारा मूलमंत्र है हम सरीखे उदारचारितों को कुछ न

पूछो "उदारचरितानान्तु वसुधैवकुटुम्बकम्" हिन्द के नेटिवों का जो कन्सर्वेटिवों की ओर से खड़ा कर देने को हम जो कुछ कहो सब हैं हम कपट का पटिक हो तभी तक अपने को छिपाए हुए थे जब तक भरपूर मतलब सिद्ध नहीं हुआ था अब हम सब सल्तनत के मालिक बन बैठे तो जबरदस्त का ठेंगा सिर पर किए देते हैं; वाह आपने हमें क्या निरे कोरमचन्द समझ लिया था हिंदुस्तानी ऐसे निरे काठ के उल्लुओं को फसाय "स्वार्थभ्रंशोहिमूर्खता" इस सिद्धान्त को चरितार्थ कर देते; मारे खुशी के फूल उठे समझे कि हम रिद्धि सिद्धि सब लिए आते हैं भूरवो बांटने लगेंगे; खैर ताड़बाज़ लोग जिस में ताड़ न जांय कि यह सब हाथी के दांत और धोखे की टट्टी थी इस लिए हम अपने लिबरलपने का टाट उलटे देते हैं अब हमारे पास कोई तकाज़ा न भेजे आर्म्स ऐक्ट लाइसेन्स टैक्स प्रेस ऐक्ट आदि जितनी बातें कन्सर्वेटिव गवर्नमेण्ट की जारी की हुई थीं सब कि सब अभी यथास्थित रहें कुशल इसी में है कि मन मार चुपचाप हो बैठ रहो अभी काबुल की लड़ाई का खर्च वसूल करना पड़ा है तीन पांच करोगे तो ऐसा लदाव लाद देंगे कि कांखते २ दम न बाकी रहैगा हम सब समझे हैं जिस में तुम्हारी भलाई और बेहतरी होगी वही करेंगे तुम्हारे उकताने से कुछ नहीं हो सकता हमारे दिए हुए इस चश्मे को क्यों नहीं उतार डालते जिससे तुम्हें ऐसी बातें सूझने लगी हैं बस अब हम जाते हैं हमें मत छेड़ो नहीं तो पछताओगे॥

न्याय Justice

न्याय शब्द की उत्पत्ति नि पूर्वक ई धातु से है "नीयते अनेन सन्याय:" अर्थात् जो यथार्थ पथ में लेजाता है; हमारे ऋषि लोग इस शब्द का अर्थ इसी प्रकार कर गए हैं अब देखना चाहिए अङ्गरेज़ी में इस्का क्या अनुवाद होता है अङ्गरेज़ी में न्याय को Justice कहते हैं और इसी के मध्य में Equity शब्द का जो भाव है सो भी गतार्थ होता है डाक्टर वेब्स्टर साहब जस्टिस का यह अर्थ लिखते हैं "जिस्का जो चाहिए, या जिस्को जिस्का अधिकार है, या जो जिस को उचित है उस्को वह देना" अर्थात् जिस जीव का हम लोगों से जो कार्यादि करवाने का अधिकार है उस जीव

का उतना ही कार्यादि कर देना न कम न ज़ियादा; गोल्डस्मिथ ने लिखा है न्याय Justice वह गुण है जो जिस मनुष्य का जिसमें अधिकार हो वह उसको देने की हमें ठेलता हो; इस विस्तीर्ण भाव में इस शब्द के मध्य में वे सब गुण वा धर्म आ गए जो बुद्धि हमें आचरण करने को कहती है वा समाज हम से आशा करती है अतएव न्याय ही एक गुण है और सब बड़े २ गुण इसी से उत्पन्न हुए हैं जैसा अकपट होना साहस वा धैर्य दया वा वदान्यता इत्यादि स्वयं सद्गुण नहीं हैं किन्तु न्याय के रहने से इन्हें सद्गुण का आभास होता है अर्थात् न्याय ही इनको यथार्थ मार्ग में चलाता है बिना न्याय के अ का पद्य अविवेचना हो जायगी साहस ज़िद दया अपरिणामदर्शिता व वदान्यता अयथायुक्त अपरिमित व्यय या फजूल खर्ची हो जायगी; इस सारवान् पद का अतीव गम्भीर आशय है जिसने इसे अच्छी तरह समझ इसके अनुसार बर्ताव किया उसको और कोई "चरित्र" चाल चलन सुधारने वाले गुणों की खोज करना कुछ आवश्यक नहीं है सच पूछो तो न्याय ही सब धर्म कर्म का मूल है इससे बढ़ कर और कोई गुण रीति वा आचार व्यवहार अ-रातल पर नहीं है समय वा लोगों के दोष से जो जो रीति या व्यवहार न्याय के बाहर हो गए हैं वे कदापि उत्तम नहीं समझे जाते; हमारे प्राचीन आर्य्य लोग जो रीति वा आचार प्रचलित कर गए हैं न्याय ही के ऊपर उन्हों ने उस की भीत खड़ी की है कोई मनुष्य कभी निर्दोष न हुआ न होगा इसी से प्राचीन आर्यों में कितने ऋषि भी बिलकुल निर्दोष न थे वे भी स्वार्थ या क्रोध के वशीभूत हो कितनी न्याय विगर्हित रीतें प्रचलित कर दीं वा ग्रंथ बना दिए हैं इसका स्पष्ट प्रमाण और दृष्टान्त बाल्य विवाह आदि आधुनिक समय की कुरीतें हैं; काल के प्रभाव से भी हम लोगों के बहुत से आचार जघन्य होगए हैं जैसा स्त्रियों को परदे में रखना या उन्हें शिक्षित न करना विधवा विवाह न होना इत्यादि अब भी यदि हम लोग न्याय पर दृष्टि रख सब काम करें तो हमारी रीति नीति वा मर्यादा सब उत्तम हो जांय; हमारे प्रत्येक विचार नियम तथा कार्य न्यायानुयायी होने चाहिएं अर्थात् पहले से यह सोच लेना उचित है कि अमुक विचार नियम वा कार्य करने से किसी की कुछ हानि

तो नहीं है दान करने से सामान्य लोग यही समझते हैं कि पुण्य ही होता है परन्तु किसी अन्दकाम में देना या किसी अहामन्द जघन्य वृत्ति वालों को देने से अनिष्ट के सिवा अच्छा उत्तम फल कभी न होगा क्योंकि पाप को देना या ऐसे काम के लिए देना जिससे किसी तरह का समाज या देश का कुछ उपकार निकलता है इस न्याय युक्त विचार के विरुद्ध हुआ; हमारे देश के धनियों का दान ऐसा ही मूढ़ता विशिष्ट होता है जिनके किसी काम में कभी न्यायकारिणी बुद्धि का दखल नहीं होने पाता तो दान ही में क्यों होने लगा बल्कि हम यह भी कह सक्ते हैं कि वे इस प्रकार के दान से पुण्य के एवज पाप की गठरी उठाने को हम्माल अलबत्ता बनते जाते हैं तीर्थजी या पंडों को देना अथवा गिरे उठके खाकी उदासी या वैरागियों को देना महापाप नहीं तो पुण्य का काम किस विचारवान् पुरुष की न्यायकारिणी बुद्धि स्वीकार करेगी; निस्सन्देह हम लोगों में न्याय का बड़ा घाटा है कोई दानी या उदार हुआ तो बिना विचारे अपरिमित धन का लगा व्यय करने कोई सूम हुआ तो एक एक पैसा भी बड़ा कठिनाई से टेंट से निकालेगा कोई समाज संस्कारक हुआ दोष को भी गुण समझने लगा इत्यादि कितनी बातें हैं जिनमें न्याय को सर्वथा कमी है अब शेष में पाठक वृन्दों से निवेदन है कि वे अपने सब कामों में न्याय ही का अनुशीलन करने का अभ्यास करतेरहैं तो सब सुधरजाय॥

एम एल जी कलकत्ता।

प्रेरित।

महाशय अगस्त मास के हिं०प्र० में "हिंदुस्तानी अभी किसी लायक नहीं हैं" इस मज़मून का एक आशय छपा है इसके उत्तर में हम लिखने वाले को अधिक क्या कहैं केवल इतना ही कि वे साहब अभी कोई मालअदिवाकार के इतिहास की पुस्तकें भी अच्छी तरह नहीं पढ़ा; एलफ़िन्स्टन आदि कई एक इतिहास लेखकों ने अपने ग्रंथों में हिंदुस्तानियों के विषय में लिखा है कि हिंदुस्तानी लड़के १५ या १६ वर्ष की अवस्था तक अङ्गरेज़ों के लड़कों से किसी बात में हीन नहीं होते इस्से यह सिद्ध हुआ कि बुद्धि बल उस उमर तक दोनों का एकसा रहता है पीछे ज्यों ज्यों अवस्था बढ़ती जाती है त्यों त्यों अन्तर पड़-

ता जाता है इसका कारण केवल चिंता और दरिद्रता है ; अच्छा किसी ने कहा है "चिताचिन्तासमाख्याता चिन्ता तस्माद्गरीयसी । चितादहति निर्जीवं चिन्तादहति जीवनम्" हमारे ए बी सी डी महाशय सत्य ही जैसा उन्हीं ने लिखा है इतने एकान्त सत्यान्वेषी और दूर सोचने वाले हैं कि मूल कारण तक नहीं पहुंच सकते उनकी बुद्धि ऊपर ही ऊपर घूम घाम रह जाती है टीका के कम्पल्सरी होने में हमें कुछ कहना नहीं है केवल इतना ही कि हिंदुस्तानी टीकों से यह किन बातों में अच्छा है और इस नियम से जारी होने में कोई बुराई है या नहीं ? हिंदुस्तानी टीका जो कमाऊं आदि पहाड़ी मुल्कों में लगता चला आया है इस टीके से कितना अच्छा है वे लोग निखालिस सामान तैयार करते हैं उसी से टीका लगाते हैं यहां जो जिस्म के टुकड़े टीका लगाने वालों को दिए जाते हैं उनका सामान चुक जाने पर वे लोग और लड़कों के छाले तोड़ उन टुकड़ों पर ले लेते हैं और फिर उसी को काम में लाते हैं कहीं वह शीतला का चन्दन किसी ऐसे लड़के से लिया गया जिसे कोई बड़ी भारी परम्परा प्राप्त पैत्रिक बीमारी है तो वह बीमारी उस लड़के के भी हो जायगी जिस्के उस चन्दन से टीका लगाया गया है कोई मरो या जिओ इन्हें अपनी कारगुजारी से काम "कटे किसान का सौखे माई का" टीके के बाद भी देखने आया है कि लोगों को चेचक का बड़ा ज़ोर हुआ है बहुधा मरी गए हैं तो इस्से यह भी स्पष्ट हुआ कि यह जितना चाहिए उतना लाभदायक नहीं है इस लिए इसका कम्पल्सरी होना भी कुछ ज़रूर न था ; कम्पल्सरी इज्युकेशन से भी हम अधिक लाभ नहीं समझते अब क्या इज्युकेशन कम है पर जो कुछ विद्या का फाइदा होना चाहिए वह इन सुशिक्षितों में रुपए में कहीं एक आना भी किसी में आता है बल्कि बुराई का पलरा भारी रहता है वैसा ही कम्पल्स-इज्युकेशन के होने पर भी परिणाम में छनते छनते भूसा धूर सब उड़ जायगा यही दो चार गिने हीरे और गिने दाने शेष रहेंगे ; ए बी सी डी महाशय ने इस बात पर सब से ज्यादा ज़ोर दिया है कि सरकार ने प्रजा की भलाई के लिए असेसरों के द्वारा राज काज में हिंदुस्तानियों को भी अधिकार दिया है

पर वे इसको अच्छी तरह नहीं कर सकते ; सोचने की बात है कि पढ़े लिखे लोग जो अपनी बुद्धि और विचारशक्ति को काम में लाय मुंहफट भरपूर जवाब दें जिस जगह अहेलकार नियत हैं जहां देखो वहां वेही लोग मिलेंगे जो गाढ़ी गाढ़ा गेहूं चना शक्कर नमक का भाव दिन रात किया करते हैं यदि कहो कि वेही प्रतिष्ठित हैं तो मैं यही कहूंगा कि निरे रुपए से प्रतिष्ठा नहीं है विद्या और बुद्धि से सच्ची प्रतिष्ठा मिलती है परन्तु इन दिनों लक्ष्मी ही पुजती हैं जैसा नजीर ने कहा है "कौड़ी के सब जहान में नक्शे नगीन हैं। कौड़ी नहीं तो कौड़ी के फिर तीन तीन हैं"॥

एक x y z।

गत मास में "म्युनिसिपलिटी की खूबियां" शीर्षक आशय में जो इसे मनुष्य कपेटी का नया अभिधान आप ने दिया यह भी बहुत ही सार्थक है जैसा इसके सत्प्रबन्ध से मनुष्यों के आरोग्य की वृद्धि होनी चाहती थी उसी के विरुद्ध इसी असत् प्रबन्ध से निरारोग्यता दिन दिन बढ़ती जाती है सफाई जिसको सफाई कहते हैं उसका तो होना ही दुर्घट है इतना ही बना रहे तो हम अपने को बड़भागी मानें ; क्या बात है म्युनिसिपलिटी ने हमारी भलाई के लिए बड़ा प्रयत्न किया है चहबच्चे बनवा दिए उनका पानी निकालने के लिए पीपों की गाड़ी बनवाय मेहतरों का साम्राज्य उस पर स्थापित किया मैले की गाड़ियां जिनमें चौपा जानवर जुतते हैं ताकि लोग दुर्गन्धि से बचें बलकि हर एक मुहल्लों की सफाई के लिए मेहतर नियत हुए पर ऐसा कोई कानून या रूल न किया जिससे इन मेहतरों का इम्तिहान हुआ करता और वे परीक्षोत्तीर्ण होकर अपने अपने काम पर नियत किए जाते जब कभी उनसे कूड़ा उठाने के लिए कहा जाता है तो वे तुर्त जवाब दे उठते हैं कि अगर कुछ महीना मुकर्रर हो तो उठाया करें जुर्माना होने की डर से लोग बाहर कूड़ा फेंक नहीं सकते भीतर जमा करते जाते हैं उनके सड़ने से घर के भीतर की हवा कहां तक नहीं बिगड़ती इससे तो यही अच्छा कि चहबच्चे तुड़वा दिए जांय आप से आप पानी निकल जाया करै उसी ठौर जमा रहने से सड़ता है जिसकी बू निकल कर मलेरिया आदि रोग

क्यों न पैदा करे ; म्युनिसिपलिटी के खाड़िले मेहतर किसी की कुछ सुनते ही नहीं बरन लड़ने को मुस्तैद होते हैं इस राज्य की नेकबख़्ती से जिनको सब पर एक ही निगाह पड़ती है वे भी अपने को किसी से हीन और नीच नहीं समझते हालां कि चुङ्गी जो केवल म्युनिसिपलिटी की ईजाद है उससे कोई नहीं बचा तो म्युनिसिपालिटी के जितने मुलाज़िम सब सर्व साधारण के नौकर हुए मेहतर भी उसी में शरीक हैं पर मलीज़ मैं ढेला डाल कोन छोटी अपनी बदन पर उलवाए इसी लिए बहुत कुछ तकलीफ भी सब कोई सह लेते हैं पर जवाब खाने की डर से मेहतरों से नहीं कोई भिड़ा चाहता ; इसी तरह हलवाई बनिए आदि पेशे वालों की ओर ध्यान दीजिए तो यहां भी यही हाल संसार भर की सड़ी गली रद्दी चीज़ें दूने ड्योढ़े दामों पर बेचते हैं म्युनिसिपलिटी इस ओर भी कुछ ध्यान नहीं देती अगर किसी दिन डाक्तर साहब आकर बाज़ारू चीजों को जांचते तो तेल की मिठाइयां और अत्तारों की सड़ी घुनी दवाइयां जो आरोग्यता की हानिकारक हैं न रहतीं लोगों का कितना उपकार होता और म्युनिसिपालिटी को जो व्यर्थ दोष लगाया जाता है सब दूर होता और हम लोगों से जो सफाई के लिए चुङ्गी या टैक्स वसूल किया जाता है वह भी न अखरता ॥

वही।

परिदर्शक।

यह बङ्गभाषा का एक साप्ताहिक समाचार पत्र अनेक उत्तमोत्तम विषयों से पूर्ण प्रति रविवार को बाबू कामिनीकांत चन्द्र द्वारा कलकत्ता नगर से प्रकाशित होता है इसके उत्तमता का परिचय हमारे ग्राहकों को अधोलिखित आशय से अच्छी तरह हो जायगा जिसका अनुवाद यहां पर हम उद्धृत कर छापते हैं॥

(हाकिम)

हाकिम तुम विचारपति हो तुम्हारे आगे सब लोग एक सां हैं फिर भी जो तुम बीच बीच अङ्गरेजों का कुछ अधिक सम्मान करते हो यह केवल कवि की इस उक्ति की सार्थकता के लिए है "भवन्ति साम्येपि निविष्ट चेतसां वपुर्विशेषेष्वति गौरवा: क्रिया: " तुम महाराज हो वकील मुख़्तार तुम्हारे बन्दीजन हैं उनके

मुवक्किलों का मुकद्दमा जब तुम्हारे हाथ में रहता है उस समय उनका कहां इत ना साहस कि तुम्हारे विरुद्ध कुछ बोलें; तुम राजा के प्रतिनिधि स्वरूप हो राजा कभी कोई अन्याय नहीं करता जो कुछ अन्याय राजा कर गुजरे वह अन्याय अन्याय नहीं है सुतराम् तुम भी कोई अन्याय नहीं करते जो कुछ हो जाय वह अन्याय किसी तरह नहीं है ; हे महाभाग तुम्हारे में अद्भुत कुशलता है जब कभी वकील मुख़ार तुम्हारे फैसले में किसी तरह का दूषण निकालने का मन करते हैं तब तुम आरक्त नयन से भौं चढ़ाय उन्हें ऐसी कुटिल और वक्र दृष्टि से देखते हो कि वे बेचारे मारे भय के संज्ञा के रह जाते हैं ; हे शुभंयो तुम प्रत्यक्ष देवता हो देवगण जैसा अपनी अपनी देवरानियों को साथ ले क्रीड़ा किया करते हैं वैसा ही तुम भी प्रजा का धन प्रान सब तीतर मुर्ग लच्छी वाली मसल के अनुसार अपने आधीन रख लेडियों के साथ क्रीड़ा किया करते हो ; सुरगण बाल्ययौवन और प्रौढ़ इन्ही तीन अवस्थाओं के आधीन रहते हैं अर्थात् बुढ़ापा उन पर नहीं व्यापता वैसा ही तुम भी बूढ़े कभी नहीं होते क्योंकि ५५ साल के ऊपर सरकारी नौकरी से खारिज होने वाला कानून तुम्हारे लिए नहीं है ; यद्यपि तुम हम लोग मनुष्यों के समान बहुतही बाल्य अवस्था से कार्य Slrvice नहीं आरम्भ कर देते पर मध्य मध्य में अपने अधिकृत कार्य में ऐसी अनभिज्ञता और शैशव का प्रकाश कर उठते हो कि पांच वर्ष का बालक भी ऐसा न करेगा ; नाम और गुण दोनों तरह तुम्हारा त्रिदश यह नाम सार्थक रखने को हमारे पहले स्टेट सेक्रेटरी जिनमें कपट का लेश भी नहीं छू गया था सिविल सरविस की परीक्षा देने वालों के लिए उमर की कैद घटाते २ केवल १८ वर्ष रहने दिया ; हे पेयटलू नाम्बर तुम्हारी उम्मेदवारी अवस्था को बाल्य, कार्य करने के समय को यौवन, और पेन्शनर बन जाने के समय को प्रौढ़ दशा समझ तुम्हें त्रिदश यह नाम देना बहुत ठीक है ; हे प्राड्विवाक तुम देवराज इन्द्र हो काचहरी तुम्हारा स्वर्ग राज्य है चेयर तुम्हारा स्वर्ग सिंहासन है और पेशकार तुम्हारी शची देवी इन्द्राणी है जैसा एक इन्द्र के बदल जाने से दूसरा इन्द्र होने पर शची देवी और स्वर्ग सिंहासन की बदली नहीं होती वैसेही

तुम्हारे साथ तुम्हारे परम भक्त पेशकार का परिवर्तन नहीं होता; तुम साक्षात चन्द्रमा हो अमला वर्ग जिनके मध्य में तुम विराजमान होते हो वे सब तुम्हारी अर्द्धिणी स्वरूप तारागण हैं चन्द्रमा जैसा असंख्यात तारापति होते भी रोहिणी के विशेष वशीभूत रहता है वैसा ही तुम भी असंख्य अमलों के रहते शरिस्ते-दार के विशेष वशीभूत रहते हो (बशर्ते कि शिरस्तेदार साहब किसी मियां भाइयों में से हों) चन्द्रमा को पर्व में राहु ग्रसता है तुम्हारे लिए वह राहु कोई तेज वकील या व्यारिस्टर है; हे गौर वर्ण कहां तक हम तुम्हारे नाम और रूप गिनावें परिदर्शक ने तुम्हारा बहुत गुण गाया है अतएव नमस्ते नमस्ते नमस्ते॥

हिन्दी भाषा में ग्रन्थ रचना के विषय लोगों का प्रश्न।

अभी थोड़े दिन हुए पायोनियर में श्रीमान महाराज दरभङ्गा की तरफ से एक विज्ञापन छपा था कि जो कोई महाराज के अभिलषित विषयों पर हिन्दी में ग्रंथ बना कर भेजेगा उसे पुरस्कार मिलेगा इस बात को प्राय: मित्र गण और हिन्दी भाषा के रसिक हम से पूछते हैं कि तुमने ऐसी देशहितैषी सूचना को अपने पत्र में स्थान क्यों न दिया अब हम इसका स्पष्ट उत्तर तो दे नहीं सक्ते परन्तु अनुमान से कहते हैं कि हमारा हिन्दीप्रदीप तो उन सच्चे देशहितैषी और हिन्दी भाषा के रसिकों के लिए है जो बाहरी आडम्बर से निस्पृही हो केवल प्राकृतिक रुचि और श्रद्धा से सामर्थ्य भर देश की भलाई के कामों में पचते रहते हैं और उन्हें यह ख्याल कभी ख्वाब में भी नहीं गुज़रता कि हमारी बड़ी भारी बात है इसे बड़े भारी नामी अङ्गरेज़ी अखबार में छपे और बड़े बड़े भारी ओहदेदार हाकिमों के नेत्र गोचर हो जिससे यहां से बिलायत तक ख्याति हो जाय; हम सच कहते हैं कि इस पत्र के कितने ऐसे सहायक हैं जो अपना नाम तक नहीं प्रगट किया चाहते और ऐसों की बात पर प्रतीति भी पड़ती है; राजा महाराजा की बात तो हमारे कहने के योग्य नहीं यदि हम भी कोई राजा होते तो कुछ साहस बांधते हमारा प्रदीप भी यही महाराजा की दरबारदारी में एक वर्ष से प्रहस्त है पर अभी तक यह निश्चय न हुआ कि इसको कोटी

सी टेम पर महाराज का कटाक्ष पात कभी हुआ है या नहीं क्योंकि राज दरबार में बड़े २ शमा और मसालों के सामने छोटे से दीपक को कौन देखता है; इस बात के अनुसन्धान के लिए तीन चार बार कार्ड भी गए पर वे भी विद्या गुण मयी बाटिका के प्रसून के भृङ्ग बन वहीं लुभा रहे अब तक न लौटे; पाठक जन आप निश्चय जानिए कि न्यायशीलता और दूरदर्शिता अङ्गरेज़ों ही के बाट में पड़ी है हमारे अगले लफटिनेण्ट गवर्नर सर विलियम म्यूर साहब ने जब देशी भाषा के ग्रंथ रचना का इश्तिहार दिया था तो अङ्गरेज़ी फारसी नागरी तीनों भाषाओं में छपवाय गली गली उसे बांटा जिसका फल यह हुआ कि सैकड़ों ग्रंथ उनके समय में बन गए और ऐसे लोगों की लेखिनी से लिखे गए जिनको कोई जानता भी न था कि यह कुछ पढ़ा लिखा है और बड़े २ आलिम फाज़िल ताकते ही रह गए खैर इस व्यर्थ की दांत किट्टन से क्या लाभ है सारांश हम कहे देते हैं कि अन्य देश वासी अङ्गरेज़ हिन्दी में सूचना दें और हमारे देश के नरेश उस भाषा में इश्तिहार देने से घिनांय जिसकी वृद्धि के लिए वह सूचना थी तो इस दशा में हम क्या कहें " अनुगामिष्यति पण्डितोजना: " ॥

प्राप्त ॥

निज सम्मति पर दूषण।

(अच्छे को बुरा बुरे को अच्छा समझे। कितनी यह बड़ी समझ है कि अच्छा समझे)

आप के गत मास के हिंदीप्रदीप में दो आशय देखने में आए उनमें एक तो प्रेरित के स्तम्भ में है उसके बारे में हम कुछ नहीं कहते क्योंकि " भिन्नरुचिर्हि लोक: " मनुष्य अपनी २ समझ के अनुसार जैसा चाहता है वैसा सोचता है उसकी स्वच्छन्दता का अपहरण कौन कर सकता है पर दूसरा आशय जिसमें आप ने निज सम्मति प्रकाश की है उसे देख खेद होता है कि ऐसे ऐसे बुद्धिमान जब ऐसा समझते हैं तो इतर जन इस बिधवा बिवाह को बुरा कहैं तो कौन अचरज है इसी हेतु यह पत्र मैं आपको लिखता हूं यदि अनुचित न हो तो इसे छाप दीजिए और जो कुछ इसका उत्तर आप समझिए उसे भी मुद्रित कर दीजिए ॥

आप ताना देते हो कि संपूर्ण उन्नति की नाक उन लोगों ने इसी को समझ लिया है फिर आप लिखते हो कि इसमें लाभ से दूनी हानि है फिर कहते हो बाल्य विवाह रूपी कोढ़ में यह खाज है फिर आप कहते हो कि इसमें अङ्गरेजीपन बहुत है कभी आप इसको व्यभिचार की जड़ बनाते हो कभी *स्त्री स्वतन्त्रता और स्त्री शिक्षा को दोष लगाते हो अब जो दोष ही लगाने पर उतारू हुए तो लीजिए चलिए हम बाल्य विवाह के विरुद्ध युवा अवस्था के विवाह में बहुत सा दूषण दे सकते हैं लीजिए गिन चलिए। लड़कियों को पहाड़ सी बढ़ा देना और घर में रखना यही आप ने सकल धर्म की खान समझ रक्खी है इसमें बड़ी २ हानि है एक तो यही कि बहुत सी औरतें तो कन्यापने ही में गर्भवती हो जाया करेंगी दूसरे यह कि जो लड़कियां सुन्दरी होंगी उनका विवाह तो हो जायगा कुरूपाओं को कोई पूछेगा भी नहीं और जो पुरुष स्वरूपा स्त्रियों के न मिलने के कारण अविवाहित रह जांयगे वे उन सुन्दरी स्त्रियों के बिगाड़ने की फ़िक्र में रहेंगे इस लिए यह व्यभिचार का भी कारण हुआ; अङ्गरेज़ीपना तो इसमें सब से ज़ियादह है क्योंकि अङ्गरेजों ही में यह बात इसे मिली नहीं तो हमारे यहां तो ८ या ९ वर्ष में हमेशा विवाह होता रहता है इसमें शास्त्र भी साक्षी है मनु लिखते हैं "त्रिंशद्वर्षो वहेत्कन्यां हृद्यां द्वादशवार्षिकीम्" तीस वर्ष की अपेक्षा १२ वर्ष बहुत कम है किन्तु उनका तात्पर्य स्त्री की उमर पुरुष से इतनी कम रखने से यही है कि जहां तक हो सके छोटी उमर में ब्याह हो जाया करे अब आप ने देखा कि बाल्य विवाह के विरुद्ध मैंने कितने दोष दिखा दिए लेकिन इस परस्पर के दोषारोपण से यही होगा कि जिन लोगों की तबियत विधवा विवाह की ओर कुछ रुजू हुई है वह फिर हट जायगी; आप यह न समझें कि मैं बाल्य विवाह के पोषण में प्रवृत्त हूं कदापि नहीं वरन इस बुरी रस्म के उठाने को तन मन से उत्सुक हूं और जितने दोष मैंने बतलाए विचार दृष्टि से देखने पर सब दूर हो जांयगे; मेरा मतलब यही है कि हठ और पक्षपात छोड़ जो बात जैसी है वैसी ही कहनी चाहिए मैंने बहुत दफे आप के पत्र

* स्त्री स्वतन्त्रता को मैं बुरा कहता हूं स्त्री शिक्षा को कभी नहीं॥

में बिधवा बिवाह सिद्ध करने वाले आशय देखे अब आप इसके विरुद्ध लिखते हैं इससे क्या लाभ है ; बिधवा बिवाह सब उन्नति की नाक हो या न हो हजारों बल्कि लाखों जीवों का दुःख इससे दूर हो सक्ता है बरन इसमें सन्देह नहीं कि इससे बड़ा भारी उपकार है ; उन्नति का सोच तो पीछे होता है पहले दुःख दूर करने का उपाय होना उचित है ; आप जो इसे कोढ़ में खाज बताते हैं सो भी ठीक नहीं है बल्कि कोढ़ की खाज का दूर करना है सच पूछिए तो कोढ़ और खाज दोनों वैधव्य में ही दृढ़ होते हैं बाल्य बिवाह इस रोग का एक कारण है यह नहीं कि बाल्य बिवाह बन्द होने से वैधव्य भी बन्द हो जायगा। वैधव्य के और भी बहुत से कारण हो सकते हैं फिर साक्षात् रोगी का उपाय न कर केवल रोग के कारण को ही दूर करने का उपाय सोचना कैसा जब हैज़ा फैलता है तब हैज़े का उपाय और सफाई दोनों की फिक्र की जाती है ; फिर आप इसे व्यभिचार की जड़ बतलाते हैं यह कुछ समझ में नहीं आता व्यभिचार आप किसे कहोगे जो पुरुष की कामना ही का नाम व्यभिचार है तो प्रथम बिवाह भी व्यभिचार हुआ जो प्रचलित रीति के विरुद्ध पुरुष के सङ्ग का नाम व्यभिचार है तो जब आप इसे भी प्रचलित कर देंगे तो वह बात जाती रहेगी ; आप इसे अङ्गरेज़ीपन क्योंकर कहते हो मनु पराशर अर्जुन प्रभृति क्या अङ्गरेज़ थे जिनके नाम और कर्म का प्रमाण इन दिनों दिया जाता है हम कैसे कहें कि वे अङ्गरेज़ थे ; स्त्री शिक्षा और स्त्री स्वतन्त्रता तो हमारे यहां पुराने आर्यों के समय से चली आती है परदे का दस्तूर तो हम लोगों ने मुसल्मानों से सीखा है तो इसे हम पुरानी रीति नहीं कह सक्ते मन्वादिकों ने स्त्री को पुरुष के आधीन किया है सो यह भी मेरी समझ में भूल है कोई किसी के आधीन नहीं रक्खा गया धर्म के सब आधीन हैं स्त्रियों के लिए पतिव्रत धर्म है तो पुरुष के वास्ते एक स्त्री व्रत और पर स्त्री में माता बुद्धि परम धर्म है हमारे आचार्यों का दस्तूर था कि जिस प्रकरण को कहते थे उसमें उसी को दृढ़ करते जाते थे अगर मनु ने पुरुषों को प्रबल किया है तो भक्तिमार्ग वालों ने स्त्री को पूजनीय माना है वास्तव में न पुरुष परमेश्वर है न स्त्री भग-

वती है बल्कि एक को दूसरे का अत्यन्त मान और आदर सत्कार करना चाहिए आप ने क्यों स्वतन्त्रता में अङ्गरेज़ोंपन कहां से घुसा हुआ पाया यह कुछ समझ में नहीं आता॥

आप का एक प्रेमी
बाबू हरदेवप्रसाद P. W. D.

नकटा जिया बुरा हवाल।

यही हाल हम हिंदुस्तानियों का है सरकार इस देश की सुशासन प्रणाली के अभिमान में अब्न फूली नहीं समाती यहां हम बुरे से बुरे हो रहे हैं कहने को तिजारत और बनिज व्योपार अब बहुत आसान और सब तरह की आसाइस उसमें कर दी गई पर नफा रुपए में एक आना भी नहीं रही हिंदुस्तान की दस्तकारी एकबारगी बे कदर होगई सुई तक बिलायत ही से बन कर यहां आती है; वहां इस बात का अहंभाव कि जान माल की रक्षा भरपूर होरही है यहां कानून की बारी की और टेक्स के बोझ से पिचरे निकले जाते हैं; पर-रमट का महकमा, आबकारी, म्युनिसिपलिटी की करतूत गुल्फी, स्टैम्प का इतना बढ़ जाना, इत्यादि कितने नए नए कानून सब मिल देश को पोला बांस सा छूछा कर दिया "स्वामिनःसदृशास्त्रिष्ठः" जान माल की रक्षा में शहद लगा लें और चाटें; कितने ही स्कूल कालिज अजायब घर पुस्तकालय स्थापित हुए अनेकन पुल बांध सड़क रेल तार नहर आदि बना दिए गए विदेशी यवनों के अत्याचार से गला छूटा अङ्गरेज़ी तालीम की यहां तक वृद्धि हुई कि हिंदुस्तानी अब अङ्गरेज़ों से उमदा से उमदा मज़मून लिख सक्ते हैं विज्ञान और शिल्प भी यत्किञ्चित् बढ़ता जाता है कौन कह सक्ता है कि यह सब तरक्की अङ्गरेज़ी राज्य का स्वास्थ्य और अमनचैन का फल नहीं है पर साथ ही यह भी कहा जायगा कि देश सब निष्किञ्चन और बुभुक्षित हो गया पहले पेट की फिकिर हो जाय तब सब तरक्की सूझती है नित उठ दुर्भिक्ष यावत् वस्तु की महँगी आमदनी का द्वार सब ओर से बन्द आमद से ज़ियादह खर्च सब मिल तरक्की की भी तरक्की कर डाला "को हो बिदा और बिदा को करे मिस होत बिदा को बिदा कर दीन्हो" पहले के राजे और नौवाब असंख्य द्रव्य व्यर्थ खर्च कर डालते थे वही रुपया प्रजा के बीच

फैलता था सब लोग मनमानता चैन करते थे अब राजा और नवाबही न रहे खर्च कौन करे कितने घाट मन्दिर मसजिद मकबरे उन लोगों के बनवाए आज लों उनकी प्रजा वत्सलता और गरीब परवरी की गवाही दे रहे हैं अब जो इमारतें भी बनती हैं तो वही योरोपियन इञ्जीनियरों का पेट भरा जाता है हम लोग मुंह ताकतेही रह जाते हैं सिवा ईट गारे के जो लाचारी है कि इङ्गलैण्ड की बनी यहां नहीं आ सक्ती हैं और कौन सी चीजें अङ्गरेज़ी इमारतों में हिन्दुस्तान की बनी लगाई जाती है; यद्यपि देश यह सब फलाकत और दुर्दशा भोग रहा है पर हमारे "आफिशियल्स" हाकिम वर्ग अपनी नेक नामी और कारगुज़ारी के लिए सब कुछ तोपते ही जाते हैं और सच्चा हाल कभी नहीं प्रगट होने देते; बहुत से लोग उलटा हिन्दुस्तानियों ही को दोष देते हैं कि ये लोग अत्यन्त दैव परतन्त्र और काहिल हैं इसलिए यह दुर्गति भोग रहे हैं यह कोई नहीं सोचता कि काहिल तो ये सदा से चले आते हैं अब जो इनमें बिलकुल हरारत और तेज़ी बाकी नहीं है इसका कारण केवल रुपए का इस मुल्क से निकल जाना है जैसा "सर्वदेव नमस्कारं केशवं प्रति गच्छति" वैसेही हमारे मुल्क की दौलत सिमिट २ श्वेत दीप में जा इकट्ठी होती जाती अन्त को हम अपनी बेहयाज़िन्दगी को यही कहेंगे कि "नकटा जिया बुरा हवाल"

मृच्छकटिक।

चारु (वसन्तसेना को देख) रदनिके रोहसेन खेलते २ बाहर निकल आया संध्या का समय है इसे भीतर ले जा और इस वस्त्र से इसे ढांप ले (अपना उपरना दे दिया)

वसन्तसेना (मन में) मुझे अपनी दासी रदनिका जाना है (वस्त्र ले उसे सूंघ कर स्नेह से मन में) अहा चमेली के फूलों से सुवासित इस उपरने से जान पड़ता है कि ये बड़े रसिया हैं जैसा स्वभाव से ये सर्वजन सम्मत हैं वैसे ही यौवन भी इनका पूर्ण विकसित है।

चारु० रदनिके रोहसेन को लेजा।

वसन्तसेना (मनमें) मैं मन्दभागिनी आप के भीतर जाने योग्य नहीं हूं।

चारु। रदनिका उत्तर भी नहीं देती हा मनुष्य जब दैव के कोप से भाग्यहीन दशा को पहुंचता है तब उसके मित्र भी

हो जाते हैं जिनसे बहुत दिनों का परिचय रहता है वे भी विरक्त भाव ग्रहण कर लेते हैं ॥

श्लोक ॥

यदाहि भाग्यक्षय पीड़ितां दशां नरः कृतान्तोपहितां प्रपद्यते। तदास्य मित्राण्यपियान्त्यमित्रतां चिरानुरक्तोपि विरज्यते जनः ॥

(रदनिका और विदूषक आकर)

विदूषक। मित्र रदनिका आई क्या आज्ञा है ॥

चारु। यह रदनिका है तो दूसरी यह कौन थी जो बिना जाने मेरे वस्त्र से दूषित हुई ॥

बसन्तसेना (मनमें) नहीं २ भूषित हुई ॥

चारु (सामने देख) शरद कालीन मेघों से ढकी यह तो चन्द्रमा की कला सी दिखाई देती है अथवा पर स्त्री का दर्शन उचित नहीं है ॥

विदूषक। मित्र पर स्त्री के दर्शन की शङ्का न कीजिये यह बसन्तसेना है ॥

चारु। यह बसन्तसेना है; प्रिये बिना जाने भूल से दासी समान मैंने तुम से बर्ताव किया क्षमा कीजिए ॥

बसन्तसेना। मैं बिना आप की आज्ञा के भीतर चली आई इस्से मही अपराधिनी हूं (स्वगत) अब इस अनुचित वेश से यहां रहना उचित नहीं है (प्रकाश) आर्य अब आज्ञा दीजिए आप से बिदा हूं; मैं चाहती हूं इन गहनों को आप ही के घर धर दूं क्योंकि इसी के कारण से पापी विट चेट प्रकार मेरे पीछे लगी रहे ॥

चारु। आभरण धरने योग्य यह घर नहीं है ॥

बसन्तसेना। आर्य यह आप क्या कहते हो पुरुष में धरोहर धरी जाती है कुछ घर में नहीं ॥

चारु। मैत्रेय इन गहनों को ले लो ॥

(बसन्तसेना गहने देती है) विदूषक (लेकर) आप को स्वस्ति हो ॥

चारु। धिक् मूर्ख यह धरोहर है ॥

विदूषक (कुछ रुक कर) जो ऐसा है तो चोरों से इसे चुरवा दूंगा ॥

बसन्तसेना। आर्य मैं चाहती हूं मैत्रेय मुझे घर तक पहुंचा दें ॥

चारु। मैत्रेय तुम बसन्तसेना के साथ जाओ ॥

विदूषक। आर्य आप ही इस हंसगामिनी के पीछे चलते राजहंस से सोहते हो मैं ब्राह्मण कुत्तों से खाई गई चौराहे

पर धरी बलि समान मारा जाऊंगा॥

चारु। अच्छा तो इसी आंगनी वर्द्धमानक दस्ती जला; नहीं दस्ती क्या होगी राजमार्ग के प्रकाशक ग्रह गणों को साथ लिए कामिनी कपोल समान पाण्डु वर्ण अपानाथ चन्द्रमा उदयगिरि पर सुशोभित हो आए हैं जिनकी किरण अन्धकार के बीच मानो काले कीचड़ में दूध को धारा सी छिटक रही है॥

श्लोक।

उदयतिहि शशाङ्कः कामिनी गण्ड पाण्डुर्ग्रहगण परिवारो राजमार्ग प्रदीपः।
तिमिर निकर मध्ये रश्मयो यस्य गौराः स्रुतजल इव पङ्के क्षीरधाराः पतन्ति।

मित्र राज मार्ग में सब सन्नाहटा हो गया है रात में चोरी चपारी का डर रहता है सो सावधान रहना (चलकर) और फिर लौट कर इस गहने की पिटारी को रखआओ रात को तुम और दिन को वर्द्धमानक किया करे [सब गए]

अलङ्कार न्यासोनाम प्रथमोङ्कः।

द्वितिय अङ्क

प्रथम गर्भाङ्क

स्थान

बसन्त सेना के घर की गली

(नेपथ्य में) अरे भट्टारक १० मोहर के लिये जिस्से रोके थे वह जुआरी भाग गया; वो वह जाता है पकड़ो २ खड़ा रह।

घबराया हुआ सम्वाहक—(एक जुआरी) का प्रवेश।

सम्वाहक—हा जुआ खेलना बड़ा दुखदायी कर्म है आज इसी के कारण मै नए छन्दान से छुटे गदहे समान खूब पीटा गया सभिक* का ध्यान और ओर देख भाग आया अब राज मार्ग में आ पड़ा हूं अब किसकी शरण जाऊं (कुछ ठहर और सोच) जब तक ये दोनों मुझे ढूंढ़ते हैं तब तक उलटे पावों चल कर इस सूने मन्दिर मे जा देवता की प्रतिमा बन कर खड़ा हूं (उक्त रूप से खड़ा हो जाता है)

द्यूत कर और माथुर का प्रवेश।

द्यूतकर—उस्ताद देखिए डर से कांपता गिरता पड़ता वह वधक जिस्से हम लोगों का १० मोहर चाहिए हो वह

---

* सभिक-द्यूत सभाध्यक्ष-जुआ में नाल लेने वाला--नाम उस्का माथुर है--द्यूतकर--और सम्वाहक-ये दोनों जुआरी हैं सम्वाहक हारा जुआरी है उसे माथुर और द्यूतकर तङ्ग कर रहे हैं।

भागा जाता है चलो दौड़ कर उसे पकड़ें जाने न पावे जाने न पावे (दोनों दौड़ते हैं)

माथुर (दौड़ता हुआ) अहाहह २ जुआरियों के कुल में कलङ्क लगाते क्यों भागा जाता है; देखते हैं अब तुझे कौन बचा लेता है॥

इन्द्रप्रस्थ यदि याहि तू यदि पातालहु बीच। सशिव छाड़ि रुद्रहु नहीं तोहि न बचैहै नीच॥

द्यूतकर। उस्ताद वह तो देख भी अब नहीं पड़ता कहां तक दौड़े जाओगे॥

माथुर (सवितर्क देख कर) यार उलटे पाओं चला है क्योंकि यहां पाओं की छाप उलटी देख पड़ती है और यह मन्दिर भी सूना है इस्से मुझे तो कुछ ऐसा जान पड़ता है कि इसी मन्दिर में वह धूर्त घुस गया है॥

द्यूतकर। अच्छा तो चलो मन्दिर के भीतर चलें॥

(दोनों भीतर गए)

द्यूतकर। क्या काठ की प्रतिमा है॥

माथुर। नहीं २ पत्थर की होगी (बहुत सा हिलाय डुलाय) भाई ऐसे निश्चय न होगा आओ हम तुम दोनों मिल कर जुआ खेलें तो वह धूर्त होगा तो आप ही खुल पड़ेगा (दोनों खेलने लगते हैं)

संवाहक (जुआ खेलने की इच्छा को बहुत रोक मन में) अरे हम ऐसे निर्द्धन पुरुषों के मन को इस जुए का शब्द हरे लेता है जैसे भ्रष्ट राज्य राजा के मन को डंके की आवाज हर लेती है; बहुत चाहता हूं कि न खेलूं क्योंकि सुमेर के शिखर पर से गिरना और जुआ की हार दोनों बराबर है तो भी कासैन की कोकिला सी कूकन मन हरे लेती है॥

शेषभागी।

विज्ञापन।

अग्रिम मूल्य की अवधि ३ महीना हो गया अब भी जिन लोगों को [illegible] मूल्य देना मंजूर हो कृपा कर भेज [illegible] तो बड़ी अनुग्रह हो और जिन से [illegible] वर्ष का मूल्य अब तक नहीं मिला वे या तो हमारा जो कुछ चाहिए चुकता करें नहीं तो कृपाकर लिख भेजें कि हम न देंगे जिसमें हम वसूल करने की दूसरी तदबीर सोचें।

अग्रिम मूल्य	३।)
पश्चात् देने से	४।)
एक कापी का	।)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

677

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Dec. 1880. [Vol. IV. No. 4.]

प्रयाग मार्गशीर्ष कृष्ण १४ सं० १९३७ [जि० ४ संख्या ४]

बाल्य विवाह।

सकल दोष की खानि, वीर्य हरन दारिद करन। आलस को जड़ आनि, त्यागहु बाल्य विवाह को॥

बाल्यविवाह के निराकरण से यह तात्पर्य्य नहीं है कि लड़कियां पहाड़ सी बढ़ा दी जांय या घर में क्वारी बैठी रहा करें ; ऐसा जल्द घबड़ा उठे तनिक भी न सोच समझ कर बोले क्या पण्डित वर काशीनाथ की कल्पना "अष्टवर्षा भवेद्गौरी" इत्यादि वाक्यों को आप ने सर्वथा दुर्बल ही समझ लिया लड़कियां पहाड़ सी न बढ़ने पावें यह विचार आप का हमको सर्वथा माननीय है ; हम चाहते हैं कि पुत्रों का विवाह लड़काई में

न हो आप उसे दूसरी तरफ खींचे जाते हैं; प्रयोजन यह कि लड़के पहाड़ से बढ़ जांय और लड़कियां न बढ़ने पावें चाहिए हम भी तो आप ही की हां में हां मिलाए देते हैं ८ वा १० वर्ष की कन्या का विवाह होता रहे जिसमें उन दुर्घटनाओं का भी प्रादुर्भाव न हो जिन्हें आप ने गत मास के प्रदीप के १८ वें पृष्ट में गाया है मनु के जिस श्लोक से लड़कियों का बाल्य विवाह सिद्ध होता है उसी से लड़कों के बाल्य विवाह का खण्डन भी तो निकलता है "त्रिंशद्वर्षोद्वहेत्कन्यां हृद्यांद्वादशवार्षिकीम्। अष्टवर्षोऽष्टवर्षां वा धर्मेसीदतिसत्वरः" ३० वर्ष का पुरुष १२ वर्ष की कन्या ब्याहे (यह प्रथम कल्प है) अथवा २४ वर्ष का पुरुष ८ वर्ष की कन्या ब्याहे (यह द्वितीय कल्प है) और जो जल्दी कर इसके विपरीत अर्थात बाल्य अवस्था में पुत्र को ब्याह देता है वह गृहस्थाश्रम के सुख से वञ्चित हो उलटा दुःख भोगता है; जिस सूक्ष्म विचार से मनु जी ने इस सिद्धान्त को पुष्ट किया है वही हम भी चाहते थे सो बात आप के सुकुमार चित्त में कदाचित् अब तक स्थान ही नहीं पाया यही बात याज्ञवल्क्य ने भी कहा है "अविप्लुत ब्रह्मचर्यो लक्षण्यांस्त्रियमुद्वहेत्" तात्पर्य्य यह कि ब्रह्मचर्य्य न टूटने पावे जब तक पढ़े मद्य मांस आदि से बचा रहे विद्योपार्जन से निश्चिन्त हो बाहरी और भीतरी सुलक्षणों से युक्त स्त्री को ब्याहे; फिर उक्त महात्मा ने यह भी लिखा है "एतैरेवगुणैर्युक्तः सवर्णःश्रोत्रियोवरः। यत्नात्परीक्षितःपुंस्त्वे युवाधीमान्जनप्रियः" अर्थात् वर कई प्रकार के गुणों से युक्त हो अपनी जाति का हो "न कि जैसा एक बङ्गदेशी शूद्र के साथ ब्राह्मण कन्या रमणीरामा का परिणय अभी हुआ है" वेद आदि विद्या से सुसम्पन्न हो "अब इस समय उजड्डपन और मूढ़ता सम्पन्न अकबला रहते हैं जिनकी सूरत देख ज्वर चढ़ता है जहां खड़े हों वहां की पृथ्वी उजाड़ हो जाती है पर क्या किया जाय बड़े शाह जी या बड़े तुन्दिल पण्डित जी के पुत्र हैं" ज्ञान और बुद्धिमान् हो पुंस्त्व अर्थात् मर्दानगी में जिसकी अच्छी तरह परीक्षा कर ली गई हो ऐसे के साथ लड़की का विवाह करे; भला बच्चे के साथ विवाह करना उचित होता तो मनु जी यह नियम क्यों बांध जाते "काममामरणात्तिष्ठेत् गृहेकन्यर्तुमत्यपि। नत्वेवैनांप्रयच्छेत्तु गुणहीनायकर्हिचित्"

हिचित्" अर्थात् कन्या चाहीं ऋतुमती भी हो कर जन्म पर्यन्त घर में बैठी रहे वह अच्छा पर निर्गुणी वर के साथ न ब्याहे; सो ऐसे बड़े भारी नियम का उल्लङ्घन सभी करते हैं इसमें किञ्चिन्मात्र धर्म्म की हानि नहीं है अभी एक तनिक जात में छेठे भाई के साथ भात खा ले कि धर्म्म क्या सब तरह से गया गुज़रा हुआ; वाहरे समझको इसमें कुछ स-न्देह नहीं कि छोटी उमर में पुत्र का ब्याह करना मानो अपनी प्रिय सन्तान को आपदा के हाथ सौंप देना है; प्रायः देखा गया है कि लड़के पहले तो ब्याह की लालच से पढ़ने लिखने में बड़ी रुचि रखते हैं वा यह बात सब को दिखाते हैं कि हमें पढ़ते लिखते देख लोग हमारा ब्याह कर देंगे पर ब्याह हो जाने उपरा-न्त पढ़ने लिखने या कोई सुढङ्ग सीखने की ओर से निसृही हो किसी का कुछ कहा सुना नहीं मानते फिर आप यह भी कहते हो कि विवाह तो असल में द्विरागमन है तो फिर क्यों पांच सात वर्ष पहले से दोनों को बाप कर बैठा देते हो गौने की बुरी रस्म क्यों न उठा दी जाय जब दोनों समर्थ और अपने पूर्ण यौवन को पहुंचें तब ब्याह हुआ करे; यह बात प्रत्यक्ष देखी जाती है कि कन्या झट पट सयानी हो जाती है पूत राम वीर्य की उस परिपक्व अवस्था को नहीं पहुंचते जो नवसङ्गम में वाञ्छित है; ब्याह के समय लोग वर की छोटी अव-स्था पर बिलकुल ध्यान नहीं देते हैं कोई धन देखते हैं जिसमें सेरीं सोने से उन की कन्या लदी रहे कोई जाति कोई वर का गोरा गाल मुलायम चमड़ा तोतरी बोली पर मोहित हो कन्या का दान कर डालते हैं धनी जन जी की हुल्स निकालने को छोटे लड़के का ब्याह कर-ना पसन्द करते हैं कितने बहुत सा द-हेज पाने की उम्मैद से लड़के का जन्म सत्यानाश कर देते हैं बड़ी उमर में सम-झदार लड़के का ब्याह हो तो वह सब दहेज बाप राम के हाथ काहे को लगे; ऐसा भी देखा गया है कि नवसङ्गम के समय बाज़े लड़के रोने लगे हैं बाज़े ग्लानि के मारे आहार छोड़ देते हैं बाज़े परदेश निकल भागे हैं कोई लड़का देखा सीखी वा शर्मा शर्मी कच्ची अवस्था में फस गया तो थोड़ी ही अवस्था में ऐसा सिकुड़ उठा कि खीस बाय दिया किसी काम ही का न रहा उस बेचारे ने यह जाना भी नहीं कि पूरी जवानी का

जोश जिसे कहते हैं गायब धुत्तुक गया कान्ति का लेश भी न रहा अङ्ग अङ्ग शिथिल हो गए खबीस की सूरत बनाए चतुर वे मोहाल से इधर से उधर डोलते फिरते हैं धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का; जिस हल और बैल के भरोसे विषय के खेत में हाथ लगाया जब वे काम ही के न रहे तो किसानी कौन करे; यह सब कोई जानता है कि सड़ा गला पतला बीज पहले तो जमता ही नहीं और उगा भी तो बल नहीं करता खेतिहर खेत काटने पर जो पुष्ट बीज होते हैं उन्ही को चुन कर बोने के लिये रख छोड़ते हैं परन्तु बड़े खेद की बात है कि मानुषी सृष्टि क्रिया में ऐसा अंधेर हो सुश्रुत में लिखा है "अथास्मै पञ्चविंशतिवर्षाय द्वादशवर्षां पत्नी मावहेत्" अर्थात् २५ वर्ष वाले का व्याह १२ वर्ष की कन्या के साथ होना चाहिए फिर इसका हेतु सुश्रुत महाराज ने स्पष्ट रूप से लिख दिया हैं "ऊनषोड़शवर्षायाम प्राप्तःपञ्चविंशतिम्। यद्याधत्तेपुमान्गर्भं कुक्षिस्थःसविपद्यते॥ जातोवानचिरञ्जीवेज्जीवेद्वादुर्बलेन्द्रियः। तस्मादत्यन्तबालायां गर्भाधानंनकारयेत्॥" जो पुरुष बिना २५ वर्ष की अवस्था पहुंचे १५ वर्ष से कम उमर वाली स्त्री में गर्भाधान करते हैं वह गर्भ पेट ही में नष्ट हो जाता है पैदा भी हुआ तो चिरञ्जीव और पुष्टेन्द्रिय नहीं होता इससे अत्यन्त बाला में गर्भाधान कभी न करे; जिस विधवा विवाह के लिए आप लोग गीत गा रहे हैं वह वैधव्य दोष बाल्य विवाह रूपी दोष राशि की एक छोटी सी कला है यदि छोटी अवस्था में पुत्र के विवाह का निषेध किया जाय तो वैधव्य दोष आप ही क्षीण और हीन हो जायगा रहो गुण दर्शन और दोषारोपण की बात सो इस का कुछ निश्चय नहीं संसार के सब पदार्थ गुण और दोष से सने हैं लिखने वाले की इच्छा के आधीन है जो जिसे जैसा रुचै वह उसे उस तरह पर लिख सक्ता है; मनुष्य को यह भी सोच लेना चाहिये कि कौन सी बात सहज में चल सक्ती है हम विधवा विवाह के विरुद्ध नहीं हैं पर इसका यत्न गौण है मुख्य बाल्यविवाह के उठाने का यत्न होना चाहिए; कहने की तो और ही बात होती है पर ऐसा शूर वीर हम किसी को नहीं देखते कि अपने यहां विधवा विवाह का नमूना कर दिखावे और बाल्य विवाह के रोकने के नमूने तो हज़ारों ठौर पाए जाते हैं

फिर इसमें जात बिरादरी का भी कुछ डर नहीं है ; रोग का औषध ढूंढ़ने से तो यही अच्छा कि प्रथ्य का सेवन करे ऐसा लेख भी है "पथ्येसतिगदार्तस्य कि मौषधिनिषेवणैः। पथ्येऽसतिगदार्तस्य कि मौषधिनिषेवणैः" ॥

मृच्छकटिक।

संख्या २ के आगे से।

द्यूतकर० मेरा पड़ा मेरा पड़ा ॥

माथुर० नहीं नहीं मेरा पड़ा मेरा पड़ा ॥

सम्बाहक (दूसरी ओर से आ कर) किसी का नहीं मेरा पड़ा ॥

माथुर० देखो यह धूर्त खुल पड़ा (उसे पकड़) रे धूर्त अब कहां जा सक्ता है दे दाम मोहर ॥

सम्बाहक० दूंगा ॥

माथुर० अभी दे ॥

सम्बाहक० कृपा करो देंगे ॥

माथुर० नहीं २ हम अभी लेंगे ॥

सम्बाहक० ठहरो ठहरो मेरा सिर घूमता है मुझे छांट हुआ चाहती है (भूमि में लोट जाता है और दोनों उसे मारते हैं)

माथुर० अरे नहीं दे सक्ता तो कुछ अवधि कर दे कि इतना देंगे ॥

सम्बाहक० आधा तुमको देंगे आधा छोड़ दो ॥

सम्बाहक (द्यूतकर के पास आ) आधा आप को भी देंगे आधा छोड़ दो ॥

द्यूतकर० अच्छा ऐसा ही होगा ॥

सम्बाहक (माथुर से) आधा आप ने छोड़ा ॥

माथुर० हां छोड़ा ॥

सम्बाहक (द्यूतकर से) आधा आप ने भी छोड़ा ॥

द्यूतकर० हां छोड़ा ॥

सम्बाहक० तो अब जाता हूं (छोड़ कर चलता है)

माथुर० कहां जाता है बिना मोहर दिए ॥

सम्बाहक० आर्य्य मित्र आप लोग इन दोनों के अन्याय को देखिए अभी एक को आधा देने का वादा किया एक से आधा छुड़वा लिया तौ भी मुझ गरीब को सताते हैं ॥

माथुर० अब हट मैंने ऐसी लुत्रमाओ बहुत पढ़ रक्खा है मैं तुझसे ज़ियादा स-याना हूं ऐसे ऐसे कितनों को राह

लगा दिया है; मैं तेरी बातों से कभी आने का नहीं हूं अभी दे डाल ॥

सम्वाहक० कहां से दूं ॥

माथुर० घर बेंच कर दे ॥

सम्वाहक० मेरे घर नहीं है ॥

माथुर० बाप को बेच कर दे ॥

सम्वाहक० बाप भी नहीं है ॥

माथुर० मा को बेच के दे ॥

सम्वाहक० मा भी नहीं है ॥

माथुर० तू आप बिक जा ॥

सम्वाहक० चलिए बाज़ार में मुझे बेचिए ॥

माथुर० चल ॥

सम्वाहक (थोड़ा चल कर) आर्य्य लोग मुझे १० मोहर के लिए मोल लीजिए (आकाश की ओर देख) क्या कहते हो तू क्या करेगा? तुम्हारे घर की सब टहल करूंगा; यह तो बिना कुछ उत्तर दिए ही चला गया; अच्छा तो अब दूसरे से कहूंगा (फिर वही कहता है) क्या है कि यह भी अनसुनी सी कर चला गया; हा चारुदत्त के दरिद्र हो जाने से अब मेरी यह दशा है ॥

माथुर० अरे दे दे ॥

सम्वाहक० कहां से दूं (गिर पड़ा और लोट गया)

(दर्दुरक एक दूसरे जुआरी का प्रवेश)

दर्दुरक० आहा जुआ बिना सिंहासन का एक राज्य है खेलता जुआरी हार को कुछ नहीं गिनता और राजा के समान नित्य द्रव्य लेते देते सदा वृद्धि ही देखता है सो जुआ खेलना किसी साधारण मनुष्य का काम नहीं है "रुपया पैसा जुए से, जोरू लड़के जुए से, दिया लिया जुए से, सब कुछ खोया जुए से" तिया के पड़ते ही सब गया दुआ क्या पड़ा मानो नाड़ी २ का सब रक्त खिंच गया नक्की पड़ने से घर की राह को पूरा ने सब पूरा ही कर दिया; दांव भी न दे सका बरन बहुत कुछ गद्दहा सा पीटा गया अब जाता हूं ॥

"त्रेताहृत सर्वस्वः, पावरपतनाच्च शोषितशरीरः। नर्दित दर्शित मार्गः, कटेन विनिपातितोयामि ॥"

(आगे देख) यह हम लोगों का पुराना सभिक "द्यूत सभापति" माथुर इधर ही आ रहा है इस झंझट में पड़ भाग भी नहीं सक्ता अब किसी तरह अपने को छिपाऊं (छिप कर खड़ा हुआ कपड़े को देख) यह सूत क्षीण हो गया और सैकड़ों छिद्र इसमें हैं अब यह ओढ़ा भी नहीं जा सक्ता छिपाने ही से इसको

सब इज्जत आबरू है ; अथवा यह क्षुद्र माथुर मेरा क्या करेगा मैं एक पांव आकाश में दूसरे से धरती का सहारा कर दिन भर खड़ा रह सक्ता हूं ॥

माथुर० अरे दिखा दे मेरी मोहर ॥

सम्पादक० किसी दिग्गज (माथुर इसे खींचता है)

दर्दुरक० एं आगे यह क्या हो रहा है यह बेचारा सम्पादक है माथुर इसे मारे डालता है (आकाश की ओर देख) क्या कहते हो १० मोहर के लिए मारा जाता है क्या कोई भी नहीं है जो इन धूर्तों से इसे छुटाता (चल कर) हटो हटो मैं इसे अभी छुड़ाए देता हूं ; अच्छा तो पहले इस खबिक माथुर को समझाऊं (प्रकाश) माथुर भैया राम राम हो एह के काहे मारत हौ ॥

माथुर० यह मेरा १० मोहर धराता है ॥

दर्दुरक० ह; १० मोहर तो हमार भोर के कलेऊ का खरच है ॥

माथुर (बगल से उसका कपड़ा खींच) महाराज देखिए तन पर कपड़ा तक नहीं है सौ छेद का अंगरखा पुराना गुदड़ा लिए यह मूर्ख १० मोहर को भोर के कलेज का खर्च बतलाते लजाता नहीं ॥

दर्दुरक० अरे इतनी सौ मैं एक दांव पर रख द्यात हौं क्या जेकरे पास धन होत है वह बगल में लिए फिरतु है ; अरे तैं बड़ा नीच है ब्याह से धन के कारन पांच इन्द्री वाले मनसवा को मारि डारतु है ; सुन सुन जो अस है तौ १० मोहर एहका और दे जुआ फिर खेलाव जितिहै तो तोर है हारी ॥

माथुर० और जो न जीता ॥

दर्दुरक० तो का देई सौंग ॥

माथुर० तू जानता है इसी ने सब चालाकी सीख रक्खा है ऐसा है तो उसको सच्ची तूही दे डाल, मैं तुझे अच्छी तरह जानता हूं तू बड़ा नीच है ॥

दर्दुरक० तैं नीच तोर बाप नीच ॥

माथुर० अरे मेरा दे डाल (सम्पादक को मारता है)

सम्पादक० आधी दूंगा ॥

दर्दुरक० मूर्ख तैं मेरे पीछे एहका बहुत मारे पीटे अब सामुहें मारिहै तौ आंख लेइहौं (दोनों लड़ने लगे दर्दुरक सम्पादक को भागने का इशारा करता है)

माथुर॰ अच्छा चचा आज तो तुमने हमें मारा है कल्ह हाकिम के सामने कचहरी में तुम्हें देखूंगा॥

दर्दुरक॰ कब देखिहै॥

माथुर (आंख फाड़) ऐसे देखूंगा॥

दर्दुरक॰ उसके आंख में धूर झोंक सम्बाहक को भगा देता है और माथुर आंख मूंद बैठ जाता है॥

दर्दुरक॰ (स्वगत) द्यूत सभा का अधिकारी माथुर से मैंने बैर कियाहै अब यहां रहना उचित नहीं मेरे मित्र शर्विलक ने कहा भी है कि आर्य्य नामा गोपाल बालक राजा होगा ऐसा किसी सिद्ध ने भविष्य बाणी कही है सब उसी का अनुसरण कर रहे हैं सो मैं भी वहीं जाऊं (गया)

सम्बाहक॰ दर्दुरक की कृपा से बच गया किसी तरह; अब कहीं छिप रहूं यह किसी का घर है द्वार भी इसका खुला है चलो इसी के भीतर लुक रहैं (भीतर जा द्वार बन्द कर लेता है)

माथुर (आंख पोंछता अपने साथी द्यूतकर का हाथ पकड़) अरे दे डाल॥

द्यूतकर॰ यह मैं हूं वह तो तभी भाग गया जब हम तुम दोनों दर्दुरक से लड़ रहे थे॥

माथुर॰ तो चलो फिर उसे ढूंढ़ैं (सम्बाहक के पाओं की छाप देखता आगे बढ़ा बसन्तसेना के घर के पास जा) उस्के पाओं की छाप यहांहीं तक उपटीहै इस्से वह धूर्त इसी घर में घुस रहा है; यह किसका घर है?

द्यूतकर॰ बसन्तसेना का॥

माथुर॰ तो अब मोहर मिलो समझो; मैं यहीं छिप कर बैठ रहता हूं निकलेगा तो पकड़ूंगा तब तक तुम जा कर इसको इत्तिला करो (द्यूतकर जाता है माथुर छिप रहता है)

द्वितीय गर्भाङ्क।

स्थान

बसन्तसेना का घर।

(बसन्तसेना और उसकी दासी मदनिका बैठी हुई)

बसन्तसेना॰ भला मदनिका तू मुझे इस समय कैसा देखती है॥

मदनिका॰ आप के चेहरे पर कुछ सनाहटा सा छाया हुआ है इस्से जान पड़ता है कि इस समय तुम्हें अपने समान सहृदय किसी प्रीतम की कामना है; मुझे बड़ा आनन्द है कि आज आप ने रतिबल्लभ मन्मथ देव को सर्वथा अनु

685

ग्रहीत किया जो किसी पुरुष को अपनी ओर से चाहा ; सो बताइये वह कोई राजा है ? या कोई राज बल्लभ है, कौन है ?

वसन्तसेना० रमण की इच्छा है कुछ धन को नहीं राजा या राजवल्लभ को क्यों चाहूंगी ॥

मदनिका० तो क्या किसी ब्राह्मण को चाहती हो ॥

वसन्तसेना० नहीं २ ब्राह्मण देव तो मेरे पूज्य हैं ॥

मदनिका० तो क्या किसी बड़े सौदागर सेठ को चाहती हो ॥

वसन्तसेना० प्रवासजीवी वणिक् अपने स्नेही जनों को छोड़ बरसों देश देशांतर घूमा करते हैं इससे उनसे प्रीति करने में विरह का दुःख सहने के सिवा लाभ क्या है ॥

मदनिका० न राजा, न राजवल्लभ, न ब्राह्मण, न सेठ, कोई नहीं तो स्वामिनी आप किसे चाहती हो ॥

वसन्तसेना० उस दिन तू मेरे साथ कामदेवोद्यान में गई थी ॥

मदनिका० हां गई थी ॥

वसन्तसेना० तो फिर क्यों मुझ से अजान सी पूछ रही है ॥

मदनिका० हां जाना क्या वही हैं जिसने उस दिन उन दुष्टों से स्वामिनी जी तुम्हें बचा रक्खा था ; आर्यें उनका नाम तो आर्य्य चारुदत्त है पर सुनती हूं वे तो अब दरिद्र हो गए हैं ॥

वसन्तसेना० इसी से तो उन्हें चाहती हूं क्योंकि दरिद्र मनुष्य के साथ लगन लगने से वेश्या जन निन्दनीय नहीं होतीं (अर्थात् द्रव्य की अभिलाषा छोड़ केवल गुण देख पुरुष पर आसक्त होना प्रतिष्ठा की बात है)

मदनिका० जिस आम की बौर झर कर गिर पड़ी उसे मधुकरी क्या कभी सेती है ॥

वसन्तसेना० इसी से तो वह मधुकरी कहलाती है जो कृतघ्नता आदि गुणों को मधु पान से मतवाली हो एकबारगी भूल जाती है ॥

मदनिका० स्वामिनी जी तो क्यों उनके निकट नहीं चलती हो ॥

वसन्तसेना० अनाहूत बार बार घर पर जाने से दरिद्रता के कारण उन्हें क्लेश होने से कहीं ऐसा न हो कि वे दुर्लभ दर्शन हो जांय ॥

मद० । क्या इसी लिए उस दिन अन गहनों को उन्हें दे आप चली आईं ॥

बसन्तसेना॰ अच्छा तूने पहचाना ॥

नेपथ्य में। इस घर के मालिक की शरण में हूं मुझे बचाओ बचाओ इन दुष्टों से ॥

(सम्वाहक आकर बसन्तसेना के पैरों पर गिर पड़ा)

बसन्तसेना (उसे उठा कर) तुम कौन हो किसके पुत्र हो क्यों यहां आए हो क्या जीविका करते हो किस्से तुम्हें भय है ?

सम्वाहक॰ आर्य्या पटना मेरी जन्म भूमि है ज़मीदार का बेटा हूं अङ्गमर्दन की जीविका से जीता हूं ॥

बसन्तसेना॰ अच्छी सुकुमार कला तुमने सीखा है ॥

सम्वाहक॰ आर्ये बिद्या जान कर पहले सीखा था अब यही जीविका हो गई है ॥

बसन्तसेना॰ तो यहां कैसे आए ?

सम्वाहक॰ अपूर्व देश देखने के कुतूहल से यहां आ पड़ा और अब यहां इस उज्जयिनी में एक आर्य की नौकरी करता था वे आर्य बड़े ही प्रियदर्शन प्रियवादी दे कर नहीं कहते अपकार को भूल जाते हैं बहुत कहने से क्या उदारता के एकमात्र आश्रय परोपकार ही के लिए जन्म है ।

मदनिका॰ आर्य्या ये वेई हैं जिन्हों ने अपने गुणों से तुम्हारे मन को चुरा लिया है ॥

बसन्तसेना॰ अच्छा तैंने कहा मैं भी यही सोचती थी; (सम्वाहक से) तब क्या हुआ ॥

सम्वाहक॰ सो वे आर्थ्य देते देते—

बसन्तसेना॰ क्या क्षीण धन हो गए ?

सम्वाहक॰ बिना कहे आप ने कैसे जाना ॥

बसन्तसेना॰ इसमें क्या जानना है गुण और विभव दोनों एक ही स्थान में नहीं रहते अपेय तड़ाग में बहुत जल रहता ही है ॥

सम्वाहक॰ उनका नाम क्या है ?

सम्वाहक॰ आर्य्ये उस भूतल चन्द्रमा को कौन नहीं जानता वे सेठों के महल्ले में रहते हैं उनका श्लाघनीय नाम आर्य्य चारुदत्त है ॥

बसन्तसेना (प्रसन्न हो) आर्य्य यह घर आप ही का है मदनिके इनको आसन दे (मदनिका वैसा ही करती है)

सम्वाहक (आसन पर बैठ स्वगत) आर्य्य चारुदत्त का नाम लेते ही मेरा इतना आदर हुआ साधु आर्य्य चारुदत्त

साधु पृथ्वी पर एक आपही अकेले जीते हो वाकी और सब लोग धौंकनी समान सांस भरते हैं (प्रकाश) आर्य्ये जब से मैं धन हीन होगए तब से मैं जुआ खेल किसी तरह दिन काटता हूं भाग्य दोष से आज १० मोहर हार गया हूं (नेपथ्य में) हाय लूटा गया मूसा गया, ये दोनों सभिक और द्यूतकर जिनका मैं धराता हूं मुझे बड़ी पीड़ा दे रहे हैं मैंने जो कुछ हाल था कह सुनाया अब आप जो करें ॥

वसन्तसेना (स्वगत) ठीक है बसेरा वाले पेड़ के सूख जानेसे तदाश्रित पक्षी गण इधर उधर झांखते ही फिरते हैं; (प्रकाश) मदनिके तू जा मेरे इस कँगने को सभिक और द्यूतकर को दे कह देना कि सम्वाहक ने दिया है ॥

मदनिका० जो आज्ञा (बाहर गई)

वसन्तसेना० आर्य्य आप यहां सुख पूर्वक रहिए यह घर आप ही का है ॥

द्यूतकर० आर्य्ये मैं इसका क्या बदला चुकाऊं मैं तुम्हारा बड़ा एहसानमन्द हूं जो इन जुआरियों से मेरा गला छुटाया अब मुझे बड़ा गिलान आया है सो मूड़ मुड़ाय बौद्ध मत का सन्यासी हो जाऊंगा ॥

वसन्तसेना० आर्य्य साहस न करो ॥

सम्वाहक० अब तो जो निश्चय मैं कर चुका सो कर चुका (थोड़ा चल कर) हारा जुआरी हो जो मैं डर से मुंह छिपाए व्याकुल फिरता था सो अब राजमार्ग में नंगे सिर आनन्द से विचरूंगा अब मुझे किसको डर है (प्रस्थान)

नेपथ्य में। वसन्तसेना का खम्भभञ्जक नाम मतवाला हाथी छुट गया है भागो भागो बचो बचो हटो हटो ॥

वसन्तसेना (सुन कर) हाय हाय मैं अब क्या यतन करूं कर्णपूरक निगोड़े की असावधानी से यह छुट गया है जाय उसी को ढूंढ़ कर पकड़ने को भेजें (प्रस्थान)

तृतीय गर्भाङ्क ॥

स्थान

वसन्तसेना के घर का द्वार।

(द्यूतकर माथुर बैठे हुए मदनिका का प्रवेश)

मदनिका (स्वगत) ये दोनों उदास बैठे कुछ बिसूरते इधर ही देख रहे हैं इन्हें येही दोनों सभिक और द्यूतकर होंगे (पास जाय) तुम दोनोंमें सभिक कौन है तुम्हारा कोई कुछ धराता है ?

माथुर॰ हां हां सम्पादक से मेरा १० मोहर चाहिए सो उस्का क्या ॥

मदनिका॰ इसी के लिए हमारी आर्या ने यह कङ्कण दिया है नहीं नहीं उसी ने दिया है ॥

माथुर (प्रसन्नता से ले) नेकबख़्त जा कर सम्पादक से कह देना कि तुम अब अपने ऋण से पार हुए चलो फिर जुआ खेलो (दोनों बाहर गए)

मदनिका॰ जा कर आर्या से इसका सन्देसा कहूं (गई)

द्यूतकर सम्पादकों नाम द्वितीयोऽङ्कः ॥

अखबार वालों की नासमझी।

इन दिनों हिन्दी के अखबार वाले इस बात का निवेदन सरकार से कर रहे हैं कि बाबू हरिश्चन्द्र को एक बड़े से बड़ा जिसमें ५ गज का पुछल्ला लगा हो ऐसा कोई ख़िताब मिलना चाहिए; छि: एकबारगी कुएं में भांग पड़ गई आख़िर हिंदुस्तानी हो ठहरे भद्दी अक्किल वाले कहां से सरकार के मर्म को पकड़ सकते हैं; साहबो ज़रा सोच समझ बोला करो क्या यह हिंदुस्तानी राज का धोखा है जो निरी merit योग्यता या इल्मी क़ियाक़त देख बड़ी बड़ी उपाधि और ख़िताब के हार लोगों के गले में पहना दिए जाया करें; बाबू हरिश्चन्द्र ने कब झूठी वफ़ोपरस्ता के लिए सरकार की हां में हां मिलाया है जो ख़िताब दिया जाय बल्कि जब कभी मौका आ पड़ा है तब सच्ची देशहितैषिता के उद्गार से पूरित हो "हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः" इस सिद्धान्त के अनुसार सरकार के बादी ही हो उठे हैं तब फिर "किस बिरते पर तत्ता पानी" "कौने गुना हरि" बिना हाकिमों तक रसाई पैदा किए, बिना घोड़ों के लिए मसजिद ढहाए, अपनी थोड़ी सी खैरख़ाही के लिए देश का देश बिना धूर में मिलाए, गौरवर्ण के बिना दासानुदास बने, नाज़ो नखरे के साथ बिना मेमों की सी बोली बोले, हां हुज़ूर दिन नहीं यह रात ही है बिना कहे, कभी किसी को ख़िताब मिला है; हां अलबत्ता जो काशी दूसरी खुशामदी पत्रिका के वाली सुवानी या पायोनियर साहब के लिए ख़िताब की शिफारिस करते तो शायद कदाचित् उनके कहने पर लिहाज़ किया जाता; फिर भी आख़िर को देश भाषा के अख़-

बारों के एडिटर कहां से इतनी अकिल लावैं जो इस गम्भीर आशय के तात्पर्य्य को समझ सकैं; हमारी जान तो शहनाई का बजाना और बहरी का चबाना दोनों एक साथ असम्भव और असम्भव सा प्रतीत होता है कूंड़ी के इस पार या उस पार या तो सरकार ही की ओर से सुर्खरूई लूट लें या वतन दोस्त बनें वर्तमान् राज्य की पालिसी ही इस किस्म की नहीं है जो दोनों बातें सध जांय जिस दिन हमें इतनी समझ आ जायगी कि देश के हित साधन के मुकाबिले राज सम्मान कुछ पदार्थ नहीं है उसी दिन से हमारे शुभ दिन का आरम्भ होने लगेगा॥

पत्थर पड़ै ऐसी समझ में॥

बार बार व्यर्थ मनोरथ होने से और जितने यत्न किए गए सब निष्फल हुए जिस्से निश्चय हो गया कि हमारे हिंदुस्तान के कुलपुत्र कभी राह पर नहीं आने वाले हैं तौ भी समझदारों की फुटही समझ यही भरोसा किए है कि इन्हें उसका एजाब कदाचित् अब भी जगमगा उठैं पत्थर पड़े समझदारों की ऐसी समझ में; यह बात अच्छी तरह सिद्ध हो गई कि सरकार देश भाषा में अखबारों का जारी रखना किसी तरह पसन्द नहीं करती इसी लिये प्रेस ऐक्ट हुआ कई एक अखबार जो बड़े गुस्ताख और मुहफट समझे गए बन्द भी कर दिए गए तब भी हम लोगों को लिखने का गरूर ऐसा दृढ़ मूल हो गया है कि किसी तरह घुरता हो नहीं और अपने कमबख्त जी को कितना समझाते हैं पत्थर पड़े इसकी ऐसी समझ में यह काहे को कभी समझैगा कि इस सांप के खिलौने से बाज़ आए; यह खूब समझ लिया गया है कि हम जब तक पुराने हिंदूपन की कैद के कैदी बने रहेंगे कभी हैवान से इन्सान न होंगे तौ भी इस पुराने की मोहब्बत पिण्ड नहीं छोड़ती पत्थर पड़ै ऐसी समझ में जो इस बूढ़े के घुने हाड़ों की गुरिया का माला बनाय अब तक पहनतेही जाते हैं; अच्छी तरह साबित हो गया कि पच्छिम वालों की हिकमत और हुनर के आगे हमारी सब बातें हेच और तुच्छ हैं फिर भी पत्थर पड़े ऐसी समझ में जो पुरानी वासना से मुक्त नहीं हुआ चाहते और अपने को राजा इन्द्र के नाती ही माने बैठे हैं जहां कहीं किसी ने हमारे देश

हमारे मज़हब हमारी पुरानी रीति नीति को बुरा कहा कि जन्म भुन खाक हो गए; ये द्वीपान्तर वासी पाश्चात्य भली भांति जाने हुए हैं कि यहां वालों के साथ ऐसी कड़ी आंट रखने से के दिन निर्वाह हो सकेगा फिर भी समझ में पत्थर पड़ा है जो यहां वालों का दिल अपनी मूठी में कर नहीं चलते श्वेत कृष्ण के भेद को बढ़ाते ही जाते हैं और समझते हैं कि यह अन्धेर सदा चली ही जायगी; दृढ़तर निश्चय हो गया कि जहाज़ पर चढ़ देश देशान्तरों में जाने से सबों के सह भोजन और विधवाविवाह की रुकावट और बाल्य विवाह उठा देने से अवश्य ही देश का भला है फिर भी समझ में पत्थर पड़ रहा है कि कोई शूर वीर बन हिंदुस्तान के इन प्रान्तों में अगुआ हो नमूना नहीं दिखलाया चाहता इत्यादि और भी कितनी बातें हैं॥

शर्मिष्ठा नाटक॥

संख्या २ के आगे से॥

(तृतीय अङ्क, तृतीय गर्भाङ्क)

स्थान

अन्तःपुर के पास पाईंबाग।

(शर्मिष्ठा उदास बैठी हुई)

शर्मिष्ठा (स्वगत) हाय इस दुस्तर शोक सागर से कौन हमारा उद्धार करे हा दैव इतना क्या तेरे मन में यही था कि हमें पैदा कर जन्म भर के लिए दुःखभागिनी बना दे अथवा तेरा इसमें क्या दोष है यह सब तो हमारे ही कर्मों का फल है; गुरुकन्या देवयानी से विवाह न करतीं तो क्यों राजभोग से च्युत हो जन्म भर के लिए दासी बनतीं; हा अबोध प्राण तू जो राजा ययाति के ऊपर इतना लट्टू हो रहा है इससे तुझे क्या लाभ की आशा है अथवा तेरा भी इसमें क्या दोष है ऐसे मूर्तिमान साक्षात कन्दर्प को देख अबला जाति कब निर्मल चरित्रा रह सकी है; उदयाचल पर दिनमणि को उदित देख कमलिनी कभी निमीलिता रह सकी है (ठण्डी सांस भर) हा हमारे इस रोग की न तो कोई दवा है न मौत ही हमें पूछती है; आहा देवयानी ने कौन सी कमाई कमा रक्खा है जो निज अधरसुधा के दान से उस कन्दर्प को अपने बस में कर छोड़ा है (फिर कुछ ठ:चुप से रहती है)

(राजा का प्रवेश)

राजा (स्वगत) बहुत दिनों से हम

इस उद्यान में नहीं पाए यह वही उद्यान है जिसमें हमारी महिषी की सहचरी सखी सहेलियां रहती हैं ; आहा यह स्थान सब सच बड़ा रमणीक है या हमी को ऐसा भासित होता है क्योंकि अपने प्रेमी जनों की सभी बात भली मालूम होती है (आगे देख) यह परम सुन्दरी नव यौवना कामिनी कौन है और यहां एकाकिनी यह क्यों बैठी है अच्छा तो छिप कर देखें यह क्या कर रही है (वृक्षों की आड़ में छिप जाता है)

शर्मिष्ठा० हा मैं हतभागिनी पिञ्जर बद्ध शुकी समान पराधीन हो यह क्या विचारती हूं जो देवयानी की स्पर्द्धा कर रही हूं ; हा पिता मातः हा बन्धु बान्धव हा जन्मभूमि हम फिर कभी तुम्हारा दर्शन कर सकेंगी (रुदन)

राजा० (दक्षिनी भुजा का फरकना सूचित करता हुआ स्वगत) आहा आज हमारा क्या सुदिन था जो हम बहुत दिनों से जिस पर लौ लगाए थे अचे अचानक इस एकान्त स्थान पा गए निश्चय हमारी महिषी की परिचारिका शर्मिष्ठा यही है (आगे बढ़ प्रकाश) हे मृगाक्षी तुम मन्मथ मोहिनी रति या कौन हो जो इस उद्यान को अपने सौन्दर्य की प्रभा जाल से प्रकाशित कर रही हो ?

शर्मिष्ठा (स्वगत) हा प्राणनाथ कैसे मिष्टभाषी हैं अन्तःकरण अब तू क्यों इतनी उतावली कर रहा है ॥

राजा० हे भद्रे हमने क्या अपराध किया है जो तुम अपने मधुरालाप से हमारे कर्ण कुहरों को सुखित नहीं करती हो ॥

शर्मिष्ठा (हाथ जोड़) हे नरेन्द्र हम तो राजमहिषी की एक परिचारिका हैं हमारे प्रति यह सम्बोधन अयोग्य है ॥

राजा० कल्याणी हम लोग क्षत्री हैं हमारे यहां गान्धर्व विवाह की प्रथा सदा से चली आई है तुम रूप और गुणों से सब तरह हमारे अनुरूप हो (उसका हाथ पकड़) आज से तुम हमारी राज महिषी के पद पर अभिषिक्त की गई हो तुम्हें परिचारिका कौन कह सक्ता है ॥

नेपथ्यमें० किकि क्योंरे उद्यानपाल तू तूतू हरामज़ादा बक बताता नहीं रर राजा कहां छिछि छिपा है ॥

राजा० (स्वगत) इस दुष्ट ने यहां भी हमारा पिण्ड न छोड़ा (शर्मिष्ठा से) प्रिये कोई आ रहा है चलो कहीं छिप रहें ॥   (दोनों गए)

निद्रा विसर्जन ॥

हम म्युनिसिपालिटी को बहुत सा धन्यवाद देते हैं कि निद्रा का विसर्जन कर अब बहुत कुछ सावधानी अङ्गीकार किया अब हमारी म्युनिसिपालिटी देवी से विशेष प्रार्थना यह है कि बर्सात शुरू होने के पहिले अधिकतर सावधानी ग्रहण करें जिसमें मैली चीजों के सड़ने से हैज़ा या म्यलोरिया जनित ज्वरादि उपद्रव हमें बाधा न पहुंचा सकें॥

ब्रह्मानन्द सहोदर।

लोग कहते हैं ब्रह्मानन्द का सा कोई दूसरा आनन्द नहीं है पर सच पूछिए तो ऐसा समझने वालों ने खूब डूब कर नहीं सोचा कितने ऐसे आनन्द हैं जिन के आगे ब्रह्मानन्द झख मारता है; कवि लोग शृङ्गार आदि ८ रसों का स्वरूप लिखते हो हैं "ब्रह्मानन्द सहोदरः" अर्थात् ब्रह्म के ज्ञान और साक्षात्कार से जो सुख की प्राप्ति होती है यह रस का ज्ञान और अनुभव का सुख भी उसी ब्रह्मानन्द का सगा भाई है; सरदी खूब सुर्खी पकड़े हो मारे जाड़े के दांत किटाकिट बोलते हों रात का समय हो पांच सेर रूई की लिहाफ ओढ़ किसी कोमलाङ्गी विकसित यौवना नवयुवती के कोमल अङ्गों में अङ्ग सांट सो रहना ब्रह्मानन्द से क्या कम है; लिखने बैठा जब कभी कोई उमदा बात सूझ गई और एक चोटीले से चोटीला जी में चुभ जाने वाला आशय लिख कर तैयार हो गया उस समय हमारे जी के आनन्द के सामने ब्रह्मानन्द आकर खड़ा २ हाथ जोड़े पछताया करता है "किंकविस्तस्य काव्येन किंकाण्डेनधनुष्मताम्। परस्यहृयेलग्नं नघूर्णयतिपाञ्छिरः" चन्द्रमा की चांदनी छिटिक रही हो या लम्प के रोशनी की जगमगाहट अँधियारे को कहीं दूर हटा रक्खा हो बर्फ सा बुर्राक सफेद फर्श बिछा हो गुलरुखा माशूका बगल में बैठी हो ४ दोस्त आश्ना भी मौजूद हों सोडावाटर के बाटिलों की फटाफट आवाज़ और उमदा शाम्पेन के प्यालों का दौर हो रहो हो उस समय ब्रह्मानन्द ऐसा ही बे हया हो जो फिर आकर मुंह दिखलाना चाहे; जुआ खूब जोश पर हो तोड़े पर तोड़ा खाली होता जाता हो आदमी पर आदमी झुके हों भीड़ की कसामसी में कहीं पांव रखने ही के ठांव न हो हुक्का और चुरट का धुआं नासा रंध्र में घुस २ गला घोंट रहा हो सात नौ की आवाज़ हो रही हो "७० वर्ष के एकमुकुन्दर जैजैकार मचाए हों" उस समय यदि कोई आकर ब्रह्मानन्द का चर्चा जुआरियों के सामने करे यकीन तो है कि मुंह छूटते ही गाली का प्रसाद पावेगा; ३ महीने

तक बूंद धरती पर नहीं आई गल्ले वालों के जी मे ब्रह्मानन्द तुच्छ था अब इस अगहन मास की वृष्टि से खेतिहरों से जाकर कोई पूछे फूले न समाते होंगे और ब्रह्मानन्द को लड़ाए बात करेंगे "चिन्तामणिमप्यमर्थ्यमङ्घ्रि: कर्षकाणांमुदंददौ । धनिनामुपतापस्वे दैवाधीनमजानतां" स्कूल के लड़कों से कोई पूछे गुलदिस की सक्त कठिन सवालों के हल करने के बाद कितनी बार उन्हों ने ब्रह्मानन्द के सुख का अनुभव किया होगा ; हमारे संस्कृत के विद्यार्थियों को शेखर की पंक्ति अथवा दीक्षित की फक्किका हल हो जाने पर जो आनन्द मिलता है उसकी सोलहवीं कला को भी ब्रह्मानन्द नहीं पहुंच सक्ता इत्यादि सोंचते जाओ ब्रह्मानन्द सुख के तुल्ले इतने नमूने मिलते जांयगे कि गिनते गिनते जब उठोगे ॥

रहस्य कथा उपन्यास ।

जि० ३ सं० १२ के आगे से ॥

धनुषधारी बूढ़े बाबू भानुमान् सिंह [illegible]क्रिया कर्म से जब छुटकारा पा चुका [illegible]मोहनपुर के और छोटे छोटे जागो[illegible] और गांव के सब बूढ़े बारों ने [illegible]र उसे बूढ़े बाबू की गद्दी पर स्थापित किया क्योंकि मसल है "खाते खाते बचै सो धन मरते मरते बचै सो कुनबा" अब उस घराने में यही अकेला बच रहा था तो इसकी सिवा कौन दूसरा सब जायदात पा सक्ता था और यही इसकी अभिलाषा भी थी सो अब दैव संयोग से पूरी हुई वहां के दो एक बहुदर्शी बूढ़े इसे सब भांत स्वतन्त्र और नौजवान देख उपदेश की तरह आकर इसे समझाने लगे ; बाबू तुम तो आप ही बुद्धिमान और चतुर हो सब समझते बूझते हो तुम्हे हम क्या उपदेश दे सक्ते हैं परन्तु अभी तुम्हारी नई उमर है इस उमर में बुद्धि स्थिरता को नहीं पहुंची रहती सब ओर डामाडोल हुआ करती है नैनू की नाक जिधर चाहो झुका दो सहज है ; बहुधा देखा गया है ऐसों की झुकावट भली बात की ओर तो कभी काहे को हो सक्ती है पर दुर्गुण और दुर्व्यसन आप ही आप बिना बुलाए आकर डेरा कर लेते हैं धरती बड़ी फलवन्त और उपजाऊ सही अच्छी तरह जोती बोई न गई तो लम्बी २ घासें आप से आप उसमें जम उठती हैं ऐसा ही अच्छे लोगों का साथ और अच्छा उपदेश न किया जाय तो उमर

के तक़ाज़े का ऐसा बड़ा असर होता है कि बुराई झटपट आ जाती है भलाई बोने से भी नहीं जमती इस्से बाबू हम यही आशा करते हैं कि तुम हम लोगों के साथ ऐसे ढङ्ग से बर्तोगे कि जगत में नेकनाम हो चिरजीवोगे यह सब कह सुन लोगों ने तो अपने अपने घर की राह ली इधर ऊपर की दृष्टि समान वह सब उपदेश कब फलवान हो सक्ता है यहां तो कुछ और ही खयाल जमे हुए थे प्रमदा जिसे बूढ़े बाबू के मर जाने पर कहीं सहारा न था इस्से पाकर मिलो मानो एकी २ को दून लगो यह ऐसा ही सर्वथा स्वच्छन्द था अब तो इसकी बन पड़ी ; स्वार्थ निष्पादन तत्पर धूर्तवक सब ओर से आय आय इसके यहां इकट्ठा होने लगे दिन रात चैन में कटने लगी ; एक ओर अनर्निश लगातार पीकके का पुरश्चरण होने लगा सरङ्गी सितार का तार चाहो टूट जाय पर नाच मुजरे का तार नहीं टूटने पाता था कुटिलता और कपट वृत्ति ही इसके लिए शास्त्राभ्यास था परदाराभिमर्षण को सम्पूर्ण चतुराई का मूल समझता था उसको बहुत कुछ क़दरदानी होती थी जो किसी गृहस्थ को स्त्री के बहका लाने में कुशल होता था प्रमदा को तो इन फ़न में पहले सिरे को सर्टिफिकट हासिल हो ची फिर क्या कुछ दिनों बाद बूढ़े बाबू से भी बढ़ कर यह इस्के नाक की बाल हो गई ; लखनऊ वहां से पास ही था तब क्या दुनियां भर के कूरा अख़ार सुफ़ंगारे लखनऊ के वज़ादार लोग लाल-नपुर में आय आय इकट्ठे होने लगे ; अब हम इन्हो भवों का रहस्य अलग २ लिखते हैं पाठकजन अबैं नहीं जहां कहीं इनके रहस्य की कथा में कुछ उरझाव आ पड़े उसकी गांठ समझे रहें सब पेचीदगी का भेद अन्त को उन्हें आप ही आईना हो जायगा ॥

धनुषधारी को चचा की जायदात पर कायम हुए अब १५ वर्ष हो गए थे उमर भी इसकी अब ४० के लगभग पहुंच गई थी ऐयाशी करते करते चेहरा इस का पका आम सा जर्द पड़ गया था डील केवल कङ्काल सा अस्थि मात्रावशेष रहा पर अमीरी की तमकनत हुकूमत की बू दौलत का घमण्ड इसके दिमाग को ऐस[illegible] चाट रक्खा था कि प्रभुता के अभिम[illegible] में अन्धा हो रहा था सच है "यौवन[illegible] सम्पत्तिः प्रभुत्व मविवेकता एकैक[illegible] र्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्" थोड़े [illegible]

बाद इसने एक नव युवा सुन्दरी के साथ अपना विवाह भी किया १२ वर्ष बीत गए पर दोनों के संयोग का फल रूप कोई सन्तान न देखने में आया इस लिए सुन्दरी स्त्री की ओर से भी अब इसे एक प्रकार की तृष्णा हो गई थी यह सुन्दरी बड़ी सुशीला साध्वी उदार और पति भक्त थी पर भाग्यहीन के भाग्य की रेख में अनेक प्रकार के उत्तम गुण भी मेख नहीं मार सकते इस बात को भी हमारे पाठक जन स्मरण रक्खें ॥

प्रमदा और धनुषधारी दोनों की मैत्री गठ जाने का सबब राखी राग पे-लगी का सा हिसाब था यद्यपि यह अब बिलकुल बूढ़ी हो गई थी पर दुनिया-साजी और कपट इसकी उमर के साथ ही साथ बढ़ते जाते थे इसके रूप की सोने सी दमक जाती रही बाल सब चांदी हो गए थे मोतियों के लड़ियों से दांत भला कब ठहर सकते हैं क्योंकि हीरा मोती ये सब कुन्दन के सहारे से ठहरे रहते हैं जब रूपे पर का जवा-नी का कुन्दन झर गया तब क्या चेहरे पर भिकन आने लगी मानो सब क-लई छुट छुट मुलम्मा दौड़ता जाता था; सत्तर चूहे खाय बीबी हज्ज को चलीं अब यह घण्टों तक बैठ कर माला जप-ती थी और बड़ी पूजा बिस्तारती थी देखाने के लिए ऊपर से बहुत कुछ नेम धर्म साजना धोना सब इस लिए था जिसमें दूसरों का गला रेतने वाली तेज़ छूरी पर और भी बाढ़ चढ़ जाय धनुष-धारी से प्रीतिबद्ध हो जाने का इसका गुप्त आशय कुछ और ही था और धनुष-धारी का कुटिल कुछ और ही मतलब पर झुका था इसका यही भीतरी ता-त्पर्य था कि यह अब बूढ़ी होती गई है किसी तरह इसे फुस ला दे दिवाय जो कुछ पूंजी हो झँस लें और इसकी ज़ायदात अपने नाम लिखा लें यह इसे चची चची कहा करता था और इसी सम्बन्ध से ब-हुधा महीनों तक लखनऊ से इसके घर आकर टिका रहा करता था इस लिए जिस परदे का तमाशा मैं यहां पर दि-खलाया चाहता हूं उसके अभिनय का स्थान भी लखनौ ही है ॥

प्रमदा के घर से बड़े अन्तर पर मुक्ता नाम की एक विधवा ब्राह्मणी रहती थी लड़का बाला इसके कोई न था उमर इस की ५० के लगभग पहुंची थी ; इसको कोई बुरी बात आज तक नहीं देखी सुनी गई न प्रमदा की यह गुप्त व्यभि-

चारिणी ही थी ताहम लखनौ ऐसे शहर में रह कर कहां तक शहरीयत की पहचान तरहदारी और चटक मटक न आवे; इसमें और ऐब हुनर जो कुछ रहा हो भगवान जाने पर कौड़ीचुस्त पक्के सिरे की थी; कद में बेतरह लम्बी रङ्ग गेहुआं पर डील डौल इसके सब सुडौल थे; यह अपने को गौड़ जाति बतलाती थी पर चाल चलन सब खत-रानियों के से थे घर में तो यह बड़े ही मैले कुचैले कपड़े पहने रहा करती थी पर बाहर बड़े ठाठ से निकला करती थी; विधवाओं के पहनने योग गहनों से अङ्ग अङ्ग लस कामदानी के काम की तनज़ेब की सुफैद धोती पहन हाथ में पान का डब्बा ले बड़े ठसक के साथ च-लती थी, सिवा कई किता मकान के कुछ पूंजी भी पास थी इसके मकान ऐसे हवादार और मौके से थे कि उन के केराए की इसे अच्छी कुछ आमदनी रही सूम थी ही उन्ही रुपयों को जमा करते करते पूंजी पक्की पड़ गई थी।

एक रोज दिन को १० बजे को जून एक मुसाफिर हाथ में बेग लिए उसी राह से आ निकला जहां पर इसके कि-राए के मकान वाकए थे; इस मुसाफिर के चेहरे से मालूम होता था कि यह बड़ी देर से अपने टिकने के लायक एक अच्छे आराम का मकान ढूंढ़ता हुआ हैरान लखनौ की गलियों की गर्द छा-नता फिर रहा है; इसका पोशाक सब माड़वारियों का सा था चेहरा लम्बा होठ पतले चेचक रू हस्ती पेशानी ऊंचा माथा हाथ पांव सब सुडौल थे; इसकी सूरत देखते ही मालूम पड़ता था कि यह कोई अच्छे घराने में पैदा हुआ है देशवाड़ी माड़वारियों में पान खाने की चाल तो हई नहीं जब यह मुसकिरा कर बोलता था तो कुन्द की कली से इसके दांत हीरा समान चमकते थे नाम इसका हीराचन्द था; यह माड़वारी ब-नियों का सा निरा काठ का उल्लू खुद-ग़र्ज़ निपट मूर्ख निरा हैवान न था किन्तु कुछ अङ्गरेज़ी फारसी पढ़ा था और हिन्दी की भी हर्फशिनासी रखता था देश बिदेश घूमने से हर तरह की सोहबत उठाए हुए था; अङ्गरेज़ी तर्ज़ तो सरकारी राज्य भर में छाया जाता है खास कर लखनौ में जहां अब नेच-रियों की बरकत से पुरानी नज़ाकत उखड़ अङ्गरेज़ी पन बहुत कुछ छाया जाता है मकान के दरवाज़े पर लटकी हुई एक

वाली तख्ती में "टुल्यट" देख यह जान गया कि मकान किरोए के लिए खाली है ; इसने कुण्ढी खटखटाया भीतर से एक मज़दूरिन निकल कर दरवाज़ा खोल दिया इसने पूछा मालिक मकान कहां है ? मज़दूरिन ने जवाब दिया खड़े रहो मैं बीबी जी को बुलाय लाती हूं ; एक मिनिट बाद मुन्ना निकल आई इसे भलामानुष और मुसाफिर समझ भीतर बुला लिया जाकर देखता है तो तीन खण्ड का लकोदक मकान खूब साफ और सुथरा लीपा पोता झक पड़ा है इसने पूछा इस मकान का क्या किराया है मुन्ना ने कहा एक में मैं रहती हूं दूसरे में एक बीमार किराएदार टिका है तीसरा खण्ड खाली है १० रुपया महीना इसका किराया होगा पर किराया मुसाफिरों से पेशगी जमा करा लेती हूं इसने सब कबूल कर उसी में टिक गया॥

शेषभागी ।

किमुत्पथस्थ: कुशलायकल्पते ।

मियां दबीर हिन्द को ७०० रुपया जुर्माना हुआ सच है उत्पथगामी उत्पाती की कब कुशल हो सक्ती है उक्त मियां साहब हम सब अखबार वालों के लिए एक सबक हैं जिसे चाहिए कि हम मन लगा कर सीख रक्खें जिसमें कभी को दुर्गति में न पड़ें ; समाचारपत्रों का यह काम है कि जिसमें देश का हित और लोगों की भलाई है वह बात लोगों को चेताया करै और जो कुछ दुःख या पीड़ा सरकार से निवेदन के लायक देखे उसे बड़े धैर्य और मुलाइमीयत के साथ सरकार से निवेदन करै एक बार दो बार तीन बार दस बार कहां तक सुनाई न होगी जैसा हम लोग आज कल हिन्दी के लिए कर रहे हैं नकि दबीर हिन्द की तरह तबेले ही में लत्ती फेकने लगे अखबार खरीदो तो खरीदो नहीं तुम्हारे बरखिलाफ आर्टिकिल लिखेंगे और जो इनका दो चार अखबार खरीदता हो बुरा से बुरा हो कभी उसके खिलाफ कुछ न कहना ; सच पूछो तो प्रेस ऐक्ट के जन्म का कारण ऐसे ही ऐसे लोग हुए जिसका भुगत-

मान हम सब लोग भोग रहे हैं; यद्यपि हम तो अपना जी होम कर जो कुछ कर्तव्य कर्म है उसे नहीं चूकते पर एक प्रकार की चिन्ता व्याध के समान हमारे मन कुरङ्ग के आखेट करने को दिन रात पीछे लगी रहती है फिर हम अपनी लेख शक्ति से लोगों को रिझा कर जो अपने ग्राहक न बना सके तो धमकी देखा कर ग्राहक बना लेने मे कौन सी तारीफ़ की बात है॥

विज्ञापन।

(पुस्तक समालोचना)

आख्यानमञ्जरी॥

यह पुस्तक सन् १८७२ ई० में गवर्नमेण्ट से मंजूर होकर सर्कारी पाठशालाओं में जारी की गई और अब तक जारी है यद्यपि इसका मूल आशय बङ्गभाषा का उल्था है परन्तु लेख की प्रनाली और बोल चाल के ढङ्ग से यही जान पड़ता है कि ग्रन्थकर्ता अपनी सहज हिन्दी भाषा में निधड़क लिखते गए हैं इसमें ग्रत्युपकार आदि नीति के कई एक ऐसे अनूठे आशय हैं कि जिनसे बालकों की कोमल प्रकृति भूमि में सुशीलता लता का आरोपण करना बहुत ही सुगम है। यह वही आख्यानमञ्जरी है जो कई एडीशन तक बरेली के एक शिला यन्त्र में ग्रन्थकर्ता की अनुमति से छपती और बिकती रही है परंतु थोड़े दिनों से कारणवशात् ग्रन्थकर्ता ने उसके छापने आदि का प्रबन्ध अपने आधीन कर लिया और पुस्तकें छप कर तैय्यार हो गईं अगिले एडीशनों की पुस्तकें मैले काग़ज और पत्थर के छापे की थीं और मोल प्रति पुस्तक ।) था और अब यद्यपि उत्तम और साफ बिलायती कागज पर टैप के अक्षरों में छपी है पर मोल वही चार आना रक्खा गया है जो पहले था इस ग्रन्थ में लेख और आशय की लालित्य के सिवाय देखने में पुस्तक का स्वरूप और आकृति भी मनोरञ्जन है ५० जिल्द तक के खरीदार को

२०) रु० सैकड़ा के हिसाब से कमीशन भी मिल सकता है और डाक खर्च खरीदार के जिम्मे रहेगा जो कोई महाशय यह पुस्तक मंगाया चाहें पण्डित रामप्रसाद तिवारी को गवर्नमेण्ट ट्रंशलेटर आफिस के पते से लिखें अथवा हिन्दीप्रदीप के एडीटर के द्वारा मंगावें हम को बड़ी प्रसन्नता होगी उस समय जब कि हमारे हिन्दुस्तानी नरेश भी ऐसे ऐसे ग्रंथों को अपने देशीय पाठशालाओं में प्रचलित करेंगे॥

नई नई लफ़्ज़ों के नए नए माने।

ब्राह्मण० पादरी साहब।

क्षत्री० सरकार।

वैश्य० अङ्गरेज़ी सौदागर।

शूद्र० हिन्दुस्तानी मात्र।

पुण्यभूमि० यूरप।

पापभूमि० भारतवर्ष।

वेदाभ्यास० अङ्गरेज़ी तालीम।

मज़हब० धोखे की टट्टी।

परम धर्म्म० सबों का सह भोजन।

महा अधर्म्म० नाइत्तिफ़ाकी की जड़ चौका।

पुण्य० "सेल्फ सेक्रीफाइस" अपना खास फाइदा कभी न देखना; हिन्दुस्तान की पापभूमि इस योग्य कहां जिसमें ऐसे पुनीत कर्म का बर्ताव हो जहां सर्व साधारण की हानि लाभ पर दृष्टि रहना तो सर्वथा दुर्घट और असम्भवित बात है भाई भाई और बाप बेटों में भी यह भाव नहीं है कि आपस में एक दूसरे के लिए "सेल्फ सेक्रीफाइस" अपना नुकसान बरदाश्त कर सकें; सरीहन देख रहे हैं कि गैर हम पर मइन्त बन सब कुछ ढोए लिए जाते हैं वह गँवारा है "आंखो फूटी पीर गई" आंख रहते कैसे हो कि हमारी एक फूटी झंझी तुह्मारे नीचे दब रहे और तुम हमारे परोसी या भाई हो कर लाभ उठाओ और हम बैठे बैठे देखें।

पाप० बाल्य विवाह; घुने दिमाग वाले बुड्ढों की कुरीतों के मानने में श्रद्धा।

प्रत्यक्ष लक्ष्मी० महारानी विक्टोरिया।

लायक होने की पहचान० गोरा चमड़ा।

लायक० सभ्यता के आगार बड़े ईमानदार अङ्गरेज़ ओहदेदार।

नालायक० हम सब; इस लिए कि हिन्दुस्तानी हैं।

सभ्यता का निचोड़० खड़े हो कर मूतना।

शाइस्तगी की नाक० हमारे यहां की दलाल; या तरकारी बाज़ार के कुँजड़े।

बड़े सच्चे ईमानदार० मियां भाई; न मानो इन्द्रमणि के मुकद्दमे में जज साहब का फैसला मिल सके तो मँगा कर देख लो उसमें अभी इस बात की मक्खन सी लीर और ताज़ी छाप की गई है।

बुद्धिमान्० अङ्गरेज़ या काले कोइला से केरानी या यूरेशियन।

बेवकूफ़ करम के फूटे० हिन्दू; हिन्दुओं में भी ब्राह्मण।

खूसट० सुकाल के शत्रु सदा महँगी मनाने वाले अन्न के रोज़गारी या बनिए।

पवित्रता० ईमानदारी; दियानतदारी; अर्थ शौच; तथाच मनु "सर्वेषामेव शौचाना मर्थशौचंपरंस्मृतम्। योऽर्थेशुचिर्हिंसशुचि र्नम्रद्वारिशुचि:शुचि:"।

शिष्ट० जो बड़ा मुहज़ोर कलेन्दराज़ ज़ाहिरदारी में अच्छी तरह कुशल हो।

गाउदी० सब कुछ पढ़ा लिखा पर दुनियासाजी जिसने न सीखा।

सब से अच्छा० चुप; गीता का भगवद्वाक्य प्रमाण भी इसमें है "जानन्नपि हिमेधावी जड़वल्लोकआचरेत्"

तो लो हम वही करते हैं॥

अग्रिम मूल्य	... ...	३।/)
पश्चात् देने से	... ...	४/)
एक कापी का	... ...	।)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad

10/1/81
701

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Jan. 1881. [Vol. IV. No. 5.]

प्रयाग पौष कृष्ण ३० सं० १९३७ [जि० ४ संख्या ५]

हमी सब से बुरे हैं।

आज हम इसी बात के सबूत करने पर उतारू हैं कि हमी सब से बुरे हैं स-मय प्रभुता और किसी को कुछ दोष देना व्यर्थ है कि ये हमें अच्छे होने के लिए बाधा करते हैं; बल्कि सामयिक प्रभु ही के औदा/·गुण का यह प्रभाव है कि हम

ऐसे ह. रहे हैं हमारे एक सम्पादक ने एक बार लिखा था कि सरकार हिन्दुस्तानियों में कम्पल्सरी इज्यु केशन जारी करे अर्थात इन्हे मार मार ज़बरदस्ती अङ्गरेज़ी तालीम दे; हम कहते हैं केवल कम्पल्सरी इज्यु केशन ही पर क्या दारम दार है सैकड़ों बात इनसे ज़बरदस्ती करानी चाहिए जैसा पोलिटिकल राजकीय

सम्बन्ध में इन्हे जकड़बन्द कर रक्खा है वैसा ही सोशल सामाजिक बातों में इन्हे स्वच्छन्द कर दिया सो क्यों ; इनको सामाजिक और मत सम्बन्धी बातों में सरकार ने दस्तन्दाज़ी करना छोड़ प्रत्युत इनके जान माल की रक्षा की भी फिक्र अपने ऊपर ओढ़ ली फिर क्या ये लगे मनमानता गदहपन बिस्तारने यदि कोई अक्लिमन्द कौम होती तो इस आराम और स्वास्थ्य के समय को गनीमत समझ न जानिए कितना अपने हित साधन के यत्न में लगती यहां ये जो एकबारगी बहुत दिनों की कन्दान से छोड़ दिए गए तो स्वच्छन्द हो लगे कुदरा कुदरा दोलत्तियां झाड़ने ; कोई साक्षात् दम्भ के स्वरूप बड़े श्रोत्री बन धर्म की बारीकी को छान में उतारू हो गए पेड़ा को तो छील छील खाने लगे पर दूसरे को जमा साफ़ गटक कर बैठ रहने या किसी दूसरे किस्म की बेइमानी में धर्म का कुछ लिहाज़ न रहा ; त्रिपुण्ड से माथा पोता हुआ २ गोली के टप्पे से देख पड़ेगा जर्द पुण्ड्र या श्री की झलक से साधूपन और वैष्णवता सिर चढ़ी नाचती रहेगी मोटे मोटे रुद्राक्ष या बड़ी गुरिया की आकण्ठ तुलसी काठ की माला वक्षस्थल से लाग टक्कर खाते खाते जी को भी काठ सा नीरस और कठोर कर डाला अपने भाइयों की हमदर्दी और एक भाव का अभाव हो गया चिकने मुंह के ठग ज़ाहिर में ऐसे प्रेम से बोलेंगे मानो काम पड़ने पर हमारे लिए गला काट रख देंगे पर जी में छूरी कटारी भरी है विष की गांठ ऐसा काटै कि लहर भी न आवै धिक् मज़हबी सरगर्मी इसी का क्या नाम है कि शैव वैष्णव को देख खाक हों और वैष्णव शैव को देख जलें ; खैर आपस ही में ये एक एक फिरके खूब साहुत रखते हों सो भी नहीं शैव के सैकड़ों भेद तो वैष्णवों के हज़ारों जिनको परस्पर ईर्षा की ऐसी दृढ़ गांठ पड़ी है कि एक दूसरे का मुख देखना रवा नहीं मानते रामोपासक चाहते हैं कि कृष्णोपासकों का उच्छेद हो जाय कृष्णोपासक आपस ही में कटे मरते हैं ; यदि सरकार हमारी पूरी खैरख्वाही चह मज़हब में दस्तन्दाज़ी करती तो ऐसी ऐसी अन्धेर और देश की फ़ज़ीहती कभी होने पाती ; हमारी राय तो यही है कि हमारे सामयिक प्रभु जो इनकी जान माल की रक्षा का भार अपने ऊपर उठा लिया है वह इन्हीं के सिर पटकैं राजकीय विषयों में po itically

इन्हे सर्वथा स्वच्छन्द कर दे समाज और मत सम्बन्ध में हाथ छोड़ जहां तक सम्भव हो इन्हे खूब दबावे और ज़बरदस्ती छाती पर चढ़ गला घोट घोट अङ्गरेज़ी शिक्षा की घूंटी इन्हे घुंटावे यदि सरकार को सच्चे जी से हम लोगों की भलाई मञ्जूर है तो ऐसा ही करने में अब कल्याण है नहीं तो यह ऊपर की चिकनी चुपड़ी बात ही बात है कि हम हिन्दुस्तान को सुधार रहे हैं; स्वास्थ्य और अमाचैन के कारण हिन्दुस्तानी तो और भी आलसी और मटियाफूस हो गए नई बात सीखना तो इनके लिए निस्सन्देह दुर्घट और दुष्कर था जो कुछ भद्दा काम अपनी मोटी अकिल से निकाल करते थे उसको अङ्गरेज़ी नफासत के सामने पूछ न रह गई तो जो जानते थे वह भी भूले जाते हैं; समाज इनको ऐसी सभ्यता को पहुंची नहीं न अभी समाज में एक भी बूढ़ा रहते ऐसी आशा है कि जल्दी संशोधन हो; जैसा सती होने की बुरी रसम सरकार ने समाज से उठवा दिया वैसा ही बाल्य विवाह के उठा देने बिधवा विवाह जारी करने समाज समाज में सहभोजन की कैद न रहने में भी इनके साथ ज़बरदस्ती क्यों न की जाय और जो लोग इन बातों के जारी करने में संकुचाते और आगा पीछा करते हों उन पर बड़ा भारी जुरवाना हुआ करे; अकबर जिनकी पालिसी नीति पर ये चलते हैं सो भी तो बाल्य विवाह की मनाही बिधवा विवाह का प्रचार और सती का न होना बड़े दृढ़ शासन के साथ जारी किया था इन्हीं ने सती अकेले को अकबर की चलाई बातों में चुन लिया और सब बातों को क्यों छोड़ दिया; जो कुछ मनु ने समाज का क्रम और कायदा अपने धर्मशास्त्र में लिखा है उसके बिलकुल बिरुद्ध इन दिनों प्रचलित है तो भी कुंआ के मेढ़क हमारे महाराज लोग आर्यता की पूंछ अब तक पकड़े हो हैं और इस भूमण्डल के यावत् मनुष्य मात्र की सृष्टि है सबों से अपने को श्रेष्ठ मानते ही जाते हैं वास्तव में श्वपच से भी अधिक नीच और अपवित्र हो गए पर टिर्र नहीं गई "रसरी जल गई ऐठन बनी है" सो यह कुलाभिमान की टिर्र कहां चूल्हे के द्वारे घर में हमारे ही आगे बाहर किसी वाहिरी के मुकाबिले मेंउआं "हुज़ूर का जो कुछ इरशाद हुज़ूर की कदम्बोसी में हाज़िर हूं" पुराने इतिहास वेत्ताओं ने निश्चय किया है कि कौम का मज़हब पर ज़ियादा पाबन्द हो जाना कमज़ोरी को

निशानी है सो ठीक भी है कपिल मतानुयायी परिमाणु वादी सांख्य वाले, तथा निरीश्वर वादी मीमांसक, नास्तिक शिरोमणि चार्वाक मतानुयायी, बौद्ध और जैनी इत्यादि लोग जो मज़हब को उड़ाए बात करते थे वे सब किस समय में हुए हैं जब हिन्दुस्तान सब तरह प्रबल और पुष्ट था ज्यों ज्यों कमज़ोर पड़ता गया मज़हब और संप्रदायों की शाख दरशाख फूटने लगीं यही बात इङ्गलेण्ड में इन दिनों देखी जाती है जहां आधे से अधिक मनुष्य आज़ाद हैं और किसी मज़हब के पाबन्द नहीं हैं जब तक अङ्गरेज़ों की कौम प्रबल रहेगी कभी मज़हबी पाबन्दी इनमें न बढ़ेगी; खैर मज़हब के जो उसूल हैं उनकी ठीक २ पाबन्दी हो तो क्या बुराई है सो तो इन मत वालों में कभी पाई नहीं जाती हां टट्टी के आड़ से शिकार मक्कारी दम्भ और मूर्खता को अलबत्ता खूब अवकाश मिलता जाता है परिणाम यह सब समाज की विभिन्नता और मत की विभिन्नता का यह हुआ कि भाई २ में सहानुभूति न रही जोश बिलकुल बाकी न रहा कौमी हमदर्दी nationality किसे कहते हैं कभी ख्वाब में भी न ख्याल किया होगा बड़े बड़े राजा महाराजाओं की दृष्टि कभी इन बातों की ओर नहीं जाती तो साधारण प्रजा की कौन कहे; समाज ने अलग २ रहना हमें सिखाया और मज़हबी पाबन्दी ने हमारी सतेजस्कता को धूर में मिलाय भीरु और पराधीन कर डाला आपस में कोई लायक ही न रहे कि किसी दुर्घटना के समय अपनी रक्षा कर सकें अवस हो दूसरे से सहारा लेने को हाजत हुई; आत्म निर्भर और स्वाधीनता से अनमोल रत्न को लात मार दास्यभाव कांच के गहने की कदर करने पर उतारू हुए तब क्यों लायलटी आ कर पांव न पसारे इतने पर भी हम लोग लायल नहीं समझे जाते तो अब क्या किया जाय; यह किसके सामने कहें कि लायलटी तो हमारे निस्तेज और पराधीन माता पिता के वीर्य और रज के साथ गर्भित हुई थी पीछे से तन मन धन श्री गुरु जी के अर्पण क्या कराया गया मानो उस पर सान रक्खी गई; अपनापन यहां है कहां जिसका लुब्ब लुआब सा और २ समर्पण के साथ हो श्री गुरु जी के बांटे लग गया न होता तो मज़हबी सरगर्मी में बट्टा लगता बचा खुचा जो कुछ बाकी हो वह सब लायलटी के सुपुर्द है इतने पर भी "लायल" स्वामिभक्त न समझे जांय तो लाचारी है ॥

मृच्छ कटिक।

तृतीय अङ्क॥

स्थान

चारुदत्त का घर।

(चेट का प्रवेश)

चेट॰ दोहा। स्वामी हूं निर्धनह भक्ती करै भृत्य पर नेह। नीच द्रव्य के गर्व से दारुण दुख को गेह॥ जो दूर्वा लम्पट वृषभ वह रोको नहि जाय। परन ह्वै आसक्त जन वारण किए खिजाय॥ द्यूत खेल में रत मनुज सुनै न हित की बात। जो स्वाभाविक दोष है वह छोड़ो नहि जात॥ जिसका जो स्वभाव पड़ जाता है वह छुटाए नहीं छुटता "जाको जौन स्वभाव जात नहि जी से" हमारे मालिक देते देते दरिद्र होगए तौ भी इस गुन की टेंव जो पड़ गई है वह छुटाए नहीं छूटती। चारुदत्त को सङ्गीतक सुनने गए बड़ी देर भई अभी तक न आए कब लौं आसरे आसरे बैठा रहूं बाहर चल कर सोऊं आवैंगे तो खोल दूंगा दरवाज़ा। (बाहर आकर सो रहता है)

चारुदत्त और विदूषक का प्रवेश॥

चारुदत्त॰ वाह रभिल ने खूब अच्छा गया; बीणा भी समुद्र से निकली रत्नों में एक है; यह बीणा वियोगी को सङ्गी है; सङ्केत घर में नायक को आने में बिलम्ब हो जाने पर नायिका के लिए जी बहलाने की एक उपाय है; बिरहातुर को धीरज देती है; बहुधा बिरही जन चित्र दर्शन या बीणा से किसी तरह अपने बिरह के दिन काटते हैं; और अनुरागी को अनुराग बढ़ा कर आनन्द देती है॥

विदूषक॰ भया भया बहुत सराहना हो चुकी चलिए घर अब किसी तरह (द्वार पर आय कुण्डी खटखटा कर) वर्द्धमानक २ खोल दे किवाड़॥

वर्द्धमानक* (ऐंड़ाता हुआ उठकर) कोई पुकारता है क्या; उं होगा कोई (फिर सो जाता है)

विदूषक॰ (फिर खटखटा कर) अरे वर्द्धमानक मर गया क्या॥

वर्द्धमानक॰ (उठ कर स्वगत) यह तो मैत्रेय की भी बोली जान पड़ती है मालिक आ गए मालूम; (प्रकाश) हां आए (खोल देता है दरवाज़ा)

दोनों भीतर गए।

विदू॰ वर्द्धमानक रदनिका को बुलाय ला पांव धोने को पानी दे॥

* यह चारुदत्त का नौकर है चेट भी यही कहलाता है॥

चारु० सोते मनुष्य को मत जगाओ ॥

चेट० मैत्रेय मैं पानी लाऊं आप पांव धोइए (चलने लगा)

विदूषक० (क्रोध कर) ठहर २ जैसे सब सांपों में दुमुहा सांप वैसे सब ब्राह्मणों में मैं ; पर्वत के शिखर समान ऐसा ऊंच हो इस दासीपुत्र शूद्र के लाए पानी से पांव धोऊं ; अथवा मुझ पवित्र ब्राह्मण को पांव धोने से क्या, गऊ का गोबर और ब्राह्मण का पांव सदा पवित्र ही रहता है ; मित्र आप धोइए मुझे धोने से क्या मैं तो ताड़ित गदहा सा फिर भी लोटूंगा ॥

(वर्द्धमानक पानी लाता है चारुदत्त पांव धो आसन पर बैठ जाते हैं)

वर्द्धमानक० (फेंट से गहनों का बंटा निकाल मैत्रेय के सामने रख) आर्य मैत्रेय दिन को मैंने इसकी रखवाली की रात को अब आप की बारी है मैं अपने जिम्मे से पार हुआ अब आप जानो (बाहर गया)

विदूषक० यह अभी तक बचा ही है क्या इतनी बड़ी उज्जयिनी में धी के जाए कोई चोर भी नहीं हैं जो इसे चुरा ले जाते (चारुदत्त से) मित्र इसे भीतर घर में धरा दो ॥

चारुदत्त० ये गहने वेश्या के पहने हैं इन्हें भीतर न भेजूंगा तुम्हीं अपने पास रक्खो (ऊंघते मनुष्य की सी चेष्टा कर) अदृश्य रूप जरा जैसा मनुष्य का बल क्षीण कर बढ़ती जाय वैसे ही नींद बढ़ती जाती है ॥

विदू० तो सोइए (दोनों सोते हैं)

(शर्विलक का प्रवेश)

शर्विलक० आहा सेंध देने की कैसी अच्छी शिक्षा मैंने सीखा है ठीक शरीर के प्रमाण बराबर सेंध दे भूमि में लेट बगल के बल केंचुली छोड़े जीर्ण सर्प समान मैं भीतर जा सक्ता हूं (आकाश की ओर निहार) आहा चन्द्रमा भी अब अस्त हुआ चाहते हैं ; पर गृह के सर्वस्व हरण में एक ओर मुझ शर्विलक को अन्धकार के द्वारा सब पदार्थों को ढांपती यह रजनी जननी समान नगर रक्षक पहरुओं से बचा रही है ; बाहर की चारदिवाली में सेंध फोड़ यहां आया हूं अब इस चौशाले में सन्धि कर भीतर घुसूं ; बहुतेरे लोग चोरी को पाप और नीच कर्म कहते हैं पर उनसे यह कोई पूछे कि संसार में भला कौन ऐसा काम है जिसके करने में पाप पुन्य का मुकद्दमा नहीं लगा रहता ; हां चोरी तनिक

नीचा काम चलता है क्योंकि सोते हुए मनुष्य को ठग लेना चोरी नहीं तो बरजोरी इसे कौन कहता है; तौ भी किसी का पराधीन दास बन सदा हाथ बांधे सामने खड़े रहने से चोरी यह स्वाधीन निन्दित काम भी अच्छा; पहले पहल सेंध देने की विद्या का प्रकाश सोते राजाओं की सेना के बध करने के लिए हम सब चोरों के गुरु अश्वत्थामा ने किया है; सो किस ठौर सेंध दें जहां मिट्टी सील के सबब कुछ गीली हो जिस में खोदती समय आवाज़ न हो जहां सेंध के भीतर घुसते ही पहले स्त्री जनों का दर्शन न हो क्योंकि हम चोरों के शास्त्र में पहले स्त्री का दर्शन असगुन लिखा है; (दीवाल टोता हुआ) यहां पर हमारे मतलब लायक बहुत अच्छा है क्योंकि यह नापदान का पास है नित्य सूर्य के घाम और जल के सम्बन्ध से मिट्टी यहां की ढीली पड़ गई है और कुछ मिट्टी नीचे गिरी हुई मालूम पड़ती है तो चोला भी कुछ अपना असर किये हुए है; अच्छा तो अब प्रारम्भ करें नहीं नहीं पहले सोंच लें यहां पर कैसा सेंध देना चाहिए; भगवान स्वामकार्तिक महाराज ने अपनी चौर्य्यशास्त्र में सेंध देने के चार प्रकार और ६ भेद लिखे हैं; ४ प्रकार जैसा पक्की ईंट का खोंचना कच्ची का तोड़ना केवल मिट्टी की भीत हो तो जल से सींचना काठ हो तो उसे चीरना; ६ भेद जैसा श्लोक—

"पद्म व्याकोश भास्करं बालचन्द्रं वापीविस्तीर्णं स्वस्तिकं पूर्ण कुम्भम्। तत्कस्मिन्देशे दर्शयाम्यात्मशिल्पं दृष्ट्वाश्वो यं यद्विस्मयं यान्तिपौराः॥"

१ पद्म व्याकोश अर्थात् फूले कमल समान, २ भास्कर अर्थात् सूर्य मण्डल के आकार, ३ बालचन्द्र अर्थात् दोज तीज के चन्द्रमा सदृश वक्र, ४ वापी विस्तीर्ण अर्थात् कुआं सी गहरी, ५ स्वस्तिक अर्थात् चौकोर, ६ पूर्ण कुम्भ अर्थात् घड़े के समान मुंह पर सकेती और भीतर चौड़ी; सो किस स्थान में अपनी शिल्प विद्या देखाऊं जिसे देख भोर को सब पुरवासी गण अचरज में आ जांय; इस पक्की ईंट के मकान में पूर्ण कुम्भ वाली सेंध अच्छी सोहैगी; कुमार कार्तिकेय को नमस्कार भास्कर नन्दी को नमस्कार ब्रह्मण्यदेव देवव्रत को नमस्कार योगाचार्य को प्रणाम जिनका मैं शिष्य हूं जिन्हों ने प्रसन्न हो मुझे ऐसी योग रोचना दी है जिसे देह में लेप लेने से कोई

पहरे वाले कोई मुझे नहीं देख सकते और न अस्त्र शस्त्र लगने से देह में कुछ पीड़ा होती है; (सेंध देह में पाता है) अरे नापने वाली डोरी तो भूल आया (थोड़ा सोच कर) कुछ चिन्ता नहीं यज्ञोपवीत तो हई है यही इस जून नापने की डोरी का भी काम देगा भाई वाह ब्राह्मण के लिए जनेऊ भी कैसी उपकारी वस्तु है विशेष कर हम चोरों को सेंध देते समय, इसी से नापता हूं इसी को आठ दस फेर में नट केवाड़े की कुण्डी खींच ढीली कर सक्ता हूं सांप बीछू के डसने पर इसी से डसने का स्थान बांध लेता हूं तो विष छिटकने नहीं पाता (नाप कर सेंध देने लगा थोड़ा खोद कर देखता है) अब तो दोही चार ईंट बाकी हैं; हाय हाय कीड़े ने डस लिया (जनेऊ से अंगुली बांधता हुआ सांप के विष चढ़ने की सब चेष्टा करता है) दवा कर अच्छा होगया (फिर खोद कर) छेद तो हो गया (झांक कर) अरे दिया जल रहा है आहा सुवर्ण समान पीली दीप की शिखा छेद के बाहर निकल अन्धकार से मिल ऐसी शोभा दे रही है मानो कसौटी पर रगड़ी सोने की रेखा हो; तो अब भीतर चलूं "नमः कार्तिकेयाय" (भीतर जाय देख कर) दो पुरुष सो रहे हैं पहले भागने के लिए द्वार खोल रक्खूं (द्वार खोलता है) कहां का सड़ा घुना पुराना घर है जो खोलती बार केवाड़ा चरचराता है ऐसा न हो कि इसका शब्द सुन ये दोनों जाग उठें तो अब क्या उपाय करूं न हो इसे पीठ के बल उठा लूं (वैसा ही करता है) यह तो हुआ अब इन दोनों की परीक्षा करूं कि सच सच सोते हैं या नकल किए पड़े हैं; इन दोनों की सांस बराबर एक साथ निकलती है और नेत्र ऐसे दृढ़ मुंदे हैं कि भीतर की पुतली तनिक भी नहीं हिलती देह की रग रग सब ढीली हैं जो झूठी नींद होती तो सामने दिया की टेम न सहार सक्ते (सब ओर निहार) यह मृदङ्ग है यह बीणा है यह वंशी है यह पुस्तक धरी है क्या किसी नर्तकाचार्य "Bandmaster" का घर है मैं बड़ा घर देख कर आया यह तो किसी परम दरिद्री का घर है अथवा राजकीय उपद्रव लूट मार की भय से द्रव्य सब गाड़ रक्खा हो अच्छा गुटिका फेंकूं (वैसा ही किया) गुटिका तो चलाया पर कहीं द्रव्य प्रगट नहीं होता

जान पड़ता है यह निपट दरिद्री का घर है ॥

विदूषक (जाग कर और देख कर चारुदत्त से) मित्र सेंध हुई सो जान पड़ती है और चोर को भी देखता हूं सो आप इस गहनों की पिटारी को लीजिए ॥

शर्विलक॰ क्या यह मुझे घर में आए जान अपने को दरिद्र समझ मेरे उपहास के लिए इसने यह कहा; क्या इसे मार डालूं अथवा नींद में पड़ा २ बर्रांता है (देख कर) अरे पुरानी मैली धोती में बँधा हुआ दिया के उजियारे में झलकता यह तो सच सच गहने का डब्बा सा जान पड़ता है इसे लेलूं अथवा इस दरिद्री कुल पुत्र को सताना अच्छा नहीं तो चलूं (जाने लगा)

विदूषक॰ मित्र तुम्हें गौ ब्राह्मण की शपथ जो इस पिटारी को न लो ॥

शर्विलक॰ गौ ब्राह्मण की शपथ मानना चाहिए अथवा पहले दिया बुझा दूं (मुंह से फूंक दिया बुझाता है) हा मुझे धिक्कार है मैंने ब्राह्मण के उज्ज्वल कुल में अन्धकार कर दिया हा मेरे बाप चतुर्वेद जिन्हों ने कभी दान नहीं लिया उन्हीं का बेटा मैं शर्विलक ब्राह्मण हो कर मदनिका वेश्या के लिए यह अकार्य करता हूं; अब इस ब्राह्मण का कहा करूं (पिटारी लेने लगा)

विदू॰ मित्र तुम्हारा हाथ ठण्ढा है ॥

शर्विलक॰ भूल हुई बड़ी देर तक हाथ खुला रहने से ठण्ढा हो गया है (कांख में हाथ डाल गरम कर लेता है)

विदूषक॰ लिया ॥

शर्विलक॰ ब्राह्मण का वचन मानना चाहिए इस्से ले लिया (लेता है)

विदूषक॰ अब विक्रीत पण्य वणिक् सा सुख से सोऊंगा ॥

शर्विलक॰ महा ब्राह्मण तुम सौ बर्ष लों सुख से सोते रहो; हा मैंने वेश्या के कारण ७ पुरुष को नरक में ढकेला किसी के पांव की आहट सी जान पड़ती है इस्से खम्भे की आड़ में हो कर खड़ा हो जाऊं जिसमें पहरा देनेवाला हो तो मुझे देख न सके अथवा मुझ शर्विलक को पहरुए से क्या डर है; जो मैं बिना पांव बोले चलने में बिलार सा दौड़ने में मृग, पकड़ने में बाज, सोए या जागे मनुष्य की परीक्षा में कुत्ता, छाती के बल चलने में सांप, रूप छिपाय दूसरा बन जाने में इन्द्रजाल, हर देश

की बोली बोलने में सरस्वती, रात्रि में दीप, सङ्कट में वीर, स्थल में घोड़ा, जल में नौका समान हूं; और भी मैं चलने सांप, स्थिरता में पर्वत, शीघ्र गमन में मृग, देखने में खरहा, पकड़ने में वीर, और बल में सिंह सा हूं॥

श्लोक। मार्जारः क्रमणे, मृगः प्रसरणे, श्येनोग्रहा लुञ्चने। सुप्तासुप्त मनुष्य वीर्य तुलनेश्वा, सर्पणो पन्नगः॥ मायारूप शरीर वेश रचने, वाग्देश भाषान्तरे। दीपो रात्रिषु, सङ्कटेषु डुडुभो, वाजी स्थले, नौर्जले॥ अपिच॥

भुजग इव गतौ, गिरिः स्थिरत्वे, पतगपतेः परिसर्पणेच तुल्यः। शश इव भुवनावलोकनेहं, वृक इव च ग्रहणे बले च सिंहः॥

रदनिका का प्रवेश।

रदनिका (चिल्लाती हुई) हय हय घर में सेंध हुई सी मालूम होती है बाहर के चौपाले में वर्द्धमानक सोता था वह निगोड़ा भी न जानिए कहां चला गया जाकर मैत्रेय को जगाऊं॥

शर्विलक (रदनिका को मारने की इच्छा को देख के) क्या स्त्री है तो भग जाय (बाहर गया)

रदनिका (मैत्रेय के पास जाय चिल्ला कर) अरे चोर २ आर्य मैत्रेय उठो २ घर में सेंध दे चोर निकला जाता है॥

विदूषक० (उठ कर) यो की दाई क्या कहती है चोर को काट के सेंध निकल गई छोरा मचाय रांड़ सोने में भी बाधा डाला॥

रदनिका० हताश निगोड़े यह जून हँसी की नहीं है देखता नहीं इतनी बड़ी सेंध हो गई है॥

विदूषक (देख कर) हां हां सच तो है आर्य चारुदत्त उठिए उठिए घर में सेंध दे चोर निकल गया॥

चारुदत्त० भया बहुत हँसी हो चुकी सोओ चुपचाप॥

विदूषक० मित्र हँसी नहीं करता आप देखिए तो उठ कर॥

चारुदत्त (उठ कर) कहां कहां॥

विदूषक० जो वह देखिए कैसी बड़ी सेंध है मानो दूसरा दरवाज़ा हो॥

चारुदत्त (देख कर अचरज से) इस सेंध में तो बड़ी शिल्प विद्या खर्च की गई है आहा ऐसे ऐसे कामों में भी लोग अपनी चतुराई से नहीं चूकते जपर और नीचे ऐसे हिसाब से ईंटें निकाली गई हैं कि बाहर से पतली मध्य में चौड़ी भीतर फिर सकेती सेंध क्या है

मानो किसी अयोग्य पुरुष के आगमन से घर का हृदय विदीर्ण सा होगया है ॥

विदूषक० मित्र यह सेंध किसी आगन्तुक बाहिरी चोर या किसी नौसिखिया ने किया है नहीं इस उज्जयिनी में तुम्हें कौन नहीं जानता की यहां सिवा दरिद्रता के साम्राज्य के और क्या रक्खा है ॥

चारुदत्त० विदेशी था यहां हो का जो हो निराश हो खाली हाथ गया इसका मुझे सोच है खिन्न चित्त हो अब वे मित्रों से जाकर क्या कहैगा कि किस दरिद्र के घर गए जो फूटी आंखो भी हाथ न लगी ॥

विदूषक० मित्र आप उस पापी चोर का क्या इतना सोच करते हो भला हुआ जो छूछा गया बचा ने समझा था कि बड़ा घर है रुपए और सोने के गहनों से भरा होगा यह नहीं जानता यहां दयाराम घर नित्य कड़ाके (कुछ सोच कर) मित्र आप सदा कहा करते थे मेत्रेय मूर्ख है मैत्रेय निर्बुद्धी है मैंने कैसी पण्डिताई और बुद्धिमानी का काम किया जो उस गहने की पिटारी तुम्हारे हाथ में दे दिया ॥

चारुदत्त० तुम्हें तो हर साइत ठट्ठा और मसखरा पन सूझता है यह समय हँसी करने का नहीं है ॥

विदूषक० मित्र मैं यद्यपि मूर्ख हूं तो भी हँसी करने का देशकाल समझता हूं ॥

चारुदत्त० अच्छा तो बतला किस समय तूने दिया ॥

विदूषक० जब मैंने तुम से कहा नहीं था कि तुम्हारा हाथ ठण्ढा क्यों है ॥

चारुदत्त० कदाचित् ऐसा हो (सब ठौर देख भाल) मित्र अच्छा हुआ ॥

विदूषक० क्या पिटारी चोरी नहीं गई ॥

चारुदत्त० गई क्यों नहीं ॥

विदूषक० तो क्या अच्छा हुआ ॥

चारुदत्त० यही की चोर अपनी अभिलाषा पूरी कर छूछा नहीं गया ॥

विदूषक० अरे वह गहना धरोहर जो था ॥

चारुदत्त० (घबड़ा कर) हाय क्या वह धरोहर था तो अब मैं कहां से दूंगा (मूर्छित सा हो जाता है)

विदूषक० मित्र धीरज धरो धीरज धरो धरोहर ही था तो क्यों सोच में आए मित्र आप तो ऐसा घबड़ाए मानो गांठ का गया ॥

चारुदत्त० मित्र जो दैव ने मेरा सब

धन हर लिया था तो अब मेरे चरित्र में क्यों दाग लगाता है "न्यास चोर हर ले गयो कौन करै बिश्वास । सब जन शङ्का करेंगे चारुदत्त के पास ॥ सत्य कौन यह मानिहै यही मोहि सन्ताप । शङ्का स्थान दरिद्रता जग में हीन प्रताप ॥"

विदूषक० मित्र आप कुछ न चिन्ता कीजिए मैं कहूंगा सब झूंठ है किसने दिया किसने लिया और कौन साक्षी है॥

चारुदत्त० हाय मैं आज तक कभी झूठ नहीं बोला तो इतने के लिए झूठ बोल अपना परलोक नसाऊं ॥

श्लोक । भैक्ष्येणाप्यर्जयिष्यामि पुनर्न्यास प्रतिक्रियाम् । अनृतंनाभिधास्यामि चारित्रभ्रंशकारकम् ॥

भीख मांगि अर्जन कर देहौं पुनर्न्यास को दान । मिथ्या कबहुं न भाषिहौं शील बिनाश निदान ॥

रदनिका० जांय यह सब हाल आर्या धूता* से कहैं । (जाती है)

चारुदत्त० मित्र इस समय मेरी मृत्यु हो जाती तो अच्छा होता बदनामी सह कर जिया भी तो किस काम का क्योंकि इस उज्जयिनी में जो सुनेंगे वे यही कहैंगे कि दरिद्रता के कारण गहना पचाने की एक हिकमत चारुदत्त ने निकाली है ॥

रदनिका० (आकर) आर्या धूता ने यह रत्नावली दिया है कि इसे आप उस धरोहर के बदले में दे देवें (देती है)

विदूषक० (स्वगत) सच है बड़े घर को बिगड़ते बिगड़ते कुछ दिन लगते हैं अभी इनके घर कितनी ऐसी अनमोल वस्तु पड़ी हैं कि राजाओं के घर भी न निकलेंगी (प्रकाश) कीजिए मि[illegible] आप धन्य हैं जिनको ऐसी सुख दुख की सहायक स्त्री मिली है एक मैं अभागी को मिली है कि हरदम वस्त्रमोचन करने को मुस्तैद रहती है ॥

चारुदत्त० क्या मेरी ब्राह्मणी मुझ पर दया करती है हा "अपने भाग द्रव्य से हीन, स्त्री धन से जीवै अति दीन । पुरुष नहीं वह नारी जान, जो नारी वह पुरुष समान ॥" अथवा मैं दरिद्र नहीं हूं जो मेरी भार्या इस दशा पर भी मुझ पर अनुकूल हैं सुख दुख के सहायक आप ऐसे मेरे मित्र हो और मेरा सत्य भी नहीं छूटा जो दरिद्रता की दशा में अति दुर्लभ है ; मैत्रेय इसे ले जा कर वसन्तसेना को दे आओ और कहना कि तुम्हारे धरोहर का गहना

* चारुदत्त की स्त्री ।

अपना सा समझ जुआ में हार गया हूं सो उसके बदले यह रत्नावली हार कीजिए ॥

विदूषक॰ जिसे न खाया न पिया थोड़े दाम वाले गहनों के लिए चतुःसमुद्र सारभूता इस रत्नावली को आप न दीजिए ॥

चारुदत्त॰ मित्र ऐसा न कहो जिस विश्वास पर उसने गहनों को धरोहर रक्खा था यह उसी विश्वास का मोल है तुझे हमारी शपथ है इसे बिना दिए न आना (देता है) जांय और हो गया अब हम भी शौच स्नान से फराकत हो संध्योपासन करें (सब गए)

(जवनिका पतन)

सन्धिच्छेदो नाम तृतीयोङ्कः ॥

स्वस्तिश्री देशोन्नति परायण हिन्दी प्रदीप प्रवर्तक महाशयेषु निवेदन मिदम् ॥

आप के उज्ज्वल मनोरथ और परमार्थ सूचक लेख और आप और आप के निरन्न सहायकों की वह बानी जिसके पद पद और अक्षर अक्षर से आत्म वात्सल्य और देशहितैषिता का रस टपकता रहता है सदैव प्रशंसा और श्लाघा के योग्य है इसमें कुछ संदेह नहीं है कि आप के इस पवित्र नाम के साथ जो पत्र प्रवर्तक विशेषण से अलंकृत रहता है यदि भारत संस्कार प्रवर्तक का शब्द संयोजित किया जाय तो न वह अनुचित है और न अत्युक्ति है इसी प्रकार हिन्दी के इस मासिक पत्र का नाम प्रदीप की जगह हिन्दीकुमुद चन्द्र वा हिन्दी सरोरुह मार्तण्ड रक्खा जाता तो यथा नाम तथा गुण यह कहावत चरितार्थ होती पर जब सूक्ष्मदृष्टि से विचार किया जाता है तो यही बात अच्छी जान पड़ती है कि नाम छोटा हो और काम बड़ा निकले जैसा कि इस उपस्थित प्रसङ्ग में पाया जाता है कि नाम प्रदीप और प्रकाश जगत में छाया हुआ और नाम बालकृष्ण और काम बड़े २ हठों से बढ़ कर; वह बढ़िया नाम किस काम का जिसमें यथोचित गुण न हो जैसे कहने को बरियारसिंह और भूमि धर के उठे नाम अमृतो चोखे तो अहर हमारी यह शक्ति नहीं है कि आप की प्रशंसा

से कुछ पुरस्कार वा दक्षिणा मिले यह यथार्थ और सच्ची बात है मुंह से निकल पड़ी यदि हम को लाभ की अभिलाषा होती तो उन चिकनमुंहे और वारवनिता प्रसन्न और सूरतहरामों की बड़ाई वा तारीफ करके कुछ कार्य निकाल लेते कि जिनका शरीर दिनों दिन भद्दे मेंढुक के समान फूला जाता है न देवाय न पित्रे हमेशा कुप्पा सा फूला रहता है जहां देशोपकार और परोपकार की बात आई मानो इन्द्र का वज्र वा हनुमान का चपेटा वा राम का बाण लगा सूख कर आधे हो गये मानो मर गई इधर उधर देखने लगे किधर को भागैं प्रसङ्गतः भाग्य वश से कोई दूसरी बात छिड़ गई वा खुद आप ने छेड़ दिया बस प्राण बच गया सुखे धान पानी पड़ा आई हुई बला टली ऐसे व्यर्थ जीवनधारी और नर पशुओं की बड़ाई के लिए सरस्वती नहीं रची गई यद्यपि यह लेखनी जड़ और तुच्छ लकड़ी की प्रकांड है पर इसे भी स्वार्थ तत्पर मनुष्यों की प्रशंसा में लज्जा आती है आप से मेरी यह प्रार्थना है कि आप अपनी प्रकृति और वृत्ति में कुछ परिवर्तन करें आप के लेख और आशय से यह सुवास सदैव उड़ा करती है कि आप जी खोल के पूर्ण रूप से अन्तर्गत बात नहीं कह सके और उन छिपी हुई अंधेर और बुराइयों को नहीं दिखा सकते जिनके प्रगट करने के लिये इस प्रदीप ने जन्म ग्रहण किया है ; हा कैसे कष्ट की बात है कि अन्धकार के डर के मारे दीपक अपनी टेम को छिपावे ; बाज़ अवसर पर गवारी मसल बड़ी मदद देती है "भेड़ा मोट भवानी दूबर" मित्र क्या कीजियेगा इसी लिये मनु महाराज लिख गए हैं कि 'नब्रूयात्सत्यमप्रियं' कदाचित आप ने तुलसीदास के रामायण का अभ्यास कम किया है नहीं तो यह चौपाई आप के गौं की थी

"हमहु बौलब ठकुर सोहाती।
नाहिं तो मौन रहब दिन राती"

आप देखते तो हो जब बड़े २ अमीर कबीर दबीर की दाल गलाई नहीं गलती तो रूखा सूखा खाने वाले फलाहारी बाबा किस गिन्ती में हैं और फिर वह औरता किस काम की जो उलटा चींटी का बिल ढूंढना पड़े इसमें कुछ संदेह नहीं कि सच्चा मित्र वही है जो बुराई ज़ाहिर कर दे दयालु वैद्य वही

को कहना चाहिये जो रोगी को अपथ्य से रोके पर यह बातें उस अवस्था के लिए हैं जब कुछ भी स्वतन्त्रता प्राप्त हो और अब छींकते नाक काटी जाती है तो फिर क्या किया जाय जहांतक बन पड़े नाक मल मल के छींक रोके सिद्धान्त यह कि अवसर के प्रतिकूल काम न करना चाहिये फिर आप को क्या हजारों बातें आप के लिए हैं जाने दीजिए एक घर न सही भुस को आग सुलगते सुलगते कभी तो भभक उठेगी तब आप क्यों नक्कू बने अब सब को अँधेर ही में आनन्द है तो क्यों आप हर गली कूचे और नाबदानों पर दीपक दिखाते फिरें इससे तो यही अच्छा है कि अपने पुरखों की कोठरी में इस प्रदीप के सहारे वेद शास्त्र पोथी पुरान को पढ़ैं और उनके मुख्य तात्पर्य्यों को प्रकाशित करें और यदि आप से बुरा भला कहे बिना न रहा जाय तो रावण कुम्भकर्ण मेघनाद हिरण्यकशिपु हिरण्याक्ष कंस वेणुप्रभृति क्या थोड़े हैं बस अब मेरी उँगुली में दर्द होता है आगे नहीं लिख सक्ता इस में बहुत अदल बदल न कीजियेगा और ज़रूर छापियेगा जहां बहुत अच्छे आशय छपते हैं एक खोटा ही सही ॥

एक
आप का हितैषी ॥

फिजूल रकमें ।

जो हम गिनाते चलें तुम गिनते चलो पहले हिंदुओं में ब्राह्मण, इस लोक का इनसे कुछ फाइदा नहीं इन्हें मानो पूजो सेव टेव, किसवास्ते? पुण्य है, पुण्य क्या है? एक परोक्ष वस्तु, मरने पर स्वर्ग में वास पाओगे इन्द्र के अर्द्धासन पर देवराज को जांघ से जांघ रगड़ जाकर विराजमान होगे, सो परोक्ष और स्वर्ग अङ्गरेजी शिक्षा के प्रताप से इस रोशनी के ज़माने में महज़ फिज़ूल और खयाली बात समझी जाती है, कहो आया मन में ब्राह्मण या पण्डित निरे बट्टे खाते की रकम हुए कि नहीं न मानो स्वामी दयानन्द की गवाही भी इसमें मौजूद है और वास्तव में ऐसा देखा भी जाता है कि इन गोबर गनेशों से क्या लौकिक फाइदा निकलता है सिवा इसके कि ये तुह्मारी गौ हैं इन्हें पाल पोस गौ से आंड़ करो और ये अपना Stationary खेत की मेड़ के थूहा समान यथास्थित बने रहें देशकाल के अनुसार समयोचित बर्ताव से कुछ मतलब न ठहरा जिनके गन्दे दिमाग में कितना ही कहो कोई बात धसने वाली नहीं पुरानी लकीर से बाल बराबर भी इधर उधर न हटैं ;

दूसरी फ़िज़ूल रक़म हम लोगों के बुड्ढे न किसी काम के न काज के खोंखों करते पहेरी भर कफ का ढेर सबेरे से सांझ भर में लगा देंगे बात कहेंगे हिमाक़त के राज की जिसे सुन जी भनभना उठे; तीसरी फ़िज़ूल रक़म हम लोग हिन्दी अखबारों के एडिटर प्रेस ऐक्ट ने हाथ पांव तोड़ लुंज करी डाला है आगी बढ़ सक्ते ही नहीं खैर जो कुछ लिखो पढ़ो भी तो किनकी मासने दूही दूही करते फिरो हिन्दी के जानने वाले गिनती के दस बीस कौन सुनता समझता है लेखिनी की खजुलाहट दूर करना हो भले ही किया करो, जाने अँतरे कहीं कोई हैं भी जो कुछ हिन्दी गोदगाद सक्ते हैं उन सबों को यही हौसिला सवार है कि हम भी अखबार चलावें और एडिटर बन गद्दीनशीन हों, वही मसल हुई " आंख एक नहीं कजरौटा नौनौ " खरीदार एक नहीं अखबार कोड़ियों साल में दो एक नए समाचार पत्र जारी ही होते हैं, कहीं किसी का इन्तिखाब या झूठी सच्ची खबर अङ्गरेज़ी अखबारों से ले लिवाय हफ़्ते में ४ शीट कागद रङ्ग रँगाय फराकत हुए न कुछ सभी इश्तिहार और बाज़ार की चीज़ों की निर्ख तो कहीं गई ही नहीं; बड़े २ ओहदों में गवर्नर जेनरल का ओहदा फ़िज़ूल रक़म है, हम पूछते हैं हमारी मूड़ी कूंच २ लाख का साल जो इन्हें दिया जाता है सो किस लिए? २४ घण्टे में तो विलायत का तार आता है स्टेट सेक्रेटरी से लोकल गवर्नमेण्ट पूछ लिया करे जो कुछ ज़रूरत पड़े दाल भात में मूसलचन्द सा यह ओहदा अब क्यों कायम है; छोटे ओहदेदारों में ज़िले के कलट्टर जमाबन्दी सब तहसीलदार वसूल ही कर लेते हैं इनके बिना कौन सी हर्ज़ है फिर भी हम लोगों को चाम उपलाने के लिए एक आदमी होना चाहिए; नबी और मत प्रवर्तकों में हज़रत ईसा फ़िज़ूल रक़म हैं जिस लिए कायम किए गए हैं? इस लिए कि अल्ला मियां और हमारे बीच में एक मध्यस्थ होना चाहिए जो खुदा से हमारी शिफारिस कर दे क्योंकि खुदा अन्धा है उसको सर्वान्तर्यामी और सर्वव्यापक लोग झूठ ही मानते हैं कयामत में वही खोल एक एक आदमी का हाल ईसा जब तक खुदा को न बतावेंगे तब तक उसे क्या मालूम होगा कि किसने कितना पाप पुण्य किया है, फिर भी ईश्वर

के यहां न्याय कहूं नहीं जिस पापी के लिए सिफारिस कर दी जायगी वह माफ किया जायगा; मजहबों में हमारे मजहब फिजूल रकम है जिस्की सब ओर से दुर्गति हो रही देखी जाती है यूरोप में नए साएन्स और नए नए फिलासोफरों की बारीक अकिल के मुकाबिले इसका मानना फिजूल हो चला है से जियादह आदमियों के जी से इस पर विश्वास न रहा रही हिंदुस्तान में इस्की तरक्की सो अच्छे तालीमयाफ्ता आज़ाद और लामज़हब होते हैं उनको मज़हब की कुछ परवाह नहीं हो भी तो एक ओर से ब्राह्मो मत इस की जड़ उखाड़ रहा है दूसरी ओर से मुसल्मान नोन सेतुआ बांध इस्के पीछे पड़े हुए हैं रहे अकिल के कोते हम हिंदू सो इनके बीच भी दयानन्द सरीखे होते जाते हैं जिनकी शिक्षा से हिंदू धर्म चाहो ऐसा न रहो पर हमारे अब कोई न हो सकेगा ये सब थेही अमरिका की थिओसोफिकल सोसाइटी सब से चढ़ बढ़ कर निकली ईश्वर करे मेडम ब्लवस्की और करनल उलकाट दीर्घजीवी हों जिन्हों ने हमारे मज़हब ही पर क्या दांत लगाया बरन सैकड़ों वर्ष की निश्चित की हुई "साएंटिफिक" विज्ञानवित् लोगों की "थियरी" सिद्धान्तों को रद्द कर योग विद्या का पुनरुद्घाटन कर रहे हैं; कहो कहां लों हमने गिनाए हैं कि नहीं ठीक ठीक फिजूल रकमें; तो लिख दो इन्हें बहे खाते में सो ओर इसी लियें में अबीरा रांड़ फिजूल रकम हैं मनीआरडर के मुकाबिले हुण्डीवाली फिजूल रकम हैं विलायत की बनी चीज़ों के मुकाबिले देशी कारीगरी फिजूल रकम है; इस बेकदरी के ज़माने में अङ्गरेज़ी पढ़ा भी एक फिजूल रकम है "धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का" "दोनों दीन से गए पांड़े न रहे भात न रहे मांड़े" अङ्गरेज़ी की कदर यहां तक बढ़ी हुई है कि अब हाल में यहां बाज़ २ दफ़्तरों में ५ रुपए महीने तक के क्लर्क हुए हैं तालीम की थोड़ी सी झलक आ जाने से मिज़ाज बिगड़ जाता है बाप दादों के पेशे की ओर तबियत रुजू नहीं होती अपनी करतूत से कुछ हो नहीं सकता फैशन के माफिक कपड़ा लत्ता न पहिने तो प्रतिष्ठा कैसे रहे अन्त को फिजूल रकम हो किसी तरह ज़िन्दगी का दिन पूरा करना मुहाल हो जाता है; अरसिक को हमारा लेख फिजूल रकम है नास्तिकों को ईश्वर फिजूल रकम है

प्राणी को संसार कहां तक गिनावें इन को रकमों को बही खाते में चाल लिख रक्खा फिर कभी को सोंच कर और बतावेंगे ॥

यह हमारी भूल है जो मन के लड्डू खा रहे हैं।

क्या महिमा सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की है जिसने मृत्तिका के परिमाणुओं से क्या क्या अनगिनत भिन्न भिन्न सूरतें बनाईं और प्रत्येक जीव के लिए उपयोगी जल वायु आदि प्राकृतिक पदार्थ इस बहुतात से सृज दिए कि इतना अधाधुन्ध खर्च करने पर भी कभी कम नहीं होते; इतने ही से हमारी खबर लेता हो सो नहीं किन्तु सर्वावस्था ईश्वर का चिरस्थायी प्रेम सब पर इकसां है और कोई किसी पर उसके अदृश्य न्याय गुण के जागरूक रहते अन्याय नहीं कर सक्ता ; मुसल्मानों ने जब हिंदुओं को जीत इन्हें सब तरह का क्लेश देने लगे तब कालान्तर पाकर अङ्गरेजों को लाकर यहां सुशोभित किया सबों को आशा हुई कि अब इस दुर्भाग्य देश में इनके पवित्र चरण कमल पधारे हैं तो अब हमारे पुण्योदय हुए सैकड़ों वर्ष की घृणास्पद गुलामी और दास्यभाव से मुक्त किए जांयगे और जिनकी प्रजावत्सलता न्याय और उदारता जगत् विदित है उसके आधीन रह हमारे सुख की उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहैगी ; अब हम हिंदू और हमारे देश के हेतु मुसल्मान दोनों एक ही नज़र से देखे जांयगे पर रोज के बर्ताव से अब हमें निश्चय हुआ कि यह सब केवल आशामोदक थे यह बड़ी भूल थी जो हम अब तक मन के लड्डू खाते रहे ; और फिर भी भांत भांत के तर्क वितर्क मन से अभी तक उठाते ही जाते हैं कभी को यह ख्याल आता है कि यह कैसा क्या हमारे प्रभुवर के जगत उजागर औदार्य्य गुण में घुन लग गया जो ऐसे ऐसे नीति विरुद्ध काम बहुतात से होते हैं कि मेजारिटी और मिनारिटी अर्थात् जन समूह की अधिक और न्यूनता पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता विशेषतर कमबख़्ती को मार खाए हम पश्चिमोत्तर में जहां हिंदू शब्द का पहिला अक्षर भी जिसमें आ जाय वह तत्काल दूर फेंक दिया जाय फिर हाड़ मांस के बने प्रत्यक्ष हिंदू का कहां ठिकाना; जो कुछ सहुए हैं वह सब मुसल्मान या क्रिष्टियनों में

और अब अवगुण की खान केवल हिंदू; बहुधा लोगों को अब भी एक कल्पना है कि प्रकृति की विभिन्नता के कारण कोई कोई गुण अवगुण अवगुण गुण समझे जाते हैं और गुण भी गुणज्ञ और निर्गुण का साथ पाय क्रम से गुण और दोष हो जाते हैं "गुणायन्ते दोषाः सुजनवदने दुर्जनमुखे गुणा दोषायन्ते तदपि किमको विस्मयपदम्। यथा जीमूतोयं लवणजलधेर्वारिमधुरं फणी पीत्वा दुग्धं वमति गरलं दुस्सहतरम्" तो भी हमारा सन्तोष नहीं होता क्योंकि हर एक वस्तु अपने उचित स्थान में और हर एक वस्तु के लिए उचित स्थान इस अंगरेज़ी अमल का अक्सर बर्ताव होता है पर परिणाम कुछ उलटा ही पुलटा देखा जाता है; जो कहो एक मनुष्य किन किन बातों में जी लगावे सो भी नहीं सरकार एक मनुष्य नहीं है वरन समुदाय का नाम सरकार है और उस समुदाय को भिन्न २ काम सौंपे जाने का प्रयोजन यही है कि वे उसको समझ बूझ कर खूब होशयारी और पक्षपात शून्य हो यथोचित न्याय दृष्टि से किया करें; हम इस विषय में प्रत्येक पहलों की बारीकियां विस्तार भय से नहीं लिखा चाहते वरन दो चार बहुत मोटी बातें नमूने के तौर पर लिखते हैं जिससे हमारे पाठकों को अच्छी तरह विदित हो जायगा कि हिंदुओं के मुकाबिले मुसल्मानों की कैसी तरफ़दारी की जाती है; अब पहले गौ के विषय में लीजिए इस देश में गोधन एक बड़ा धन समझा जाता है और इसके अधिक होने से जो जो लाभ हैं बहुत लोगों ने बहुत बार इसे लिखा है हिंदू लोग इसके बध की आकांक्षा कभी स्वप्न में भी न करेंगे बहुत कितने मुसल्मान भी इस बात को मानते हैं कि इसका गोश्त खाने से खाज कलय हो जाता है तो अब देखिए थोड़े से लोगों के क्षण भङ्गुर सुख के लिए कोटिन मनुष्यों का जी कुढ़ाना कैसा अच्छा न्याय है सो सब एक ओर रहो अभी मिर्ज़ापूर बनारस आदि जगहों में बकरीद की कुरबानी के बाबत जैसा सुना गया है और अख़बारों में देखा भी गया मुसल्मानों के मुकाबिले हिंदुओं पर कैसा अच्छा न्याय किया गया कि जिसमें पक्षपात का लेश भी कहीं नहीं छू गया सच है "टेढ़ जान शङ्का सब काहू, बक्र चन्द्रमा ग्रसै न राहू" दूसरे इन्कमटाक्स के मुकद्दमे में तो ऐसा अच्छा दूध का दूध पानी का

पानी का निगराव किया गया कि भाषा भलाइ क्या करना किसकी ताकत है कि ज़ुबान होजावे ; अब लीजिए हिंदी उरदू का राग गाते हैं यह सब को विदित है कि इस देश की भाषा हिन्दी है सो देखिए हिन्दी की कैसी कदरदानी हो रही है थोड़े लोगों के आराम के लिए जिनकी हलाकानी के वास्ते अचहरियों में जो उर्दू गाड़ दी गई तो अब उसका खूंटा उपार कभी होही नहीं सकता मालगुज़ार जो जाड़ा गरमी बरसात का दुख सह रात दिन कठिन परिश्रम कर सरकारी खज़ाने की पूर्ति करते हैं हर गांव में हिन्दी दां पटवारी के रहते भी सरकारी हुक्मनामा पढ़ाने के लिए कोसों दौड़े फिरते हैं दो चार कोस के बीच कहीं फारसी दां मिले भी तो ऐसे जो आलूबोखारा को उल्लूबेचारा पढ़ देते हैं ; अङ्गरेज़ी मदरसों में दूसरी ज़ुबान फारसी उर्दू संस्कृत या हिन्दी पढ़ाई जाती है हर सिमाही में लड़कों का लिखना साहिब डइरेक्टर के मुलाहिज़े के लिए भेजा जाता है अच्छे लिखने पर इनाम मिलता है पर हिन्दी वाले विद्यार्थी जिनकी संख्या उर्दू वालों से कुछ कम नहीं है मुंह ताकते ही रह जाते हैं यह कोई उन्हें ढाढ़स नहीं देता कि तुम्हारा भी लिखना कभी साहब ममदूह के पास भेजा जायगा जब विद्याति विज्ञ पण्डित मण्डली मण्डन थिफिथ साहब के राज में हिन्दी की कुछ प्रतिष्ठा न की गई तो अब आगे कौन आशा है ; अदालत वही बनी है पहिले की अपेक्षा अब काम भी कुछ नहीं बढ़गया तौ भी मुसल्मानों की खातिर के लिए सैयद अहमद बहादुर के कहने से प्रत्येक अदालतों में काज़ी का एक नया ओहदा खोल दिया गया सौ पचास मियां भाइयों की रोज़ी कहां तक न हो जायगी क्या हिंदुओं के लिए व्यवस्था देने वाला पण्डित जरूर न था पर यह तो निस्तेज सीधे सादे गूंगे बहिरों की एक कौम है इन्हें जैसे रक्खेंगे वैसे ही रहेंगे खातिरदारी उनकी होनी चाहिए जिन से शङ्का है; एक ही विषय का लेख पढ़ते पढ़ते हमारे पाठक जन ऊब न जांय इस लिए इस गीत को अब हम यहीं समाप्त करते हैं॥

रहस्य कथा उपन्यास।

हम पहले लिख आए हैं कि सुता के घर में एक दूसरा बीमार किरायदार रहता था। यह एक बेवा औरत थी

जिसके १४ वर्ष की उमर का एक लड़का भी था बहुत दिनों की बीमारी से जीर्ण हो मरणासन्न थोही अकस्मात उसी रात को जिस दिन हीराचन्द उस मकान में जा टिका था सिधार गई ; यद्यपि प्रगट में हीराचन्द का इस्से कुछ वास्ता न था पर सुन्ना [illegible] की मुहताजगी का सब ह[illegible] और उसके लड़के पर इसे बड़ा तर्स आया जहां तक हो सका उसकी क्रिया कर्म का सब खर्च बर्च इसने अपने पास से किया और लड़के की खबरगीरी की भी अब इसे बड़ी फिकिर हुई ; यह लड़का यद्यपि उमर में अभी बालिग भी नहीं हुआ था पर हर तरह की होशयारी और समझ इस में बाखूबी आ गई थी मा इसकी सुईकारी और कामदानी का काम अच्छा जानती थी उसी से मोटा झोटा खा पहिन किसी तरह अपना दिन काटा और लड़के की तालीम का भी खर्च सब भरपूर उठाती रही ; लड़के ने इस उमर में उर्दू फारसी की अच्छी इसत्यादाद हासिल कर ली बड़ा खुशनवीस और मुहर्रिरगीरी का काम खूब समझने लगा था ; नाम इसका इन्दुशेखर था पर मा दुलार से इसे इन्दू इन्दू कहा करती थी इन्दू भी बिगड़ कर पीछे सब इसे हिन्दू हिन्दू कहने लगे " अन्धीमातृसुख:सुत: " सामुद्रिक के इस वचन की सार्थकता के लिए मानो रूप रङ्ग में इसने अपनी मा का सब अनुहार कर लिया था टटके चमेली के फूल समान इसके अङ्ग अङ्ग सब बड़े कोमल और सुहावने थे, संगमर्मर सा गौर वर्ण, रेशम के लच्छे से भूरे बाल, ऊंचा और चौड़ा लिलार, कमल दल सदृश कटीली बड़ी बड़ी आंख, कमानदार भौं, सुग्गा की टोंट सी नासिका, रूई के पहले सा गोल कपोल दहनी ओर के गाल पर एक तिल ऐसा भला लगता था मानो सृष्टिकर्ता ने इसके अनुपम सौन्दर्य में किसी की नज़र न लग जाय इस लिए अनखे की जगह एक काला तिल रख दिया हो ; सच है " किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् " कम्बु कण्ठ, प्रलम्ब बाहु, जो कोई इसे देखता सभी इसकी सोहावनी आकृति पर मोहित हो जाते ; एक प्रकार का भोलापन इसके चेहरे पर प्रगट होता था जिसे देख कौन ऐसा कठोर चित्त रहा होगा जिसे इसकी मुहताजगी पर रहम न आता तब हीराचन्द सा सरलचित्त कई एक गुप्त कारणों से जो से इसको भलाई

चाहा तो कौन अचरज हुआ ॥

एक दिन इन्दू ने अखबार में एक इश्तिहार देखा कि सोहनपुर के तालुकेदार को खानगी कामों के लिए एक मुहर्रिर दरकार है जो खुश खत लिख पढ़ सक्ता हो और कुछ हिसाब किताब भी रखना जानता हो १५ रुपया माहवारी के हिसाब से तनखाह दी जायगी जिसे खाहिश हो उस तालुकेदार को अठवारे के भीतर अर्जी दे; इस बात की सलाह हीराचन्द से इसने पूछा कि आप की इजाज़त हो तो मैं भी किस्मत आजमाई करूं हीराचन्द ने कहा समय बड़ा कड़ा है रोज़गार बड़ी कठिनाई से मिलता है तुम ज़रूर कोशिश करो शायद कामयाब हुए तो राजा ठाकुरों की बात है तुम्हारे काम से खुश हो गया तो फिर तुम्हें किसी बात की कमी न रहेगी; इसने उसी समय अच्छे खुशखत में एक अर्ज़ी लिख हीराचन्द को सलाम कर चल खड़ा हुआ; कई महीने इसे यहां आए होगया था गली कूचे सब जान गया था मा इस की जो सुईकारी का काम करती थी उसे वह अकसर अमीर और बड़े आदमियों में जा जा बेचा करता इस कारण इसको अकसर नौवाबज़ादे और तालुकेदारों के डेवढ़ी के कुत्तों और खुशामदी गुर्गों से खूब हेल मेल और घुस पैठ हो गई थी सिवा इसके रूप या हुस्न जिसकी बाज़ार गर्मी दिल्ली आगरा लखनौ से शहरों में अब तक मौजूद है जहां खूबसूरती की बिक्री बड़े चाह और कदर के साथ होती है उस [illegible]नी इसके पास थोड़ी नहीं औरोंने [illegible] और नशिस्त बरखास्त के ढङ्ग मानों इसको रूप माधुरी के लिए सोना में सुगन्धि थे सभी इसे प्यार कर बोलते थे इसी कारण धनुषधारी के सवाहिबों में भी बहुत कुछ हेल मेल रहने से विलातरहुद बाबू तक इसकी रसाई सहज में होगई थी बाबू उस समय चौसर खेल रहे थे इसने दूर ही से सलाम कर अर्ज़ी सामने रख अलग एक ओर जाकर बैठ गया; बाबू अर्ज़ी सामने रक्खी देख गरदन उठा सिर से पांव तक एक बार इस पर नज़र किया तब अर्ज़ी का लिफाफा फाड़ पढ़ कर बोले क्या तुम नौकरी करना चाहते हो? यह बोला हां हुज़ूर; धनुषधारी ने फिर पूछा यह अर्ज़ी तुम्ही ने लिखा है? इसने कहा हां; बाबू ने कहा तुम बड़े खुशनवीस मालूम पड़ते हो अच्छा तो तुम आज जाओ कल्ह से आना पहले हम तुम्हें एक

महीने के लिए मुकर्रर करते हैं काम जो तुम होशियारी से करोगे तो हमेशा के लिए वार लिए जाओगे इसने झुक कर सलाम किया और घर की राह ली॥

शेष आगे।

म्युनिसिपैलिटी की सावधानी।

बड़ी बात कि म्युनिसिपैलिटी अपने काम पर अब सजग हुई और जहां तहां सफ़ाई के लिए चौकसी हो रही है; कई एक ठौर जहां बरसों का कूड़ा इकट्ठा था वहां अब देखा जाता है कि मेहतरों के झुण्ड के झुण्ड ऐसी फुरती के साथ उसके साफ़ और झक करने में उतारू हैं कि इस समय यदि सफ़र मैना की पलटन भी आती तो इन मेहतरों की चुस्ती और चालाकी देख सिवा कान दबा चूतर पर हाथ रख भागने के और कुछ न उनसे बन पड़ता; ऐसा ही ढूंढ़ २ बरसों के इकट्ठे कूड़ों के हटा देने का इन्तिज़ाम कुछ दिन जारी रहेगा तो इस बड़े शहर से तीव्र ज्वर मलेरिया और सरासत पिलीर अर्थात् स्पर्शाक्रमक व्यथाएं सदा दूर रहेंगी; अब हम और भी म्युनिसिपैलिटी से आशा रखते हैं कि बनारस आगरा कानपूर का सा रोशनी का प्रबन्ध यहां भी किया जाय गली कूचों में थोड़ी थोड़ी दूर पर पत्थर या लकड़ी के खम्भों में लालटेनें लगा दी जांय और उनमें लैम्प की रोशनी हुआ करे जिसमें सावन भादों की काली अँधियारी रात में भी शरतपूनों की सी रात रहा करे; अभी शहर के गन्दे नाले की सफ़ाई हो ऊपर से उसे पत्थरों से पाट बहुत अच्छी सड़क निकाली गई है किसी प्रकार यह सड़क कालविन गंज वाली सड़क में जो इससे बहुत ऊंची है मिला दी जाय तो सवारी वालों को भी बड़ा आराम हो और हवा का चक्कर मिटे; इस गन्दे नाले को शायद दारागंज घाट वाले नाले में मिलाने की तजवीज़ है पर यह तो किसी तरह हम लोगों के लिए हितकारी नहीं है पास ही नया बर्फ़खाना है उसी पानी का बर्फ़ बना जिसमें गन्दे नाले की गन्दगी इकट्ठी होती रहेगी तो क्या पूछना बड़ी सफ़ाई हुई हम आशा करते हैं ऐसा कदापि न किया जायगा॥

लोन और चीनी की तुलना।

कविवचनसुधा से।

अङ्गरेज़ों की धर्म पुस्तक में मसीह अपने चेलों को अच्छा अच्छा उपदेश देने

के उपरान्त कड़ा तुम ज़मीन के नमक हो नोन दूसरी चीजों को मज़ादार कर देता है मगर नोन खुद बदमज़े हो तो वह किसी मज़ादार किया जा सक्ता है; तो निश्चय हुआ कि नोन बड़ी आवश्यक वस्तु है पर निरा नोन ही नोन खाते जाओगे जीभ छिल जायगी जी जब उठेगा और यहां तक ज़ाइके में खारी पन समा जायगा कि सब पदार्थ तुम्हें फीके और नीरस मालूम पड़ने लगेंगे उस समय ज़ाइका सुधारने और उसे सरस करने के लिए चीनी ही काम में लाई जाती है इस लिए आदमी यदि नमक है तो औरत चीनी है; नोन और चीनी बहुत किस्म की होती हैं इस लिए स्त्री और पुरुषों की भी सैकड़ों बरन हजारों किस्म अवस्था और देश भेद से हो गई हैं; ऐयाशों के मोहनभोग में पग भीतर ही भीतर वाली हलुआ सा सड़े हुए पीले आम से ज़र्द पर ऊपर तेल पनिया चिकनाए गए विसनी गोरा हैं ऊपर से देखने में बड़ा सुफेद और चमकीला स्वाद में किसी प्रयोजन का नहीं; हम सरीखे रुखवाही खरी कहने वाले खारी नमक हैं जिसको कोई आदर देने वाला ईश्वर की सृष्टि में पैदा ही नहीं हुआ; जो के अशुद्ध दुनियासाज़ी में पगे हुए पागा नोन हैं; क्रूर कुटिल निर्दय मनुष्य पहाड़ी नोन हैं; कुलीन और भव्य जन खाद्य लवण हैं ये पचलोना हुए; अब चीनी की किस्में सुनो वज़ाक खानगी चोटा हैं; कुंआरी आसन्न यौवना अनागतार्त वा कच्ची चीनी हैं; नव यौवना सुन्दरी बालरण्डा रोज़ा सुगर हैं सूरत शकल की सब अच्छी पर धर्म और आचार निष्ट लोगों के किस काम की; Rosy cheeks गुलाब के रङ्ग सा कपोल वाली Accomplished lady पढ़ी लिखी समझदार युवती कन्द हैं; हम लोगों की मैली कुचैली फूहर स्त्रियां संगरा खांड़ हैं; कसबियों की नायिका "छदा वेश्या तपस्विनी" चीनी की मैल खूदड़ हैं; सती साध्वी सुशीला सुन्दरी प्रौढ़ा गृहस्थिन स्वच्छ सुफेद पक्की चीनी हैं॥

अग्रिम मूल्य	... ...	३।✓)
पश्चात् देने से	... ...	४✓)
एक कापी का	... ...	।)

Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

725

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD, 1st Feb. & Mar. 1881. [Vol. IV. Nos. 6 & 7.]

प्रयाग माघ और फागुन शुक्ल सं० १९३७ [जि० ४ संख्या ६ और ७]

No. 4. 621

यह संसार सब झौंझट है।

सैकड़ों तरह की आशा की फसरी से जकड़बन्द काम क्रोध लोभ मोह कीचड़ में लथर पथर दिन रात सैकड़ों झौंझट भुगता किया करते हैं पर वाहरे भूल भुलैया चमत्कार कहिए तो इसे कि कभी एक पल एक निमेष भी इस भूल भुलैया से छुट सीधी राह पर नहीं आया चाहते और विष सदृश बिषय भोग में रत बाग बाग हो रहे हैं फूले नहीं समाते ; लड़के का बिवाह रोप खड़े हुए मोहफिल स-जाना पड़ा न करें तो नाक कटती है लोगों के यहां जियाफ़तों में जाय २ डेढ़ सेर मकील आए हैं बदला न चुकावैं तो क्या मुंह देखावैं सारे फिकिर और झौंझट

के हगनी मुतनी बन्द है एक दम की फुरसत नहीं मिलती खाना पीना दुश्वार हो गया है फिर भी इस क्षणिक सुख की जिस्की बेहदगी की एक साधारण सी झलक हम ऊपर दिखला चुके हैं आनन्दाम्बोधि माने बैठे हैं। और बड़भागियों में एक हम भी समझे जाते हैं इस बात के नशे में चूर चूर हो रहे हैं; नाती हुए, पोते हुए, परोते हुए, सोने की सीढ़ी चढ़े आज इसकी मँगनी है, कल उसका ब्याह है, लड़की के लड़का हुआ रोचना आया जत्रा साजना पड़ा, नतनी का ब्याह आ लगा ननिहाल या मिठ्ठी भाजी भिजनाही चाहिए सब ओर की झौंझट और नोच खसोट इस जीर्ण जरद्गव की पुरजे२ किए डालते हैं पर यह मोहमयी प्रमाद मदिरा में उन्मत्त है यही सब करते २ एक दिन दांत बाय लंबी तान रह गए कंबल और रीछ वाला किस्सा कि झौंझट से ये क्या बचें झौंझट ही जब इन्हे बचने दे "घर के लोगवा यों कहें मियां जियें अब बरकत है। मियां कि गत मियें जानें सांस लेत जो सरकत है" अब दूसरी ओर खयाल दौड़ाइए व्योपार करने लगे बड़ी भारी दूकान खोल बैठे लाखों का वारा न्यारा साल में होने लगा भोर से उठतेही आधी रात लों झौंझट छोड़ दूसरी बात नहीं सूरदास की काली कामरी चढ़ै न दूजो रङ्ग एक क्षण न बीतता होगा जिस समय चिन्ता और फिकिर से शाह जी की निराली तबियत रहती हो; खरीदार व्योपारी आए तो उनसे वही झांव झांव झिक २ दलाल आया तो उस्से भी वही झिक २ किच २ सेठ जी जो कहीं जात के माड़वारी हुए तो फिर क्या प्रकृति और आकृति दोनों में पूरे पिशाच दूसरे की जमा कहो सर्वस्व गटक बैठें अपनी एक कौड़ी निकलती हो तो कांई कूं कांई कूं कर दिमाग चाट डालें; व्योपारी चाहता है हम शाह जी की लिपड़ी बरताना कर ले शाह जी इसी ताक में हैं कि यह खूसट जाने न पावे जहां तक होसके इस्का ऐसा वस्त्रमोचन कर तेंतिस बोलावें कि तसमा न बचने पावे; दलालराम अपनी ही घात में हैं यह हजरत व्योपारी और शाह जी दोनों को गावली दे अपना मत लब गांठ कोनसवान हुआ चाहते हैं; गोधनदास की २५ हजार की हुण्डी ५४ मिती की ली थी आज उसकी मिती पुरती है रोकड़ तैयार नहीं आज नहीं देते दिवाला पिटता है लगे मुनीम और गुमाश्तों पर हांव २ खांव २ करने किसी

किसी की बात नहीं पोसाती घर में टका नहीं १० का भिखारीदास तिनकौड़ीमल का सट्टा रख लिया १५ फकीरचन्द गरीब दास से सेठानी का गहना गिरीं रख उधार लिया खैर ज्यों त्यों उस समय मिती पुरै दिया इज्जत बची दिवाला रहा दूसरे दिन दूसरे की मिती पुजने पर भी वही झौंझट और हाव हाव यही करते करते सेठ जी एक दिन खबीस सा मुंह बाय रह गए झौंझट न मिटी ; दफ़्तर में काम करते हैं लोग समझते होंगे ये तो हेड क्लर्क या दूसरी ५० या ६० की बाबूगीरी की असामी पर हैं इनकी बड़ी आराम और चैन से कटती है यहां बाबू साहब को जो झौंझट है वह उनका जीही जानता है दफ़्तर में १० से ४ तक काम की झौंझट बात बात में सरदफ़्तर साहब की झिड़की और झटकार की डर घर में आए फिर भी वही पिसौनी एरियर बाटअप् करते करते फुचड़ा निकला जाता है पेनशन के दिन भी पूरे न होने पाए बीच ही में हरयेनमः बोल गए न झौंझट से गला छुटा न एक घड़ी की स्वच्छन्दता मिली ; हम सब लोग समझते हैं हमारे गवर्नर जेनरल साहब महारानी के प्रतिनिधि स्वरूप कुल स्याह सुफैद के मालिक बने बैठे हैं इन्हों ने बड़ी अच्छी कमाई कमा रक्खा है जिस पुण्य का फल इस जन्म भोग रहे हैं पर गवर्नर साहब के जी से जा कर कोई पूछे जो झौंझट और तरद्दुद इन्हे है वह किसी को न होगा एक गरीब किसान भी दिन भर की मेहनत के उपरान्त रूखा सूखा खाय फूस की झोंपड़ी में टांग पसार सुख की नींद सोता होगा हमारे वाइसराय साहब को सो भी शायद दुर्लभ है हिंदुस्तान ऐसे भारी देश का शासन करना मानो लोहे के चने चबाना है यह देश जिसमें सैकड़ों जुदे २ कौम के लोग बसते हैं तनिक चूके चट पट सेवदेव कर ली गई हम अखबार वालों को मौका मिला कलम का सरपट घोड़ा दौड़ाय २ लगे कोंचने हिंदुस्तानियों का किसी बात में पक्ष किया सिविलियनों के चेले पायोनियर सरीखे अवाज़ा तवाज़ा कसने लगे कोई कड़े दिल के हुए सबों की कहा सुनी और नाक भौं का सिकोड़ना बरदाश्त कर लिया पर उचित न्याय से बाल बराबर इधर उधर न टसके यदि लिटन सरीखे कच्चे ओछे जी के हुए फिसिल पड़े उधर बिलायत वाले जुदा ही नित्य नए तान गाते रहते हैं उनके मन की न करें नालायक समझे जांय ऐसी ऐसी सैकड़ों

झौंझट प्रतिदिन और हरदम तैयार रहती है सच्चा आराम जाना ही न होगा ; हम समझते थे एडिटरी का काम सब से आराम और स्वच्छन्दता का है न ऊधो के देने न माधो के लेने नियत समय पर पत्र निकाल निर्द्वन्द हुए पर देखा तो दाम वसूल करते समय जो झौंझट सहना पड़ता है वह जी ही जानता है ; लोग समझते हैं पण्डित जी बड़े सुखी हैं वे हने धुने मिल जाता है इन्हें किसी तरह की झौंझट नहीं सहना पड़ता यह कोई क्या जाने कि यजमानों का ताव सम्हालना कैसी भारी मुहिम है दूसरे यजमानिन की कटार सी भौं के कटीले कटाच्छों से वेदाग बचे रहने की फिकिर क्या कम झौंझट है ; इन सब लोगों की दुर्गति देख हम यही निश्चय करते हैं कि यह असार संसार कुछ है नहीं केवल झौंझट मात्र है इसे अपना समझ इसमें ममत्व रखना बड़ी भूल है ; इस मायामयी ममता का अद्भुत स्वरूप देखने में आया कि जो इसे दिव्य दृष्टि से देखता रहे उसे यह कभी स्वप्न में भी नहीं प्रगट होती और जो इसके स्वरूप को अपनी विचार दृष्टि में नहीं लाया चाहते उनके सामने दिन रात नाचती रहती है और उनके जीवन और धन के साथ सदा क्रीड़ा कर २ उसे मृगतृष्णा का पथिक बनाए हुए है " ईदृशीराममायेयं याम्वनाशिनहर्षदा। नलक्ष्यते स्वभावोस्या: प्रेक्षमाणैवनश्यति " ॥

एक एक बात जानदारी की सब में है।

जैसा मनुष्य के शरीर से जान निकल जाने पर फिर यह देह निरी मिट्टी और कौड़ी काम का नहीं रहता वैस ही एक एक बात जानदारी की सब में है जैसा रेल की जान तार, नए फ़ेशन की जान चक्करदार टोपी और चुरट, अङ्गरेज़ी कारीगरी की जान नफ़ासत, हिंदुस्तानी चीजों की जान भद्दापन, बङ्ग देशियों में जान शरारत और जल्दबाज़ी, रोजगार की जान दियानतदारी, यूरोप के तरक्की की जान साएन्स, हिंदूपन की जान छूत और चौका, काशी के पण्डितों की जान टिड्डाखभ्य की बुकनी में समीझोन्त: के चरपरे काढ़े के साथ चूसने लायक

दीक्षित की फांकी 'ओन्तस्थओन्तएवार्थो नाओन्तोओन्तइष्यते' पुरोहिताई की जान यजमानों की मूर्खता, मुसल्मानों की जान ज़ाहिरदारी, दीन मुहम्मदी की जान मज़हबी तअस्सुब, बीबी उर्दू की जान अवध पंच की लिखावट लखनौओं की जान नज़ाकत लिए शीन क़ाफ़ की तराश, इस नए ढङ्ग की हिन्दी की जान बाबू हरिश्चन्द्र के लेख का तर्ज़, इलाहाबाद के शहरीयत की जान इस का सदर मुकाम हो जाना, कुलाङ्गनाओं में जान लज्जा, तावत्कुलस्त्रीमर्यादा यावल्लज्जावगुण्ठनम्। इतेतस्मिन्कुलस्त्रीभ्यो वरंवेश्याङ्गनाजनः॥ लायल्टी की जान पदाघात सह कर भी चूं न करना, अमीरी की जान फ़िज़ूलख़र्ची; हिंदुस्तानी रईस और राजाओं की जान अविवेक पूर्वक वैभवोन्माद, खैरख्वाही गवर्नमेण्ट की जान बात के द्वारा क्रिस्तानी ब्राह्मणों का भोजन इत्यादि॥

शरिश्ते तालीम के रिपोर्ट की समालोचना।

यह कहावत कि कभी घूरे के भी दिन फिरते हैं बहुत ही यथार्थ है शरिश्ते तालीम की इस साल की रिपोर्ट और गवर्नमेण्ट आरडर के पढ़ने से हमारे जी को पूरा बिश्वास हो गया कि ऊपर की कहावत सर्वथा सटीक है अभी तक अच्छी शिक्षा केवल अमीरों के पहुंच में थी निर्धनों के लड़के मुशकिल से ऊपर के दरजे तक पहुंच सकते थे अब सरकार ने आरडर जारी कर दिया कि जो लड़का मिडिल क्लास पास हो वह छात्र वृत्ति पाने का अधिकारी होगा यदि वह कोई अङ्गरेजी स्कूल में जाकर पढ़े तो उसे ४ वर्ष तक बराबर नियत वेतन मिला करेगा दीन जनों में विद्या वृद्धि का यह बहुत सुगम उपाय किया गया तीसरे दरजे की परीक्षा में अच्छा निकला तो प्रवेशिका की परीक्षा तक तो सुचित्ती हुई; अभी तक तहसीली मदरसों के पाठकों की अपेक्षा हल्काबन्दी मदरसों के पाठकों की तनखाह कम और काम अधिक था इस लिए कोई हल्काबन्दी मुदर्रिस तहसीली मुदर्रिसी नहीं पसन्द करता था अब सर-

कार ने तहसीली मुदर्रिसों की तनखाह बढ़ाने का हुक्म दिया है और यह चाहती है कि हल्काबन्दी मदरसों में तीसरे दर्जे तक लड़के रहें फिर वहां से जाकर किसी तहसीली मदरसे के दूसरे दर्जे में भरती हों इस प्रबन्ध से योग्यता के अनुसार यथायोग्य सब की प्रतिष्ठा की गई और अब मन लगा कर सब अपने अपने काम में तैयार रहेंगे और तहसीली मदरसों में बहुधा ऊपर की कक्षाओं में लड़कों की संख्या कम हो जाती थी सो भी अब न होगी; अभी तक जैसा होता रहा कि नुमाइशी काररवाई के लिए हल्काबन्दी मुदर्रिस दो लड़कों के पीछे अपने मदरसे के २० लड़कों का बहुमूल्य समय व्यर्थ खोते थे और वे दो भी अच्छे नहीं निकलते थे सो अब न होगा पिछले साल की रिपोर्ट देखी जाय तो मदर्से पीछे एक लड़का भी अच्छा न निकलेगा इस कमिश्नरी में कानपूर प्रसिद्ध जिलह है वहां ३३ मदर्सों में १२ पास हुए इलाहाबाद के २२ में कोई भी नहीं; हर ज़िले में एक डिप्टी इन्सपेकृर और एक सब डिप्टी इन्सपेकृर रहते हैं काम दोनों का एक सा पर तनखाह में दोनो में बड़ा अन्तर है डिप्टी इन्सपेकृर के ४ ग्रेड हैं जिनका मासिक क्रम से १५०) १२०) १००) और ८०) है सबडिपटी की तनखाह ५०) और ४०) और ३०) है डिपटी इन्सपेकृरों को भत्ता मिलता है सबइन्सपेकृरों को कौड़ी नहीं खर्च दोनों का बराबर है हां यह बात अलबत्ता अब हो गई है कि ३०) का ग्रेड उड़ा कर ४०) और ५०) के होंगे यह भी शिक्षा विभाग में वृद्धि का हेतु है; पहले और अब कि कारवाई में भी अब बड़ा अन्तर है पहले की रिपोर्टों की कैफीयत जांचिए तो देखियेगा कि अच्छे २ मदर्से चुन कर इन्सपेकृरों को दिखाए जाते थे इस लिए उनकी कैफीयत अत्यन्त संक्षिप्त होती थी अब कुल मदर्से दिखाए जाते हैं और उन पर इन्सपेकृर सब कैफीयत मुफस्सिल अपने हाथ से लिखते हैं आयन्दा के लिए यह एक अच्छी जड़ जमी तो भी कहीं नुमाइशी कारखाना अभी जारी है; रिपोर्ट के देखने से मालूम हुआ कि इस डइरेकृरी में लड़कों की संख्या ४००० से बहुत अधिक नहीं है तो गोरखपुर के १८३ मदरसों में ७००० आज़मगढ़ के १५८ मदरसों में प्रायः ७००० इलाहाबाद के १८४ मदरसों में ६००० और कमाऊं के १०६ मदरसों में ६५०० लड़कों की संख्या कैसे सम्भव है इलाहाबाद का हाल दरि-

याफ़्त करने से मालूम हुआ कि कुल तादात लड़कों की जो सच मूच पढ़ने आते हैं २५०० के ऊपर नहीं है बाकी सब पिछले डिपटी इन्स्पेक्टर की नुमाइश थी ऐसा ही और जिलों में भी समझना चाहिए कमाज जहां जङ्गल पहाड़ों के सबब पइमाइश नहीं हुई क्षेत्रवर्ग अटकल से लिख दिया जाता है वैसा ही लड़कों की संख्या भी अटकल से लिख दी गई हो तो क्या अचरज है ; सबइन्सपेक्टरों की एक राय है कि पाठकों की तनखाह बढ़ाई जाय कम तनखाह पर अच्छे लोग नहीं मिल सकते परन्तु सहारनपुर के इज्युकेशनल कमेटी के सेक्रेटरी लिखते हैं कि तनखाह हरगिज़ न बढ़ानी चाहिए ६ रुपए काफी हैं जिस हालत में कि पटवारियों की तनखाह ८ से १० रुपए तक है और काम उनसे अधिक करते हैं बल्कि उक्त सेक्रेटरी यह भी कहते हैं कि ३ या ४ रुपया जो पढ़े लिखे चपरासियों की तनखाह है वही इन मुदर्रिसों की भी होनी चाहिए ; रोज़गार की किल्लत के बाइस शायद कोई पढ़ा लिखा ऐसा आदमी साहब बहादुर की नज़र से गुज़रा है जिसे उनको यह ख्याल जम रहा है; मुदर्रिस और पटवारियों के काम में जमीन आसमान का अन्तर है मुदर्रिस को पाठशाला के भीतर ऐसे लोगों से बर्तना पड़ता है जिनके स्वभाव चलन और ढङ्ग एक दूसरे से बिलकुल निराले होते हैं दूसरे बड़े परिश्रम का काम यह है कि पाठक लड़कों के चञ्चल चित्त को अपनी ओर खींच उनके हृदय में विद्या का अंकुर अङ्कित करता है प्रत्येक की बुद्धि के अनुसार अपने मनोगत आशय से उन्हें अभिज्ञ करता है पटवारी और चपरासी को शारीरिक परिश्रम करना पड़ता है और पाठक को मानसिक, शारीरिक परिश्रम से मानसिक परिश्रम कुछ कम नहीं है बल्कि पटवारियों की तनखाह कम की जानी चाहिए ये बड़े दुष्ट होते हैं इनसे किसानों को बड़ी तकलीफ पहुंचती है; साहब बहादुर बहालत सेक्रेटरी किसी मदर्से का इमतिहान लेने गए होंगे तो मालूम पड़ा होगा कि पढ़ाने लिखाने के काम में कैसा परिश्रम होता है थोड़ी ही देर में कलई खुल गई होगी १० बार सिर पर हांथ रख सुस्ताने होंगे; यह भी सुनने में आया है कि डइरेक्टर जेनरल पोस्ट आफिस चाहते हैं कि पहले जैसा अवध में था और मध्य प्रदेश में अब भी है शरिश्ते तालीम और पोस्टल डिपार्ट-

मेग्ट दोनों मिला दिए जांय मुदर्रिस के तावे एक चपरासी और दो हरकारे रहा करें और कुछ तनखाह बढ़ा दी जाय जो पोस्ट आफ़िस से मिला करे ; बात तो अच्छी जान पड़ती है दोनों शरिस्तों के मिलने से तनखाह माक़ूल हो जायगी तो अच्छा मुदर्रिस मिल सकेगा और यह तजवीज़ सिर्फ़ देहाती मुदर्रिसों के लिए है ज़िले की काररवाई में भी कुछ गड़बड़ न होगा ॥

ऐसा देखने में आता है कि भत्ता कहीं बहुत कहीं बहुत कम है सब जगहों में एक सां होना चाहिए अवध में ५०) भत्ता है और पश्चिमोत्तर की कोई कोई कमिश्नरियों में ३०) है कहीं इस्से भी कम सब ठौर एक सां तीस तीस क्यों न कर दिया जाय जो बचत हो उसमें से आधा तिहाई भत्ता सब डिपटी इन्सपेकृरों को दिया जाय यह बड़ी बेइन्साफी है कि काम डिपटी और सब डिपटी इन्सपेकृर का एक है एक को इतना अधिक दिया जाय एक को कुछ भी नहीं ; रिपोर्ट में डि॰इन॰ हरदोई की तारीफ़ की गई है जिसने साल भर में ५७२ मदर्से देखे और डि॰इन॰ बाराबंकी की ओर नाराज़ी जाहिर की गई है जिसने साल में कुल २०० मदर्से देखे इस ठौर honesty is the best policy दियानतदारी उमदा हिकमत है अङ्गरेजी की यह मसल गलत हो गई बाराबंकी वाले का काम सब सच्चा और हरदोई वाले के काम में जरूर लिफाफिया और भरभ्मती कारखाना हुआ है मदर्से कैसही पास पास क्यों न हों ४८ के औसत से हर महीने में कभी नहीं देखे जा सके यदि देखा भी हो तो वह मुआइना जिसे मुआइना कहते हैं कभी नहीं किया गया डि॰इन॰ केवल उस राह से ही जहां मदर्सा था निकल अलबत्ता चाहो गए हों; वाह गवर्नमेण्ट से कारगुजारी का परवाना हासिल करने को यह तो बहुत अच्छी हिकमत निकली अब सबी इस तरह झूठ बोलना अच्छा समझने लगेंगे ॥

मृच्छकटिक।

चतुर्थ अङ्क।

स्थान

बसन्तसेना का बैठने का कमरा ॥

बसन्तसेना और उसकी दासी मदनिका बैठी हुई।

(चेटी का प्रवेश)

चेटी। मा ने आर्या बसन्तसेना के पास हमें भेजा है यह आर्या चित्रपट पर दृष्टि

किए मदनिका के साथ कुछ बात चीत करती बैठी हैं पास चलूं (चलती है)

मदनिका। आर्या आज इस चित्र को आप बड़े चाव से देख रही हैं इसका क्या कारण है?

बसन्त॰। मदनिका तू जान बूझ कर भोली बनती है नहीं जानती ऐसी सुसदृश आकृति सिवा मेरे प्राणनाथ के दूसरे किसकी हो सक्ती है जिस पर मेरा मन लट्टू हो रहा है॥

चेटी (आगे आ कर) स्वामिनी जी मा ने कहा है द्वारपर रथ सजा खड़ा है॥

बसन्त॰। क्या आर्य्य चारुदत्त ने मुझे बुलाया है?

चेटी। नहीं राजा का साला संस्थानक जिसने रथ के साथ दस हजार का मोहर भी भेजा है॥

बसन्त॰ (क्रुद्ध कर) मा से जा कर तू कह दे कि मुझे जो जीती हुई चाहती हों तो फिर कभी ऐसी आज्ञा मेरे ऊपर न करें॥

चेटी। जैसी स्वामिनी जी की आज्ञा (बाहर गई)

बसन्त॰ मदनिका इस छन कुछ उखुम है तू जा मेरे चित्रसारी में ताड़ की पंखी रक्खी है उठा ले आ मैं भी जाय तास लाती हूं खेल कर जी बहलाऊं (दोनों गईं)

(शर्विलक का प्रवेश)

शर्वि॰। जिस मदनिका के लिए मैं कुलीन ब्राह्मण हो इतना बड़ा अधर्म चोरी किया वह इसी बसन्तसेना के घर में रहती है सो इस घर के भीतर चल उस्से मिलूं (भीतर जाकर) अब मैं मदनिका को कहां पाऊं (ताड़ की पंखी लिए मदनिका को आते देख) मेरे जी की सर्वस्व मदनिका यही जान पड़ती है जो मूर्तिमती रति समान सोहती काम की आग से जलते मेरे हृदय को चन्दन के लेप समान शीतल कर रही है॥

मद॰ (देख कर) क्या शर्विलक है तुम इस छन कहां॥

शर्वि॰। कहूंगा (अनुराग सहित दोनों परस्पर देखते हैं)

बसन्त॰ (झँझरियों से झांक कर) मदनिका स्नेह भरी दृष्टि से इसे देख रही है इस्से जान पड़ता है कि इस पुरुष को इस पर लगन लग गई है और यह इसे अब दास्य भाव से छुटाया चाहता है इस समय प्रगट होना अच्छा नहीं क्यों किसी के सुख में विच्छेद डालूं॥

(शर्विलक शङ्कित सा सब ओर देखता)

मद०। शर्विलक क्या है जो शङ्कित से देख पड़ते हो॥

शर्वि०। कुछ गुप्त बात है कहूंगा यह एकान्त स्थान हो तो कहूं॥

मद०। हां है कहो॥

वसन्त०। क्या कोई गुप्त बात है न सुनूं (जाने लगी)

शर्वि०। मदनिके वसन्तसेना कुछ निष्क्रय ले तुझे दे दे सक्ती है॥

वसन्त०। क्या मेरे सम्बन्धकी कोई बात है आड़ में हो सुनूं॥

मद०। मैंने आर्या से पूछा था तब उन्हों ने कहा मैं तो चाहती हूं कि बिना कुछ लिए ही सब दास दासियों को स्वच्छन्द कर दूं पर शर्विलक तुम्हारे पास इतनी पूंजी कहां जिसे दे आर्यासे मुझे स्वच्छन्द करा लोगे॥

शर्विलक, दोहा।

निर्धनतासेखिन्नहो तुम्हरेलिहअधीन　।
आजरातकेसुन्दरी चोरीसाहसकीन　॥

मद०। शर्विलक स्त्री के कारण तुमने अपने को संशय में क्यों छोड़ा॥

शर्वि०। अपण्डिते कहां तेरा ध्यान है साहस ही में लक्ष्मी बसती है बिना साहस के कभी किसी को धन मिला है साहस में भी मेरी मति कार्य्य अकार्य्य का बिचार रखती है मैं फूली लता सी भूषण पहने हुई स्त्री को नहीं मूसता ब्राह्मण का द्रव्य नहीं चुराता न धात्री की गोद में खेलता बालक को धन के लिए चुराता हूं मदनिके चोरी करते समय भी मेरी बुद्धि कार्य्य अकार्य्य पर दृष्टि रखती है यह गहना मैं चुरा कर लाया हूं इसे पहिनो (गहना देता है)

मद० (देख कर स्वगत) इस गहने को तो मैंने पहिले कभी देखा है (प्रकाश) इसे तुमने कहां पाया॥

शर्वि०। इस्से तुझे क्या मैं देता हूं तू ले॥

मद०। जो मेरा बिश्वास ही नहीं है तो मुझे स्वाधीन कर तू क्या करेगा॥

शर्वि०। मैंने दूसरे दिन भोर को सुना कि यह गहना आर्य्य चारुदत्त का है॥

मद० (दुखित सी हो) अरे साहसिक मेरे लिए यह अकार्य्य करते तूने उस घर में किसी को मारा या घायल तो नहीं किया॥

शर्वि०। मैं सोए हुए और डरे मनुष्य पर हाथ नहीं चलाता॥

मद०। भला इतना तो तूने अच्छा किया॥

शर्वि० (ईर्षा से) अच्छा क्या किया काम विवश हो ब्राह्मण के पवित्र कुल में जन्म पाय भी तेरे लिए चोरी किया तो भी तू कहती है अच्छा किया जान पड़ता है तू चारुदत्त से फसी है नहीं तो चारुदत्त का नाम सुन ऐसा खिन्न न होती, हा!

दोहा।

काम अग्नि ज्वाला सुरति इन्धन परम सनेह। होम करैं सब नर जहां धन अरु यौवन गेह॥ धन फल फले कुलीन द्रुम परोपकारक फूल। भक्षित वेश्या विहग सों निष्फल होंहि समूल॥

श्लोक॥

अथश्चसुरतज्वाल: कामाग्नि:प्रणयेन्धन:।
नराणांयत्रहूयन्ते यौवनानिधनानिच॥
इहसर्वस्वफलिन: कुलपुत्रमहाद्रुमा:।
निष्फलत्वमलंयान्ति वेश्याविहगभक्षिता:॥

किसी ने यह अच्छा कहा है, श्लोक॥
एताहसन्तिचरुदन्तिचवित्तहेतो विश्वास यन्तिपुरुषंनतुविश्वसन्ति। तस्मान्नरेणकुलशीलसमन्वितेन वेश्या:श्मशानसुमनाइववर्जनीया:॥

समुद्रवीचीवचलस्वभावा: संध्याभ्रलेखेवमुहूर्तरागा:। स्त्रियोहृतार्था:पुरुषंनिरर्थं निपीड़िताल्लक्तवत्त्यजन्ति॥ नपर्वताग्रेन लिनीप्ररोहति नगर्दभावाजिधुरंवहन्ति। यवा:प्रकीर्णानभवन्तिशालयो नवेश्यजाता: शुचयस्तथाङ्गना:॥

अर्थ।

वेश्या धन के लिए हँसती हैं रोने लगती हैं पुरुष को अपने में विश्वसित करा देती हैं पर आप बिश्वास नहीं करतीं इस लिए कुलीन और शीलवान पुरुष को चाहिए कि श्मसान भूमि में पड़े हुए कुसुम सदृश इन्हें दूर ही से बरकावें॥

वेश्या समुद्र की लहर समान स्वभाव की चञ्चला और संध्या के मेघ की ललाई सी मुहूर्त रागिणी होती हैं और द्रव्य ले लेवाय मनुष्य को निर्धन जान निचुड़े महावर सा छोड़ देती हैं॥

पर्वत पर नलिनी नहि जामै। गर्दभ बाजि भार नहि थामै॥ बोए जव धान नहिं होई, वेश्या नार पवित्र न होई॥

और भी

मन से करैं और को ध्यान। दृग से करैं और को मान॥ अन्य पुरुष से करैं बिहार। तन से करैं और को प्यार॥

श्लोक।

अन्यंमनुष्यंहृदयेनकृत्वा अन्यंततोदृष्टिभिराह्वयन्ति। अन्यत्रमुञ्चन्तिमदप्रसेकमन्यंशरीरेणचकामयन्ते॥

(क्रोध में भर दांत पीसता हुआ) रे

दुष्ट नष्ट चारुदत्त अब तू न रहैगा मैं शर्विलक ब्राह्मण से पैदा नहीं जो तुझ से दांव न लूं ॥

मद०। (उस्का दुपट्टा पकड़) रे असंबद्ध भाषिन् बिना समझे बूझे आर्य्य चारुदत्त पर क्यों क्रोध करता है ॥

शर्वि०। यह क्यों बिना समझे कैसा?

मद०। यह गहना बसन्तसेना का है॥

शर्वि०। तो चारुदत्त के पास कैसे गया?

मद०। आर्या ने चारुदत्त के घर इसे धरोहर रक्खा था॥

शर्वि०। किस लिए?

मद० (कान में) इस लिए॥

शर्वि० (लज्जित हो) हा! जाकी छाया में रह्यो ग्रीष्म घाम से हीन। बिन जाने शाखा वही पत्र हीन मैं कीन॥

बसन्त०। क्या है जो यह भी पछताता है इसी जान पड़ता है बिन जाने इसने ऐसा किया है॥

शर्वि०। मदनिका तो फिर क्या करना उचित है॥

मद०। जो मेरा कहा मानो तो इस गहने को जाकर चारुदत्त को दे आओ॥

शर्वि०। जो वे मुझे राजा के यहां पकड़ा दें॥

मद०। चन्दन से आग नहीं निकलती॥

बसन्त०। धन्य मदनिके तू ने बहुत अच्छा कहा॥

शर्वि०। यह तो सच है पर चारुदत्त के निकट मुझे जाते लज्जा होती है कोई दूसरी उपाय सोंचो॥

मद०। दूसरी उपाय यह है कि चारुदत्त के नौकर बन इसे ले जाकर आर्या को दो ऐसा करने से तीनो बात बन जायगी तुम चोर न ठहरोगे चारुदत्त अनृणी हो जायगी और आर्या अपना गहना पा जायगी॥

शर्वि०। अच्छा ऐसा ही करूंगा॥

मद०। तो तुम यहां ही ठहरो मैं आर्या से जाकर निवेदन करूं (प्रस्थान)

मदनिका (बसन्तसेना के पास जाय) आर्य्य चारुदत्त के पास से एक ब्राह्मण आया है॥

बसन्त०। उसे तुर्त भीतर ला॥

मद०। जो आज्ञा (बाहर गई और शर्विलक को साथ ले फिर आई)

शर्वि०। आप को स्वस्ति हो॥

बसन्तसेना। आर्य्य प्रणाम करती हूं बैठिए॥

शर्वि०। आर्य्य चारुदत्त ने कहा है मेरा घर जीर्ण है चोरी चपारी की बड़ी डर

रहती है गहना रखने योग्य नहीं है सो इसे लीजिये (गहने दे कर चलता है)

वसन्त०। आर्य्य ठहरिए सुन लीजिए चारुदत्त ने मुझसे कहा था कि जो कोई यह अलङ्कार लावे उसे तुम मदनिका को दे देना ॥

शर्वि०। (मनमें) क्या इसने मुझे जान लिया (प्रकाश) अच्छा क्या हानि है ॥

वसन्त०। मदनिके अच्छी भांत मुझे एक बार देख ले अब तू दास्य भाव से छुट गई इस आर्य के साथ सुख से बिदा हो ॥ (दोनों गए)

द्वितीय गर्भाङ्क।

स्थान

वसन्तसेना का वासस्थल।

(वसन्तसेना बैठी हुई चेटी पास जाय)

चेटी। स्वामिनी आर्य्य चारुदत्त के पास से एक ब्राह्मण और आया है ॥

वसन्त०। उसे जल्दी भीतर ले आव ॥

चेटी। जो आज्ञा (बाहर गई और विदूषक को साथ ले फिर भीतर आई)

विदूषक। आहाहा राक्षसराज रावण तपस्या के पुण्य से पुष्पक बिमान पर चढ़े फिरते थे मैं ब्राह्मण बिना तपस्या का क्लेश सहेही आज वेश्यागार में इस वर वर्णिनी के साथ जाता हूं ॥

चेटी। आर्य्य हमारी स्वामिनी के घर के द्वार को देखिए ॥

विदू०। (आश्चर्य से देख कर) आहा वसन्तसेना के द्वार की तो कुछ अपूर्व शोभा देखी जाती है गोबर से लीपी अनेक चित्र विचित्र सुगन्धित फूलों से शोभित भूमि कैसी विचित्र हो रही है; पवन के वेग से तरङ्ग सी चञ्चल पताकाओं की पंक्ति दूर से मानो मुझे बुला रही है; द्वार की बेदी पर जल पूर्ण कलश धरे हैं सुवर्ण जटित ये केवाड़े मानो शूर वीर मनुष्य के वक्षस्थल हैं इन सबों की शोभा देख विरक्त की दृष्टि भी अनुरक्त हो जाती है ॥

चेटी। आर्य चलिए चलिए यह हमारी स्वामिनी के घर की पहली * डेवढ़ी (प्रकोष्ट) है ॥

---

* वेश्या के घर में ८ डेवढ़ी का वर्णन यह भाग इस नाटक का अत्यन्त नीरस और कवि की अत्युक्ति है पर इस्से उस समय का बहुत सा हाल मालूम होसक्ता है इस लिए इसका यहां पर रखना हम उचित समझ पाठकों से प्रार्थना करते हैं कि हमारे पत्र की ओर से अश्रद्धा न कर जहां दो एक रसीले लेख पढ़ते हैं उनमें एक चिरायते का काढ़ा सा कड़ुआ भी सही शेष की पेट में पड़े रहने से कभी कुछ न कुछ गुण ही करेगा ॥

विदू॰। आहा इस पहिली ड्योढ़ी में शुद्ध चन्द्रमा और कमल नाल सी उज्ज्वल अनेक रत्नों की बनी हुई सोपान से शोभित प्रासाद पंक्ति स्फटिकमणि के झरोखा मुख से मानो उज्जयिनी की शोभा देख रही है जहां यह द्वारपाल श्रोत्रिय ब्राह्मण सा बैठा २ ऊंघ रहा है धन्य यह वेश्या है या कुबेर की मासी है॥

चेटी। आर्य्य आइए यह दूसरी ड्योढ़ी है॥

विदू॰। यहां एक ओर रथ के बैल जिनकी सींग तेल से रङ्गी है बंधे हैं एक ओर अपमानित कुल पुत्र सा भैंसा बैठा बैठा पागुर करता हांफ रहा है इधर कुश्ती लड़े मल्ल की सी भेड़े की गर्दन मली जाती है इधर घोड़ों की अयाल रङ्गी जाती है एक ओर घुड़साल में चोर सा बानर बंधा है इधर महावत लोग हाथियों को घी और मैदा मिला मलीदा खाने को दे रहे हैं॥

चेटी। आर्य्य आगे चलिए यह तीसरी ड्योढ़ी है॥

विदू॰। आहा यहां कुलपुत्र कुपूतों के लिए आसन बिछे हैं एक ओर कामशास्त्र की पुस्तक खुली रक्खी है एक ओर मणि की बनी गोट और पांसा सहित चौसर बिछी है मेल और कलह कराने में चतुर अनेक रङ्ग के चित्रपट हाथ में लिए वेश्याओं की दूती और बूढ़े २ भडुए इधर उधर घूम रहे हैं॥

चेटी। आर्य्य अब चौथे द्वार की ड्योढ़ी में आइए॥

विदू॰। यहां युवतियों के कर कमल से बादित मृदङ्ग बज रही है आहा बांसुरी कैसी मधुर सुरीली आवाज़ दे रही है पुष्प रस से मत्त भ्रमरी सी वेश्याओं की कन्याएं कैसा सुस्वर गा रही हैं यहां इन लोगों को सङ्गीत सिखाया जाताहै॥

चेटी। आर्य्य आइए २ यह पांचवीं ड्योढ़ी है॥

विदू॰। यहां बसन्तसेना का रसोई घर मालूम होता है क्योंकि अनेक प्रकार के व्यञ्जनों में हींग और ज़ीरे की महक से हम ऐसे दरिद्रों की लार टपकी पड़ती है; मांस बिक्रवी मांस धोता है; सूपकार तरह तरह के सूप सिद्ध कररहा है एक ओर लड्डू बंध रहे हैं; एक ओर मालपुआ बनता है; यहां कदाचित् कोई मुझसे खाने को झूंठह्न पूछे तो पांव धो भोजन के लिए तुर्त बैठ ही जाऊं॥

चेटी। चलिए यह छठवीं ड्योढ़ी है॥

विदू॰। यहां विविध अलङ्कार से

सुभूषित यह घर स्वर्ग समान अपसरा लोक हो रहा है भला चेटी ये पुरुष कौन हैं ॥

चेटी। ये सब जारज है और बन्धुल कहलाते हैं पराङ्गना में परपुरुष से उत्पन्न हुए हैं हमारी स्वामिनी इन सबों का पालन करती है ; चलिए यह सातवीं डेहुड़ी है ॥

विदू॰। वाह यह बसन्तसेना का घर है कि किसी जौहरी की दूकान है सोने के तोरण में नीलक प्रतिविम्बित हो इन्द्र धनुष की शोभा देखाते हैं इधर जौहरी लोग मोती मूंगा पुखराज नीलक पद्मराग मरकत आदि रत्नों की परीक्षा कर रहे हैं एक ओर जड़िए सोने के गहनों में मणि बैठा रहे हैं एक ओर पटहार रेशम से गहने पिरो रहे हैं कोई वैदूर्य्य मणि को घिस रहा है कोई सान पर मूंगे को गोल कर रहा है कोई शङ्ख को छेदता है कोई कस्तूरी मिला चन्दन रगड़ता है कोई वेश्या और उनके कामुकों को कपूर मिला पान दे रहा है एक ओर दोनों के परस्पर कटाक्ष चल रहे हैं एक ओर मद्यपान की मानो हाट सी लगी है ए चेट हैं ये चेटियां हैं ये अपने पुत्र कलत्र को छोड़ सदा यहां पड़े रहते हैं निर्धनता के कारण जब गणिकाओं ने उन्हे त्याग दिया है तब कहीं अन्यत्र ठौर न रहने से यहीं पड़े जूठा कूठा खा पी किसी तरह दिन काटते हैं ॥

चेटी। आर्य्य यह सातवीं डेहुड़ी है ॥

विदू॰। आहा यहां कबूतर कपोतपाली पर बैठे गूंट रहे हैं इधर तोते दही भात खाय खाय अनारदाने चबा चबा वेदपाठी ब्राह्मण से पढ़ रहे हैं इधर मैना स्वामी के मान करने से अवसर पाय गृह दासी सी अधिक कुरकुर करती है इधर कोकिला अनेक फल के रस को पी कुट्टिनी सी बोलती है एक ओर पिंजड़ों की कतार लटक रही है एक ओर तीतर बोलाए जाते हैं एक ओर लाल लड़ रहे हैं एक ओर कबूतर लड़ाने के लिए उड़ाए जाते हैं इधर अनेक रत्नों से भूषित मयूर आनन्द से पङ्ख फैलाय नाचता घाम में तपे मन्दिर को मानो पंखे से बीजन कर रहा है इधर चन्द्र किरण से श्वेत हंस के जोड़े मानो चाल सीखने को कामिनियों के पीछे २ घूम रहे हैं. ॥

चेटी। आर्य्य यह आठवीं डेहुड़ी है ॥

विदू॰। बड़े मोल का दुपट्टा ओढ़े गहनों से नख सिख लदा हुआ ऐंड़ाता

गिरता पड़ता इधर उधर घूमता यह कौन है ?

चेटी। यह हमारी स्वामिनी का भाई है॥

विदू॰। कितनी तपस्या कर यह वसन्तसेना का भाई हुआ है अथवा ऐसा नहीं यद्यपि यह उज्वल वस्त्र पहने अनेक सुगन्धियों से सुगन्धित चिकनी देह बनाए फिरता है पर श्मशान में उत्पन्न चम्पा के वृक्ष समान सर्वथा अग्राह्य है ; पुष्प वासित सूक्ष्म वस्त्र ओढ़े बड़े ऊंचे आसन पर बैठी यह कौन है ?

चेटी। यह हमारी स्वामिनी की मा हैं॥

विदू॰। इस डाइन का कैसा बड़ा पेट है यह जिस दिन मरैगी उस दिन सैकड़ों सियारों के घर उत्सव होगा ईश्वर करे यह जल्दी मरे जिसमें इसके इथा पुष्ट मोटे थोथे शरीर से उन बेचारों का भोजन हो ; भला बताओ तुम्हारी स्वामिनी के यहां जहाज चलती है बिना व्यापार के इतना विभव कहां से हो सक्ता है अथवा इसमें पूछना क्या है प्रेम के निर्मल जल भरे समुद्र में आप के नितम्ब और जघन ही मनोहर जहाज हैं॥ वेश्या नेह सु विमल जल मदन समुद्र महान। कुच नितम्ब अरु जघन जहँ नाव मनोहर जान॥ यह इस्का घर कुबेर का भवन है या नन्दन बगीचा अथवा अलकापुरी है तुम्हारी स्वामिनी कहां हैं॥

चेटी (हाथ से देखला कर) इस वाटिका बाग के पास बारहदारी में बैठी हैं चलिए॥

विदू॰ (चल कर और पास जाय) आप की स्वस्ति हो॥

बसन्त॰। आहा यह तो आर्य्य मैत्रेय हैं आर्य्य बन्दना करती हो यह आसन है इस पर बैठिए॥

विदू॰। बैठ जाता है॥

बसन्त॰। कहिए आर्य्य चारुदत्त का सब कुशल मङ्गल है उस सरल वृक्ष को जिसके गुण पल्लव तो ए हैं नम्रता शाखा है विश्वास मूल और प्रतिष्ठा फूल है उपकार फल है मित्र बिहङ्ग सेवन करते हैं या नहीं ?

विदू॰ (स्वगत) फलवान वृक्ष की उपमा चारुदत्त से इसने बहुत उचित सिलाया (प्रकाश) हां सेवते हैं पर आर्य्य ने यह विज्ञापन किया है कि हम उन गहनों को अपना समझ जुआ में हार गए हैं सो उसके बदले इस रत्नावली को आप स्वीकार करें॥

बसन्त (स्वगत) क्या शर्विलक से पु-

राए गए उन गहनों को देखा दूं (सोंच कर) या अभी उसे प्रगट न करूं ॥

विदू॰। क्या रत्नावली न लोगी ॥

बसन्त॰ (हँस कर) क्यों न लेंगी (ले कर पास धर लिया (स्वगत) क्या हीन कुसुम आम्र वृक्ष से भी मकरन्द बिन्दु टपकते हैं (प्रकाश्य) आर्य आप उस जुआरी से कहना मैं आज सांझ को उनके यहां आऊंगी ॥

विदू॰ (स्वगत) अब यहां यह आकर क्या कुछ और भी देगी (प्रकाश्य) कहूंगा (स्वगत) वेश्या प्रसङ्ग से निवृत्त होइए (बाहर गया)

बसन्त॰ (चेटी से) ले यह रत्नावली रख और चल आर्य चारुदत्त के यहां रमण कराने के लिए चलने की तैयारी करें (प्रस्थान)

तृष्णा क्षय।

बुद्धिमानों ने निश्चय किया है तृष्णा पिशाची का नाश कभी होता ही नहीं और इसका बुझ जाना ही सुख की सीमा है पर हम आज के इस लेख में सिद्ध करते हैं कि तृष्णा का अन्त है रहा इतना अन्तर कि जो छोटे लोग हैं उनकी तृष्णा भी छोटी होनी चाहिए बात की बात में बुझते कितनी देर पर बड़े लोग इस लिए कि नाम ही से बड़े हैं "सर्वं हि महतां महत्" तो उनकी तृष्णा भी चढ़ी बढ़ी होती है थोड़े में क्योंकर बुझ सकती है मसल है "कहां से नौ मन तेल हो जो राधा नाचैं" आसमान के सातवें तह लों बलन्द हौसिले जहां परिन्दा भी पर नहीं मारता थोड़े में कभी मिटने वाले हैं इसी से लोगों ने सिद्धान्त कर लिया कि तृष्णा का क्षय हुई नहीं पर क्या यह वास्तविक सिद्धान्त है चित्त अपनी विचार की कसौटी में कसने पर इसे कभी नहीं स्वीकार कर सक्ता; हम हिंदुस्तानियों की छोटी सी तृष्णा का क्षय होते क्या लगता है छोटी बुद्धि छोटी समझ छोटी वाकफीयत छोटी हैसीयत इस लिए हमारी तृष्णा भी छोटी सी बीता भर की है पढ़ लिख दस बीस की नौकरी पाय चटपट बुझ जाती है और जो कहीं सौ पचास के हेड क्लर्क इन्सपेकृर तहसीलदार डिपटी या सदर आला हो गए तो फिर क्या कृतकृत्य समझ बैठे तृष्णा का क्षय हो गया संसार में उच्चपद की प्रतिष्ठा और सुख की सीमा को पहुंच गए; हां ज़रा उनकी तृष्णा के क्षय में अलबत्ता तरद्दुद आ पड़ता है जो हर तरह बलन्द समझे गए हैं अकिल में

बलन्द शाइस्तगी में बलन्द ताकत और जिस्मी कूअत में बलन्द तबियतदारी में बलन्द ईमानदारी में बलन्द तो हौसिला भी उनका बलन्द होना ही चाहिये जब लौं जगत से लफ़्निण्ट न हों कैसे तृष्णा का क्षय हो सक्ता है पर अन्त को एक दिन तृष्णा का क्षय होना अवश्य ही है इसी तरह बिलायत में शाही खानदान के लोग जो लार्ड या अर्ल कहलाते हैं उनकी तृष्णा का क्षय तब होता होगा जब प्रइम मिनिस्टर या हिंदुस्तान के गवर्नर जेनरल किए जाते होंगे; डाक्तरों की तृष्णा का क्षय हो उन्हें पूरी प्रसन्नता तभी होती है जब सरजन जेनरल किए जाते हैं; जङ्गी अफ़सरों की तृष्णा का क्षय और प्रसन्नता कम्याण्डरन्चीफ हो जाने पर होती है; पादरी साहब की तृष्णा बुझ कर प्रसन्नता तब हो जब कि हिंदुस्तान का मुल्क का मुल्क क्रिस्तान हो जाय; लार्ड लिटन साहब की तृष्णा बुझ कर प्रसन्नता कदाचित् इस बात में रही होगी कि प्रेस ऐक्ट आर्म ऐक्ट से बीसों कानून जारी किए जाते काबुल में लड़ाई लगी रहती और इतना टैक्स लगता कि हिंदुस्तानियों के पास एक पैसा न रह जाता; हमारे सरजाज कूपर साहब कदाचित् इसी में प्रसन्न हैं कि इस देश से शरिस्ते तालीम शिकस्त कर दिया जाय; गरीब प्रजा की प्रसन्नता इसी में है कि समय से वर्षा हुआ करे और अन्न सदा सस्ता रहे; चपरासियों की तृष्णा का क्षय और प्रसन्नता तब होती है जब किसी बाला हाकिम की अर्दली में कर लिए जाते हैं; अङ्गरेज़ी सौदागरों की तृष्णा का क्षय और पूरी प्रसन्नता इसमें है कि अपने घर की कलें हों और दस बीस जहाज़ चलती हों; हमारे देश के ओछी बुद्धि वाले महाजनों की तृष्णा का क्षय और व्यौपार में कृतकृत्यता केवल इतने ही से है कि कलकत्ते का माल बम्बई पहुंचा दें बम्बई का लाहौर और रुपए पीछे जो कहीं एक पाई मुनाफा हो गया तो व्यौपार की चरम सीमा को पहुंच गए; सेटिलमेण्ट अफिसरों की तृष्णा का क्षय इसी में है कि ३६ वर्ष बाद नए बन्दोबस्त में जमाबन्दी दूनी होती जाय; वैद्य और हकीमों को इसी में प्रसन्नता है कि शहर में बीमारी सदा फैली रहे; वकीलों का सन्तोष तभी है कि कचहरियों में नए नए किस्म के मुकद्दमों की नालिशें रोज़ रोज़ हुआ करें और ये अपने मुवक्किल आदमियों को कानून की बारीकियों से लड़ाय २ उनकी द्रव्य का संहार कर कफ़न खसोट

...हैं ; हम एडिटरों का सन्तोष सर्वनाशी प्रेस ऐक्ट के उठने में है सो ...है को कभी होगा ; हिंदुस्तान के बूढ़ों का सन्तोष ७ बर्ष की कन्या के व्याहने में हैं ; इनलाइटेण्ड महर्षियों की तृष्णा का क्षय समाज के बन्धन से मुक्त होने में है ; कचहरी के अमले खास कर कायस्थ भाइयों को इसी में सन्तोष है कि अदालतों से बीबी उर्दू का खूंटा उपार कभी न हो ; पार्लियामेण्ट महा सभा के मेम्बरों की कुटिल पलिसी का निचोड़ प्रधान २ कर्मचारियों का सन्तोष इसी में है कि इस देश वालों को ज़बानी दूध पूत दे दे जब तक हो सके दम झांसे में डाले रक्खे रहैं इत्यादि ॥

यू आर पी।

बसन्त ॥

जनाब एडिटर साहब कुछ वसन्त की भी खबर रखते हो महीनों से खोए हुए आज भले पकड़े गए लीजिए मुबारकबादियां आप के लिए मैंने गढ़न्त कर रक्खी हैं आज बसन्त का दिन है लोग सरस्वती पूजन करते हैं मैं चलते बोलते प्रत्यक्ष आप को छोड़ जड़ प्रतिमा सरस्वती को कहां ढूंढ़ने जाऊं लो सर्वोपचारार्थे ये मुबारकबादियां लीजिए और सिधारिए॥

होवे सब को मुबारक बसन्त, बसन्त बसन्त बसन्त बसन्त। रितू हेमन्त को अन्त भयो अब आई बहार बसन्त बसन्त बसन्त बसन्त ॥ आपस के सब द्वेष को त्यागहु आओ मनाओ बसन्त बसन्त बसन्त बसन्त। देश की उन्नति में मन लावहु अवनति होवे बस अन्त बसन्त बसन्त बसन्त ॥ धन्य सुअवसर आज मिलो यह सब मिल गाओ बसन्त बसन्त बसन्त बसन्त ॥

होली।

अब होली दिनों दिन भोली बनी जाती है जब बड़े बड़े लोग झोली बांध मांगने लगें तो होली गरीबनी को कौन पूछे यह तो बहुत ही पुरानी पड़ गई और पुरानी बातों की कदर इस रोशनी के ज़माने में जैसी है वह प्रतिदिन के बर्ताव से स्पष्ट ही है फिर इसकी तो पुरानी हो जाने से सब मस्ती भी झर गई पेट भर दाना नहीं पाती घी दूध की जड़ पर लाखों कुल्हाड़े चल रहे हैं इस के परम जी के बहलाने और घड़ी दो घड़ी खुश करने की दवाइयां भङ्ग मजूम अफीम आदि रहीं सो उनको भी दुर्भिक्ष पड़ गया सोने टांक बिकने लगीं इस दशा में बेचारी होली क्या करै क्यों न भोली बनै

यहां तक तो इसकी दुर्गति आ रही है कि जलने को काठ और कण्डा भी नहीं मिलता तो भी किसी तरह सम्वत् की डाढ़ी जारना उचित है फाग के राग में एकाध गीत गाय कुछ अनुराग प्रगट करें सो कोई ऐसी बात नहीं सूझती जिसे जोर गांठ गावें हाय हाय बचनेऽपिदरिद्रता खैर तो भी यावत् बुद्धिबलोदय कुछ जोड़ जाड़ लिखते हैं आशा है पाठक जन हमारे मुखरता दोष को क्षमा करेंगे ॥

होरी।

त्यागहु सब मिल भाई कैसी तुम होरी मचाई ॥ भांग मजूम आख निरलज ह्वै सुध बुध देहु नसाई। आपस में बिन ढङ्ग की गारी बकत फिरत चहुं धाई। सबन की मति बौराई ॥ १ ॥ पढ़न पढ़ावन देश की उन्नति एकहु बात न भाई। देश व लेश हमेश प्रचारत फूट की बेल बढ़ाई। ह्था सब वयस गँवाई ॥ २ ॥ छाड़हु सकल बिवाद कलह हठ अरु सब मूरखताई। भारत हित तन मन धन सों लगि सब मिल होहु सहाई। जगत में पाओ बड़ाई ॥ ३ ॥ भ्रात सनेह अरु एकता सीखहु नेकहु करो न ढिलाई। बिनय करत श्रिराम सबन तें प्रेम सों कण्ठ लगाई। जासे सबही की भलाई ॥ ४ ॥

अनूठी लखियत इत यह होरी … और लिबरल दल खेलें दूजे और … टोरी। बारहु मास बन्यो रहे कौतुक अ… रीति लख्योरी। न यह सुख अनत मिल्यो री ॥ १ ॥ भड़ भड़ व्यर्थ कहुं नहिं सुनियत गारी न एक सुन्यो री। उपजत ही न अबीर इहां पै रन रस चहुं उमड्यो री। सुयश दस दिस बगरी री ॥ २ ॥ फार्स्टर ब्राइट ग्लैडस्टन आदिक मेल रहे चहुं ओरी। सोई छूट रही पिचकारी दिसि दिसि रङ्ग जम्यो री। देख जग थकित भयोरी ॥ ३ ॥ सुनन हेत शुचि स्पीच इन्हन की गुणि जन भीर कियो री। धन्य धन्य मकरन्द उठै ध्वनि बाजहिं अनन्द बधोरी। को न जो सुन हुलस्यो री ॥ ४ ॥

फेरि यह होलिका आई, कहो पुनि काह लै आई ॥ नए नए समाचार अति अद्भुत जेहि सुनि दुःख भुलाई। भारत बासी सुनो दै काना भलि करि चित्त लगाई ॥ १ ॥ यवनन स्वार्थ धरम को दूष्यो झूंठे ग्रंथ बनाई। तिन खण्डन कियो बीर इन्द्रमणि उनकेहि शास्त्र देखाई ॥ २ ॥ बढ्यो द्रोह दोउ छापे अनेकन ग्रंथन औसर पाई। यवनन लखि अपुनो मत ढील्यो औरहि रच्यो उपाई ॥३॥ पत्र जाम जमशेद निकाल्यो बाने दियो छपाई।

जलवा होइहै जो न इन्द्रमणि दे निज ग्रंथ जलाई ॥ ४ ॥ वेगि मुरादाबाद मेजिस्ट्रेट सम्मन एक पठाई। बोलि इन्द्रमणि कियो जुरमाना ग्रंथ छिए जलवाई ॥ ५ ॥ यह अन्याय लखि हिन्दू प्रजन सब सब बिध सोर मचाई। गवर्मेन्ट कछु खबर न लीनी रहे सब मुह मसि लाई ॥ ६ ॥ धन्य मेजिस्ट्रेट धन्य कमिश्नर दोउ भली नीति चलाई। ब्रिटिश राज्य को एती महिमा ऐसेहि नरन बढ़ाई ॥ ७ ॥ कहत सुनत जिय ग्लानि होति अति तउ चुप रह्यो न जाई। अरु बस ही पुनि काहा आपुनो रहिय सोच पछताई ॥ ८ ॥ ऐसो हू कोउ नहि लखियत है जो विजयिनि ढिग जाई। एक बार मकरन्द हाल यह आवे तिन्हहि सुनाई ॥ ९ ॥

सुनै चहुं आई री होरी कहा सुनसान परी री ॥ अबिर गुलाल की धौंधस कहुं नहिं कुमकुम कहुं न चल्योरी। छूटैं नहीं पिचकारी कोउ दिस गलियन रंग न बह्यो री ॥ १ ॥ बाजत ताल मृदंग डफ कहुं नहिं रङ्ग न कतहुं जम्यो री। नहिं उछाह कोउ काम में लखियत सब हत जीव भयो री ॥ २ ॥ नहि महमूद तिमूर न नादिर औरङ्गजेब रह्यो री। हाहाकार मच्यो हिंदुन में नयनन नीर बह्यो री ॥ ३ ॥ अब अधिकार ब्रिटिश सिंहन को न्याय उचित चहुं ओरी। रोवैं आर्य्य तनय तब केहि हित वा दुख क्यों न बहोरी ॥ ४ ॥ अबै साल यवनन इन दीनन दुख अति कठिन दयो री। बेनुन हत्यो जताय इन्हन को बरज न कोउ सक्यो री ॥ ५ ॥ इन दुखियन बहु सोर मचायो खबर न कोउ लयो री। सोइ अपकार जनित दुख पीड़ित सबन उछाह तज्यो री ॥ ६ ॥ जानै नाहिं कहा विधि इनके भागन मांहि लिख्यो री। बरस हजारन बीतत हैं तउ इन नहिं शान्ति लह्यो री ॥ ७ ॥ अस अन्याय न राज में ऐसे अबलौ काबहु सुन्यो री। अचरज का मकरन्द न अब लौं स्वामिन हाल मिल्योरी ॥ ८ ॥

बरस यहो बीत चल्यो री कहो सबै काह लख्यो री ॥ आवत प्रथम लख्यो रह्यो जैसो तैसोइ जातहु कोरी। बरस कितेकन बीतत ऐसे काबुल युध न मिटो री। भलो सुख लिटन दयो री ॥ १ ॥ अबहिं सुनै अफगान प्रान्त सब सब कछु ठीक भयो री। कालहहि उठि सुनियत लरिबे को फिरै सबै दल जोरी। कियो इमि हानि न थोरी ॥ २ ॥ फिरि पार्लियामेन्ट के दल को नव आह्वान उठ्यो री। कनसर्वेटिव भए पद हीना लिबरल स्वत्व लह्यो री।

अनन्द सुनि सवन कियो री ॥ ३ ॥ पलटत दल मान्यो हम सबह्व भारत ग्रह पलटी री । आशा लता डहडह होवै लगीं हिय अति हरख बढ्यो री । मनहुं धन खोयो मिल्यो री ॥ ४ ॥ जिन ठान्यो काबुल युध प्रेस अरु आर्म्सऐक्ट गढ्यो री । तीनहि बरस मांहि भारत को जिन दियो क्लेश करोरी ॥ ताप बढ़ावन लिटन २ सोई इत सों दूर बढ्यो री । ता सम नर फिर नहि जगदीश्वर आवै भारत ओरी । यहै सबै मिल बिनयो री ॥ ५ ॥ सोइ अधिकार रिपन प्रभु लीन्हा सुनि आनन्द उमड्यो री । न्याय करैं सुख देवैं प्रजन को बिनय यहै कर जोरी । मिटावैं दुख हमरो री ॥ ६ ॥ महाराज जैपूर यहै बिर इत भव जाल तज्यो री । अरु उत नैनीताल निवासिन पै दुख बज्र परो री । शोक चहुं दिश प्रगट्यो री ॥ ७ ॥ दुष्ट मुसल्मानन अब को अति हिंदुन क्लेश दयो री । गवर्मेण्ट कछु खबर न लीनी केतहु सोर मच्यो री । भली यह नीति गह्यो री ॥ ८ ॥ अब मकरन्द गयो सङ्कोची ह्व भारत सों सुख मोरी । दुःख मिटन की तबही आशा कसि कटि यतन करोरी । तबै पुनि खेलियो होरी ॥ ९ ॥

हाइकोर्ट और नेटिव जज ।

यहां हाईकोर्ट में ५ जज बैठते हैं उन में दो का ओहदा खाली होने वाला है अब इस समय दो में एक नेटिव जज अवश्य होना चाहिए अभी तक तो यह कहने को था कि नेटिवों में ऐसी योग्यता का यहां कोई नहीं है जो इस पद पर किया जाय पर अब तो नेटिव प्लीडरों में कई एक ऐसे हैं जिनकी योग्यता की परख कई बार कई तरह पर हो चुकी है अब इस मौके पर हमारे देश का एक मनुष्य इस पद पर जो न किया गया तो साफ साफ जाति पक्षपात है हम लोगों की रीति नीति सामाजिक तथा मत सम्बन्धी बातों को खूब समझ बूझ और उनके मर्म को पहुंच इस देश का आदमी जैसा इनसाफ करैगा वैसा बिदेशी कभी कर सकेंगे ; माना कि वे लोग बड़े बिद्वान और कानून महोदधि के कर्णधार सही पर देखा गया है कि जजी करते २ बूढ़े हो गए हैं फिर भी मनु और मिताक्षरा के मर्म को अच्छी तरह न पकड़ सके न किसी हकीयत के मुकद्दमे में यहां की भिन्न २ जाति तथा समाज के जुदे २ रीति व्यवहार और दस्तूर को जान सके; इसी से अकसर देखा जाता है कि ऐसे

मुकद्दमों में जिनमें समाज या मत संबंधी कोई बात आ पड़ती है उनमें दूध का दूध पानी का पानी सा उचित न्याय न ही बहुत कुछ हकतलफी की जाती है; इस देश का आदमी जिसे ये सब बातें बिना सीखे ही मालूम रहती हैं ऐसी २ गलती कभी न करेगा और हम लोगों के Feelings को जैसा वह समझेगा वैसा विदेशी से कदापि सम्भव नहीं है॥

कौंसिल की कर्तव्यता।

बङ्गाली नामक पत्र के देखने से विदित हुआ कि सरकार की अब मंशा है कि केवल मन्दराज़ और बम्बई के कमाण्डरनचीफ का ओहदा नहीं वरन कमाण्डरनचीफ हिंदुस्तान का भी ओहदा तोड़ दिया जाय और कुल फौज का काम गवर्नर जेनरल साहब किया करें उपरांत यह भी प्रगट होता है कि सेक्रेटरी अफ स्टेट के यहां की कौंसिल भी उठा दी जायगी इस्से सरकार को साल में दो लाख की बचत होगी; इसमें सन्देह नहीं कि इस कौंसिल के टूटने से जब सब भार एक स्वतंत्र मनुष्य के सिर पर रहेगा तो अब कि अपेक्षा शासन प्रणाली अवश्य कुछ अच्छी रहेगी और दो मुल्ला के बीच मुरगी हराम का सा मामिला न होगा इस कौंसिल का टूटना हमारी समझ में किसी प्रकार हानिकारक न होगा क्यों कि अब भी तो बहुधा हाकिम लोग अपनी इच्छा के अनुसार कौंसिल के प्रतिकूल कर गुज़रते हैं दूसरे जब शासनकर्ता ऐसे होंगे जो यहां के बर्ताव से जानकार नहीं हैं तो अवश्य ही खूब छान कर तब कोई बात करेंगे केवल कौंसिल वालों के भरोसे सुन सुनाय न कर उठेंगे जैसा अब होता है किसी ने कहा कौआ कान लिए जाता है कान नहीं देखते कौआ के पीछे दौड़ खड़े हुए परिणाम में पूर्वापर का बिना विचार किए कोई काम कर डालने से जो यहां वालों को भांत भांत का क्लेश पहुंचता है जिस्से अङ्गरेज़ और हिंदुस्तानियों के बीच वैमनस्य का अंकुर जम कर नित्य २ पुष्ट होता जाता है सो न हुआ करेगा; इस कहने से हमारा यह तात्पर्य नहीं है कि कौंसिल इस वैमनस्य की जड़ है पर हां इतना तो अवश्य ही कहा जायगा कि इस कौंसिल के मेम्बर कौन किए जाते हैं वेही लोग जो खूब खेले खाए हैं और जिनका दिमाग अमीरी की बू से गन्दा हो रहा है बुज़दिल कमहिम्मत रईस और अमीरों की नज़र

और डालियां लेते २ घूसखोरी जिनकी रग रग में पैठी हुई है वे भला काहे को कभी ऐसी राय देंगे कि जिसमें हम लोगों का भला है और उनके भाई बन्दों का नुकसान है क्योंकि हम लोग तो अपनी भलाई सरकार की ओर से अब उसी में समझते हैं कि जिस प्रबन्ध से हमारे रईस तथा राजाओं की कमहिम्मती बुजदिली और गुलामी की आदत दूर होती हो और उनमें तेजस्विता Spirit बढ़ती जाय सब प्रकार की म्यनुफैक्चरी के कारखाने यहां खुलें इस देश का व्यवसाय और बनिज अपनी पूरी तरक्की को पहुंचे जिसमें चिउँटिया ढोअन मिटै और मेनचेस्टर वालों का दिवाला पिटै ; सो तो तभी सम्भव है कि यहां के रिटायर्ड अफिसर तथा सिविलियन वहां इन कौंसिलों में तथा और किसी इस किस्म के ओहदों पर न नियत हुआ करैं किन्तु यहां ही के सुसभ्य नीति सम्पन्न सरल चित्त के लोग रक्खे जांय तो अलबत्ता हर एक राजकीय प्रबन्ध में पक्षपात शून्य न्याय की आशा हो सक्ती है ; पहले जब अङ्गरेज़ी शिक्षा की चर्चा यहां न थी लोग राजकीय हक्कान्तो को न जानते थे उलटा सीधा जो कुछ हुआ सह सहाय बैठ रहे अब वे दिन नहीं हैं सबों ने कुछ पढ़ लिख अब इतनी समझ पैदा कर ली है कि हम क्या हैं हमें क्या होना चाहिए और कैसे हो सक्ते हैं ; जब कोई बात ऐसी देखी जाती है जिस्से इन तीन बातों में से किसी में कुछ विघ्न आ पड़ता है वही जी में भाले की भांति चुभा करती है ; इसमें सन्देह नहीं कि सरकार इन बातों की ओर से अंधी बहरी नहीं भले ही सब समझ बूझती है और वादे कर २ टालती है और वह मौका ही नहीं आने देती कि ऐसा न हो कहीं उसे अपना वादा पूरा करना पड़े ; केवल इतना कहने मात्र से अब थोरे काम चल सक्ता है कि हम सब को एक निगाह देखते हैं जब तक प्रत्येक को उनकी २ प्रतिष्ठा के अनुसार अधिकार प्राप्त न हो और तदनुकूल उनका विश्वास न किया जाय ; कितने दिनों से सुनते हैं आर्म ऐक्ट मनसूख होगा हिंदुस्तानी वोलण्टियर होंगे बहुतेरी अर्ज़ी और फिहरिस्तें गईं पर किसी का जवाब न मिला प्रेस ऐक्ट भी इसी कौंसिल की बदौलत हुआ अब उस की मनसूखी की खबर भी सुनते हैं देखा चाहिए कौंसिल मुंह झौंसी के मारे अब होने पावै ॥

यच्चिन्तितंतदिहदूरतरंप्रयाति,
यच्चेतसापिनकृततदिहाभ्युपैति।

हमारे पाठक गण इस ऊपरोक्त वाक्य के आशय से अच्छी तरह ज्ञात परीच हैं अतएव गड़ी गड़ाई बातों का उद्घाटन अच्छा न समझ होली के उत्सव के कारण भङ्ग खा कर पहले तो अलमस्त हो बैठे थे पर जो भङ्ग की तरङ्ग आई तो कुछ ऐसी कुढङ्ग बातें सूझ उठीं कि जिसके लिखने में सिवा नङ्गपन के और कुछ हासिल नहीं पढ़ने वाले भी दङ्ग होंगे कि आज इसे क्या हुरदङ्गपन सूझा जो ऐसा सरहङ्ग हो गया है पर क्या करें कुटिल पलिसी के कुपरिणाम पर दृष्टि करते २ जी तङ्ग आ गया अब नहीं रहा जाता तो भण्डाचार्य की लीला का अनुकरण करने पर सन्नद्ध हुए हैं ज़रा कान धर सुनिए पाठक जन हम आप ही लोगों के चित्र विचित्र खयालों को इकट्ठा कर इस बात को स्पष्ट कर दिखावेंगे कि आप लोगों के सब मनोरथ विफल हुए या नहीं बहुत दूर न जाइए लीजिए इसी साल का सब हाल आप के कर्णगोचर कराते हैं; कहेंगे हम सब सत्य ही "न ब्रूयात्सत्यमप्रियं" मनु के इस सिद्धान्त का उल्लङ्घन होता है होने दो भङ्ग की तरङ्ग तो हुई है; वर्ष के आरंभ जब कनसर्वेटिव मन्त्री थे लिबरलों ने बड़ी धूम मचाई स्वार्थ साधन निमित्त कनसर्वेटिवों के दोष ढूंढ़ २ जगत में बिख्यात कर दिया कि इनकी पलिसी ब्रिटिश राज्य के ह्रास का हेतु होगी लम्बी लम्बी स्पीचें दे लोगों को ऐसा भड़काया कि इङ्गलैण्ड के आधे से अधिक मनुष्य कनसर्वेटिवों के बिरोधी हो गए खैर ज्यों त्यों कर कनसर्वेटिव गए लिबरल आए सबों के मन भाए चारो ओर से धैन्क्स के ढेर लगने लगे सब को यही आशा हुई कि अब लिबरल मन्त्री हुए हैं संसार से अन्याय दूर हो जायगा और संपूर्ण भूमण्डल में सत्ययुग की दोहाई फिरैगी प्रेस वाले बेखौफ हो मनमानता चहैंगे आर्म ऐक्ट न रहैगा मुल्क मुल्क बहादुर हो उठेगा और वोलण्टियर बन काम पड़ने पर ग़नीम से मुल्क बचा रक्खेंगे "बाप न मारी पिद्की बेटा तीरन्दाज़" बनैंगे टैक्स लगना एककलम बन्द हो जायगा प्रजा सब सोने फूल फूलैगी मनमानता जल बरसेगा खुल के सस्ती होगी लो होली में जमा हो बूटी दुधिया गङ्गायमुनी पत्थरतनी छान खूब चकहे उड़ावैंगे सब ओर से बेफिकिर हो दिन रात आमोद प्रमोद में तत्पर रहेंगे

भांड़ और रण्डियों के नाच का अष्ट प्रहर अविच्छिन्न पुरश्चरण हुआ करेगा मुल्क का मुल्क नौवाब वाजिदअली का चेला बन उठेगा और मटियाबुर्ज का तर्ज दुनियां भर में छाया रहेगा ऐसी उदार सरकार की पाय जिसने हमारी जान माल के अ मान का सब भार अपने ऊपर उठा लिया है अब न मनमानता खुल खेलेंगे तो फिर कब ऐसे ही शेखचिल्ली के से मनसूबे गांठते २ बीच में मेघराज दगा दे गए जोते बोए खेत सूख गए लोग हर दम आसमान का मुह ताकने लगे कि बरसे तो काम चले दैव को मनाते मनाते दो चार बूंद पानी जो आंख में रह गया था सो भी टपक पड़ा पर पानी न बरसा खैर माघ की महावट के आसरे रहा सहा जो कुछ अन्न था खेत में डाल दिया अगर रख छोड़ते दो महीने लौं लड़के बालों को पालते गृहस्थी का काम चलता खेत जमे फिर न पानी बरसा न आंधी चली न बीजमारी हुई न ईति का कोई उपद्रव हुआ और खेत आपही आप सुन गए किसान के घर बीज भी न आया लगान की कौन कहे अब केतने किसानों के घर रोज़ की रोटी चलने के लाले पड़े हैं पर और प्रान्तों में सुवृष्टि होने से अभी तक डण्डी धरम रांखे है आगे की भगवान जाने पर अब बड़ी कठिनाई चारे की है इरादा करते थे बैल बेंच लगान चुकावेंगे सो आम नीम के पत्ते खाते खाते मर गए जो बचे सो बेकार कौड़ी के तीन २ कोई नहीं पूछता ; सरकार से तकावी की आशा थी सो भी दूर हुई क्योंकि तहसीलदार साहब काहे को कहेंगे कि यहां पैदावरी कम है और ज़मीदार ज़मानत कब करेंगे ; फिर सरकार कब की ऐसी कुबेर है जो देही देगी जहां रोज़ उठ तखफीफ और खज़ाना खाली बजट मेंबिझ कभी होता ही नहीं ७५ करोड़ चाहो हर साल अर्पण होता रहै काहे को कभी ऐसे बाजबप देखने सुनने में आए थे फिर अभी काबुल की लड़ाई के खर्च में चूर २ थेही नेटल में झगड़ालू लोग जगमगा उठे एग्याण्टी और और दो एक जगहों में लड़ाई का सामान नज़र आता है परोस में आयरलैण्ड से जो आपस की कसामसी थी वह अब तक नहीं ते पाई थी कि वे सब बखेड़े उठ खड़े हुए हैं एक जगह हो तो सम्भालि कहां २ हाथ दें जो चादर भर में छेद ही छेद हुआ तो अब रफू भी नहीं हो सक्ता ; हां अभी ईश्वर की इतनी कृपा है कि गल्ला सस्ता है पर इतान

सक्ता तो भी नहीं है कि और और बिलायतों में लादा जाय केवल यहां के लोगों के लिए अलबत्ता काफी है खैर इतना ही सही डूबते हुए को तिनके का सहारा बहुत होता है ; हम तो यही कहेंगे कि हमको एक तरह पर कनसर्वेटिव ही भले थे जब सिवा काबुल के और कहीं युद्ध का नाम न था अब तो चारो ओर से विग्रह की बिगुल सुनाई देती है दूसरे जिससे हमें कुछ आशा न थी उससे यदि कुछ उपकार निकल आवे उसी को धन्य मानना चाहिए ; वास्तव में सरकार चाहो कनसर्वेटिव हो चाहो लिबरल हमारे लिए दोनों एकसां हैं हमें वही गुलामी की हालत में रह अपना हतजीवन किसी तरह पार कर देना है चाहे जो आवैं हमारा खातिरखाह फाइदा किसी से नहीं निकलना है ; हत तेरे की कहां की सोखी सवार हुई किस कम्बख़्त का मुह देख आज उठे थे कि सबेरे की काकावासी मालूम ही न हुई कब नशा आया भोगबिलासी होना हमारे भाग में लिखा ही नहीं है तो अब निरास हो सन्यासी हो सत्यानासी छान छान किसी तरह ज़िन्दगी का दिन पूरा करैं "नार मरी अरु सम्पत नासी. मूड़ मुड़ाय भए सन्यासी" अब तो किसी तरह बरस दिन काटैं दूसरी होली में देख लेंगे ॥

यहां के विद्या विभाग की अद्भुत लीला ।

आज कल सब ओर से यही सुनाई देता है कि इन दिनों बाज़ार ढीला है पर तो भी कहीं कहीं अब तक ६ टके की सेली भंज रही है और लोग चलाते ही जाते हैं जैसा इन दिनों किताब बनाने और छपाने वाले कर रहे हैं किताब पर किताब और नमूने पर नमूना रिव्यू अर्थात् समालोचना के लिए चला ही आता है इस सब से कुछ विद्या की वृद्धि होती हो सो नहीं किन्तु स्वार्थ पर लोगों का मतलब खातिरखा निकला आता है ; एक छोटी सी पुस्तक बनाय ऊपर लिख दिया कि जो बात किसी में नहीं है वह इसमें रक्खी गई है और दाम बहुत ही कम है प्रेस से निकलने के पहले कीमत मांगी जाती है पीछे से रजिस्टरी उस पर हो हक तसनीफ महफूज़ करा कर दूने दाम लिए जाते हैं सरिश्ते तालीम के दो एक अफसरों को मिला रक्खा एक कापी उनके नज़र की इसके बदले अफसर

साहब लड़कों में उस किताब की दस बीस कापी कहां तक न बिकवा देंगे लड़के बेचारों ने डर के मारे मा बाप से झूठ सच बोल कीमत लाय मौजूद की न दें जुरवाना देना पड़े किताब को आद्यो पान्त देखो तो उसमें कुछ नहीं दस लक्ष यहां की ले पांच बात दूसरे से चुराय दस बीस वर्क की किताब बना खातिर-ख्वाह नफ़ा मार लो ; ऐसी किताबें यहां छोटे दरजों में बिशेष प्रचलित हैं जिस्से बिद्यार्थियों को कुछ लाभ नहीं है यदि एक पुस्तक पूरी पढ़ते बहुत कुछ लाभ उठाते इसमें पल्लवग्राही होने के सिवा कुछ न मिला " पल्लवग्राहिपाण्डित्यं क्रयक्रीतञ्च मैथुनं। भोजनञ्च पराधीनं तिस्रः पुंसां विडम्बना " छोटे ही दरजे से बड़ी बड़ी किताबें लड़कों को दे दी जाती हैं कई एक उनमें से बतौर कोष के हैं जिनके सिर्फ़ रवाने पढ़ाए जाते हैं माने से कुछ गर्ज नहीं बिना अर्थ समझे वह तोता रटन उन्हे कब याद रह सक्ता है दूसरे जितनी उन्हे शक्ति नहीं उस्का चौगुना किताबों का बोझ उन पर शुरू ही से लाद दिया जाता है शक्ति के बाहर एक-बारगी बड़ी २ किताबों के पढ़ने से कोई कभी पण्डित नहीं हुआ जब तक क्रम से न चले केवल उतना समय और कठिन परिश्रम व्यर्थ जाता है जिन लोगों ने म-दर्से में पढ़ा है और अब भी कुछ सम्बन्ध रखते होंगे उन्हीं ने अच्छी तरह अनुभव किया होगा कि तब को और इस समय की शिक्षा प्रणाली में अन्तर हो गया है जैसा २ सुगमता की रीति निकाली जाती है वैसा २ बालकों को कठिनाई होती जाती है और अन्त को गुर्वी प्रक्रिया के अन्तर्गत हो निपट मूर्ख रह जाते हैं जैसा इस श्लोक में समावेशित है " लिखनविधिविरागःपुस्तकाशोधनंच बहुषहृदयवृत्तिःप्रक्रियाचातिगुर्वी। खसुरटहनिवासोजल्पवादीविषाद: स्थितिरपिनिजगेहेमूर्खताहेतवोष्टौ॥ " यदि लोग स्वार्थपरता का भाव छोड़ चित्त से परिश्रम करें और एक पुस्तक व्याकरण की और एक सामान्य भाषा विषयक छात्रों को खूब समझा कर पढ़ाई जाय तो क्या इस वृथा की तोता रटन से अधिक लाभदायक नहीं है ; एक दूसरा कारण यहां वालों के खाम रह जाने का और भी है कि लोग अपने बच्चों को जो स्कूल का रास्ता भी नहीं जानते बिना देश भाषा सिखलाए पढ़ने को भेज देते हैं और घर आने पर बिलकुल खेलने का अवसर नहीं देते

परिणाम में लड़के पढ़ने को अपना बैरी समझ जी चुराने लगते हैं जो लगे भी रहे तो मन्दबुद्धि हो जाते हैं अच्छी अवस्था में पढ़ना प्रारम्भ करने से दो वर्ष के एवज़ एक वर्ष में उतना सीख सक्ते हैं अङ्गरेज़ी की कहावत है More haste less speed अति उतावली और मन्दगति अंत को ऐसे लोग घोर मचोर रह जाते हैं पूर्ण विद्वान कभी नहीं होते ; अब कुछ और लीला भी गाते हैं यह बात जगत् बिदित है कि लोग पेट ही के लिए दूसरे के तावे हो तन मन सब उसके अर्पण किए रहते हैं जिसमें स्वामी प्रसन्न हो और उनके मासिक वेतन तथा पद की वृद्धि करे परम्परा से ऐसा ही होता भी आया है विशेष कर इन दिनों इस अङ्गरेज़ी राज्य में इसका पूरा बर्ताव देखा जाता है काम अच्छा करने और पुराने हो जाने पर पारितोषिक स्वामी की ओर से कहीं मासिक बढ़ा दिया जाता है कहीं जगह खाली होने पर तरक्की कर दी जाती है प्रायः सब दफ़्तरों का यही डौल है पर इस शरिश्तेतालीम में कुछ अजीब अधाधुन्ध है जिसने इमानदारी से काम किया मारा हो गया मसल है "ऐ रोशनीयत वा तीवरमन बलाशुदी" अर्थात् ऐ बुद्धि मानो तूही हमारे दुःख का मूल हुई पहले जब ग्रेडेड सिसटेम न था लोग कहते थे यह अधाधुध ग्रेडेड सिसटेम हो जाय तो जल्द बन्द हो खैर ज्यों त्यों वह भी हुआ पर उस्का भी कुछ फल न देखने में आया दुनियां ब उम्मेद कायमस्त लोग मन की बहुरी लगे चबाने अब हम मुदर्रिसी से डिपटी इन्स्पेकृरी और टीचरी से साधारण हेडमास्टरी के ओहदे तक बढ़ जांयगे लोग जी खोल काम करने लगे कि अपने अफसर को राज़ी कर शिफारिस करावें और लम्बी लम्बी तनखाहें फटकारें पर जब डि० इ० की जगह खाली होने पर अर्ज़ी का यह जवाब मिला कि दौरा करने वालों को तरक्की दी जायगी दी तब कान खड़े हो गए और आंख पसार देखा तो मालूम हुआ कि अगड़र अफिसर्स जिनमें एम ए, बी ए का पुछल्ला नहीं

या कोई दृढ़ शिफारिस नहीं है उनको कोई आशा वृद्धि की नहीं है क्योंकि जिन्हों ने अपना हाड़ मास गला आंख फोड़ फेफड़ा तोड़ परिश्रम कर डिगरी हासिल किया जिन्हें अन्यत्र ठिकाना नहीं लगता उन्हे विद्या बिभाग में अवश्य जगह मिलनी ही चाहिए; लड़काई से कभी घोड़े पर चढ़े नहीं अब उतनी ताकत न रही कि घोड़े की सवारी सीखें इस लिए डिपटी इन्स्पेकृर हो नहीं सक्ते तो ऊपर के दरजों में टीचरी के सिवा क्या रहा जो उन्हें मिले; रहे सब डिपटी इन्स्पेकृर उन्हे पहले ही हुक्म हो चुका है कि धीरे धीरे कम होते जांय अङ्गरेज़ी न जानने से डिपटी इन्स्पेकृर हो नहीं सक्ते तो अब कहिए शरिस्ते तालीम में दौरा करने वालों की जगह जो खाली होगी तो शायद उस पर कोई नया आदमी न मुकर्रर किया जायगा होते होते दो दो ज़िले पीछे एक एक डि० इन्स्पेकृर शेष रह जांयगे जब इस्में भी कमी होगी तब स्वर्ग में ब्रह्मा के यहां इण्डेण्ट अर्थात् मांग जायगी कि यहां यह ओहदा खाली है मृत्युलोक में इस योग्य कोई नहीं है आप कृपा कर इतने मनुष्यों को भेज दीजिए जो वहां भी न मिले तो कदाचित् फिर यहां वाले पुराने नौकरों का भाग जगे तो जगे "गन्दुमअगरबहम नरसदजौगनीमतस्त" नहीं तो आशामोदक खा कर दिन काटो और धन्यबाद करो कि जो मिलता है गनीमत है वृथा की तृष्णा छोड़ो या किसी दूसरे काम में लगो विद्या बिभाग के पास भी कभी न जाओ जहां सुना गया है कि सरविस टिकट लगी शहर की चिट्ठियां १२ दिन में पहुंचती हैं तो रवानगी चिट्ठियों का कौन ठिकाना शायद बंबे ही से गुम हो जाती हों तो क्या अचरज है॥

मधुमुकुल।

श्री बाबू हरिश्चन्द्र कृत होली के पदों का संग्रह इस्की समालोचना हम और क्या लिखें केवल इतना ही कहना बस है कि यह बाबू हरिश्चन्द्र जी की कविता है हमारे रसिक पाठक जन इतने ही से जान भी लेंगे कि यह छोटी सी पुस्तक कैसी रस की खान होगी "पदबन्धोज्वलोहारी कृतवर्णक्रमस्थितिः। भट्टारहरिश्चन्द्रस्य गद्यबन्धोनृपायते॥"

योगरत्नाकर।

अनेक पुस्तकों से संग्रहीत वैद्यक का एक प्रस्ताव पं॰ लक्ष्मीनारायण द्वारा सम्पादित पंडित मोतीलाल द्वारा प्रकाशित पंडित सदानन्द मिश्र द्वारा सारसुधानिधि यन्त्र में मुद्रित यह पुस्तक वैद्यों के लिए बहुत उपकारी है इसमें दस बीस लटके हर किस्म की जो चिकित्सा में बड़े लाभदायक और अनुभूत हैं लिख दिए गए हैं गुटिका चूर्ण रस घृत और क्वाथ हर तरह की व्याधि के प्रतीकारक इसमें सन्निवेशित किए गए हैं यह पुस्तक हमारी समझ से अवश्य संग्रह के योग्य है॥

मूल्य ॥≶) मात्र।

Specemen of translation into English verses.

अङ्गरेजी "पोइटरियों" पद्यों में महाभारत के उस भाग का अनुवाद जब कि पाण्डवों के बनगमन के समय पुरवासियों ने विलाप किया है हमारे मित्रवर

कलकत्ता निवासी बाबू दीनानाथ देवकर्तृक ; बाबू साहब को पोइटरी बनाने में अपूर्व शक्ति है इस छोटी सी पुस्तक के देखने से उनकी अद्भुत कवित्व शक्ति का परिचय पाठक को अच्छी तरह हो सक्ता है हमें इस बात का बड़ा हर्ष है कि हम लोगों में अङ्गरेज़ी भाषा के कवि भी अब होने लगे ॥

क्षमा प्रार्थना।

दयालु पाठक गण !

शिशिर की ठिठिरन ने जाते जाते हमारे साथ वह सलूक किया कि हम उसे कभी न भूलेंगे यह अदिष्टी बीतते बीतते वह अनिल संचार कर गया कि उसी के झकोर में उड़ बङ्गाल के समुद्र की तरङ्गों में पड़ महीनों वहीं जकड़े रहे मानो पश्चिमोत्तर की भूमि कभी देखी ही न थी खैर बसन्त के प्रवेश के पीछे ही पीछे हमारा भी इस तीर्थराज में पुनः प्रवेश हुआ और अब हम ऐसा जम कर बैठे हैं कि न शिशिर हमें ठिठुरा सकेगा न मिहिर की किरणों से द्रव हो पिघल सकेंगे और एक मास का ऋण आप लोगों का जो हम पर चढ़ रहा है उसे कुछ चुकाया है कुछ आगे बढ़ अवश्य चुका देंगे परन्तु इस समय अवसर न रहने से क्षमा मांगते हैं॥

अग्रिम मूल्य … … …	२।)
पश्चात देने से … … …	४)
एक कापी का … … …	।)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahivapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD,—1st April 1881. Vol. IV.] [No. 8. | प्रयाग चैत्र शुक्ल २ सं० १८३७ जि० ४] [संख्या ८

पुस्तक प्राप्ति।

हम अत्यन्त धन्यवाद पूर्वक पं० बिहारी लाल सेकण्ड मास्टर रांची नार्मल स्कूल कृत वर्णनाबोध और बिहारी तुलसी भूषण बोध स्वीकार करते हैं; पहली पुस्तक जिसमें हिन्दी में वर्णना लिखने की रीति तथा शास्त्रीय ऐतिहासिक और ऐसे २ औपदेशिक विषयों का वर्णन है जिनके अनुसार व्यवहार करने से मनुष्य नीरोग विद्वान और धनी हो सक्ता है मूल्य ७ आना; किसी विषय पर "एसे" वर्णना लिखने का प्रकार इस पुस्तक के पढ़ने से बहुत सुगम रीति से आ सक्ता है निस्सन्देह इस ढङ्ग की पुस्तकें अब तक

बहुत कम छपी हैं जैसी लाभदायक यह पुस्तक है उसके मुकाबिले ७ आना मूल्य बहुत कम है तहसीली मदर्से तथा और स्कूलों के हिन्दी पढ़ने वाले छात्रों को तो यह पुस्तक अवश्य संग्रह करना ही चाहिए। दूसरी पुस्तक रामायण पढ़ने वालों के बड़े काम की है यह साहित्य और अलङ्कार का हिन्दी में एक अपूर्व ग्रंथ है तुलसी बिहारी सूर तथा कबीर आदि हिन्दी के प्रसिद्ध कवियों के ग्रंथों से चुन चुन शब्दालङ्कार और अर्थालङ्कार के उदाहरण दिखाए गए हैं ग्रंथकर्ता महाशय का साहित्य में पूर्ण पाण्डित्य इस ग्रंथ के देखने से विदित होता है; खेद का विषय है कि हमारे प्राचीन कवियों के बुद्धि का सर्वस्व साहित्य और अलङ्कार का ज्ञान इन दिनों बहुत कम होता जाता है विशेषतर अङ्गरेज़ी भाषा के बहुत अनुशीलन से परिस्कृतान्तःकरण नई रोशनी वालों के जी से जिन्हों ने हिन्दी तथा संस्कृत की प्राचीन कविताओं को बिल्कुल शृङ्गार रस पूर्ण अतएव "इख्लाक़" बुद्धि भ्रंशक समझ इसका पठन पाठन छोड़ ही दिया; अस्तु ऐसे बेकदरी के ज़माने में साहित्य विषयक ग्रंथ जो मुद्रित हों तो प्राचीन कविताओं का एक गुना सौभाग्य समझना चाहिए॥

यूरोप की परम हृदिङ्गत सभ्यता की बानगी॥

हम सब एशिया खण्ड के निवासी जिनमें सभ्यता की महक तक नहीं छू गई बारबेरियन नाशाइस्ता और बेरहम समझे गए हैं इसलिए मनुष्यहत्या आदि महा घोरतर पाप जो "क्राइम" कहलाते हैं हम में एक साधारण सी बात है और यूरोपीय सभ्य महाशयों का एशिया वालों पर साम्राज्य स्थापित करने का यही प्रयोजन है जिसमें ये लोग सभ्य हो जांय और निष्ठुरता को दूर बहाय इन्हीं के समान कोमल दयालु और सभ्य हम भी हो जांय; गाज पड़े ऐसी सभ्यतापर हम असभ्य अर्द्धशिक्षित ही भले कि व्यर्थ की मनुष्य हत्या सा घोर कर्म तो नहीं करते जैसा अभी रूस के ज़ार का प्राण वार वार यत्न के बाद अन्त को लेही कर छोड़ा अभी जर्मनी के महाराज पर यही यत्न हुआ था भाग्य वश वह तो विफल हुआ पर इस दफा लोगों का वार खाली न जाने पाया; सुनते हैं यूरोप के सभ्य

लोगों के बीच निहिलिस्ट सोशलिस्ट आदि नाम की कई एक ऐसी जमातें हैं जिन की यह प्रतिज्ञा है कि यूरोप भर में मोनर्की अर्थात् राजकुलोद्भव मनुष्य द्वारा शासन प्रणाली न रह जाय ; हम लोग असभ्य ही जब हुए तो यह कुछ अप्राकृतिक नहीं प्रतीत होता कि राज्य के लोभ से विष प्रयोगादि द्वारा राजाओं का प्राण हरण कर लिया जाता था क्योंकि तमा Human nature मनुष्य में प्राकृतिक धर्म है तब हम मानुषी प्रकृति के वशवर्ती हो अवश्य यह काम करने को उद्यत होते थे निहिलिस्टों की तरह सभ्यों में नाम लिखाय बिना कुछ आत्मीय लाभ के मानुषी प्रकृति विरुद्ध काम करने पर नहीं सन्नद्ध हुए ; अब विचार कर कहिए ठीक ठीक "बारबेरिटी" निर्घृणता किसमें आई एशिया वालों में या यूरोप की सभ्य मण्डली में खैर यह तो सभ्यता की एक बानगी मात्र दिखलाना था सो दिखा चुके अब ज़रा आगे बढ़िए यह भी सभ्यता ही की करतूत कहना चाहिए कि "जहँ जहँ चरण पड़ें सन्तन के तहँ तहँ बण्टाधार" जहां जहां इस सभ्यता पिशाची के सज्‌कदम गए वहां वहां मद्यपान व्यभिचार आज़ादी फरेब नास्तिकता आदि दुर्गुणों के मानो नार गड़ गए जिसने मद्य को अपना इष्ट न किया, आज़ादी को शाहजादी न समझा, आस्तिक बन ईश्वर परोक्ष स्वर्ग नर्क पाप पुण्य का पिटना पीटता ही रहा, परलोक सुधारने की फिकिर के दरिया में बराबर गोता मारा किया, जुलयाज़ी चालों की न सीख दुनियांसाज़ी में गबुचर रह गया, थोड़ा चोहल छैलपन पिकनिक पार्टी में मित्रों के प्यालों का शरीक हो आरक्त नयन न बना और न रक्त कपोल वालियों का भक्त हो ठहरा वह सभ्य कैसा ; धन्य हो सभ्यता मासी यूरोप में चिरकाल से अपना निष्कण्टक राज्य स्थापित किए किए हमारी इम्प्रेस महारानी की समकक्ष बन अब बूढ़ी हो गई हो इस उमर में सब बातों पर बुढ़ापा छा जाता है एक अकेली तृष्णा पर नया जोबन जमता आता है सो उस भोग तृष्णा से प्रेरित हो शुरू शांबा से चोला बदलने वाली शिक्षा पढ़ पढ़ाय अब एक नई बालिका के वेश से हमारे देश को पवित्र कर रही हो ; हमारे पुराने भोले भाले, पद पद में धर्म भीरु, असभ्य, अर्द्धशिक्षित पुरखे क्या बुरे थे जो परलोक बिगड़ने की डर से फूंक २ पांव रखते थे कौल के

ऐसे सच्चे और ईमान के ऐसे भरे पुरे कि हजारों रुपए बिना कुछ लिखतं पढ़तं सिर्फ ज़ुबानी कौल करार पर हथउधरा दे ले डालते थे और कभी एक पैसे का खलल लेने देने वालों के बीच नहीं आ पड़ता था अब इस सभ्यता के समय दस दस हाथ के लम्बे कागज़ लिखे जाते हैं सर्कारी मुहर और स्टैम्प पर स्टैम्प चिप काए जाते हैं तौ भी और किनकी कहे सगे भाई भतीजों में लेन देन और हिस्सा बाट के मामिले में जो थुक्का फ़ज़ीहत देखी जाती है और कौड़ी २ के लिए लोग इमान को हिमवान के चिरस्थायी बर्फ में गाड़ दिया करते हैं कि अब वह मनु या याज्ञवल्क्य की निश्चित लेन देन के पवित्रता की गरमी काहे को कभी किसी में आने वाली है; धन्य रे सभ्यता हम तेरे महोपकार के बड़े एहसानमन्द हैं तूने हमें आज़ाद बनाय हिन्दू समाज को किच २ से हमारा गला छुटाया पुरखों की गड़ी गड़ाई जमा का उद्घाटन कराय सभ्य विदेशियों की हिकमत के हस्तगत करा दिया पर होटलों के टेबलों की सफाई तब भी ठीक ठीक न हुई और नई नई रोशनी के प्रताप से ऐसे नए नए फ़ैशन और तरहदारियां हमें सुझाई कि पुरानी लखनऊ और दिल्लीवाल वज़ा अब हमें फीकी लगती हैं; खैर जो हो यह नई सभ्यता सब कुछ जोर मार अपना पसार पसारती जाती है ताहम हमारी पुरानी असभ्यता इस बर्ष की सरदी के समान बार बार पलटा खाय उसे पछाड़ती ही जाती है और अन्त को हम ऐसी आशा करते हैं कि इन दोनों की गटपट से एक ऐसी नई सृष्टि कुछ दिनों में हम लोगों के बीच हो उठेगी जिसमें पुरानी असभ्यता का तलछट नई तरक्की के खूदड़ के साथ ताना बाना हो मुल्क का मुल्क कौबीह बन जायगा॥

हमारे ब्राह्मण भाई फ़िज़ूलखर्च क्यों समझे गए।

बरतनों में एक बहुगुना होता है हर एक गृहस्थ बहुगुने के बहुत गुनों से खूब जानकार हैं वैसे ही आदमियों में हम ब्राह्मण लोग हैं बवर्चीखाने का काम इन से ले लो, खेत इनसे जुतवा लो, चाहो मोटिया बनाय मोट ढोआ लो, चाहो प्यादगीरी का काम इनसे करवा लो, घर में कोई मर जाय लाश ढोआ लो, क्रिया कर्म करने वाला कोई न मिलता हो वह

भी इनसे करा लो, कुछ रुपया खरची जैसी चाहो वैसी व्यवस्था लै लो, पांव इनका पूजो, गरमियों में पङ्खा टट्टी खींच कर लोगों को तरावट येंही पहुंचाएं, ऐयाशी करते करते यजमानों को निर्वीर्य जान उनका वंशोच्छेद देख यजमानिन का भरपूर सन्तोष कर कराय एक वंशधर ये पैदा कर देते हैं न मानो बशिष्ठ और अश्मक के पौराणिक किस्से को देख लो अथवा मत्स्योदरी के आज्ञानुवर्ती वेद-व्यास महाराज के करतूत को याद करो; कहो स्वर्गलोक पहुंचाएं कहो ब्रह्मलोक को रास्ता बताएं कहो बैकुण्ठ में पहुंचाय तुम्हे विष्णु भगवान से मिलाएं कहो कै लाश में तुम्हारा बास कराएं कहो श्राप दे तुम्हें मिट्टी में मिलाएं, और अब क्या चाहते हो ; देश का देश जिस समय य-वनों के अत्याचार संक्रमित हो बिपत्ति ग्रस्त हो रहा था और समस्त भारतीय प्रजा आर्य भाषा और धर्म को निरावलंब छोड़ दिया था उस समय इन्हो ब्राह्मणों ने अपने ऊपर भारी बिपत्ति सह कर भी उसे अवलम्ब दान कर किसी तरह बचा रक्खा उन्ही के बंश वाले इस समय अब असभ्यता मूर्खता आलस्य मान्द्य आदि दुर्गुणों को पाले हुए भारत के पुनरुथान में बिघ्नकारी हो रहे हैं और इतर वर्ण चाहो निद्रा विसर्जन कर सुचेत होते जांय पर ये अपने परिकरों को साथ लिए न जानिए कब तक अधःपाती होते रहेंगे दैव जाने सिवान्त यह कि ये फिजूलरकम होने से सब तरह बरी हैं ॥

मृच्छकटिक।

पांचवा अङ्क।

चारुदत्त की वाटिका।

चारु॰ (आसन पर बैठा हुआ ऊपर देख) असमय में ए मेघ भौंरे के उदर समान नील वर्ण धारण किए आकाश में उड़ते बकुलाओं की पांत मानो शंख लिए आकाश के लङ्घन मे उद्यत वामन समान सोहते हैं इन मेघों से गलाई चांदीसी स्वच्छ जलधारा कैसी मुशल धार पड़ रही है। मैत्रेय को वसन्त सेना के यहां गए इतनी देर हुई क्या कारण जो अब तक न आया।

विदू॰ (आकर) वेश्या जन केवल धन चाहती हैं डाइन ने इतना भी न पूछा कि गहना किस तरह और कब चोरी गया बिना कुछ कहे सुने बड़े मोल की रत्नावली झटपट गटक कर बैठ रही इतनी संपति पाने पर भी मुझ से झूठहु न

पूछा आर्य मैत्रेय विश्राम कीजिए कुछ जल पान कर तब जाइए अब तो चारु दत्त चाहो कितनाही कहैं कभी उस दासीपुत्री गणिका का मुख भी न देखूंगा वल्कि चलतेही ऐसा झाड़ता हूं कि बचा को मालूम पड़ेगा (आगे देख) क्या आर्य चारुदत्त इहांही बैठे हैं (पास जाय) मित्र आप की स्वस्ति हो।

चारु० (देख कर) आहा मित्र मैत्रेय आए आइए इस आसन पर बैठिए कहिए वह काम।

विदू० (रोक कर कुढ़ता सा हो) नष्ट हो गया।

चारु० क्या रत्नावली नहीं लिया॥

विदू० कहां ऐसा भाग्य जो न लेती।

चारु० तो क्या कहते तो नष्ट हो गया।

विदू० क्यों नहीं नष्ट हुआ जिस्से न खाया न पीया अल्प मूल्य गहने के लिए चतुः समुद्र सार भूता रत्नावली दे डाला

चारु० मित्र ऐसा न कहो। श्लोक।

यंसमालम्ब्य विश्वासं न्यासोऽस्मा सुतया कृतः। तस्यैतन्महतीमूल्यंप्रत्ययस्यैवदीयते।

जिस विश्वास पर गहना उसने मेरे यहां धरोहर रक्खा था उसी विश्वास की मूल्य वह रत्नावली थी।

चारु० मित्र यह दूसरा और मुझे सन्ताप का हेत हुआ जो अपनी सखियों को सङ्केत दे पट से मुंह ढांप ताली पीट मुझको हंसी इस लिए इतने बड़े कुल में उत्पन्न में सिरसे दण्डवत् कर आप से प्रार्थना करता हूं कि वेश्या प्रसङ्ग इस महापातक से निवृत्त हो; गणिका जन उपानह में घुसी ठिकुरी समान कठिनाई से निकलती है; वेश्या हाथी भिक्षुक विश्वासघाती और गदहा जहां रहैं वहीं कुछ न कुछ उपद्रव करैं।

चारु० मित्र बस अब बहुत दोष न कहिए वेश्या धनहारिणी तो होतीही हैं हम लोग धन से वेश्या प्रसङ्ग हीन छोड़ही से हैं।

विदू० (स्वगत) जैसे २ मै इन्हे वारण करता जाऊंगा वैसे २ इनकी इच्छा चौगुनी बढ़ती जायगी (प्रकाश) मित्र उसने कहा है आज सांझ को मैं आऊंगी मैं समझता हूं रत्नावली से सन्तुष्ट न हो अभी कुछ और आप से झँसा चाहती है।

चारु० आवै प्रसन्न होकर जायगी।

(बसन्तसेना का चाकर कुम्भीलक का प्रवेश)

कुम्भीलक। आज दिन इस उज्जैनी में जिसके गाने का शोर है उस बसन्तसेना का मैं नाक का बाल हूं मुझे बड़े बड़े काम याद हैं; बंसी बजाऊं सात तार की बीन बजाऊं गदहा के स्वर समान,

गीत भी गाऊं मेरे गाने के आगे तुंबुरू और नारद झख मारते हैं ; आर्या बसन्त सेना ने कहा है कुम्भीलक तू जा मेरा आना चारुदत्त से कह सो यह आर्य्य चारुदत्त का बगीचा है भीतर चलूं (भीतर जाय और देख) यह आर्य्य चारुदत्त बैठे हैं पर वह दुष्ट कुटीचर ब्राह्मण भी यहां है तो अब इसे कुछ इशारा दे अपना आना सूचित करूं (मिट्टी की एक गोली बना उस पर फेंका)

विदू० (चौंक कर) अरे मुझे कौन मारता है ॥

चारु० । बाग की खांइयों पर से कबूतरों ने किंकरोरी गिराया होगा ॥

विदू० । दासीपुत्र पारावत ठहर ठहर इस लट्ठी से तुझे अभी पक्का आम सा झँझोर कर नीचे गिराता हूं (लट्ठी ले दौड़ता है) ॥

चारु० (जनेऊ पकड़ उसे खींच) मित्र बैठो बैठो इन कबूतरों को सताने से क्या लाभ है ॥

कुम्भी० । क्या कबूतरों को देखता है मुझे नहीं दूसरी गोली गिर मारूं (मारता है) ॥

विदू० (सब ओर देख) क्या कुम्भीलक है इसके पास चलूं (पास जा) अरे कुम्भीलक है क्या ?

कुम्भी० । आर्य्य दण्डवत करता हूं ॥

विदू० । पानी बरसते ऐसे अँधेरे में तू कहां चला ॥

कुम्भी० । अरे एषा सा ॥

विदू० । एषा का ॥

कुम्भी० । एषा सा ॥

विदू० । अरे लौंडिया के दुर्भिक्ष पीड़ित भिक्षुक की नांई सांस लेता एषा सा एषा सा क्या बक रहा है ॥

कुम्भी० । तू भी कनागत के कौओं समान क्या का का रट रहा है अरे तुझे कुछ प्रश्न देता हूं ॥

विदू० । हम भी तेरे मूंड़ पर गोड़ देते हैं ॥

कुम्भी० । अरे इसी से जान ले किस समय आम बौरते हैं ?

विदू० । अरे दासीपुत्र ग्रीष्म में ॥

कुम्भी० (हँस कर) अरे नहीं २ ॥

विदू० (स्वगत) अब यहां पर क्या करूं (सोच कर) हो चारुदत्त से जाकर पूछूं (प्रकाश) थोड़ा ठहर मैं पूछ लूं (चारुदत्त के पास जा) मित्र आम कब फूलता है ?

चारु० । मूर्ख बसन्त में ॥

विदू० (कुशीलक के पास आय) मूर्ख वसन्त में॥

कुशी०। अब दूसरा प्रश्न देता हूं रंजे पुंजे गांव की रक्षा कौन करती है?

विदू०। अरे रथ्या॥

कुशी० (हँस कर) नहीं २॥

विदू० (स्वगत) न हो फिर चारुदत्त से जाय पूछूं (फिर वैसा ही पूछता है)

चारु०। सेना॥

विदू०। अरे दासीपुत्र सेना॥

कुशी०। अरे दोनों को एक में कर बोल॥

विदू०। सेना वसन्त॥

कुशी। अरे पलट कर कह॥

विदू० (देह पलट कर कहता है) सेना वसन्त॥

कुशी०। अरे मूर्ख पदों को पलट॥

विदू० (पांव पलट) सेना वसन्त॥

कुशी०। निपट गँवार है अरे मूर्ख पदों के अक्षर पलट कर बोल॥

विदू०। वसन्तसेना (स्वगत) वह चुडैल क्या आ गई (प्रकाश) तो जाकर मित्र से कहूं (पास जाय) मित्र आप का धनिक आया है॥

चारु०। हम परम दरिद्री के कुल में कहां धनी॥

विदू०। यदि कुल में नहीं तो द्वार पर तो है॥

चारु०। मित्र क्यों मुझे ठट्ठों में उड़ाते हो॥

विदू०। मित्र वसन्तसेना आई है जो मेरा बचन नहीं पतिआते तो इस कुशीलक से पूंछ लीजिए अरे कुशीलक आ॥

कुशी० (आ कर) आर्य्य प्रणाम करता हूं॥

चारु०। कुशीलक सच बता क्या वसन्तसेना आई है॥

कुशी०। आर्य्य हां॥

चारु०। अच्छा तो जा बुला ला॥

कुशी०। जो आज्ञा (बाहर गया)

वसन्तसेना और कुशीलक का प्रवेश।

कुशी०। बिना कमल कमला बनी ललित मनो भववान। कुल नारी कुल शोक है अरु द्रुम कुसुम समान॥ स्वामिनी जी देखिए शैल शिखर पर लम्बमान ये मेघ गरजते हैं जिनकी गरजन सुन भयभीत हंस उड़ उड़ अपने पङ्ख से आकाश को मानो मणिमय ताल वृन्त से बीजन कर रहे हैं॥

सोरठा।

पीवतधारापूर सलिलपङ्कसुखभेककुल।
कूजतमत्तमयूर फूलेनीपप्रदीपसम॥

घिरोमेघखेचन्द जसनीचनसींयतिधरम।
चपलाथिरनहिंमन्द युवतीजलसत्पुरुषमें॥

दोहा।

गरजेंबरसेंमेघया छोड़ेंबस्त्रअनेक।
चलींरमणप्टहनायिका गणनाकरेंननेक॥

श्लोक।

पवनचपलवेग:स्थूलधाराशरौघ:। स्तनित
पटहनाद:स्पष्टविद्युत्पताक:॥ हरतिकर
समूहंक्षिप्रशाङ्कस्यमेघो। नृपइवपुरमध्येम
न्दवीर्यस्यशत्रो:॥

पवन चञ्चल वेग धारा ओघ बाण बनाय। गर्ज ढक्का नाद करि बिजुली पताक बढ़ाय॥ हरत मेघ शशाङ्क के कर जाल नभ में आय। मन्द वीरज शत्रु के जस नृपति पुर में जाय॥

बसन्त०। कुशीलक तू सच कहता है दुर्बल पति की बनिता समान चांदनी मेघों से अनाछ्रित हो मलिन आभा हो गई है और बिजली सुवर्णदीपिका सी इन महलों में संचार कर रही है॥

दोहा।

जीघनगरजेंदोघनहिं पुरुषहोहिंकठोर।
तृणपलाकतनारिहीद्रदु:खनजानतिमोर॥

कुशी०। स्वामिनी आप बिजुली की क्यों निन्दा करती हो यह तो एक तरह तुम्हारा उपकार ही इस समय करती है जो ऐसे अँधियारे में चारुदत्त के घर की बाट मानो दिया लेकर दिखला रही है; यह उन्ही का घर है; स्वामिनी जी आप को कुछ सिखाना नहीं है स्वयं सकल कला में निपुण हो अब अपने यार चारुदत्त के यहां जाय आज रात को सुख से शील सौन्दर्य आदि बहुमूल्य पदार्थों के परस्पर क्रय विक्रय से रतिकेलि रूप सुख के निष्क्रय का मनमानता लाभ करो (चारुदत्त की घर के भीतर देखकर) अब मैं जाता हूं॥ (प्रस्थान)

बसन्त० (भीतर जाकर) आर्य मैत्रेय आप के द्यूतकर कहां हैं॥

विदू० (स्वगत) यह आई अब इस मूरखचन्द को अपने ढङ्ग पर चढ़ाय खूब ठगैगी अब यहां हमारा रहना अनुचित है (प्रकाश) मित्र लीजिए आप का धनिक आया अब यहां धनिकों के बीच हम निर्धनियों का क्या काम है (जाता है)

चारु० (उठ कर) प्रिये आओ तुम्हारा स्वागत हो सदा रात मुझे जागते बीतती थी आज तुम्हारा साथ पाय बर्सों के मनोरथ सफल करूंगा॥

'दोनों भीतर गए'

इति पञ्चमोऽङ्क:।

छठवां अङ्क।

स्थान।

चारुदत्त का शयन गृह।

चेटी (आकर) सबेरा हो गया स्वामिनी जी अभी तक नहीं जागीं होय अब जगाऊं स्वामिनी प्रभात हो गया अब उठिए।

वस्त्र से आच्छादित शरीर बसंन्त सेना का प्रवेश।

वसन्त मालूमही न पड़ा रात किस जून बीत गई (चेटी से) वह द्यूतकर कहां है ?

चेटी०। आर्य्या वर्द्दमानक को सहेज आर्य्य चारुदत्त जीर्णोद्यान मे गए हैं कि वर्द्दमानक तू वहांही रथ पर सवार करा वसन्त सेना को ले आ।

वसन्त 'स्वगत' अच्छा हुआ रात में प्राण प्यारे को भली भांत नहीं देखा था इस जून देख लूंगी 'प्रकाश चेटी से' तू एक काम कर इस रत्नावली को ले जा कर आर्य्य चारुदत्त के घर में आर्य्या धूता को दे कहना कि मैं जैसी चारुदत्त की गुण क्रीता दासी हूं वैसी तुम्हारी भी इस लिए यह रत्नावली आपही का कण्ठ भूषण हो।

चेटी (लेकर) जो आज्ञा भीतर जाय फिर आती है आर्य्या धूता कहती हैं यह रत्नावली आर्य्य पुत्र ने तुम्हे प्रसाद कर दिया है इसे लेना उचित नहीं आर्य्य पुत्र ही हमारे आभूषण हैं।

बालक को लिए चारुदत्त की दासी रदनिका का प्रवेश।

बालक। मै मिट्टी की गाड़ी से न खे लूंगा मुझे वही सोने की गाड़ी दें।

रद०। अरे बेटा हम गरीबों को कहां सोना मयस्सर बाप के धन होगा तब सोने की गाड़ी गढ़ा लेना।

वसन्त०। लड़के को रोता देख पास आय यह चन्द्रमुख किसका बालक है; यह क्यों रोता क्यों है ?

रद०। यह आर्य्य चारुदत्त का पुत्र रोहित सेन है।

वसन्त०। आ बच्चा मेरी गोद में आ इसने बिलकुल बाप के रूप का अनुहार किया है बेटा क्यों रोते हो।

रद०। परोसी के बालक को सोने की की गाड़ी से खेल रहा था उसे वह ले गया जब फिर मांगा तो मैंने यह मिट्टी की गाड़ी बनाकर दिया इसे यह नहीं लेता रोता है कि वही सोने की गाड़ी लूंगा हम दरिद्रों के घर कहां सोना।

वसन्त। हा धिक् यह भी पर संपत्ति

से दुखी होता है भगवन् क्षतान्त तुम क मल पत्र पर पड़े जलविन्दु समान पुरुषों के चञ्चल भाग्य से खेलते * हो ; बेटा न रो कितनी गाड़ी लोगे।

बालक०। यह को है।

वस०। वत्सा मै तुम्हारे वाप की गुण क्रीता दासी हूं।

रद०। बेटा यह आर्या तुम्हारी मा हैं।

बालक०। झूठ बोलती है हमारी मा होती तो गहना न पहने होती।

वस०बेटा भोले मुंह से बड़ी प्यारी बो ली बोलते हो ' गहना उतार " अब मैं तेरी मा हुई इस गहनों को ले इस्से गाड़ी बना लेना।

बालक। मैं न लूंगा तू रोएगी।

वस० [हंसकर] वत्सा से न रोओंगी जाओ खेलो इस्से सोने की गाड़ी गढ़ा लेना।

रदनिका बालक को फुसलाते गोदमें उठा भीतर गई

वर्द्धमानक का प्रवेश।

वर्द्ध०। आर्या रथ तैयार है।

वस० अच्छा तू वाहर ठहर मै कपड़ा पहिन आती हूं।

* इस नाटक का नाम मृच्छकटिक इसी से हुआ मृत् मिट्टी शकटिका छकड़ा या [illegible]ड़ी।

वर्द्ध०। तब तक मैं भी रथ का बिछौना भूल आया हूं लेता आऊं "वाहर गया"

रथ पर बैठा स्थावरक चेट आकर।

स्थावरक०। यह रथ राजा के साले श कार का है उन्हीं ने आज्ञा दी है स्थाव रक रथ लेकर उस पुष्पक रण्डजीर्णोद्यान मे जल्द आ तो अब वहीं चलूं चलो रे बैलो चलो " थोड़ा चलकर और देख कर " क्या छकड़ों से राह रुकी है हटो रे हटो ; क्या कहते हो यह किसका रथ है यह राजा के शाले संस्थानक का प्रवहण है (देख कर) यह दूसरा मनुष्य जुआ मे भागा जुआरी सा मुझे देख क्यों भागा जा ता है अथवा इस्से मुझे क्या काम हटो रे राह के चलवइए हटो क्या कहता है आकर पहिया हटवा दे अरे मैं इतने बड़े कुलीन मनुष्य राज श्यालक का नौकर हूं पहिया हटवाना कुलियों का काम करूं यह दुखिया अकेला है इस्की सहा- यता करनी चाहिए तब तक इस रथ को आर्य चारुदत्त की इस बाटिका के द्वार पर खड़ा कर दूं " रथ खड़ा कर नीचे उतर " मत घबड़ा यह मै आया " वाहर गया "।

वसन्तसेना और चेटी का प्रवेश।

चेटी०। स्वामिनी पहिया का सा शब्द सुन पड़ता है रथ आ गया मालूम।

वसन्त। चल मेरा भी मन उतावली कर रहा है रथ के पास आय अब तू जा।

चेटी० जी आज्ञा " प्रस्थान "

वसन्त। रथ पर बैठती हुई क्या है कि दहिनी आंख फरकती है अथवा चलो आर्य चारुदत्त का दर्शन सब असगुन दूर कर देगा।

स्थावरक चेट० " आकर " ककड़ों को मैंने हटा दिया अब चलूं। रथ पर बैठ रथ भारी क्यों हो गया अथवा पहिया हटवाने से परिश्रम हुआ इस कारण रथ भारी जान पड़ता है अब चलूं चलो रे बैलो चलो।

" नेपथ्य में " अरे नगर रक्षको पहरूए अपने २ स्थान पर सावधान हो जाओ आर्य गोपालदारक कारागार तोड़ गुप्ति पालक को मार बंधन काट भागा जाता है पकड़ो २।

स्थावरक चेट० नगर में बड़ा संभ्रम है सब लोग भागे जाते हैं तो अब तुर्त चलूं रथ समेत बाहर गया।

" एक पांव में बेड़ी पहने कपड़े से मुह ढपे आर्य्यक का प्रवेश "

आर्य्यक। मैं राजा के बन्धन की बिपत्ति समुद्र के पार हो एक पांव से बेड़ी खींचता बन्धन से छुटा हाथी सा घूमता हूं मुझे राजा पालक ने किसी सिद्ध के कहने की प्रतीति पर गांव से बुला कैदखाने में बेड़ी डाल बांध रक्खा था प्रिय सुहृद शर्विलक की कृपा से उस बन्धन से छुटा हूं अब कहां जाऊं 'आगे देख' यह किसी सज्जन का घर है इसका द्वार भी खुला है इसी के भीतर घुस छिप रहूं॥

" नेपथ्य में " चलो रे बैलो चलो॥

आर्य्यक 'सुन कर' यह रथ तो इधर ही आ रहा है यह तो कोई 'बधू जान' जनानी सवारी का मालूम पड़ता है किसी बधू जन के लेने को आया है अथवा इस शून्य रथ को दैव ने मेरे ही लिए भेज दिया है॥

रथ समेत चारुदत्त के रथ का वाहक बर्द्धमानक आ कर द्वार पर पुकारा अरे रदनिका आर्य्या बसन्तसेना से कह दे मैं बिछौना लाया रथ सजा खड़ा है आकर बैठें॥

आर्य्यक 'सुन कर' यह किसी वेश्या का रथ है कहीं जाता है इस पर जाकर चुप चाप धीरे से बैठ जाऊं॥

बर्द्धमानक 'आर्य्यक के बैठने में बेड़ी की खनखनाहट सुन' नूपुर का सा

होता है आर्य्या आ गई मालूम रथ भी भारी जान पड़ता है तो अब चलूं चलो रे बैलो 'रथ हांकता है'

'बीरक और चन्दनक दो पहरा देने वालों का प्रवेश'

बीरक। अरे रे जयमान, चन्दनक, पुष्पभद्र. तुम सब बैठे बैठे क्या कर रहे हो देखते नही राजा पालक का कैदी गोपाल दारक आर्य्यक बन्धन तोड़ भागा जाता है पकड़ो पकड़ो॥

चन्दनक। अरे रे बीरक, भीमाङ्गद, दण्डकाल, दण्डशूर, तुम सब क्यों चुप चाप बैठे हो देखते नहीं इतना बड़ा अंधेर हो गया हम लोगों के पहरे से राजा का ऐसा भारी कैदी निकल गया हम लोग पहरा देने वालों की दूनी बदनामी हुई सो हुई राजा पालक के गोत्र से अलग हो दूसरे कुल में राज्य लक्ष्मी जाया चाहती है खेत खलिहान गांव नगर जहां हो उसे तुर्त ढूंढ़ हाजिर करो; अरे बीरक देख देख यह ढांपा रथ बीच राजमार्ग से जा रहा है पूछो किसका रथ है कहां जाता है॥

बीरक० (आगे देख) अरे रथ वाले रोक दे रथ. यह किसका रथहै कौन इस पर चढ़ा है और कहां जायगा॥

वर्द्धमानक। यह रथ आर्य्य चारुदत्त का है बसन्तसेना इस पर सवार है और पुष्पक रण्डक जीर्णोद्यान में इसे लिए जाता हूं॥

बीरक० (चन्दनक के पास आय) अरे चन्दनक रथवाहक कहता है यह रथ आर्य्य चारुदत्त का है बसन्तसेना इस पर चढ़ी है जीर्णोद्यान में लिए जाता है॥

चन्दनक। तो जाने दे॥

बीरक। क्या बिना देखे ही॥

चन्द०। और क्या॥

बीरक। किसकी प्रतीति पर॥

चन्द०। आर्य्य चारुदत्त की॥

बीरक। कौन चारुदत्त और कौन बसन्तसेना है जो उनके प्रतीति पर बिना देखे ही जाने दूं॥

चन्द०। अरे उन दोनों को नहीं जानता तो चन्द्रिका समेत चन्द्रमा को भी न जानता होगा; उनको जो गुणाकर शीलसागर शरणागत तारक हैं कौन न जानता होगा दोही तो इस उज्जयिनी में माननीय हैं एक बसन्तसेना दूसरे धर्म परायण आर्य्य चारुदत्त॥

बीरक। बसन्तसेना को जानता हूं और चारुदत्त को भी खूब जानता हूं पर राज काज आ पड़ने पर इन दोनों

को क्या अपने सगे बाप को भी मैं नहीं जानता ॥

चन्द०। अच्छा तो रथ वाले बैलों को रोक मैं देख लूं (वर्द्धमानक ने वैसा ही किया चन्दनक देखता है)

आर्य्यक। मैं शरणागत हुआ हूं "विजय न आवे पास, तजैं मित्र अरु बन्धुजन। होहि तासु उपहास, जो शरणागत को तजैं ॥"

चन्द०। शरणागत को अभय हो (देख कर) क्या आर्य्य गोपाल दारक है हा बाज के पंजे से छुटा पखेरू अब व्याध के हाथ आ फसा (विचार कर) यह निरपराध है और शरण में आया है मेरे अन्नदाता आर्य चारुदत्त के रथ पर बैठा है और आर्य्य शर्विलक का मित्र भी है राजा की आज्ञा एक ओर रहै होनी हो सो हो अब तो मैं अभय दान दे चुका (रथ से उतर) आर्य्य को देखा (आधा कह) नहीं आर्य्या बसन्तसेना को देखा॥

बीरक। भय से तेरा कण्ठ घरघराता सा है पहिले तूने कहा आर्य्य को देखा फिर आर्य्या बसन्तसेना कहने लगा मुझे तेरा विश्वास नहीं मैं आप देखूंगा ॥

चन्द०। अरे तुझे क्यों अविश्वास होता है हम लोग अव्यक्तभाषी दाक्षिणात्य हैं खस, कर्णाट, द्रविड़, चोल, चीन, बर्बर, खेर, खान, मधुघात आदि म्लेच्छ जातियों की बोली बोल सक्ते हैं आर्य्य या आर्य्या जो चहेंगे सो कहेंगे क्या हम व्याकरन पढ़े हैं जो स्त्रीलिङ्ग पुंलिङ्ग का ज्ञान रखते हों ॥

बीरक। मैं भी देखूंगा मैं राजा का विश्वासी नौकर हूं ॥

चन्द०। तो मैं क्या अविश्वासी हो गया ॥

बीरक। नहीं नहीं राजा की आज्ञा ही ऐसी है ॥

चन्द० (स्वगत) अब इन्हीं कर्णाटियों की सी कलह कर लवड़धोंधो बिना मचाए छुटकारा नहीं है (प्रकाश) अरे मैंने तो देखी लिया तू कौन है जो फिर देखेगा ॥

बीरक। मैं क्यों न देखूंगा (देखने को रथ पर चढ़ता है चन्दनक बाल पकड़ नीचे उसे गिरा लात मारता है)

बीरक। अच्छा बचा तुमने मुझे मारा है राजसभा में जा कहता हूं समझूंगा (बाहर गया)

चन्द० (चारो ओर देख) रथ वाला अब तू जा कोई पूछै तो कहना चन्दनक और बीरक ने रथ देख लिया है; बसन्त-

मैने यह अभिज्ञान तुझे देता हूं (खड्ग आर्य्यक को दिया) आर्य्ये यह बिनती है कि मुझे काम पड़ने पर याद रखना॥

आर्य्यक। रक्खूंगा० दोहा। चन्द्रशील चन्दन मिले मित्र दैव से आज। स्मरण करूंगा सत्य जो सिव बचन से राज॥

चन्द०। ब्रह्मा विष्णु रवींदु शिव करि शत्रुन संहार। अभय देंय तुम जस उमा शुम्भ दैत्य कुल मार॥

वर्ड्ड०। रथ ले बाहर गया॥

चन्द०(नेपथ्य की ओर देख) आर्य्यक के निकलते ही प्रिय मित्र शर्विलक पीछे लगा चला जाता है मैंने राजा का बड़ा विश्वासी वीरक से विरोध किया है अब यहां रहना उचित नहीं इस्से पुत्र कलत्र समेत मैं भी इसी का अनुसरण करूं॥

(बाहर गया)

प्रवहण विपर्य्ययो नाम षष्ठोङ्कः॥

सप्तम अङ्क।

स्थान

जीर्णोद्यान।

(चारुदत्त और मैत्रेय बैठे हुए)

चारु०। मित्र मैंने वर्द्धमानक से तुर्त आने को कहा था उसने न जानिए क्यों बड़ी देर की॥

मैत्रेय। किसी के रथ के चलने का सा शब्द तो सुनाई देता है कदाचित् यह वही रथ हो॥

रथ सहित वर्द्धमानक का प्रवेश।

मैत्रेय (पास जा) अरे क्यों रे देर क्यों की॥

वर्द्ध०। आर्य्य क्षमा कीजिए रथ पर का बिछौना भूल गया था इसी से देर हुई॥

चारु०। मित्र बसन्तसेना को उतारो रथ से॥

मैत्रेय (स्वगत) क्या बेड़ी छोड़ इसके पांव किसी ने जकड़ दिए हैं (देख कर चारुदत्त से) मित्र बसन्तसेना नहीं यह तो कोई वसन्तसेन से जान पड़ते हैं॥

चारु०। तुम्हें हरदम हँसी ही सूझती है अच्छा तुम बैठो हम उतार लेंगे (उठ कर और देख कर) ऐं यह कौन महात्मा है जिसकी हाथी की सूंड़ समान भुजदण्ड सिंह समान पीन स्कन्ध विशाल हृदय कमल नयन हैं ये सब चिन्ह तो राजा के हैं तो भी यह शृङ्खलबद्ध क्यों हो रहा है; आर्य्य आप कौन हो?

आर्य्यक। अहीरों के गांव से पकड़ बुला राजा पालक ने जिसे कैद कर रक्खा है वही गोपाल जाति आर्य्यक मैं आप की शरण हूं॥

चारु० । प्राण रहो या जाय पर शरणागत को न छोड़ूंगा बर्द्धमानक इस आर्य की बेड़ी उतार ले ॥

बर्द्ध० । जो आज्ञा (वैसाही करता है)

चारु० । आर्य अब आप कुशल पूर्वक अपने बन्धुओं से जा मिलो ॥

आर्यक । आर्य मुझे तो आप ही बन्धु हो ।

चारु० । मेरा स्मरण रखना ॥

आर्यक । क्या आत्मा को भी भूल जाऊंगा ॥

चारु० । जाओ मार्ग में देवता तुम्हारी रक्षा करें ॥

आर्यक । इस समय तो अब आप ने मेरी रक्षा की ॥

चारु० । अपने भाग्य से तुम रक्षित हुए ॥

आर्यक । इसमें भी आपही कारण हो ॥

चारु० । राजा पालक तुम्हारे फिर पकड़ने को बड़ी फिकिर में होगा इस्से तुम शीघ्र निकल जाओ ॥

आर्यक । एवमस्तु ' बाहर गया '

चारु० । राजा का अप्रियकर एक क्षण भी यहां रहना उचित नहीं मैत्रेय इस बेड़ी को उस पुरानी कुआ में फेंक दो नहीं तो कोई राजदूत देख लेंगे (बांई आंख का फरकना सूचित कर) मित्र मैत्रेय बसन्तसेना के देखने को बड़ी उत्कण्ठा है इस्से बांई आंख फरक रही है बिना भय के हृदय कांपता है इस्से अब चलो (चल कर) क्या है जो इस चलती समय मुझे अनिष्टकारी भिक्षुक का दर्शन हुआ ' बिचार कर ' यह इस मार्ग से जाता है तो चलो हम दूसरी राह से जांय " सब बाहर गए "

आर्यकापहरणं नाम सप्तमोऽङ्कः ॥

जातीयता ।

मनुष्यों में जातीयता भाव का होना दो कारणों से जान पड़ता है एक प्राकृतिक दूसरा व्यवहारिक प्राकृतिक कारण जातीयता का भिन्न २ देशों का शीत उष्ण उर्वर अनुर्वर इत्यादि का तारतम्य है और इस कारण उन उन देशों के रहने वाले मनुष्यों में जो शारीरिक और मानसिक भावों का भेद हो गया है वही एक एक जाति हो गई है इसके अनुसार योरोपीय विद्वानों ने मनुष्य जाति को ३ भेद किए हैं काकेसीय, माङ्गोलीय, और ईथियोपीय यह तीनो जाति भेद केवल स्थान विशेष में निवास के कारण मनुष्य के शरीर की गढ़न और वर्ण के अनुसार

की गई है पृथ्वी के जिन जिन स्थानों में शीत की अथवा गरमी की अत्यन्त अधिकता है एवम् भूमि अनुर्वरा और नैसर्गिक दृश्य वैचित्र Natural beauty विहीन है ऐसे स्थान के निवासी प्रायः सब ठौर एक से शील स्वभाव के हैं वे दरिद्र और दरिद्रता के कारण निठुराचारी हिंसाबिहारी प्रवञ्चना शठता मूर्खता बिश्वासघातकता आदि बुराइयों के बशवर्त्ती होते हैं उदर पोषण निमित्त आखेट आदि दुःसाहसिक परिश्रमी और कष्टसाध्य व्यापारों के करते करते सबल और साहसिक होते हैं किन्तु उस स्थान की नैसर्गिक शोभा के अभाव के कारण उनकी बुद्धि स्फूर्ति बिहीन होती है इस जाति के मनुष्य मध्य और दक्षिण अफ्रिका मध्यएशिया तिब्वत तातार प्रभृति अनेक देश के रहने वाले मनुष्य हैं केन्द्र के समीप जो देश हैं जहां बड़ी शीत है वहां के मनुष्य भी ऐसे ही हैं॥

द्वितीय श्रेणी के लोग वे है जो ऐसे स्थान के रहने वाले हैं जो न अत्यन्त शीतल है न अत्यन्त उष्ण है जहां की पृथ्वी भी कुछ कुछ उर्वरा और कहीं कहीं नैसर्गि शोभा संयुक्त है योरोप खण्ड के निवासी अधिकांश इसी श्रेणी के हैं जिनका नवाभ्युथान और सौभाग्य इन दिनों उन्नति की चरमसीमा को पहुंचा हुआ है। तृतीय श्रेणी के मनुष्य वे हैं जो ऐसे स्थान में बसते हैं जहां गरमी और सरदी दोनों समान भाव से होती है जहां की पृथ्वी अत्यन्त उर्वरा और नैसर्गिक दृश्य वैचित्र की अधिकाई से सुशोभित है ऐसा देश प्राचीन भारत प्राचीन ग्रीस और प्राचीन इटली है ग्रीस और इटली ठीक समय में अपनी अवनति की दशा देख उससे छुटकारा पाने का यत्न कर शीघ्र ही उत्कृष्ट दशा को प्राप्त हुए किन्तु भारत के भाग्य में क्या बदा है यह कुछ नहीं जाना जाता शताब्दी पर शताब्दी बीती जाती हैं तो भी इस दुर्भाग्य की वही एक सी दशा में कुछ परिवर्तन नहीं होता देख पड़ता इस समय भारत ऐसी निकृष्ट और गिरी हुई दशा में अचेत पड़ा सो रहा है कि बोध होता है मानो जीवन शक्ति इसमें रही नहीं इसकी नाड़ियों में यदि कुछ भी दम होता तो यह अवश्य उठने का साहस करता॥

हम ऊपर जातीयता का एक दूसरा कारण व्यवहारिक कारण कह आए हैं कार्य साधन सुकर होने के लिए मनुष्य का मनुष्य के साथ जो परस्पर संयोग वा

एकता वह व्यवहारिक कारण है इस जातीयता का अवान्तर कारण प्रतिवासित्व भाषा मत और धर्म आदि है; प्रतिवासी अर्थात् परोसी का परोसी के साथ परस्पर आलाप परिचय और सद्भाव के द्वारा दोनों में जो एक प्रकार का बिश्वास और सहानुभूति उत्पन्न होजाती है उसी सहानुभूति और बिश्वास केवल वे दोनों किसी महत्कार्य साधन निमित्त जहां तक एकता के सूत्र में बद्ध हो सकें उसी को हम व्यवहारिक कारण जातीयता का कहेंगे; सहानुभूति और बिश्वास यही दोनों जातीयता नदी के दो किनारे हैं एक भाषा एक मत वा धर्म एक बंश में उत्पत्ति आदि से सहानुभूति और बिश्वास की जड़ बंधती है; हम पहिले ही लिख चुके हैं कि प्रयोजन की सिद्धि इस जातीयता का फल है सो जातीयता बिना सहानुभूति के अकेली भाषा अकेला धर्म वा मत से कभी नहीं होती बरन प्रथक् प्रथक् ये तीनो जातीयता के बिरोधी हैं भारतवर्ष में जातीयता और सहानुभूति इसी कारण से नहीं होती कि यहां मत और भाषा की विभिन्नता बहुत है दूसरा कारण भिन्न २ संप्रदाय का प्रचलित होना भी जातीयता वृक्ष का उच्छेदक है प्राचीन काल में सब की एक वैदिक संप्रदाय रही और ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र चारो मिल कर भारत में आर्य्य के नाम से विख्यात थे उस समय इनकी शोभन मूर्ति पर मोहित हो यवनों की दृष्टि इन पर पड़ी और इन्हे पराजित कर उन्ही के अङ्ग में इन मुसल्मानों ने भी स्थान पाय बस गए आर्यों ने भी इन्हे अपना अङ्ग बना लिया ऐसा कि दोनों एक शरीर हो गए उस दिन से विस्तीर्ण आर्य्य शरीर में मुसल्मान रूपी एक दूसरा अङ्ग मिल कर दोनों एक देह हो गए पहिले शूद्रों को जीत इन आर्यों ने उन्हे अपना अङ्ग कर लिया था अब ये आप ही यवनों से पराजित हो उन्हे अपना दूसरा अङ्ग बना लिया इन दोनों अङ्गों के जुट जाने से अनेक शिराओं से रक्त सञ्चालन होना प्रारम्भ हो गया यहां तक की उठना बैठना बोल चाल रीति व्यवहार रङ्ग ढङ्ग इन दोनों का एक सा हो गया उसी समय समुद्र पार से नाना जाति के श्वेतमूर्ति यहां आकर उपस्थित हुए आर्य लोग उस समय ऐश्वर्य सेवा से बात व्याधि पीड़ित हो कर वातुल और उन्मत्त हो रहे थे ये श्वेतमूर्ति अपने को वैद्य विदित कर इन आर्यों से कहा कि

हम तुम्हारे उन्माद रोग की चर्चा सुन सात समुद्र के पार से आए हैं और तुम्हारे कृपापात्र बना चाहते हैं तुम हमारी चिकित्सा मन लगा कर करो तुम्हारी सब बाई हम पचा देंगे तुम्हारे सन्धिस्थान में अनेक प्रकार के शोषक द्रव्य छोड़ तुम्हारे शरीर का केवल रस मात्र शोषण कर लेंगे और ऐश्वर्य की गरमी से जो तुम्हारी आंख में मोतियाबिन्द हो गया है जिस्से तुम्हें देख नहीं पड़ता उसमें एक ऐसा रस.ञ्जन छोड़ देंगे कि उस्से यह चर्म चक्षु क्या तुम्हारे हिए की जो फूट रही है वह भी खुल जायगी तब तुम्हें अनेक प्रकार के बड़े बड़े कौतुक सूझ पड़ने लगेंगे भारत सन्तानों ने इन की कमनीय कोमल मूर्ति और मधुर वाक्यावली पर मोहित हो कुछ मुसकिरा कर इनकी चिकित्सा स्वीकार कर लिया जब तक ये अपने छल बल से इनके शरीर का थोड़ा २ रस खींचते थे तब तक जैसा किसी को सहारने से सुरसुरी होने का सुख मिलता है किन्तु जब क्रम २ इनकी जीविनी नाड़ी का रस खिचने लगा और ये अत्यन्त दुर्बल और क्षयमाण हो आर्त स्वर से चिल्लाने लगे तब ये बोले तुम चिल्लाओ मत तुम्हारे कुछ भी बाई रह जायगी तब तक तुम आराम न होगे इस्से हम तुम्हारे सन्धि स्थल में कई एक छिद्र किए देते हैं जिस्से तुम्हारी देह का सब विकार बह जायगा और तुम जल्द चङ्गे हो जावगे यह कह इनके शरीर भारत को ये तिल तिल भर नाप डाला और जहां कुछ रस बच रहा था जिसके बल आर्य्य लोग अधमुए होने पर भी स्वास लेते थे उसमें ऐसे २ छिद्र कर दिए कि अब उनके शरीर में कुछ भी न बच रहा यहां तक अब कङ्काल अवशिष्ट शवमूर्ति धारण कर भारत सर्वथा उत्थान शक्ति रहित हो गया; परन्तु इस नेत्राञ्जन से इनकी हृदय की आंख जो खुल गई है तो अब ये "बूंद के चूके घड़ा" के समान भांत २ की बातें सोच रहे हैं कोई कहते हैं हम लोगों में आपस की फूट ने सब चौपट किया कोई कहते हैं हिन्दू धरम के जाल में फस हम सत्यानाश हुए कोई कहते हैं ब्राह्मणों ने अपने फाइदे के लिए हम लोगों को जो मूर्ख कर रक्खा था उसी का यह परिणाम है कोई ईश्वर को दोष देते हैं कोई समय को कोई कहते हैं ऐसा बदा ही था कोई कहते हैं नहीं २ यह कलियुग है पर यह कोई नहीं समझता कि यह जातीयता के न

होने से सब बिगड़ा अब भी हम लोग जातीयता के लिए यत्न करें तो सब बन जा सकता है ॥

खोंटे कौन कौन।

सब से पहले हम जो सबों का ऐब ढूंढ़ २ उद्‌घाटन किया करते हैं ; दूसरे नादेहन ग्राहक पत्र लेती बार चूं नहीं करते दाम देती जून सियापा पड़ जाता है नानी मर जाती है पत्र पर पत्र लिखते रहो सनकते ही नहीं ; ज़मीदारी के हक़ में पटवारी खोंटे हैं साक्षात चाण्डाल के रूप " पीड़िताभ्योप्रजारक्षेत्काा-यस्थेश्चविशेषत: " पीड़ित प्रजा की राजा रक्षा करे कायस्थों से विशेष कर याज्ञवल्क्य का कायस्थों से इशारा इस वाक्य में इन्ही पटवारियों पर है जिसे कभी कृषि करने का काम पड़ा होगा उसे इसका भरपूर अनुभव हुआ होगा; राजपुरुषों में पुलिस के लोग खोंटे हैं सरकार ने अपनी समझ से यह महकमा इस लिए मुकर्रर किया था कि हम सबों के जान माल की रक्षा रहे पर ये जान माल दोनों को चट किए डालते हैं ; ब्राह्मणों में तीर्थली जो अपने कुचरित्रों से दान देने वाले को रौरव का पाहुन सहज में कर लेते हैं और आप तो यम द्वार के कूकुर हई हैं पण्डितों में पांचो अँगुली गप कर जाने वाले राजमान्य जो दानाध्यक्ष कहलाते हैं दान का यही मतलब है कि सुपात्र विद्वानों को दिया जाय जिसमें विद्या या सत्कर्म की वृद्धि हो सो हमारे कुण्ठित बुद्धि महाराजाओं को कभी सूझता ही नहीं इनके अनर्गल दान से भी एक प्रकार अवगुण ही होता है कि निरक्षर भट्टाचार्यों कुत्सित कर्मियों का पेट भरा जाता है अच्छे योग्य मुंह ताका करते हैं ; ऐसा ही एक तीर्थध्वांक्ष हमारे इस तीर्थराज को चिरकाल लों अपवित्र करता रहा जाने दो ऐसे पापी का कौन नाम ले मरने बाद नरक में भी कहीं उसे ठिकाना न मिला होगा वह दुष्ट मर गया पर उसके चेले चाटी अब तक तीर्थध्वांक्ष बने गाज रहे हैं जिनकी यह जीवका ही होगई है कि मूढ़ महाराजाओं से रुपए ठग सिंह का भाग सियारों को बांट मनमानता चैन उड़ाते हैं अस्तु इन खोंटों की बहुत चर्चा से क्या लाभ है इस्से बस ॥

रहस्य कथा उपन्यास।

घर आय इन्दू ने हीराचन्द से जो हाल हुआ था सब कह सुनाया; हीराचन्द बोला अच्छा हुआ पर तुम अभी लड़के हो दुनियादारी की एचपेच से बिलकुल अजान कार नहीं हो इस लिए अपने काम में हमारी इन नसीहतों पर सदा ध्यान रखना; सब आदमी अपने काम के जामिनदार आप होते हैं कहा भी है "अपनी करनी पार उतरनी" उस बड़े मालिक के दरबार में अपने २ काम का लेखा सब को देना पड़ेगा इस्से चाहिए खूब बच कर चले जहां तक हो सके फूक फूक पांव रक्खे तुम अपना काम चौकसी और होशयारी के साथ किया करना "हाथ पांव बरकाए मूंजी को टरकाए" इस मसल को समझे रहो मुझे इन राजा बाबूआनों से बहुत काम पड़ चुका है ये बड़े मदान्ध होते हैं बचे रहना जिस्में ऐसा न हो कि उन्हीं के ढङ्ग पर तुम भी ढुलक जाओ रोज़ २ का जो कुछ हाल तुम वहां देखो उसकी इत्तिला मुझसे करते रहना तब जिस तरह बर्तना चाहिए वह सब मैं तुम्हें सुझाता रहूंगा; इसने हीराचन्द को इस नेक सलाह का बहुत सा धन्यबाद दिया और दोनों अपने २ बासे में जाय नित्य के कृत्य में लगे और रात को आराम से काटा॥

दूसरे दिन से इन्दुशेखर नियत समय पर अपनी नौकरी पर जाता और जो कुछ काम बाबू इसे बताते बड़ी चौकसी के साथ करता और रोज रोज का सब हाल सांझ को घर आय हीराचन्द से कह देता था; एक दिन सांझ को घर आने के समय अचांचक बड़ा अँधियारा घिर आया थोड़ी देर तक बड़े ज़ोर शोर से आंधी चलती रही उपरान्त बड़े २ ओलों के साथ पानी बरसने लगा ११ बजे रात तक यह पानी एक रूप से बरसता रहा इन्दुशेखर का बासा बाबू के मकान से दो मील के फासिले पर था यद्यपि ११ बजे पानी थम गया था पर अँधेरी रात में इतनी दूर जाना बड़ा अगूढ़ समझ रात को वहां ही रह गया और डेहुड़ीदारों में एक टूटी सी खाट पाय पड़ रहा; डेहुड़ी के ठीक सामने एक कमरा था जो बहुत कुछ आरास्ता न था और हरदम बन्द रहता था सिवा रात के और कभी नहीं खुलता था जब कि बाबू के एकान्त मित्र देश भर के कूड़ा अवारा दो चार वहां आकर इकट्ठे होते थे; थोड़ी देर में कमरा खुला साधारण सा एक लेम्प जला

दिया गया बाबू यहां आकर बैठे खिदमतगार ने पेचवान लाय सामने रख दिया इन्दू जिसे टूटी खाट पर नींद आती ही न थी पड़ा पड़ा सब लीला एकाग्र चित्त हो देखने लगा; इतने में किसी ने आकर फाटक पर खटखटाया दरबान ने उठ कर खोल दिया यह हुक्का हाथ में लिए सीधा उसी कमरे में चला गया इन्दू अँधियारे के कारण इसे पहचान तो सका नहीं पर इसका कद लम्बा डाढ़ी गलमुच्छा रखाए हुए और गोल टोपी दिए हुए था कुछ देर तक इसकी और बाबू की धीरे धीरे कानाफुसकी हुआ की जिसे यह कुछ न भांप सका उपरान्त दोनों में एकबारगी कहकहे उड़ने लगे बाबू बोले यार भग्गू सिंह ऐसी कोई बात नहीं है जो यतन किए सिद्ध न हो; भग्गू बोला हां हां इसी लिए उस मजदूरिनी को हम ने साध रक्खा है पर माल भी ऐसा फ़्रेश और चौकड़ है कि देखोगे तो लार टपक पड़ेगी॥

बाबू। सच कहो॥

भग्गू। आप जानते हो हम कभी झूठ बोले हैं किन्तु ज़रा रुपए ज़ियादा खर्च होंगे॥

बाबू। उः क्या परवाह है रुपए हैं किस लिए तुम जानते ही हम को इन बातों का निहायत शौक है चार भले आदमियों में ज़रा रहना पड़ता है ऊपर से रँगे चुँगे न रहैं तो काम न चले वरना हमें भी तुम कुछ कम न समझो इन सब बातों के ढङ्ग तो हम से कोई सिख ले॥

भग्गू। हुज़ूर सैकड़ों ऐसे ऐसे मामिले निपटा डाले उसके लिए अलबत्ता बड़ी खौफ़ की जगह है जो अभी इन कामों में एप्रिण्टिस है॥

बाबू। हां तो फिर तुमने क्या तै किया॥

भग्गू। जी मैंने दरियाफ़ किया था वह तो एकरकम राज़ी है किन्तु॥

बाबू। किन्तु क्या?

भग्गू (तीन अँगुली देखाय) इतने सौ का खर्च है॥

बाबू। वाही ही कहे तो जाते हैं रुपए की कुछ चिन्ता मत करो तीन सौ क्या तीन हज़ार खरचने को हम राज़ी हैं; अरे ओ महरा एक चिलिम तमाखू और भर ला॥

भीतर से। हां सरकार हे ले आएउं॥

बाबू। भला तुम मका जानते हो ठक जायगी॥

भग्गू। हुज़ूर ऐसा न होता तो मैं बीड़ा

न उठाता यही पापर बेलते धोखे आए के स आप जानते ही मैं कभी चूकने वाला हूं जो इन कामों का जौहरी हूं; हुजूर मामिला भी ऐसा चोकड़ है कि आप खुश ही जांयगे अभी निरी बाला है आप तो जानते ही हैं "बाला स्त्री चोर भोजनम्" कहकहे मार हसने लगा, कल दिन में हम सब ठीक ठाक कर रक्खेंगे रात को उसी बाग में आप रहना, कहिए कुछ अमल को भी॥

बाबू। हां रिफ्रेशमेण्ट के लिए कुछ जरूर चाहिए Wait a little I have bought some fresh bottles of first rate wine from Kilner's—this morning

भग्गू very well please look shap then

बाबू भीतर गए अब भग्गू मन में बैठा बैठा सोचने लगा "बचा को खूब फसाया देखना दोही महीने में इसकी जायदाद लेखे डेहुड़े किए देते हैं ३ महीने हुए जब से इसकी हमारी जान पहचान हुई कोई १० हजार रुपए खर्च कराए उसमें आधा अमलक उस्तादों की मोड़ी हुई चैन उड़े अच्छा तो यहां क्या बिलाई के भैंस लगती है रोज नया शिकार मारना और गुलछर्रे उड़ाना इस २०० में ओ २०० हमारे बाप का ही चुका दस बीस खरच कर किसी अखोर को ला भिड़ावेंगे; वाह क्या सोच कर आए क्या हो गया इलाहीजान से कौल कर आए थे कि बाबू को तेरे यहां ला झुकाते हैं यहां कुछ और ही तार जम गया; अच्छा कुछ चिन्ता नहीं उस बुड्ढी को भी जुल देंगे नहीं कोई दूसरा असामी उसके यहां ले जाय झुकावेंगे; बाबू को देर बड़ी हुई क्या करने लगे हो आ तो रहे हैं सब के सब इन्हीं झँस लें इलाहीजान के यहां जाते हैं तब शराब का खर्चा हमी को देना पड़ता है आज इसी से मज़ा उड़ें॥

(बोतल और ग्लास लिए बाबू आए)

भग्गू। अई देर बड़ी हुई अब हम जाते हैं॥

बाबू। कैसे खफ़ा हो इतनी देर से बैठे थे जब हम माल लाए तुम चले उठकर॥

भग्गू। तो क्या यह सब हमारे ही लिए है॥

बाबू। और नहीं क्या॥

भग्गू। तो हमें तो अब देर बड़ी हुई इसे तुम्हीं अपने मसरफ में लाओ; नहीं इसे हमें दे न दो कल हमारे बाप की माहिक श्राद्ध है पितरों को भी तृप्त करेंगे

उच्छिष्ट कर डालने से पितरों के काम का न रहेगा (बीतल बाबू के हाथ से ले डुपट्टे में लपेट जाने लगा)

बाबू। ठहरो २ अभी और कुछ बात करना है; कहो उस दिन की फड़ पर तो करीब हजार रुपए के हाथ लगी॥

भग्गू। हुजूर आप से बन नहीं पड़ा आप जल्दी कर गए हम होते तो दाम दाम उतार लेते असामी बनाने को भी हिकमतें हैं; आप ने तो पहिले चुम्मे गाल काटा पहला रोज था उस दिन उसे थोड़ी चुम्मी दे रखना था दूसरे दिन ऐसा मारते कि तसमा न बचता आला बड़ी मेहनत से घात पर चढ़ा था अब हाथ आना मुशकिल है; खैर दूसरा चिड़िया फसाएंगे कोई न कोई काॅपे में आ ही जागा; तो उस हजार में तो हमारा और आप का टालमटाल रहेगा या नहीं॥

बाबू। हां हमें तुम से कुछ उज़र नहीं है॥

भग्गू। तो लीजिए कल्हो एक नया असामी और लाते हैं तो अब इस वक़्त आदाब अर्ज़ करते हैं॥

बाबू। एक बात तुम से और भी निहायत पोशीदा कहना था उसे तुम्ही कर सकोगे और हम यक़ीन करते किसी से उस्का ज़िकिर कभी मुंह पर न लाओगे॥

भग्गू। हुजूर फरमावें बन्दा बदिलोजान बजा लाने को मुस्तैद है॥

बाबू जँभाते ऐंड़ाते उठ खड़े हुए और चलते २ बोले अब आज तो बड़ी रात गई हमें भी ऊंघ आती है जाते हैं दो एक प्याले नोश कर सोएंगे कल्ह मिलोगे तो उस बात की सलाह करेंगे; बाबू भीतर गए भग्गू अपना हुक्का उठा घर की राह ली॥

पाठक जन कहेंगे दाल भात में मूसलचन्द सा यह भग्गू कौन था जो इस किस्से के बीच आकर कूद पड़ा इस लिए मैं यहां पर इसके चाल चलन का कुछ थोड़ा सा इशारा किए देता हूं; यह दिल्ली का एक आदमी था कुछ दिनों से लखनौ में आ बसा था; मसल है "मा पिलङ्गिनी बाप पिलङ्ग तिनके बच्चे रङ्ग बरङ्ग" बाप इसका छत्री था और मा बनीनी ज़ाहिरा में इस्का पेशा दलाली था पर गुप्त में मीर शिकारी के फन में बड़ा उस्ताद था॥

इंदुशेखर सा सरलचित्त जो दुनिया की शैतानी हरकतों से बिलकुल वाक़िफ न था और लोगों को ऊपर से चूना पोती

कवर समान रंगे चुंगे देख बड़े भलेमानुस और शरीफ समझ लेता था यह सब लीलाएं देख भाल उसे बड़ा अचरज हुआ ; यह बाबू को बड़ा सुशील शिष्ट और धर्निष्ट समझे हुए था यह इसे क्या मालूम कि टट्टी के आड़ में भी शिकार खेलना होता है हीराचन्द की नसीहतों को उसे याद आई और मनो मन सोचता पछताता ज्यों त्यों कर रात काटा सबेरे घर आय रात भर का सब वृत्तान्त हीराचन्द से कह सुनाया ; हीराचन्द बोला अभी तुमने क्या देखा है ज्यों ज्यों तुम इस संसार को डूब कर सोचोगे त्यों २ इसमें सिवा छल छिद्र कुटिलता और धोखे के और कुछ न पाओगे खैर अब होशयारी से बाबू के साथ बर्तना अभी बहुत बातें तुम उस के ईमान सरदूद में पाओगे वह पोशीदा सलाह जो उस आदमी से उसने करने कहा है उसका पता भी ज़रूर लगाए रहना अब जाओ कल रात भर के जागे हो नहा धो कुछ खा पी थोड़ा आराम कर लो इन्दू सलाम कर अपने बासे में चला गया ॥

शेषआगे ।

अं-४ नं-१२ ५ भाग २ देखो

उदारता इसे कहते हैं ।

हाल के भारतमित्र से ज्ञात हुआ कि कलकत्ते के एक प्रतिष्ठित कुल के बङ्गाली कुमारकान्ति चन्द्रसिंह मरती समय अपने विल में लिख गए हैं कि उनकी जायदात में से आधा धन स्कूल और कालेजों की सहायता तथा अन्यान्य देशहितैषी कामों में लगाया जाय ; धन्य है वह पृथ्वी जो ऐसे ऐसे उदारचित्त पुरुषों के पादन्यास से पवित्र हो रही है धन्य है वह सफलजन्मा जननी जिसकी कोख से ऐसे सपूत पैदा होते हैं धन्य है वह कुल जो ऐसों के जन्म ग्रहण से सु कुल हो रहा है ; एक हमारे इस देश की पृथ्वी है जहां क्रूर कायर कुटिल कुपूतों के सिवा कोई संस्कारी सत्पुत्र कभी जन्मते ही नहीं गौतम शांडिल्य भारद्वाज के सु कुल में अधम ओछी बुद्धि वाले पैदा हो २ पुराने ऋषियों के नाम गोत्र पर स्याही फेर रहे हैं सहस्र अन्त्यज जाति की मथ कर जो दोष की कालिमा निकल सकती हो तत्समान नीच कलङ्क के टीका तो बने हैं फिर भी शुक्ल दुबे तिबे चौबे बनने के अभिमान में डूबे हुए हैं वाहवे दोहो तीन चार बे से ऐसी जल्दी सन्तोष क्यों कर लिया हम तो हज़ार लाख किरोड़ बे

तेरे नाम के आगे लगाने का इरादा कर रहे थे अस्तु कहां तुह्मारी ऐसी पुन्याई जो कुछ अधिक उपाधि नाम के आगे जोड़ी जाती; इन्ही दुबे तिवों में थोड़े दिन हुए एक मतिमन्द हृदय के अन्ध पुराने खब्बूस ने यहां कुछ रुपया पुण्य किया था हम सरीखे नसूरियों के जी में करछुली फिरने लगी कि किसी तरह इस महा मक्खीचूस से यह सब रुपया झँस एक वेद की पाठशाला करें पर यह ८० वर्ष का सयाना कौआ कब हमारे कांपे में आने वाला था भल भल सिर धुना कि इसकी कीर्ति की सुगन्धि चिरस्थायिनी कर दें पर इसके गन्दे दिमाग में तो दुर्गन्धि समाई हुई थी किस नासा रन्ध्र से सुगन्ध सूंघता "जस जस सुरसा बदन बढ़ावा। तासु दून कपि रूप दिखावा" ज्यों ज्यों हम लोग इसके यत्न में लगे त्यों त्यों यह खब्बूस ज़िद्द पकड़ता गया अन्त को सब का सब रुपया एक ऐसे नीच काम में झोंक दिया जिसे सिवा अपकार के किसी तरह का कोई उपकार न हुआ; धिक् इन मूढ़ बुद्धियों,को जैसे सब काम मूढ़ता के हैं वैसे ही इनके दान पुण्य भी होते हैं केवल नाम के लिए मरते हैं वास्तविक गुण दोष पर कभी नहीं दृष्टि देते कहां से इतनी अकिल लावें दुखड़ी होती तो किसी माड़वारी से बैंची कराय खरीद लेते बुद्धि तत्व तो ऐसा पदार्थ है नहीं जिसे लखपती किरोड़पती खरीद सकें धन के इन्द्रजाल का कोई करतब एक इसी बात में तो नहीं चलता; वह बुद्धितत्व यार लोगों के जिम्मे पड़ा है जो परम दरिद्र हैं हो समयराज का प्रताप है क्या किया जाय कभी तो हमारे भी दिन बहुरेंगे अफसोस इतना ही है कि इस उन्नीस शताब्दी में हमी लोग पीछे रहे जाते हैं; हमें भी अपने मूढ़ तत्व पार्श्ववर्तियों के समान कभी अफसोस न होता पर अन्धों के बीच एक डिठियार सदृश यह जानकारी गला घोंटे डालती है; इस बेहूदे ने जैसा इसे दान समझा था सो तो बहुत दूर रहा क्योंकि चोखा दान वही है जिसे दहिना हाथ दे बायां हाथ न जाने रहा नाम सो वह नाम इन मूर्खों को कब पोसाता है कि भारतमित्र के समान सभ्य पढ़े लिखे लोगों की मण्डली में हम इसका सुचरित्र गाते और सत्कीर्ति की बेल बढ़ाते खैर न सही तो इसके नाम का स्यापा तो पीट रहे हैं; "सच है, आत्मवर्ग हितमिच्छति सर्वः" जैसा यह था वैसे ही लोगों में नाम इस

पतित ने कमाया ; मानो सदावर्त देना बड़ा पुण्य है क्योंकि इस्में भूखों को दिया जाता है पर साथ ही उस्के यह भी तो सोचना चाहिए कि सदावर्त का जैसा क्रम है उसमें किसी भूखे दूखे को दिया जाता है सिवा उनके जो निरे आवारा देश भर के छटे बदमाश होते हैं इनको देना मानो उनकी आवारगी की आदत की बेल को सींचना है इस्से यह महा अ-धर्म हुआ अच्छा योग्य मनुष्य आध सेर अन्न की भीख कब पसन्द करेगा वेदशाला से तो सिवा उस कीर्ति के जो हम लोग गन्धर्व समान सभ्य मण्डली में गाते धर्म और उपकार कैसा था सबएक और रहो अपना ही फाइदा कितना बड़ा था कि जिस ब्राह्मणता के अभिमान में बचा फूले फिरते हैं नई सभ्यता जिस्की मूलोच्छेदक कुल्हाड़ी बन रही है वेद के पुनरुद्घाटन से उस ब्राह्मणता की जड़ पोढ़ी पड़ती थी पर किस जड़ के सामने कहैं खैर इ-तना कागद ही रँगा रुची ॥

प्रेरित पत्र।

महाशय!

आप के गत मास के प्रदीप से प्रकाशित होता है कि आप को आर्मस ऐक्ट का बड़ा शोच है भला इस देश के ऐसे भाग्य कहां जो आर्मस ऐक्ट में किञ्चित् मात्र भी कमी की जाय आप अपनी लाठी की तो खैर मनाइए किसी दिन स्टिक (लाठी) ऐक्ट न जारी हो जाय इसी का यत्न करिए कि ऐसा न होय क्योंकि ऐसा जान पड़ता है कि सरकारी कर्मचारियों की समझ में एतद्देशीय मनुष्य इस योग्य भी नहीं हैं कि सहारे वा शोभा के हेतु अथवा कुत्ते बिल्ली आदिक पशुवों से बचने के लिए छड़ी भी हाथ में रखने पावें और कहीं २ तो छड़ी ले जाने की बंदी है ही जो सर्वदा को किसी समय बंदी हो जाय तो कुछ आश्चर्य नही है। माघ मेले में तो आप जानते हैं प्रायः कोई छड़ी ले जाने पाता ही नहीं और इसी कारण सुना है कि अब के पुलिस वालों से और किसी पलटन के सिपाही से कुछ झगड़ा भी हो गया था तब से रोक टोक कुछ बंद हो गई थी फिर लीजिए कलही की बात है कि चा-चड़ के मेले में छड़ी ले जाने की मनाही थी फिर सुनिए हाइकोर्ट में मुकद्दमा सु-नने जाइए तो हिन्दुस्तानियों को वहां भी छड़ी ले जाने की मनाही और ऐसा भी सुनने में आया है कि मेले तमाशों में जो लोग छड़ी अपनी पुलिस वालों के

पास छोड़ जाती हैं तो उनमें जो अच्छी छड़ी हुई उनका लौटने पर पता भी नहीं लगता अब हम नही कह सकते कि यह छड़ियों की मनाही प्रधान कर्मचारियों की आज्ञानुसार होती है वा केवल पुलिस वालों का अंधेर है, जो पहली बात ठीक है तो हमको अपनी न्यायकारी गवर्नमेंट से प्रार्थना करना उचित है कि यह बंद हो जाय क्योंकि इससे प्रजा को कष्ट होने के इतर कोई लाभ नहीं है और जो केवल पुलिस वालों की धांधली है तो इस का कोई ऐसा उत्तम प्रबंध हो जाना चाहिए कि प्रजागण इस आपत्ति से बचें। लोग यह भय खाते हैं कि जो हमने इन से मुकाबिला किया तो दफै १८६,१८८ ताजीरात हिन्द में न फस जाय और जो यह सोचे कि चलो इसका उपाय साहब मेजिस्ट्रेट से पीछे कराय लेंगे तो वही कहावत होगी कि छदाम की बुढ़िया टका सिर मुड़ाई जितना क्लेश उस धाधली के सहने में नही उससे अधिक क्लेश नालिश और उसकी संभाल में उठाना पड़े इससे हमारी समझ में सुगम उपाय यह है कि एक मजिस्ट्रेट शहर में खास इसी काम के लिए रहै कि जिन मनुष्यों पर पुलिसवालों की तरफ से अत्याचार हुआ करै वे सीधे उसके पास चले जाय और वह उसी समय विचार करके जैसा कुछ उसकी समझ में आवे हुकुम दे दें और यह मजिस्ट्रेट हर मेले तमाशे में भी मौजूद रहा करै तो इस प्रबन्ध से प्रजा को भी यह साहस हो जायगा कि जहां कहीं किसी पुलिसवाले ने कुछ जबरदस्ती की तो वह वहीं पोलिस मेजिस्ट्रेट से जाकर कह देंगे इससे पोलिस को भय हो जायगा और अत्याचार कम होगा; यह मैजिस्ट्रेट पोलिस का अफसर न होना चाहिये नही तो वह पुलिस की तरफ दारी अवश्य करैगा। बरन रईसों में से किसी का होना बहुत उत्तम होगा

आपका कृपाकांक्षी
हरदेवप्रसाद

सम्पादक महाशय।

सब लोग कहते हैं कि रेल से बड़ा आराम हो गया यह बात ठीक है परन्तु इसके सङ्ग एक क्लेश भी भारी हो गया वह यह है कि रेल के हो जाने से और सब रस्ते बन्द हो गये अब रेल वालों के हाथ से चाहो जितना क्लेश सहै पर इसके सिवाय कि रेल पर ही सवार हो कर जाय और कोई उपाय नहीं सूझता ऐसी

अवस्था में यह उचित है कि गवर्नमेंट रेल वालों के प्रबन्ध में जो बुराई हो उस को अवश्य ठीक करावे नहीं तो प्रजा को बड़ा कष्ट होता है आप अपने पत्र द्वारा रेल वालों के दुराचार को प्रगट करके गवर्नमेण्ट से प्रार्थना करिये कि इसका ठीक ठीक प्रबन्ध हो जाय प्रथम तो यह बड़ा अन्धेर है कि जेलखाने में भी बँधुओं के कुटुम्बी और मित्र उनको देख सक्ते हैं परन्तु स्टेशन के भीतर होते ही कोई इष्ट मित्र उनके सङ्ग नहीं रह सकता रेल के सिपाही किसी को भीतर जाने ही नहीं देते सिवाय उसके कि जिसके पास टिकट हो आप जानते हैं कि बहुधा ऐसा होता है कि किसी आदमी को आप सङ्ग जाने को अवकाश न हुवा तो वह अपने स्त्री लड़कों को यह समझ कर अकेले ही भेज देता है कि यहां हम अच्छी तरह सवार कराही देंगे रस्ते में कुछ और काम नहीं है जब जगह पर पहुंचेंगे तो वहां के इष्ट मित्र जिन के पास जाते हैं आकर लिवा ले जांयगे अब जब वह बाहर ही रोक दिये गये और अपने लोगों को अच्छी तरह गाड़ी में भी न बैठा पाये तो कहिये कि उनके चित्त को कितना क्लेश होगा सिवाय इस के हमारे यहां की स्त्रियों की दशा तो आप जानते ही हैं कि घर में रहते रहते उनको बात करने का भी सलीका नहीं होता मेम साहब हों तो वह तो सब तरह से हुशयार और उनका अदब भी सब करते हैं चट किसी गाड़ी में सवार हो जाय और इनको सब तरह आराम मिले परन्तु इन हिंदुस्तानी स्त्रियों को तो बड़ी ही आपत्ति होती है रेल वालों को इसमें कौन हानि है लोग अपने इष्ट मित्रों को गाड़ी पर सवार करा के चले आया करें कोट पतलून पहन के चाहो कोली चमार भी चला जाओ उसको कोई नहीं रोकेगा यह सब खराबी हम लोगों के लिये है चाहै कोई कैसा ही रईस भला मानस क्यों न हो गवर्नमेण्ट इस पर दृष्ट करे और इस खोटे दस्तूर को बन्द करादे॥

दूसरी खराबी यह है सवार होती दफे रेल के नौकर ऐसा अत्याचार करते हैं कि धक्के दे दे कर लोगों को गाड़ी के भीतर पेलते हैं और कभी कभी तो एक एक गाड़ी में १३, १४ मनुष्य तक भर देते हैं कि दम घुटने लगता है और कभी माल-गाड़ी में लाद कर दरवाजा बन्द कर देते हैं कहिये उन बेचारों की कैसी दुर्दशा होती है क्या उनके जान नहीं होती

कि वह आदमी नहीं हैं और जो कहिये कि जब गाड़ी नहीं रहती तब ऐसा किया जाता है तो यह भी रेल वालों का कसूर उनको हमेश दो चार गाड़ी फाजिल हर जगह रखनी चाहिये कि जब जरूरत हो तब लगा दी जाय इस देश से करोड़ों रुपया कमाया क्या उचित है कि दो चार गाड़ी के लालच से इतना कष्ट यहां के निवासियों को दें और चाहो रेल वाले अपने लालच से कुछ करैं परंतु गवर्नमेण्ट को अपनी प्रजा के सङ्कट का अवश्य ध्यान होना चाहिये और रेल वालों को आज्ञा होनी चाहिये कि वह अपने प्रबन्ध को ठीक करैं जिसमें प्रजा को कष्ट न हो॥

आप का कृपाभिलाषी
ह० प्र०।

हमारे एक अति प्रियान् मित्र ने यह गज़ल हमें दिया है इसमें उर्दू शायरी की जो कुछ उमदगी है उस्की परख ग्राहक जन आप ही कर लें॥

गज़ल।

मुझे बोसा देना हो दे भी दे नहिं साफ कह दे कि हां नहीं। तेरे लब नहीं कि दहन नहीं कि दहन में तेरे ज़बां नहीं॥ मैं वह सरवे बाग वजूद हूं मैं वह गुल हूं चमने हयात का। जिसे बू य गुल की खुशी नहीं जिसे रंज बाद खिज़ां नहीं॥ जो उठे तो सीना उभाड़ कर जो चले तो ठोकर मार कर। नए आप हो नौ जवान हैं कोई और जहां में जवां नहीं॥ बहुत इस पर तू न घमण्ड कर तेरा मू है चांद हुआ करै। कहीं पुरज़े २ उड़ा न हो मेरा दिल भी कोई कता नहीं॥ वह अर्श पर वह है फर्श पर कोई खास उसको मकां नहीं। वो यहां नहीं वो वहां नहीं वो कहीं नहीं वो कहां नहीं॥ उठो कद्र इसपै न जान दो अजी जान है तो जहान है। कोई काम ऐसा भी करता है अरे क्यां नहीं अरे क्यां नहीं॥

पारितोषिक।

बंगाली नामक समाचार पत्र में लिखा गया है कि अवध में बहराइच ज़िला के एक महराज सिङ्ग ने २००) का पारितोषिक उसके लिए नियत किया है जो हिन्दी या उर्दू में ऐसा ग्रंथ बनावे जिसमें कृषिकर्म और पशु पालन की परिपाटी विवरण समेत सरल भाषा में हो जिसे

सब किसान सहज में समझ कर खेती तथा पशु पालन में तरक्की कर सकें धन्य हैं ये महानभाव पुण्यशाली नरेश आखिर उसी कोशल देश के एक प्रान्त के नरेश हैं जहां इक्ष्वाकु रघु रामचन्द्र सरीखे अनेक पृथ्वीपति हो गए हैं जिन्हों ने अपूर्व विक्रम के द्वारा धरित्री का भार हलका कर दिया यह खबर सच्ची हो या झूठी बङ्गाली अखबार के एडिटर जानें. पर हम तो यह हाल सुन निहाल हो गए हमारे उस प्रमोदाङ्कुर के सींचने के लिए मानो यह अमृतवर्षी वारिद हो गया जो विद्याम्बुधि सुधाकर महाराज दरभङ्गाधीश के विज्ञापन से उगा था और अब तक प्रफुल्लित दशा में रहा जगदीश ऐसे ऐसे प्रतापी महाराजों के राज्य सुख वैभव को बढ़ाता रहे जो बातें स्वप्नवत् हो गई थीं वह इनकी कृपादृष्टि से हमारे कर्ण पुट में निधड़क पड़ने लगीं साहबान् अङ्गरेज़ जो इन बातों के परम रसिक हैं कैसे प्रमुदित होंगे कि हमारे शासित परम प्रिय भारतवर्ष के नरेश भी उन गुण गण प्रसून मधुकरों की वृत्ति धारण करने लगे जिसके प्रभाव से यूरोपीय उत्तरोत्तर उन्नतिमय शैल की चोटी पर चढ़े जाते हैं ; नाम को चिरस्थायी रखने और कीर्ति की प्रकर्षता को इससे बढ़ कर कौन दूसरी उपाय है फिरभी हमारे महाराज लोग तथा धनी जन यह नहीं सोचते कि जो ग्रंथों में नाम लिख दिया जाता है वह अजर अमर हो जाता है जिनके नाम इतिहास और पुराणों में न लिखे होते तो उन्हे कौन जानता जब बेटे पोते परोते नहीं रहते और बाग तालाव मन्दिर का चिन्ह तक मिट जाता है तब भी ग्रंथ मालिक के नाम को धारोहर थाती की भांत केवल रक्षा ही नहीं करते बरन नित्यश: प्रकाशित करते हैं पर क्या किया जाय हमारे महाराजों को इतनी छुट्टी तो मिलती ही नहीं सैकड़ों बखेड़ों में लगे रहते हैं किसको निपटावें किसको रख छोड़ें ऐसी २ बातों को कौन जून सोचें ; सवारी शिकारी खेल कूद अहेर करना नाच तमाशा हँसी ठट्ठा दौड़ धूप साहब सूबा से मिलना जुलना आदि इतने काम हैं कि जो गिनाए जांय तो उन्हीं सब का एक ग्रंथ बन जाय और जो कहीं महाराज को भक्ति उपासना काण्ड में चुभ गई तो जप तप पूजा पाठ तीर्थ व्रत भजन भाव तथा उलटे सीधे भजन गढ़ गाने वालों को सिवाय अपने कानों सुनना अनेक मुफ़्तखोरे मँगता याचकरूपा

जी वा वारवनिता जनों का सन्मान करना मस्त महन्त बैरागी आचारियों की तोंद पोखना आदि कितने बड़े २ धन्धे हैं जो और किसी को इतने काम करने पड़े तो पागल हो जाता इस लिए हम अपने देशवासी गुणी जनो को सूचना देते हैं कि यदि हमारे राजा बाबुओं में कोई कभी विद्या गुण के प्रकाश में थोड़ी भी रुचि प्रकाश करें तो उनके उत्साह बढ़ाने और पुष्ट करने में प्रयत्नवान् हों अच्छे २ आशय और आर्टिकिल चुन २ के अभिलषित विषयों के ग्रंथ बनावें और अपने प्रिय नरेशों के मृदुल चित्त को हुलसावें हुजूर में जो ग्रंथ पेश किए गए हों उन की मंजूरी तथा उत्तर मिलने में देर हो तो घबराकर यह न समझें कि उनका परिश्रम निष्फल और निरर्थक होगा निज आज्ञानुगामी ग्रंथकार वा कवि के दान मान कृपिणता पिशाची को कभी पास न आने देंगे और जिन गुणी जनों को पुरस्कार प्रदान हो उस्का ब्योरेवार सब हाल भी अङ्गरेजी और हिन्दुस्तानी समाचार पत्रों में छपवा देंगे जिसे देख औरों को भी रुचि बढ़े विशेष वर्णन हम उस समय लिखेंगे जब कभी हमारी एक पंक्ति पर भी प्रभु वरों का दृष्टिपात होगा॥

तत्ववेत्ताओं के सिद्धान्त का निर्णय।

जिसने आपि को न जाना वह पैदा होके क्या किया।

जो जीवन्मुक्त न हुआ वह मरने पर क्या मुक्त होगा।

सुख दुख वास्तव में कुछ नहीं है केवल मान लेने की बात है।

जिसने इच्छा के अंकुर को अपने चित्त आलवाल में न जमने दिया उसे सुख दुख मानने की कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ती "निस्त्रैगुण्यपथंजगत्"।

स्वभाव सब से प्रबल है ईश्वर भी स्वभाव से बाहर कभी कोई काम नहीं करता ईश्वर में अकर्तृत्व अनिच्छत्व आदि धर्म सब स्वभाव से हैं स्वभावस्थ हो जाना ही तत्वज्ञान की पहचान है।

मन का नाश कर देना ही परम पुरुषार्थ है।

न कभी कोई मरता है न कभी कोई पैदा होता है जगत् का विवर्त अर्थात् एक रूप से दूसरे रूप में हो जाना ही मरना और जीना है; वास्तव में न कोई मरता है न कोई जीता है "नजायतेन म्रियते कश्चित्किंचित्कदाचन। जगद्विवर्तरूपेण केवलंब्रह्मजृम्भते" स्नेह ही दुख है जिसमें जितना स्नेह है उसे उतना ही दुःख तत्ववेत्ताओं ने अनुभव किया है "यावतःकुरुते जन्तुःसम्बन्धान्मनसःप्रियान्" —

अग्रिम मूल्य	२।)
पश्चात देने से	४।)
एक काॅपी का	।)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD,—1st May 1881. | प्रयाग वैशाख शुक्ल २ सं० १९३८.
Vol. IV.] [No. 9. | जि० ४] [संख्या ९

Sickness of wisdom.

समझदारी बेइलाज बीमारी है।

हकीमों ने सब मर्ज की दवाइयां अपने २ तिब्ब में तजवीज़ कर लिख दी हैं पर समझदारी यह ऐसी कठिन बीमारी है कि इसकी दवा कहीं मिलती ही नही मूढ़ ना समझ सब से भले जिन्हे जगत की गत कभी व्यापती ही नहीं यहां जानकारी ही गला घोंट रही है पहले तो इस व्याधि का प्रतीकार यूनानी मिसरानी किसी हिकमत से निसबत नहीं रखता कदाचित नए लुकमान फिर से पैदा हो कुछ इलाज निकासते सो अब चिरकाल तक हमारे शरीर में सुख पूर्वक रह कर इस बीमारी ने ऐसी मज़बूती पकड़ ली

है कि किसी तरह साध्यन रही अब लुकमान के बाबा क्यों न आवें किसी की तजवीज़ कभी कारगर होने वाली नहीं है ; यह बीमारी कई तरह से पैदा होती है बहुत पढ़ते २ दिमाग में एक तरह का फितूर आजाता है तब यह हर एक बातों का आगा पीछा सोचा किया करता है आगे को क्या होनहार है इस समय क्यों ऐसा हुआ और क्यों कर अब फिर ऐसा न हो ; समझदारी की बीमारी में जो मुबतिला हैं उनका साथ करने से उनकी बात सुनने से देश देश घूमने से हर मज़हब और किस्म के आदमियों के साथ मिलने झुलने और उनका बहुत ज[illegible] सम्पर्क रहने से यह व्याधि बहुत [illegible]ढ़ती है ; बहुत से रोग infectious [illegible]म्पर्क से बढ़ते हैं इस समझदारी रोग को सम्पर्क में भी कुछ असर नही है नासमझ जो इस रोग से बचे हैं उनका हम बहुत कुछ सम्पर्क कर चाहते हैं कि यह भूत उन पर भी सवार हो जाता पर यह "यत्पठितं तद्गुरवे समर्पितं" वाली मसलसमान समूचा का समूचा हमारे पास उलटा फिर आता है क्या इमकान कि एक ज़र्रा भर भी कहीं किसी की कोरे रग में घुसा रह जाय ; यह बीमारी पहले भी किसी को होती रही हो कुछ ठीक पता नहीं लगता विशेष फैलाव इसका इस उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ है और हम विचार कर देखते हैं तो अङ्गरेजी शिक्षा के साथ २ रोज २ इसका जोर बढ़ताही जाता है हे भगवान देश का देश जब इस रोग का रोगी हो उठेगा तो क्या हाल होगा बड़ी बात कि हमी अकेले इस व्याधि से पीड़ित नहीं हैं किन्तु हमारे समान किरोरों पड़े होंगे नहीं तो हम मारे सोंच के काहे को जीते रहते ; अच्छा तो अब क्या किया जाय हम पहले लिख चुके कि इसका इलाज नहीं है तो अब इससे बचने को सिवापथ्याचरण के और क्या उपाय हो सक्ती है "पथ्येसतिगदार्तस्य किमौषधि निषेवणैः" तो लो सुनो हम पथ्य बतलाते हैं आलस्य और कर्म हिम्मती की गठरी बांध सिर पर रख लो मूर्खता का जुआ कन्धे पर रख वृषभ तुल्य बहते रहो खबरदार बोझ से पीड़ित हो थक कर कहीं उतार कर फेंक न देना नहीं तो हमारी सी बीमारी में तुम भी चट फस जावोगे सब के ऊपर एक बात पथ्य की तुम्हे बताए देते हैं गांठ बांध रक्खो जून पर कभी को काम दे जायगी वह यह है कि सुनो स-

मझ वाले बुड्ढों के कहने के बार बराबर इधर उधर न टसकना नहीं यह तन दुरुस्ती चट्ट सटका देगी फिर यह तुम्हारी मोटी तोंद सिवा भुस भरने के और किसी काम की न रहेगी पड़े २ मक्खी मारा करोगे कोई बात न पूछेगा; और सुनो घर में बन्द रहा करो बाहर न निकलना नहीं तो धर्म जाता रहेगा आपस में चीत्कार ध्वनिपूर्वक खूब खरखुंद किया करो जहां तक जोश और सरगरमी तुम्हारे तन में हो सब को एकबारगी काम में लाय किसी अपने परोसी भाई के बिनाश में तत्पर हो राजा बाबू हो तो गद्दी के खटमल बन फिजूलखर्ची को अपनी पटरानी कर लो नहीं तो अमीरों में फर्क पड़ जायगा हराम का खाने वालों का काम फिर कहां से चलेगा हम चाहो रटते २ मर जांय हमारे नाम तुम्हारा एक पैसा भी शिव निर्माल्य रहे उदार बनना हो तो रूपा जीवा और उनके चेलों का भरण पोषण करते रहो तुम्हारे दान धर्म ऐसे होने चाहिएं कि जिस्से किसी तरह की भलाई की सूरत कभी न पैदा होसके; ये सब बातें हमने तुम्हें पथ्य की बताईं इसके अनुसार चलते रहोगे तो सदा कल्याण से बीतैगी कहीं पछताओगे॥

अङ्गरेज और हिंदुस्तानियों के मुकाबिले में भोग लोलुप luxurious किसे ठहराना चाहिए॥

केवल तो सम्पूर्ण भोगलोलुपता रुपए से होती है उसकी क्षीणता जैसी हमें है सब प्रगट है खैर माना कि हम बहुत दिनों से बिगड़ते चले आए हैं और संसार भर की पल्ले सिरे की भोगलोलुपता में बदनाम मुसल्मानों के चिरकाल से साथी और परोसी हो रहे हैं सभी दोष की खान बने बैठे हैं भोगलोलुप हुए तो क्या अचरज है; हिन्दुस्तानी ऐयाश फिजूलखर्च आरामतलब आसक्ती सुस्त दगाबाज़ फरेबी मन्दधी जो जो कहो हम सब कहे जांय क्या करें दबी बिल्ली चुहों से कान कटाती है पर बिचारशक्ति को काम में लाय देखा जाय तो तराजू के दो पलरों में किस ओर का भारी ठहरता है फर्ज़ करो एक पलरा अङ्गरेज़ों का है दूसरा हम हिन्दुस्तानियों का लो चलो पहले हम अपने लोगों में महाजनों को लेते हैं क्योंकि ये सब से अधिक नासमझ फ़िजूलखर्च और आराम तलब समझे गए हैं सोचिए तो ये बेचारे कितनी मेहनत और कांफिशानी से रुपया पैदा करते है

अगर लेन देन का रोज़गार करते हैं तो ऐसे २ कानून गढ़ दिए गए हैं कि अदालत दौड़ते दौड़ते फुचरा निकलता है अगर इस्ताकेदारी करते हों तहसीलदार साहब की ताबेदारी में दौड़ते दौड़ते प्राण जाता है शहर में दूकान या कोठी चलाते हों कोतवाल या पुलिस की ताबेदारी बजाया करें कोतवाल साहब के यहां मोहफिल या कुछ काम काज आ लगा बनिये और दूकानदारों के जी की आफत हुई अब बताइए इनका भोगबिलास और आरामतलबी कहां रही दिन रात मेहनत करते करते दांतों पसीना आता है फिर भी इस राज्य की शोभा टैक्स और खुशी देते देते सब नफा न जानिए कहां घुस जाती है ढांक के ३ पत्ते हाथ लगते हैं मुंह खाते हैं पेट लटाते हैं; हम लोग अपव्ययी हैं इस लिए ब्याह शादी में अधिक खर्च कर डालते हैं यह किस्से कहें कि जितना हमारा ऐशेमौकों में खर्च हुआ करता है उतना इनका Necessities of life रोज़मर्रा के आमोद प्रमोद में उठता है यह क्योंकि हम लोगों की जाफत फिजूलखर्च में दाखिल सड़े २ मौकों पर साधारण से व्याल में हज़ारो उठ जाती हैं वह परमित व्यय में शामिल किया गया है ; आनन्द से बंगलों में टट्टी पङ्खों के बीच पड़े २ आराम किया करते हैं फिर भी बड़े परिश्रमी हैं हम धूप में जूतियां चटकाते मारे फिरते हैं सो आरामतलब हैं हम लोग जितने का कपड़ा साल भर में पहनते हैं उतने का मिसराइवा का एक शीन बनता है सुनते हैं ३ करोर का महारानी के खाने की मेज़ का बर्तन अकेला है जितना रुपया हमारे बड़े २ महाराजों के खज़ाने भी न होगा अब विचारना चाहिए कि कौन अधिक भोगबिलासी और अपव्ययी हैं पर क्या करें हमारे दिन ही ऐसे हैं जो हमें हर तरह की बदनामी दिलाते हैं ; इसकाल की कुटिल गति को कौन स्थिर कर सक्ता है जो कभी किसी के लिए विष्णु की पालन मूर्ति धारण कर तत्रत्य मनुष्यों को आनन्द से परिप्लुत किए रहता है कभी किसी के लिए यह अपनी आनन्दमयी मूर्ति पलट पाषाण सदृश कठोर मूर्ति धारण कर लेता है और त्रिपुरान्तक रुद्र की सी चेष्टा किया करता है अन्त को चिरस्थायी कभी न वही दिन रहा है न यह बिपत्ति का समय सदा रहेगा ; अनन्त अथाह समुद्र के समान इस विपुल संसार की भी सीमा नहीं है नक्र मक्र

संकुल महा समुद्र जिस तरह प्रवल वायु ताड़ित हो बड़ी २ लहरों से सदा तटाभिघात किया करता है तद्रूप यह संसार भी प्रतिक्षण सुख दुःख रूपी वीचिमाला से उद्वेलित हो समयराज की अनन्त सीमा का प्रतिघात किया करता है ॥

मृच्छकटिका।

आठवां अङ्क।

स्थान

जीर्णकरण्डोद्यान।

(ओढ़ी गुदड़ी ओढ़े एक बौद्ध सन्यासी का प्रवेश)

संन्यासी। अरे अज्ञ लोगो धर्म करो ये सब इन्द्रियां बड़ी चोर हैं चिरकाल तक कठिन तपस्या से सञ्चित धर्म को हरे लेती हैं इस्से इनसे चौकस रहो मन को मारो ध्यान में जागते रहो; मैं तो संसार की असारता देख धर्म के शरण में आया हूं जिसने पाचों इन्द्रियों को जीत मन को अपने वश में किया अविद्या को मार शरीर की रक्षा की और दुर्बल अहङ्कार का संहार किया वही मनुष्य स्वर्ग में जाता है; जिसने सिर मुंडाया मुह मुड़ाया मन न मुड़ाया तो क्या मुड़ाया; अब मैं शकार के उद्यान की इस पुष्करिणी में गेरुआ वस्त्र धो चला जाऊं (जाकर धोता है)

नेपथ्य में। खड़ा रहरे दुष्ट भिक्षुक खड़ा रह ॥

संन्यासी (देख कर डर से) राज श्यालक संस्थानक आया क्या? एक किसी संन्यासी ने कभी को इसका कुछ अपराध किया था तब से जब कभी यह कि[illegible] भिक्षुक को देखता है डण्डों को मार[illegible] रने लगता है अब मैं अशरण किस्को [illegible]ण जाऊं अथवा स्वामी बुद्ध देव मेरे [illegible] रक्षक हैं।

खड्ग लिए विट के साथ शकार का प्रवेश।

शकार (आकर) खड़ा रह रे दुष्ट संन्यासी खड़ा रह मैं अभी तेरा सिर तोड़ता हूं (मारता है)

संन्यासी। उपासक क्षमा करो ॥

शकार। भाव देख मुझे गाली देता है॥

विट। क्या कहता है ॥

शकार। मुझे उपासक कहता है क्या मैं नाऊ हूं ॥

विट। नहीं २ बुद्धोपासक कह आप की स्तुति करता है ॥

शकार। अरे दुष्ट भिक्षुक तू यहां क्यों आया ॥

संन्यासी। इस पुष्करिणी में गुदड़ी धोने को॥

शकार। अरे दुष्ट भिक्षुक मेरे बहनोई राजा ने यह बगीचा मुझे दिया है इस पुष्करिणी में कुत्ते सियार पानी पीते हैं पुरुषों में श्रेष्ठ मैं भी इसमें नहीं नहाता उसमें तू चीलर भरी पुरानी गुदड़ी धोकर इसके पानी को दुर्गन्धित और गँदला करता है ठहर ठहर मैं तुझे एकही चोट करता हूं (मारता है)

विट। अरे यह निरपराध है इसे छोड़ दो (शकार से उसे छुड़वा देता है और भिक्षुक गुदड़ी लिए भाग जाता)

विट। भाव आइए इस स्वच्छ शिला पर बैठें (दोनों बैठ जाते हैं)

शकार। मैं अभी तक बसन्तसेना को स्मरण करता हूं दुर्जन के बचन सी वह मेरे चित्त से दूर नहीं होती स्थावरक चेट से कह आए थे जल्द रथ लेकर आ न जानिए क्यों अभी तक नहीं आया भूख बड़ी लगी है दो पहर हो गया पैरों कैसे जा सकूंगा (सुन कर) भाव रथ की सी घड़घड़ाहट सुन पड़ती है॥

रथ पर बसन्तसेना को लिए स्थावरक का प्रवेश॥

शकार (पास जा) पुत्रक चेट आया॥

चेट। हां मालिक आएउं॥

शकार। तो रथ को भीतर ले चल॥

चेट। मालिक कौन राह से॥

शकार। इसी खांई के ऊपर से॥

चेट। मालिक बैल मर जैहैं मऊं म रौंगा रथ टूट जैहै॥

शकार। अरे राजा का साला हूं बैल मरैंगे दूसरा मोल लूंगा रथ टूटैगा दूसरा बनाऊंगा तू मरैगा दूसरा सारथी रक्खूंगा॥

चेट। सब होंगे पर महीं न होंगा (रथ चलाता हुआ) टूट रे रथ दूसरा बनै (भीतर जाकर) अहा न टूटा; मालिक रथ आयगा॥

शकार। न बैल टूटे न रस्सी मरी न तू मरा॥

चेट। मालिक का धरम सहांय भा॥

शकार। भाव आओ रथ को देखें तुम मेरे गुरू के गुरू हो आदर योग्य हो इससे पहले तुम इस रथ पर चढ़ कर देखो॥

विट। अच्छा चढ़ता हूं (चढ़ने लगा)

शकार (उसको टांग पकड़ खीचता है) ठहर क्या तेरे बाप का रथ है जो आगे चढ़ेगा मैं रथ का स्वामी हूं पहले मैं चढूंगा॥

विट। अरे तूही ने तो कहा था (उतरता है)

शकार। अब मैं चढ़ूंगा (चढ़कर और

देख कर डरा सा तुर्त उतर विट के गले से लिपट) भाव सुआ सुआ रथ पर तो कोई राक्षसी या चोर है ॥

विट। मत डर मत डर घाम से तेरी दृष्टि मन्द पड़ गई मैं देखता हूं (देख कर स्वगत) ऐं यह तो बसन्तसेना है मृगी व्याघ्र के पंजे में कैसे आ कर फसी, दोहा। चन्द्र विम्रह छवि हंस को मान सरोवर बास। छाड़ि मराली ह्यां कहां आई बायस पास ॥ बसन्तसेना यह तेरे योग्य न था कि दस सहस्र का सुवर्णालङ्कार जो राजा के साले ने भेजा था उस समय गर्व से उस्का तिरस्कार कर दिया अब द्रव्य के लोभ में माके कहने से क्यों आई ॥

बसन्त०। नहीं (सिर हिलाती है)

विट। अब सब लोग साधारण वेश्या समान तुझे क्षुद्र समझेंगे इसी से मैंने पहले ही कहा था प्रिय हो या अप्रिय तू दोनों का सेवन कर ॥

बसन्त०। रथ के हेर फेर से मैं यहां आ गई अब तुम्हारे शरण हूं ॥

विट। न डर (स्वगत) अब किसी हिकमत से इस मूर्ख से इस्का पिण्ड छुटावे (शकार के पास आया) सचमुच इस पर कोई राक्षसी है ॥

शकार। जो राक्षसी है तो तुझे चुराया क्यों नहीं जो चोर है तो तुझे खाया क्यों नहीं ॥

विट। इस व्यर्थ के बकवाद से क्या चलो पांव ही पांव सड़क पर केहुचों की छाया में हो कर उज्जैनी चले चलें ऐसा करने से थोड़ा सा भ्रमण हो जायगा और बैल भी थक गए हैं कुछ आराम कर लेंगे ॥

शकार। अच्छा कहता है स्थावरक चेट रथ ले जा अथवा ठहर नगर में सब पुरवासियों के सामने पावों कैसे चलूंगा रथ पर चढ़ कर चलूं जिसमें लोग देख कर कहें यह राजा का साला भट्टारक जाता है ॥

विट (स्वगत) इस मूर्ख के मूर्खता रोग की औषधी दुष्कर है हो अब इस्से साफ साफ कह दूं (प्रकाश) अरे दासी पुत्र बसन्तसेना रमण कराने को आई है ॥

शकार। भाव मैं मनुष्यों में प्रबल बासुदेव हूं उस समय इसे रुठा दिया था अब पांव पड़ मनाऊं ; हे सुगात्रि मैं तुम्हारा दास हूं प्रसन्न हो (पांव पर गिरता है)

बसन्त०। दूर हट नीच (उसे लात मारती है)

शकार (क्रोध से) जो मेरे सिर को

लड़काई में हजारों बार मा ने चूमा था जो सिर कभी प्रणाम के लिए भी किसी के सामने नहीं झुका, हा उस सिर को इसने लात मारा जैसे मुर्दे केदेह को सियार और कुत्ते लात मार मार चीथते हैं अरे स्थावरक चेट तूने इसे कहां पाया॥

चेट। मालिक राह रुकी रही मैं चारुदत्त के बगीचा के पास रथ खड़ा कर जब तक पहिया फेरों इतने में यह चढ़ आई॥

शकार। तो रथ के हेर फेर से वे जाने आ गई मेरे साथ रमण कराने की इच्छा से नहीं आई; उतर उतर रांड मेरे रथ से उस दरिद्र चारुदत्त के साथ रमण कराय मेरे रथ पर चढ़ती है उतर उतर गर्भदासी उतर॥

बसन्त०। चारुदत्त से रमण कराती है इस कहने से मैं अलङ्कृत हो गई॥

शकार। अब नहीं उतरती तो इन कमल दल अपने सुन्दर हाथों से इसका बाल पकड़ बाली की स्त्री को जटायु समान नीचे खींचता हूं॥

विट। कोमल लता पत्र छेदन योग्य नहीं होती तू ठहर मैं इसे उतार लेता हूं बसन्तसेना उतर आ (बसन्तसेना उतर कर अलग खड़ी हो जाती है)

शकार (स्वगत) अब इसे मार डालूं (प्रकाश) भाव जो तला हुआ टटका मांस खाना चाहता हो और चित्र विचित्र वस्त्र पहनने की इच्छा हो॥

विट। तो क्या॥

शकार। तो मेरा कहना कर॥

विट। हां करूंगा परन्तु अकार्य्य छोड़ कर॥

शकार। भाव अकार्य्य की गन्धि भी नहीं है कोई राक्षसी नहीं है जो तुझे खा लेगी॥

विट। तो कह॥

शकार। बसन्तसेना को मार डाल॥

विट। बाला स्त्री जो नगर की शोभा वेश्या हो कर भी चाल चलन में कोई वेश्यापन नहीं रखती और निरपराध है इसे जो मार डालूं तो किस नाव पर बैठ यमपुरी की भयङ्कर नदी वैतरणी के पार हूंगा॥

शकार। मैं तुझे नाव दूंगा एकान्त में मारते तुझे कौन देखता है॥

विट। मुझे दसो दिशा बनके देवता चन्द्रमा सूर्य्य धर्मराज वायु आकाश अन्तर्यामी परमात्मा और भूमि जो सब के पाप पुण्य के साक्षी रहते हैं देख रहे हैं॥

शकार। तो वस्त्र से ओट कर मार॥

विट। मूर्ख तू नष्ट परलोक है मैं ऐसा कभी न करूंगा॥

शकार। यह बुड्ढा सियार अधर्म और परलोक से डरता है तो अब स्थावरक चेट से कहूं; बेटा स्थावरक मैं तुझे सोने का खड़ुआ बनवा दूंगा॥

चेट। मैं भी पहिनोंगा॥

शकार। तुझे सोने का पीढ़ा गढ़ा दूंगा॥

चेट। मैं भी बैठोंगा॥

शकार। अपना सब जूठा तुझी को दूंगा॥

चेट। मैं भी खाकार तिरपित होंगा॥

शकार। अपने सब नौकरीं में तुझे सुखिया करूंगा॥

चेट। तो मैं भी मालिक के समान भट्टारक बनोंगा॥

शकार। तो मेरा कहा कर॥

चेट। सब करिहों एक अकारज छोड़॥

शकार। अकार्य का लेश भी नहीं है॥

चेट। तो कहिए॥

शकार। बसन्तसेना को मार डाल॥

चेट। मालिक दया करो मैं ऐसा कभी न करिहों एक तो मैं यही बहुत बुरा किह्यों जो धोखे से इसे ले आयों॥

शकार। अरे चेट मैं तेरा मालिक हूं॥

चेट। मालिक देह के हो मेरे चरित्र के नहीं दया करो मैं डरता हों॥

शकार। तू मेरा चाकर हो किस्से डरता है॥

चेट। परलोक से॥

शकार। परलोक क्या है॥

चेट। पाप और पुण्य का फल॥

शकार। पुण्य का फल कैसा॥

चेट। जैसे मालिक सोनों से लसे हैं॥

शकार। और पाप का कैसा है॥

चेट। जैसा मैं पराधीन परपिण्ड पोषित हो रहा हों इसे अन्याय न करिहों॥

शकार। अरे न मानेगा (उसे खूब मारता है)

चेट। मालिक मारो चाहो पीटो अकारज कभी न करोंगा—दोहा। जिन कर्मन के दोष से भयो जनम का दास। अधिक और करिहों नहीं जासों नरक में बास॥

विट (शकार से चेट को छुड़ाता हुआ) धन्य रे स्थावरक धन्य यद्यपि यह दरिद्र दशा में इस मूर्ख की सेवकाई करता है तो भी परलोक फल की इच्छा किए हुए है पर नष्ट परलोक यह मूर्ख इसका स्वामी धन्य नहीं है; इसे दास और स्थावरक तुझे स्वामी होना उचित था और जो

लक्ष्मी का सुख यह भोग रहा है उसे तू भोगता तो अच्छा होता परन्तु क्या किया जाय दैव से किसका बश है॥

शकार (स्वगत) यह बुड्ढा सियार अधर्म से डरता है और यह गर्भदास परलोक से मैं राजा का शाला बली मनुष्य किससे डरूं (प्रकाश) अरे गर्भदास तू जाकर एकान्त में उस बारादरी में बैठ॥

चेट। बसन्तसेना के पास आकर, आर्या इतना ही मेरा बस था (बाहर गया)

शकार (कमर बांधता हुआ) खड़ी रह रे बसन्तसेना खड़ी रह अभी इस खड्ग से तुझे दो टुकड़े किए डालता हूं॥

विट। आः मेरे आगे तू इसे मारेगा (गला पकड़ उसे पटक देता है)

शकार (स्वगत) इस दुष्ट से लड़ाई में कभी न जीतूंगा इससे अब कोई दूसरा बहाना निकालूं (प्रकाश) भाव तुम क्या इसे प्रतीत करते हो कि मैं ऐसे शक्क से बड़े कुल में जन्म पाय यह अकार्य करूंगा॥

विट। मूर्ख कुल के कहने से क्या शील ही इसमें कारण है अच्छे खेत में कटैले वृक्ष क्या नहीं बढ़ उठते॥

श्लोक। किंकुलेनोपदिष्टेन शीलमेवात्र कारणं। भवन्तिनितरांस्फीता सुक्षेत्रेकण्टकिद्रुमाः॥

शकार। भाव बसन्तसेना तुम्हारे आगे लजाती है मुझे अङ्गीकार न करेगी इससे तुम जाओ॥

विट (स्वगत) कदाचित ऐसा ही हो कि शालीनता के कारण बसन्तसेना इसे अङ्गीकार करने से लजाती हो इससे चला जाऊं (प्रकाश) अच्छा ऐसा ही हो जाता हूं (जाने लगा)

बसन्त॰ (उसका बस्त्र पकड़) मैं तुम्हारे शरण हूं॥

विट। बसन्तसेना मत डर २ (शकार से) अरे गर्भदास यह बसन्तसेना को मैं तेरे हाथ में धरोहर सौंपे जाता हूं॥

शकार। मैं अङ्गीकार करता हूं यह मेरे हाथ में धरोहर हो कर रहे॥

विट। सच कहता है॥

शकार। हां तेरी कसम सच कहता हूं॥

विट (कुछ चल कर) कहीं ऐसा न हो मेरे चले जाने पर यह नष्ट निर्दयी इसे मार डाले इससे छिप कर देखूं (छिप जाता है)

शकार। अब इसे मार डालूं अथवा वह कपटी धूर्त कहीं छिपा न हो इससे उसके ठगने को अब ऐसा करूं (फूल तोड़ता हुआ) जानी आओ इन फूलों से तुम्हारे बाल गुह दें॥

विट। अब तो यह कामी हो गया कभी न मारेगा अब कुछ चिन्ता नहीं चलो चलें (बाहर गया)

शकार। बसन्तसेना तुझे सोने के गहनों से लसे देता हूं प्रीति से बोलता हूं तेरे पांव पड़ता हूं तो भी मेरी इच्छा क्यों नहीं पूर्ण करती ॥

बसन्त०। नीचे सिर कर ॥

श्लोक।

खलचरितनिकृष्टजातदोष: कथमिहमां परिलोभसेधनेन। सुचरितचरितंविशुद्धदेहं नहिकमलंमधुपा:परित्यजन्ति ॥

कुलीनसेवितव्य:पुरुष: कुलशीलवान्दरिद्रोपि। शोभाहिपण्यस्त्रीणां सदृशजनसमाश्रय: काम: ॥

अरि दुर्जन निकृष्टाचार नीच दोषी तू मुझे धन से लुभाता है सज्जन पातक रहित विमल रूप कमलों को छोड़ भौंरे अन्यत्र नहीं जाते अर्थात चारुदत्त को छोड़ मैं अन्यत्र अपना प्रेम नहीं लगाया चाहती। वेश्या जनों की यही शोभा है कि कुलीन शीलवान पुरुष दरिद्र भी हो तो भी उसी की सेवा करे क्योंकि प्रीति सदृश पुरुष में होती है मैं आम का सेवन कर टेंसू को न सेवोंगी ॥

शकार। रांड दरिद्र चारुदत्त को आम बनाया मुझे टेसू; अभी तक उसी का स्मरण करती है ठहर मैं अभी तुझे दो टुकड़े किए देता हूं अब आवै चारुदत्त तुझे बचा ले तो देखें (उसका गला घोंटता हुआ) सुमिर रांड़ सुमिर उस दरिद्र को ॥

बसन्त०। आर्य चारुदत्त को नमस्कार प्राणप्रिय के चरण कमल को साष्टाङ्ग प्रणाम ॥

शकार। मर मर मर गर्भदासी मर ॥

बसन्तसेना मूर्छित हो गिर पड़ती है।

शकार (भुजाओं को देखता) चारुदत्त में अनुरागिणी काल की पठाई इस दुष्टा को मार कर मैं अपने भुजदण्ड की शूरता किस्से बखान करूं अब तो यह मरी गई जैसा भारत में सीता मरी थी मुझ से प्रीति नहीं करती थी इसी से मैंने इसे फांसी दे मार डाला क्या कहैं मेरे बाप और मा वंचित रहे जो अपने पुत्र की शूरता न देख सके अब वह दुष्ट खोंटा मनुष्य विट आता होगा इसी टल कर बैठूं ॥

(चेट को साथ लिए विट का प्रवेश)

विट (शकार के पास आय) ला मेरी थाती दे डाल ॥

शकार। कैसी थाती ॥

विट। बसन्तसेना॥

शकार। गई॥

विट। कहां?

शकार। तेरे पीछे पीछे॥

विट (वितर्क से) उधर तो नहीं गई॥

शकार। तू किस दिशा से गया था?

विट। पूर्व दिशा से॥

शकार। तो वह दक्षिण दिशा से गई॥

विट। मैंभी दक्षिण दिशा से गया था॥

शकार। तो वह उत्तर दिशा से गई॥

विट (घबरा कर) मेरा जी साफ नहीं होता सच कह॥

शकार। तेरे सिर की पांव से शपथ करता हूं घबरा मत बसन्तसेना को मैंने मार डाला॥

विट। सच कहता है॥

शकार। जो मेरी बात नहीं पतिआता तो देख यह पड़ी है (दिखाता है)

विट (रोता हुआ) हा सुजनता की नदी हा उज्जैयिनी की शोभा हा क्रीड़ा रस प्रकाशिनी हा हम लोगों की आश्रय हा कामदेव की विपणि तू नष्ट हो गई अरे दुष्ट निरपराध इसे तूने मार नगर की शोभा क्यों नष्ट किया (स्वगत) कदाचित यह पापी इस काम को मेरे ऊपर न थापे इस्से जाऊं (चलने लगा)

शकार (उसे पकड़) अरे बसन्तसेना को आप ही मार मुझे दोष लगा तू कहां भागा जाता है॥

विट। अरे तू नष्ट परलोक है मुझे न छू॥

शकार। तुझे सौ मोहर भूषण और भोजन दूंगा मैंने बसन्तसेना को मारा इस बात को किसी से न कहना जिसमें इसका फल काराग्टह या बधदण्ड मुझे न हो॥

विट। धिक्कार तुझे द्रव्य का लोभ मुझे दिखाता है स्त्री घाती नीच पापी अब मैं तेरा साथ कभी न करूंगा (करुणा से) बसन्तसेने सुन्दरी दूसरे जन्म में अब तू वेश्या न होना शीलौदार्य गुणों से पूरित किसी विमल कुल में जन्म लेना॥

शकार। अरे मेरी पुष्पबाटिका में बसन्तसेना को मार कहां भागा जाता है चल राजा के आगे मेरा तेरा निर्णय हो (उसे पकड़ता है)

विट (तलवार खीच) आः खड़ा रह मूर्ख॥

शकार (भय से हट कर) क्या डर गया तो जा॥

विट (स्वगत) अब यहां ठहरना उचित नहीं इस्से जहां आर्य्य शर्व्विलक

और चन्दनक आदि हैं वहीं जाऊं (बाहर गया)

शकार। पुत्र स्थावरक मैंने कैसा काम किया॥

चेट। मालिक बड़ा अन्याय आप ने किया॥

801

शकार। क्या कहता है अन्याय किया (आभूषण उतार) ले इन गहनों को इसे पहन के तू भी मेरे समान शोभित हो॥

चेट। मालिक इन गहनों को पहन तुम्ही सोहते हो मुझे इनसे क्या॥

शकार। अच्छा तो तू इन बैलों को ले जा कर मेरे महल के ओसारे में जा कर बैठ मैं भी आता हूं॥

चेट। जैसा स्वामी की आज्ञा (बाहर गया)

शकार। अब चल कर इस स्थावरक चेट को निगड़ से बांध रक्खूं नहीं तो यह बाहर निकल सब से कह देगा अथवा पहले इसे देखूं मरी कि नहीं या फिर मारूं (देख कर) क्या जीती है नहीं २ अच्छी तरह मर गई इस वस्त्र से इसे ढांप दूं अथवा इस कपड़े में तो मेरे नाम की मोहर छाप दी गई है इसे वृक्ष से गिरे इन सूखे पत्तों से ढांप दें (ढांपता है) अब जाकर राजद्वार में लिखवा दूं कि चारुदत्त गहनों के लोभ से मेरे पुष्पोद्यान में बसन्तसेना को मार कर छोड़ गया है (चल कर) जिस मार्ग से जाता हूं उसी में गेरुआ वस्त्र ओढ़े यह संन्यासी मेरे पीछे पीछे चला आता है इसे पहले मैंने मारा था उस बैर से मारे खार के मुझे देख कदाचित प्रगट कर दे कि इसी ने बसन्तसेना को मारा है (सब ओर देख) बगीचे की चारदिवाली यहां पर आधी गिर गई है इसी को डांक कर निकल जांय (जाता है)

संन्यासी। मैं वही संवाहक हूं जिसे १० मोहर के लिए जुआरी लोग सता रहे थे आर्या बसन्तसेना ने अपने पास से दे मुझे उनके हाथ से छुटाया इस गुदड़ी को मैंने धो लिया वृक्ष की शाखा पर इसे सुखाऊं तो बानर फाड़ डालेंगे भूमि में सुखाऊं तो धूर भर जायगी (आगे देख) इन सूखे पत्तों के ढेर पर इसे बगार दूं (बगार देता है) नमो बुद्धाय (बैठ जाता है) जब तक उस बुद्धोपासिका बसन्तसेना का प्रत्युपकार न करूं जिसने १० मोहर के लिए जुआरियों से मुझे छुटाया तब तक मैं अपने को उसके हाथ बिका सा जानता हूं (देख कर) यह कैसा पत्ते के ढेर में से किसी के सांस

लेने की सी आवाज मालूम पड़ती है या घास के सूखे पत्ते हमारी भींगी गुदड़ी के जल टपकने से थोड़े हो पंख फैलाए पक्षी समान फुरफुराते हैं (बसन्तसेना चैतन्य हो हाथ निकालती है) हा हा सोने के गहनों से भूषित किसी स्त्री का हाथ है क्या दूसरा हाथ भी है (अच्छी तरह देख कर) इस हाथ को पहचानता हूं अथवा सत्य २ यह वही हाथ है जिस ने मुझे अभय दिया था भला देखूं तो (उघार कर देखता है) यह तो बसन्तसेना ही है (बसन्तसेना पानी मांगती है) क्या जल मांग रही है बावली दूर है अब यहां क्या करूं यह गुदड़ी इसके ऊपर गार दूं (गारता है)

" बसन्तसेना चैतन्य हो उठ बैठती है भिक्षुक उसे अञ्चल से पंखा करता है"

भिक्षुक। १० मोहर दे मुझे तूने मोल लिया थ क्या भूल गई॥

बसन्त०। मुझे याद नहीं पड़ती॥

भिक्षुक। बुद्धोपासिके यह क्या हुआ॥

बसन्त०। जो वेश्याओं पर होना उचित था॥

भिक्षुक। बुद्धोपासिके अब मत डरो चलो इस बुद्ध मन्दिर में मेरी बहन रहती है वहां सावधान हो तब घर जाना (दोनों गए)

बसन्तसेना मोटनीनाम अष्टमोङ्कः।

जि-४ तै-१०४-उद्देशो

प्राप्त।

सामाजिक नियमों का परिपालन भी मानुषी सृष्टि का एक स्वभाव है॥

इस संसार में प्राणी मात्र को यही इच्छा रहती है कि आत्यन्तिक सुख की प्राप्ति हो और दुःख का अभाव हो परन्तु सोचने से जान पड़ता है कि यद्यपि सब मनुष्य सुख की प्राप्ति के यत्न में तत्पर हैं तथापि सुखी लाखों में कोई दोही एक देखाई देते हैं इससे दो बात प्रगट होती है या तो यह कि वे नहीं जानते कि सुख वास्तव में क्या है किसमें और कैसे प्राप्त होता है और इसी अज्ञान के कारण जिस जगह सुख नहीं है वहां अन्धों के माफिक टटोलते फिरते हैं या वह उपाय करते हैं जिसमें सुख के बदले उलटा दुख मिलता है अथवा यह कि इसको ज्ञान ही उन्हे अब तक नहीं हुई कि सुख किस में है और दुख किसमें परन्तु परवश हो वही काम करते हैं जिसमें अधिक अधिक दुःख हो; बहुतेरे महात्मा महापुरुष सदा से भांत भांत के उपदेश करते चले आए

हैं और वेदादि सत् शास्त्रों में बहुत से उपाय सुख के प्राप्ति और दुःख दूर करने के कहे हैं परन्तु जब तक अज्ञान का अन्धकार छाया हुआ है और ज्ञान रूपी सूर्य्य का उदय हो सत् असत् का बिवेक नहीं हुआ तब तक आत्यन्तिक दुःख किसी तरह दूर नहीं हो सक्ता इस ज्ञान के उदय में केवल विद्या और सत्सङ्ग ही उत्तम उपाय है इस्से विद्योपार्जन और सत्सङ्ग अपने श्रेयाभिलाषियों को अवश्य कर्तव्य है परन्तु दोनों की प्राप्ति के लिए समाज और सामाजिक नियमों की आवश्यकता भी माननीय है क्योंकि सामाजिक नियम जब ठीक नहीं है तो समाज अवश्य नष्ट हो जायगी और न विद्योपार्जन ही का सावकाश मिल सकता है न उपदेष्टा को स्वास्थ्य मिल सकता है इस का प्रमाण स्पष्ट है कि जिन देशों में स्वास्थ्य रहा वहां विद्या और सद्गुणों की दिन २ कैसी वृद्धि रही और जहां सामाजिक नियम ठीक २ नहीं रहे वहां प्रति दिन की कलह के कारण कभी लोगों को इतनी सुचित्ती ही न मिली कि वे किसी प्रकार की उन्नति कर सके इसी कारण जो मनुष्य अपने कल्याण और सुख की कामना रखते हों उन्हें उचित है कि समाज और सामाजिक नियमों की रक्षा में सयत्न हों और न आप ही उन नियमों का उल्लङ्घन करें; यह हमने माना कि इस काम में उनका बहुत सा समय व्यतीत हो जायगा जिसको वे पारमार्थिक काम में लगाना बहुत अच्छा समझते हैं परन्तु साधन दशा में समाज की आवश्यकता हम पहले ही दिखा चुके हैं जैसे शरीर स्वास्थ्य की आवश्यकता है वैसे ही समाज और सामाजिक नियमों की भी है; यह ठीक है कि जो लोग पारमार्थिक ध्यान में लगे हैं उनको संसारिक काम अगूढ़ जान पड़ेगा परन्तु जैसे खान पान आदि शारीरिक सब काम उनको करने ही पड़ते हैं वैसे ही इसको भी अवश्य कर्तव्य कर्म समझ करना ही उचित है; यह तो साधक लोगों के विषय में मैंने कहा अब सिद्ध जनों को लीजिए जब तक देह का समाधान है तब तक जैसा उनका नियम चला आया है वैसा ही स्वभाव वश चला चला जायगा यद्यपि उनकी प्रेरणा वा इच्छा उसमें कुछ नहीं है क्योंकि जब वे राग द्वेष से रहित हुए तब तो उन्हें कुछ कर्तव्य ही न रहा अभ्यास वश आत्माराम हो शरीर से अत्यन्त बेसुध हो गए तब उनके सब काम आप

ही बन्द हो जांयगी उस दशा में हम उन को मनुष्यों की गणना ही में नहीं रखते; अग्नि में जब तक तेज है तभी तक उसे अग्नि कहना चाहिए जब तेज न रहा तब अग्नि वह कहां से कहलाई इसी तरह जब तक मनुष्य में मानषी धर्म है तब तक वह मनुष्य है जब उसमें मनुष्यता ही न रही तो वह मनुष्य कैसा ; यह भी समझना चाहिए कि ईश्वर ने जितने गुण प्रकृति स्वभाव या अङ्ग दिए हैं कोई इनमें व्यर्थ नहीं हैं हां यह बात अवश्य है कि जब तक सब चीजों का ठीक ठीक यथोचित काम लिया जाय तब तक सुख और आनन्द की प्राप्ति होती रहती है और जब अनुचित रीति पर इनसे काम लिया जाता है तब वेही सब दुःखदायी हो जाते हैं इससे उचित है कि जो जिस प्रकृति का काम है वह उससे यथोचित रीति पर लिया जाय न यह कि किसी स्वभाव के अनुचित बरताव से दुःख पाकर उसकी अनुचितताई को तो न मिटावे और उस स्वभाव को निर्मूल करने का उपाय करे ऐसा करने से जिस हेतु वह स्वभाव दिया गया था वह लाभ प्राप्त न हो सकेगा जो ऐसा ही है तो अविवेक के कारण सब शरीर ही दुःख का एक आगार बन जाता है ऐसा समझने वालों को चाहिए कि थोड़ी सी संखिया मँगा कर खा लें अथवा गोली मार मर रहें तब सुगम रीति पर सब दुःखों से एकबारगी निपटारा हो जायगा परन्तु कोई विज्ञ पुरुष इसमें सम्मति न देगा इससे यही उचित है कि जब तक जो स्वभाव वा अङ्ग स्थिर है तब तक उससे यथोचित काम लेते हुए जन्म पार करे साथ ही बुद्धि और बिबेक को भी काम में लाता रहे जिसमें कि उस बस्तु में आत्मा फंस बन्धन में न पड़ने पावे ; अब सोचना चाहिए कि समाजिकता भी मनुष्य की सृष्टि का एक स्वभाव है इस लिए समाज का कुछ हिताचरण और सामाजिक नियमों के परिपालन बिना केवल आत्मकल्याण चहना स्वभाव के बिरुद्ध है विशेष इस पर फिर कभी लिखेंगे ॥

बाबू हरदेवप्रसाद ।

जातिभेद जनित दुर्गति ।

हमारे देश की दुर्दशा का एक बड़ा भारी कारण जातिभेद है जब तक रोग शरीर में रहता है कोटिन्ह उपाय से भी शरीर पुष्ट नहीं होता इस भांति जब तक जातिभेद इस देश से न उठेगा तब तक

चाहो कितनी उपाय देशोन्नति की करो सब निष्फल होंगी इस से देश हित भिलाषियों को उचित है कि सब से पहले इसी के उठाने को उपाय करें; यह बात अच्छी तरह स्पष्ट है कि एक आदमी के अच्छे होने से देश का देश अच्छा नहीं हो सका और न एक मनुष्य के करने से देश की उन्नति हो सकी है जब लों सब मिल कर यत्नवान् न हों बिना आपस में बान्धव सौहृद और सब में स्नेह के अपनी भलाई छोड़ किसी को क्या मतलब जो दूसरे के हिताहित का बिचार करे सो इस बान्धव सौहृद की यहां यह दशा है कि समाज के सैकड़ों बरन हजारों भेद हो रहे हैं जिनमें सदा आपस में बैर और फूट बनी रहती है; मुसल्मान यही चाहते हैं कि जो दीन इसलाम के पैरोकार न हों वे कभी न बढ़ने पावें क्योंकि उन्हें यह निश्चय है कि और मतवाले उनका तिरस्कार करते हैं इस से जो कहीं उनकी बढ़ती हुई तो अवश्य वे उनको दुःख और क्लेश पहुंचावेंगे और इनका अपमान करेंगे इसी से काफरों का सताना और उनकी उन्नति न होने देना ही इनका परम धर्म है; रूम व ईरान वाले अन्य देशीय हैं तथापि एक जाति के होने के कारण रूम और ईरान वाले यहां के मुसल्मानों के बीच भाई समझे जाते हैं उनसे बड़ा स्नेह रखते हैं परन्तु अपनी ही जन्मभूमि बासी हिन्दुओं के दिली दुश्मन हैं कहां बसें कहां बसें ? बीसों पुश्त यहां रहते २ हो गई फिर भी अन्य जाति वाले इसी मुल्क के आदमियों के साथ बिल्कुल हमदर्दी नहीं है; न हिन्दू ही चाहते हैं कि मुसल्मानों का बल बढ़े क्योंकि वे डरते हैं कि हमारे लिए फिर भी वही अत्याचार मौजूद है जिससे बड़ी कठिनाई से जी छुटा है; और देखते भी हैं कि जब कभी इनका वश चलता है बिना उपद्रव किए नहीं रहते इसी से हम हिन्दुओं में बहुतेरे मनुष्य अन्य देशीय जनों से इतना द्रोह नहीं मानते जितना स्वदेशीय मुसल्मानों से मानते हैं; इसी जाति भेद के कारण जैनी लोग नहीं चाहते कि वैदिक धर्मावलम्बी हिन्दुओं का पराक्रम बढ़े क्योंकि उनको डर है कि ये विद्रोही लोग हमारी रथ यात्रा आदि उत्सवों में फिर वही उत्पात मचावेंगे जैसा अब तक करते आए हैं; ईसाई भाइयों ने अपनी दुनिया नई ही बसा ली है दूसरी जाति वालों से बहुत कम मिलते जुलते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि दूसरे लोग इनसे घृणा करते

हैं और उनका बड़ा तिरस्कार करते हैं; बङ्गाली अपने को हिन्दुस्तानी समझते ही नहीं ऐसे ही कश्मीरी अपने को आर्यों से भिन्न मानते हैं मरहट्ठे इधर के लोगों को रांगड़े बोलते हैं न गर गुजरातियों की कुछ लीला ही देखते बनती है यह तो कभी सम्भव नहीं है कि किसी दूसरे का कुछ उपकार इनसे निकले जो कुछ हो अपनी ही जाति वालों को ठूसेंगे फिर आपसही में बड़ा इत्तिफाक रखते हों सो भी नहीं जो कुकुरझांव और खुरखुन्द इनमें देखा जाता है वह काहे को किसी में कभी सुनने में आया है॥

सिवा इनके दो जाति और भी हैं एक खास बिलायती यूरोपियन दूसरे यूरेशियन यूरोपियनों में कुछ थोड़े से तो बड़े सज्जन समदृष्टि और उदारचित्त हैं यहां तक कि वे यद्यपि विदेशीय हैं तो भी यहां वालों से बड़ी प्रीति और भ्रातृस्नेह रखते हैं परन्तु उनमें अधिकतर तो ऐसे खोटे हैं कि ऐश्वर्य के अभिमान से हिन्दुस्तानियों को कुत्ता बिल्ली आदि पशुओं से भी अधिक तुच्छ जानते हैं यह बिचार उनके मन में कभी नहीं आता कि ये भी तो मनुष्य हैं समय सदा सब का एक सा नहीं रहता आज ये बुरी दशा में हैं परन्तु किसी समय संसार भर के पूज्य थे; इन लोगों के इस दुष्ट भाव से जो सज्जन यूरोपियन हैं उनका भी बिश्वास इस देश के मनुष्यों को नहीं होता वे कितना ही चाहते हैं कि जित और जेता में प्रीति भाव बढ़े पर सब उपाय निष्फल होते हैं और आपस की भेद बुद्धि में गांठ ही पड़ती जाती है; दूसरी कम्बोह जाति यूरेशियन कहलाते हैं आधे देशी आधे विदेशी हैं इनका बहुत कार तो बिलायतीयों से मेल रहता है परन्तु वे लोग इनका बहुत कुछ मान्य नहीं करते हां कुछ जाति का मेल होने के कारण थोड़ी सी पूछ इनकी है नहीं तो ये और सब बातों में निरे लँडूरे हैं न इधर के न उधर के इस देश के मनुष्यों से तो वे आप ही नहीं मिलते क्योंकि हिन्दुस्तानियों के साथ मिलने से साहबपन जाता रहेगा और हम लोगों को ऐसी बुरी दृष्टि से देखते हैं और घृणा करते हैं कि खोटे यूरोपियन भी ऐसी बुरी तरह हम लोगों के साथ नहीं पेश आया चाहते इसी से हमारे और इनमें ऐसा द्रोह आपस में हो गया है कि यूरोपियनों का चाहो थोड़ा बिश्वास भी हो पर इन लँडूरों को प्रतीति किसी भांत नहीं होती पहले तो ये

लोग खास बिलायती बनते थे जब देखा कि वे लोग तो हम को अपने में मिलाते ही नहीं तो द्विजातीय अर्थात यूरेशियन बन बैठे जब कोई बात देशीय जनों की हितकारी हुई तो नेटिव बन गए नहीं पूरे साहब लोग तो हई हैं॥

खैर ये सब तो जाति भेद के बड़े झड़े खण्ड हैं इनसे ऐसी हानि नहीं है जैसी हम हिन्दुओं के जाति भेद से समाज की दुर्गति हो रही है जिनमें आपस ही में इतने भेद हैं कि इन्हें एक जाति कहना भूल है फिर भी इनकी जाति के हर एक अवान्तर भेद में भी परस्पर एका नहीं है आठ कनौजिए नौ चूल्हे कहावत चली आती है और यहां तक पृथक् हैं कि एक दूसरे के हाथ का पानी नहीं पी सकते इसमें भी रामफटाका वाले आचारी और वल्लभ कुल वालों ने तो इस छिलावट की इतनी तरक्की कर रक्खा है कि संपूर्ण धर्म और परलोक का बनना बिगड़ना केवल इतने ही में आ लगा है कि जो अपने संप्रदाय का न हो चाहे ब्रह्मा का सगा नाती क्यों न हो उसका छुआ पानी पिया कि घोर नरक में गए फिर उस बेचारे को कहीं ठिकाना नहीं; और उन्ही के संप्रदाय का महापापी अन्यायी दुष्कर्मी जैसा प्रायः इस मत के लोग होते हैं बड़ा पवित्र आचारवान् और धर्मनिष्ठ समझा जाता है अपना भाई प्यासा क्यों न मर जाय पात्र अशुद्ध हो जाने की डर से अपने लोटे में कभी पानी न पीने देंगे जब देश का विनाश होना होता है तब मत प्रवर्तक और आचार्यों को भी ऐसी ऐसी असङ्गत बातें सूझ उठती हैं हम सच कहते हैं कि जो रामानुज वल्लभाचार्य सरीखे दो एक स्वार्थतत्पर लोग इस पिछले समय में यहां न पैदा हुए होते तो यह देश ऐसी जलद न नष्ट हुआ होता; बहुत सी जाति वाले तो बराबर बैठने तक के अधिकारी नहीं माने जाते इसी केवल इतना ही लाभ समझा गया है कि नीच जाति वाले कभी बढ़ने न पावें सब बड़ाई को अपनी बपौती समझ ली है यह नहीं बिचारते कि ईश्वर की प्रजा सब लोग बराबर हैं गुण कर्म से बड़ाई होगई है नहीं तो हाड़ मास के पुतले सब एक से हैं; परस्पर प्रीति और स्नेह की जगह जब कोई हीन जाति वाला प्रारब्ध बश बढ़ जाता है तो और लोग उससे द्वेष करने लगते हैं बिचारना चाहिए कि ऐसी ऐसी बातों से समाज की कैसी हानि है; ऊंची जाति वाले यह समझ के कि

हम तो अंत में हमारा भाग्य और बड़ाई कहीं गई नहीं फिर विद्या या किसी उत्तम गुण के सीखने में क्यों मस्तिष्क को व्यर्थ पीड़ा दें अन्त को महा कुछ और किसी काम के नहीं रहते और जो नीच जाति वाले हैं वे समझते हैं " कोऊ नृप होउ हमें का हानी चेरी छोड़ न होउब रानी " हम कितनी ही योग्यता प्राप्त करें फिर भी जैसे के तैसे रहेंगे ; कोई २ जातिभेद के पक्ष वाले यह कहते हैं कि इसके उठाने की क्या आवश्यकता है सब के साथ प्रीति और सम भाव रखने को कौन वारण करता है प्रयोजन केवल परस्पर की प्रीति बढ़ने से है भ्रष्ट हो जाने से क्या अर्थ सिद्धि है ; हमारी समझ से तो ऐसा कहने वालों की समझ भ्रष्ट है और उनके समान पतित कोई भी नहीं है वेश्याओं के साथ लब से लब मिलावें पराया धन साफ़ गटक के बैठ रहें ईर्ष्या द्रोह मद मत्सर व्यभिचार दगलास दगाबाज़ी फरेब से लबरेज़ हों भ्रष्ट नहीं होंगे अपने मुल्की आदमी का छुआ पानी या पाचित अन्न खा लें भ्रष्ट हो गए फिर ऐसी ऊपरी कपट के पट से आच्छादित प्रीति से मतलब क्या कुत्ता बिल्ली आदि पशुओं से लोग क्या प्रीति नहीं करते सच्चा सौहृद और निष्कपट समदृष्टि यथा एक भाव जिसे वास्तविक प्रीति कहना चाहिए कहां से हुई ; बिना ऐसी प्रीति के एक को दूसरे के प्रति विश्वास नहीं जम सक्ता जब तक सब बराबर के बन्धु न समझे जांयगे तब तक अनन्य भाव नहीं हो सक्ता और देशोन्नति के लिए ऐसा ही सौहृद आचारणीय है जब कोई मनुष्य समझेगा कि देखने में तो आप उससे भली भांत मिलते हैं पर मन से घृणा रखते हैं और दूसरा समझते हैं तो वह क्यों आप से ऐक्य भाव रक्खेगा बहुधा देखने में आया है कि दो जाति वाले बहुत कुछ प्रीतिबद्ध हो गए हैं पर सह-भोजन न होने के कारण फिर भी कुछ थोड़ा सा बीच बिचाव बना ही रहा है हम कहां तक बकें अब अवसर नहीं है फिर कभी ॥　　ह० प्र० ॥

प्रार्थना पत्र ॥

(बाल्यविवाह के विषय में)

इस विषय का समाचार पत्रों में बहुत कुछ आन्दोलन होने से इस बुरी रसम के प्रचलित रहने में देश की जो कुछ हानि और जो कुछ अवनति है उसे बहुधा अब लोग समझने चले हैं तो भी यह बाल्यवि-

वाह ऐसे धूमधाम से जारी है इस पर कोई सज्जन पुरुष नहीं ध्यान देते यह एक अचरज की बात है ; ८ या ९ बर्ष की कन्या का बिवाह न कर देने से धर्म में बट्टा लगता है इस बद्धमूल कुसंस्कार का अंकुर कहां से निकला है मनु और मिताक्षरा को तो मैंने छान डाला कुछ पता न लगा अहा मैं भूल गया पण्डित काशीनाथ निरक्षर भट्टाचार्य्य को तो मुझे याद ही न रही भट्टाचार्य्य महाशय पुकार २ तो कहे जाते हैं कोई न माने तो लाचारी है॥

अष्टवर्षाभवेद्गौरी नववर्षाचरोहिणी।
दशवर्षाभवेत्कन्या अतऊर्ध्वंरजस्वला॥
माताचैवपिताचैव ज्येष्ठभ्रातातथैवच।
तेनरानरकंयान्ति दृष्ट्वाकन्यांरजस्वलाम्॥

बस निश्चय हुआ कि इस महा खोटी चाल का बानी मुबानी लण्ठ शिरोमणि काशीनाथ हैं तो बाल्यबिवाह जनित महापाप का भागी भी यही नारकिक हुआ होगा हे ईश्वर लाख जन्म लों इसका नरक से उद्धार न हो "आप बुड़न्ते बाम्हना ले डूबे यजमान" आप नष्ट हुआ सो हुआ हम गरीबों को भी सत्यानाश में मिला गया न शीघ्रबोध यह बना जाता न हमारी इतनी दुर्मति होती इस ग्रंथ का नाम अधर्मबोध रक्खा जाता तो उत्तम था जो ऐसी ही अधाधुन्ध लबड़धोंधो मनमानी घरजानी है तो लो हम भी गढ़न्त करते हैं॥

पञ्चवर्षाभवेद्राधा षट्वर्षाचरुक्मिणी।
सप्तवर्षाभवेत्कन्या अतऊर्ध्वम्पश्चयोषिता॥
एकक्षणाभवेद्गौरी द्विक्षणाचैवरोहिणी।
त्रिक्षणाचभवेत्कन्या अतऊर्ध्वं काशीनाथ का घोर रौरव में अधःपतन॥

लो अब तो छठी ही की रात को बिवाह हो जाया करे जिसमें धर्म जो जो छोड़ भागा जाता है सो तो किसी तरह थमे ; मथुरिया चौबों में गर्भस्थिति होते ही लड़की लड़के के बिवाह का सब कौल करार हो जाता है यह सब काशीनाथ ही की कृपा है॥

कमसिनी के ब्याह से जो जो बुराइयां पैदा होती हैं उन पर ध्यान करने से हम कैसे कहें कि यह धर्म का काम है क्योंकि धर्म से बढ़ती होती है और अधर्म से छो(?)ता यह सब लोगों का सिद्धान्त है सो इसमें सिवा क्षीणता के लाभ कुछ नहीं है ; अब यहां पर बाल्यबिवाह जनित दोषों को प्रगट कर दिखाता हूं लीजिए सुनते चलिए पहले तो बाल्य अवस्था ही में बिवाह हो जाने से लड़कों के पढ़ने लिखने में विघ्न पड़ जाता है स्त्री के घर में आने से जो मन उनका एक ओर लगा रहता था सो अब दो तरफ बट जाता है जब रस का अङ्कुर जी में जम गया तब

विद्याभ्यास फिर कहां रहा क्योंकि इल्म की तहसील कोई साधारण बात नहीं है पूर्ण विद्वान होने के लिए बड़ा श्रम करना चाहिए तलुए के पसीने दांत तले आते हैं तब इल्म तहसील होता है यही कारण है कि हम लोगों में इस बुरी रस्म के भरपूर जारी रहने से पूर्ण विद्वान कहीं हजार में एक होते हैं इस देश के धनी मानमन तथा इतर मध्य श्रेणी के लोग जिनमें बाल्यविवाह बड़े धूम के साथ किया जाता है उनकी बुद्धि वैभव का प्रकाश तो जगत उजागर है हमारे कहने की क्या आवश्यकता है लड़के के विवाह अनुचित कर्म में १० हजार उड़ा डालें उसकी तालीम में जिसका होना बहुत उचित और मा बाप का मुख्य धर्म है कभी १०० रुपया भी कोई खर्च नहीं करते अन्त को उनकी कुपूत सन्तति इसी पाप से बाप के नाम को कैसा उजागर करती है और मूढ़चन्द अपने बाप को अपने ही कुत्सित कर्मों से नरक में अधःपाती बना देती है यह सब इसी बाल्यविवाह महा अधर्म का फल है हुआ चाहे कहावत भी तो है "यादृशो पुत्र पिता के धर्में" बाप ने कौन सी पुन्याई कमाया जो बेटा सपूत और लायक होता: अब और आगे बढ़िए यह बाल्यविवाह स्वच्छन्दता अपहारक महा मन्त्र का साधन है जब बारह चौदह बर्ष की उमर में ब्याह हुआ दो तीन बर्ष उपरान्त महा कच्चे वीर्य के लड़के पैदा होना शुरू हो गए बीस बाइस की उमर तक पूर्ण गृहस्थी का भार सिर पर लद गया पूंजी कुछ ठहरी नहीं क्योंकि समझ बढ़ाने वाली सामग्री Mental cultiva tion उसकी ओर से बाप ने पहले ही से टटिया दे रक्खी है अब कैसे अपने दुःख जीवन का निर्वाह करें मर पच किसी तरह अपनी गृहस्थी चला ली और औंधी समझ के बर्ताव के अनुसार समाज में सुर्खरू रहे बड़ा काम हुआ बड़े सपूत कहलाए और अपने नककटे पुरखों की नाक रख ली सो ऐसे कहीं दस में दो होते हैं नहीं तो आवारा और कुढंगे तो बने बनाए हैं जो समय बुद्धि के विकाश का था उसमें उनके लिए कुछ फिकिर न की गई लाड़ और प्यार में बीता "अब पछताए क्या हुआ जब चिड़ियां चुन गईं खेत" अब जवान हो गए इधर इन्द्रियों का प्रबल बेग उधर चढ़ती उमर अच्छे पढ़े लिखे बुद्धिमान अपने को नहीं रोक सके तो यहां तो बुद्धि की ओर से अन्धा कोठा हो रहा है सब बाल्यविवाह ने चर चौथ खाया दुर्व्यसन

और आवारगी में पूर्ण पण्डित बन बैठे; [illegible]न लोगों के बाप मा भूखों प्यासी मरते हों लड़के का व्याह कहीं आ लगे जैसा मुरगी खंकार पर गिरै वैसे भरे मुंह गिरैंगे लेई पूंजी बेंच बांच व्याह करैहींगे क्योंकि यही तो उनका फर्ज़न्द की ओर से अपने फर्ज़ से अदा होना है आमदनी से मुहताज थेही अब उसे क्या खिलावें अन्त को गृहस्थी के बोझ से दबते पिसते चूर होते किसी तरह अपना हतजीवन पार कर नरकपुर की राह ली आप ने स्वच्छन्दता Liberty का स्वाद तो कभी चक्खा ही नहीं था बेटे को भी अपना रामअधीन बना गए; देशोन्नति के लिए सब झीख रहे हैं यह किसी को नहीं सूझता कि जिनके कदम पर कदम रख हम बढ़ा चाहते हैं उनके यहां भी क्या समाज के ऐसे भ्रष्ट कायदे और बन्धन हैं Self dependance आत्म निर्भर वहां पहले ही से सिखाया जाता है तब बड़े २ patriot स्वदेशानुरागी उनके बीच पैदा हो उठते हैं हम बड़े देशानुरागी हो हुए तो किस काम के नोन तेल लकड़ी की फिकिर तो चूसे लेती है झूठी टांय टांय करैं क्या होता है बुद्धि के दरिद्र हम लोगों के बाप यदि व्याह कर बेंड़ी पहले ही से न डाल रखते तो हम लोग भी किसे नीवर थे जो बड़े २ दु:साध्य कर्म enterprise क्या हम न कर सक्ते; इन दिनों के सभ्य मण्डली वाले बातें बहुत बढ़ २ के छांकते हैं पर ऐसी २ कुरीतों के उठाने में अग्रसर हो नमूना कोई नहीं दिखाया चाहते उनका सम्पूर्ण मारेल करेज वहीं तक है जब तक अपनी किसी प्रकार की हानि या समाज में नक्कू न बनते हों किसी प्रकार की कुछ थोड़ी भी अपनी हानि सह कर देशोन्नति के लिए अग्रसर बनना निरा पागलपन नहीं तो और क्या कहना चाहिए और यहां Public good एक ऐसी बुरी बला है कि जो इसके पीछे पड़ा मारा ही गया अपनी भलाई चाहता हो तो इसी में कल्याण है कि जिस तरह बन पड़े स्वार्थ तत्परता में लौलीन रहै आत्म कल्याण छोड़ सर्व साधारण के कल्याण की ओर दृष्टि की कि मानो जान बूझ नुकसान को नेउत बुलाया इसी से सभ्य मण्डली वाले दूर की आंच सेंक लेते हैं ऐसे २ शैतानी कामों में प्रविष्ट हो अपनी सुख आराम और फायदे में खलल नहीं डालते॥

मनु लिखते हैं 'गृहस्थ:पाठयेद्दारान विद्यामभ्यासयेत्सुतान्। कन्याप्येवंपालनीया शिक्षणीयातियत्नत:॥' गृहस्थ अपनी मा बहिन तथा स्त्री का अच्छी तरह भ-

रण पोषण करे लड़कों को विद्या पढ़वावे ऐसा ही कन्या का भी पालन करे और अति यत्नपूर्वक उसे पढ़ावे ; बस तो मनु के इस श्लोक से निश्चय हुआ कि अपने सन्तान को पढ़ाना लिखाना और यथोचित उसका भरण पोषण तो बाप का धर्म या फ़र्ज़ जो कहो सब है पर उसका व्याह कर देना हमारे कानूनों की राह में किसी तरह दुरुस्त नहीं है न जानिए यह कुढ़ंगी रीति किस मूल को लेकर चल निकली है हा किसे कहें विवाह ऐसा भारी contract पणबन्ध जिस पर जन्म भर के लिए ही मनुष्य का सुख दुख और बनना बिगड़ना मुनहसर है वह हमारे यहां कैसी दुर्गति के साथ किया जाता है ; कोई साधारण पणबन्ध भी दोनों फरीकों की बाखूबी रज़ामन्दी और मन माफिक होता है विवाह जैसा भारी पणबन्ध है वैसी ही भारी बेअकिली और पराधीनता से किया जाता है जिसके बीच में यह पणबन्ध होता है वे दोनों गुडिया गुड्डे बिचारे इसके सुख और लाभ हानि को उस समय क्या जानते बूझते हैं ; वाहरे बुद्धि की तीव्रता जो काम ऐसी स्वाधीनता का उसमें बात बात में परवशता और तो व्याह बाप मा के मन से हो फिर भी मर्दुए के मेढक अपनी छोटी सी बिरादरी जो में हो उसमें भी बराबर वाले के यहां हो क्योंकि बड़ा उतरी को भय है "स्त्री रत्नं दुष्कुलादपि" मनु के इस बचन पर तो हरताल ही फेर दी गई भाग्यवशात् सब बात ठीक हो गई तो अब पाधा जी के चंगुल में आ फंसे "आकाश से टूटे तो खजूर में अटका" राशिवर्ग बिचारने में जो वर कन्या मूसा बिल्लार होने से बचे रहें पुरोहित जी को भरपूर दक्षिणा मिली तो सब अच्छा नहीं तो कोई ऐसा व्यङ्ग निकाल देंगे कि सब बिगड़ जायगा बहुधा देखा जाता है कि दोनों पक्ष वालों का कुल योग्यता वगैरः सब बहुत यथोचित है राशिवर्ग न बना व्याह नहीं हुआ इसका परिणाम यह होता है कि बड़े अमीर धनी की लड़की एक गरीब मरभुक्खे के यहां जा पड़ती है अथवा हूर को कूर कूर को हूर मिल जाती है विचार कर देखिए तो हमारे यहां के जितने ग्रंथ हैं सबों में किसी ऋषि के सूत्र को प्रमाण में रख चले हैं यहां तक कि कोक जो ऐसा नष्ट शास्त्र है उस पर भी वात्स्यायन का सूत्र है पर इस नाड़ीवर्ग के विचार में सिवा काशीनाथ सरीखे स्वार्थपर पण्डितों की कुटिलाई के और कोई आर्षवाक्य मूल नहीं है हम कहां लों इस कुरीत के दोष देखावें शेष में हमारी यही प्रार्थना है कि सब लोग पहले इसी कुसंस्कार के शोधन में यावत् शक्ति प्रयत्न करें तो और और बातें जो हमें आगे बढ़ने के लिए विघ्नकारी हो रही हैं आप से आप मिट जांयगी ॥

बाबू उमेदीलाल ।

अग्रिम मूल्य	... ...	२।)
पश्चात् देने से	... ...	४।)
एक कापी का	... ...	।)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD,—1st June 1881. } { प्रयाग ज्येष्ठ शुक्ल ४ सं० १८३८
Vol. IV.] [No. 10. } { जि० ४] [संख्या १०

महा विज्ञापन।

हे सरस हृदय हमारे परम प्रिय अनुग्राहक पाठक गण प्रदीप का यह वर्ष समाप्त होने पर आया आप लोगों की कृपा से न जानिए किस तरह आज तक हमने इसका काम चलाया पर अब केवल कोरी कृपा से निर्वाह होते नहीं दीखता धन्य रे हिन्दी के भाग्य वाहरे हिन्दी की कदरदानी ४ वर्ष पत्र जारी किए हो गया फिर भी यह पत्र अभी इस लायक न हुआ कि पास से एक पैसा न लगाना पड़ता और सब खर्च इसी के मूल्य से सट जाता ; द्रव्याभाव से क्षोभित हो कई वार इसके छोड़ने का मन किया पर लिखने के नसूर का गड्ढा जो पड़

गया है वह हमें नहीं बाज़ आने देता और अब वह मसूर बहुत पक आया है अब तक चल सकेगा ; ईसू ख्रीष्ट की यह कहावत हमारे बिषय में बहुत सटीक उतरती है " हम तुम्हारे लिए बांसुरी बजाया और तुम न नाचे " आप लोगों के रिझाने को सब स्वांग रचते हैं तौ भी आप ऐसे कड़े दिल के हो कि किसी तरह नहीं पिघलाए पिघलते आप ही के प्रसन्नार्थ हमें हर दफ़े भांण और बिदूषक बनना पड़ता है कि किसी तरह तुम्हें हँसाय खेलाय अपना मतलब गांठे अदबदाय के कोई न कोई ऐसी बात इसमें रखते हैं जिसे पढ़ ऐसा ही कोई मोहर्रमी पैदाइश का मनहूस होगा जिसे हँसी न आती हो बरन कभी २ तो अश्लील कहनी अनकहनी तक बक उठते हैं जिसमें अब भी पूरे भांण मालूम हों ; कभी कभी को बड़े मुकता बन शाइस्तगी की टोकरी सिर पर रख आप लोगों से मिलते हैं और वह गरुआपन और सञ्जीदगी अदा करते हैं कि अपरिचित को यही भासित होता होगा कि ये तो कोई बड़े ही जनाब का कबाब किए शाइस्तगी का लुआब चाटे बैठे हैं कोई क्या जाने कि यह भी धूर्तों की एक धूर्तताई है ; कभी को ऐसे ऐसे सदुपदेश देने पर प्रवृत्त हो जाते हैं कि पढ़ने वाले को यही प्रतीत होती होगी कि यह कहां से सकल धर्मशास्त्र और इतिहासों को छाने चतुरानन का चाचा बन कर आया है ; बेहयाई यहां तक इख़्तियार किए हैं कि बड़े २ अमीर कबीर जो सभ्यता और शाइस्तगी की नाक के भीतर की नाक हैं और नाम के आगे कौड़ियों उपाधि की दुम लगाए दुमदार सितारे बने बैठे हैं उनके पास बिना बुलाए भी पहुंचे और गलबांही दे निकाल दिए गए तो भी तनिक न शरमाने जैसा कोई निर्लज्ज ढीठ किसी राजा की सभा में गया और वहां से अपनी ढिठाई के कारण निकाल दिया गया तो चलती बार बोला उ: मैं बड़ी २ सभाओं से निकाल दिया गया हूं यह क्या तुच्छ सभा है ; सबेरे से उठते ही मनीआरडर वाले प्यून की राह तकते २ सांझ तक में आंखें भों जाती हैं अन्त को भागवत की पिङ्गला वेश्या समान निरास हो बैठ रहते हैं सच है आशा बड़ी दु:खदायिनी होती है महाराणा उदैपुर कई एक दुर्गति दशापन्न पत्रों को निज औदार्य्याकृत वर्षी वारिद हो जो धनदान दे उन्हें जीवित रक्खा हमारी

झूठी आशा के विश्वास ने वहां भी जा कर ज़ोर मारा कि तुम्हारे लिए उस अकृतवर्षी वारिद की ओर से भी सदा झूरा ही रहैगा "झूरे शंख बजैं मेरे हरि के" मोहनचन्द्रिका ही भली जिसे हरि के इस झूरे शंख ने भी हरेरिच्छा बलीयसी का अजीरन कर दिया ; खैर अब हम रसिक ग्राहकों ही से निवेदन करते हैं कि उन्ही पर कदाचित् इस मज्हा विज्ञापन का कुछ असर पहुंचे और अपना अपना मूल्य भेज कई मास की छपाई का ऋण जो हमारे ऊपर ब्रह्मराक्षस सा सवार हो गया है उस्से हमारा प्राण बचावैं ॥

पुस्तक प्राप्ति।

बिनयपत्रिका गुरु नानक के उपासक बाबू मदनगोपाल सिंह कृत इसमें हर तरह के छन्दों में भजनों का संग्रह है भजनानन्दियों के लिए यह पुस्तक अलबत्ता प्रयोजन की है और कलकत्ता में भारतमित्र यन्त्रालय में मुद्रित हुई है ॥

भारतदीपिका।

अभी तक तो इसमें ऐसा कोई विषय छपा नहीं जिसकी समालोचना हम जी खोल करते इसके एडिटर का केवल सिंहनाद ही मात्र देखा जाता है कहायत है "जो गर्जै सो बरसै क्या" ॥

मृच्छकटिक।

नवम अङ्क ॥

स्थान

(कचहरी)

शोधनक (फर्राश) का प्रवेश।

शोधनक। व्यवहार दर्शकों ने आज्ञा दी है शोधनक व्यवहार गृह में जाय आसनों को सजा रख यह अधिकरण मण्डप है इसमें चलूं (भीतर जाय बिछौने आदि बिछाय बही खाते कागज पत्र सब सजा देता है) बिछौना मैं बिछा चुका इस मण्ड को साफ कर डाला आसन भी लगा दिए अब जा कर व्यवहार दर्शकों से निवेदन करूं (चल कर और देख कर) क्या यह राजश्यालक शकार

दुष्ट मनुष्य इधर ही आ रहा है इसकी न-ज़र बचा कर चलूं (एक ओर खड़ा हो जाता है)

(उज्वल वस्त्र पहिने शकार का प्रवेश)

शकार । अहा मैं अङ्ग प्रत्यङ्ग की शोभा से गन्धर्वराज समान सोहता हूं मैं चित्र विचित्र राज श्यालक हूं और विष की गांठ में प्रविष्ट कीट समान इतने दिनों से ढूंढते २ आज मुझे दांव लेने का यह अवसर मिला है अब वसन्तसेना के मारने का यह दुष्कर्म किस पर थापूं (सोच कर) आहा अच्छी याद आई ऐसी दरिद्र चारुदत्त पर इस नीच कर्म की थापूं क्योंकि वह दरिद्र है उस पर सब फव सता है अच्छा तो राजद्वार में आगे से चल कर सब व्यवहार लिख रक्खूं (भीतर जाय और देख) आसन सब सजे लगे हैं व्यवहार दर्शक लोग आते ही होंगे तब तक इस दूर्वाचत्वर पर बैठ मुहूर्त भर प्रत्याशा करूं ॥

(बैठ जाता है)

शोधनक । दूसरी ओर से निकल, हो व्यवहारदर्शक लोग तो आ रहे हैं आगे से चल कर इनसे मिलूं ॥

(सेठ और कायस्थ को साथ लिए 'आधिकर्णिक' व्यवहारदर्शक आते हैं)

आधिकर्णिक । सेठ जी व्यवहार के निर्णय में बड़ा क्लेश उठाना पड़ता है अर्थी प्रत्यर्थी और गवाहों का बचन सुन जो सर्वथा झूठ और नीति विरुद्ध होता है बहुधा सत्य को झूठ और झूठ को सत्य कर तो कार्य्य निवेदन करते हैं पर दोनों अपने अपने को दोषी नहीं बना चाहते राग द्वेष लोभ मोह में भरे बादी प्रतिबादी अपने अपने पक्ष को पुष्ट कर बढ़ाते हैं वकीलों को देखो तो द्रव्य के लोभ में आय झूठे झूठे सबूतों से अपनी वक्तृता के बल झूठ को सच सच को झूठ कर देखाते हैं बुद्धिहीन अधिकारी अमले वर्ग (उत्कोच) घूंस ले व्यवहारदर्शक को और का और समझा देते हैं इन दोषों से व्यवहार निर्णेता जो ठीकठीक निर्णय नहीं करता पाप का भागी बनता है मनु ने लिखा है " अदण्ड्यान्दण्डयन्राजा दण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन् । अयशोमहदाप्नोति नरकाश्चैवगच्छति " जो राजा अदण्ड्य को दण्ड देता है और दण्ड योग्य को रिहाई कर देता है वह इस संसार में महा अयशी हो अन्त को नरकमें वास पाता है सारांश यह कि यह काम बड़ा कठिन और नाज़ुक है इसमें प्रशंसा तो दूर रहै अपकीर्ति कहीं गई नहीं ॥

सेठ। आर्य्य आप के गुणों में जो दोष निकाले तो चन्द्रमा के प्रकाश में भी अन्धकार है (सब लोग जा कर अपने २ स्थान में बैठ जाते हैं)

आधिक०। भद्र शोधनक बाहर जा कर देखो कौन कौन कार्य्यार्थी है॥

शोधनक। जो आज्ञा (बाहर आय) आर्य्य आधिकरणिक कहते हैं यहां कौन कौन कार्य्यार्थी है॥

शकार। क्या आधिकरणिक आ गए (हर्ष और गर्व से चल कर) मैं बड़ो मनुष्य राजा का साला कार्य्यार्थी हूं॥

शोध० (स्वगत) हा पहले यही मूर्ख कार्य्यार्थी आज होगा (प्रकाश) आर्य्य ठहरिए जब तक मैं निर्णायक से जा कर निवेदन करूं (जा कर) आर्य्य राजश्यालक संस्थानक आज कार्य्यार्थी बन कर आया है॥

आधिक०। सूर्योदय होते ही ग्रहण आज पहले क्या इसी मूर्ख के संग सिर मारना पड़ेगा शोधनक कह दे आज तुम्हारा मुकद्दमा न होगा॥

शोध०। जो आज्ञा (बाहर जा कर) आर्य्य निर्णायक कहते हैं आज तुम्हारा व्यवहार न देखा जायगा॥

शकार (क्रोध से) मेरा व्यवहार क्यों न देखेंगे अच्छा तो मैं अपने बहनोई राजा पालक से जा कर कहता हूं और इसे दूर कर दूसरे निर्णायक को इसकी जगह स्थापित कराऊंगा (जाने लगा)

शोध०। आर्य्य ठहरिए मैं निर्णायक से जाकर कहूं (भीतर जाता है) राजश्यालक कहता है मेरा मुकद्दमा न देखेंगे तो मैं राजा पालक अपने बहनोई से कह कर इस निर्णायक को निकाल दूसरा इस की जगह स्थापित कराऊंगा॥

आधि० (स्वगत) इस मूर्ख में सब सम्भावित है (प्रकाश) भद्र शोधनक उस्से जाकर कहो चलो होगा तुम्हारा मुकद्दमा॥

शोध०। जो आज्ञा (बाहर आय) आर्य्य चलिए तुम्हारा व्यवहार देखा जायगा॥

शकार। पहले कहते थे न देखेंगे अब कहते हैं देखेंगे निर्णायक लोग डर गए अब जो मैं कहूंगा वही करेंगे (दोनों भीतर जाय) मेरा सब कल्याण और शुभ है तुम्हारा चाहो हो या न हो॥

आधि (स्वगत) इस मूर्ख का संस्कार प्रबल है (प्रकाश) क्या आप कार्य्यार्थी हैं॥

शकार। हां और क्या॥

आधि०। वह कार्य्य कहिए॥

शकार। कान में कहूंगा मैं बड़े शक्क प्रमाण कुल में जन्मा हूं मेरे बाप राजा के ससुर हैं राजा मेरे बाप के जमाई हैं मैं राजा का साला हूं मेरी बहिन के पति राजा हैं॥

आधि०। सब जानते हैं कुल के वर्णन से क्या, अच्छे खेत में कटैले पेड़ क्या नहीं जमते ; अब कार्य्य कहिए॥

शकार। (स्वगत) कसूर साबित हो जाने पर भी ये मेरा क्या कर सकेंगे तो अब ऐसा कहूं (प्रकाश) राजा मेरे बहनोई ने प्रसन्न हो सब उद्यानों में उत्तम पुष्पकरण्डक जीर्णोद्यान मुझे दिया है वहां प्रतिदिन पेड़ों को देखने को सूखा कराने को पुष्ट कराने को छिन्न कराने को मैं जाता हूं दैव योग से देखता हूं नहीं देखता हूं एक मरी स्त्री का शरीर पड़ा है॥

आधि०। जानते हो वह कौन स्त्री है॥

शकार। क्यों नहीं जानता किसी कुपुत्र ने भूषण के लोभ से मेरे बगीचे में ले जाकर फांसी दे बलात्कार से बसन्तसेना को मारा है मैं नहीं (आधा कह मुंह ढांपता है)

आधि०। यह नगर रक्षकों का प्रसाद है (कायस्थ से) राय साहब पहले इस व्यवहार पद को लिख रक्खो मैंने नहीं मारा॥

कायस्थ। जो आज्ञा (लिख लेता है)

शकार (स्वगत) भय और खेद से, हा उतावली कर यह मैंने क्या किया जो अपने हाथ अपनी गरदन में छूरी भोंका अब ऐसा कहूं (प्रकाश) भो आधिकरण भोजका क्या थोड़ी सी बात का इतना बिस्तार कर रहे हो कहे तो जाता हूं मैंने नहीं देखा (पांव से उस लिखे को पोंछता है)

आधि०। तुमने कैसे जाना कि गहनों के लोभ से उसे मारा॥

शकार। हां हां जानता क्यों नहीं उसकी भुजा और गहना पहिनने के सब स्थान सूने हैं इस्से तर्क करता हूं कि गहनों ही के लोभ से मारा होगा॥

सेठ और कायस्थ। हो सक्ता है॥

शकार। (स्वगत) बड़ी बात भई मैं जी गया॥

कायस्थ। बसन्तसेना की मा को बुला कर पूछना चाहिए कि वह कहां गई है॥

आधि०। अच्छा कहते हो शोधनक तुम जाकर बसन्तसेना की मा को बिना किसी प्रकार की डर दिखाए बुला लाओ॥

शोध०। जो आज्ञा (बाहर जाय और बसन्तसेना की मा को साथ ले फिर आता है)

वृद्धा। मेरी बेटी अपने यार के घर यौवन सुख भोगने गई है यह दीर्घायु कहता है चलो निर्णायक लोग बुलाते हैं मेरा जी घबराता है सब शरीर थर थर कांपा जाता है हे भगवान् क्या होनहार है॥

शोध०। यह व्यवहार स्थान है यहां चलो (दोनों भीतर गए)

वृद्धा। आप सब लोगों की कुशल हो॥

आधि०। भद्रे आओ बैठो॥

शकार। आईरी बुड्ढी कुटिनी॥

आधि०। भद्रे तुम बसन्तसेना की मा हो?

वृद्धा। हां॥

आधि०। अब इस समय बसन्तसेना कहां गई है॥

वृद्धा। अपने यार के घर यौवन सुख भोगने गई है॥

आधि०। उसके यार का क्या नाम है॥

वृद्धा (स्वगत) हा यह अति लज्जा की बात है॥

आधि०। भद्रे लज्जा से चुप क्यों हो व्यवहार ही तुमसे पूछता है इसमें सङ्कोच का कुछ काम नहीं है॥

वृद्धा। जो ऐसा ही है तो आर्य मिश्र सुनिए वह सार्थवाह विनयदत्त के नाती सागरदत्त के पुत्र आर्य चारुदत्त नाम सेठों के मुहल्ले में रहते हैं वहीं मेरी बेटी यौवन सुख अनुभव करने गई है॥

शकार। आर्य सुना आप लोगों ने लिखिए इन शब्दों को चारुदत्त के साथ मेरा विवाद है॥

आधि० (कायस्थ से) धनदास बसन्तसेना चारुदत्त के यहां गई यह व्यवहार का प्रथम पाद है इसे लिख लो क्या चारुदत्त को भी मुझे बुलाना पड़ेगा भद्र शोधनक आर्य चारुदत्त को प्रतिष्ठापूर्वक बिना किसी तरह का उद्वेग उन्हे दिए ले आओ; कहना व्यवहारदर्शक लोगों को आप के दर्शनों की कामना है॥

शोध०। जो आज्ञा, बाहर जाय चारुदत्त को साथ लिए फिर आता है॥

चारुदत्त। (स्वगत) कारागृह से भागे हुए गोपालदारक को रथ पर बिठा कर मैंने स्थानान्तर में पहुंचा दिया इस बात को राजा पालक ने क्या जासूसों के द्वारा जान लिया जो प्रतिवादी सा आहूत हो कर मैं आज राजद्वार में ले आया

जाता हूं मेरे सामने रूखे स्वर से यह कौआ बोल रहा है बांई भुजा और आंख फरक रही है हे दैव क्या भावी है ईश्वर कुशल करे॥

शोध०। आर्य्य आइए यह अधिकरण मण्डप है भीतर चलिए (दोनों भीतर गए)

चारुदत्त (सब ओर देख) अहा इस गृह की कैसी शोभा है॥

श्लोक।

चिन्तासक्तनिमग्नमन्त्रिसलिलं दूतोर्मिमालाकुलं, पर्य्यन्तस्थितचारनक्रमकरं नागाश्वहिंस्राश्रयम्। नानावाशककङ्कपक्षिरुचिरं कायस्थसर्पास्पदं, नीतिक्षुण्णतटस्वराजकरणं हिंस्रैःसमुद्रायते॥

आहा यह अधिकरणमण्डप हिंसकों से समुद्र सा हो रहा है इसमें कार्य्य के विचार में तत्पर मन्त्री लोग जल हैं वार्त्ताहर दूत अहलकारी लहरें हैं प्रान्त में खड़े जासूस मगर घड़ियाल आदि मानों जलचर जीव हैं घोड़ा हाथी जो बध्य को पांवों से रौंदने के लिए खड़े किए गए हैं वे सब हिंस्र जीव हैं अनेक प्रकार के शब्द बोलने वाले चुगल लोग समुद्रतटचारी कङ्क आदि पक्षी हैं दूसरे का छिद्र देखने वाले कुटिल कायस्थ पनिहा सांप हैं नीतिशास्त्र ही इसके कगारों के भग्न होने का हेतु ऊंचा नीचा किनारा है (पास जाय) औ कार्य्याकार्य्य विचार में तत्पर निर्णेता लोग आप सबों को कुशल हो॥

आधि०। आर्य्य आइए आप का स्वागत हो भद्र शोधनक आर्य्य को आसन दे॥

शोधनक। (आसन देता हुआ) आर्य्य इस आसन पर बैठिए॥

चारुदत्त। बैठ जाते हैं॥

शकार (क्रोध से) आयारे स्त्रीघातक आया; वाह क्या धर्मयुक्त न्याव यहां होता है जो ऐसे महापापी स्त्री घातक को आसन दिया जाता है (गर्व से) अच्छा दीजिए देख लूंगा॥

आधि०। आर्य्य चारुदत्त इस वृद्धा की बेटी के साथ आप का स्नेह अनुराग या गुप्त प्रीति कुछ है?

चारुदत्त। किस्की?

आधि० (बसन्तसेना की मा को दिखाते हुए) इस आर्य्या की बेटी से॥

चारुदत्त। झुक कर सलाम करते हैं॥

वृद्धा। बेटा बहुत दिन चिरजीवो (स्वगत) मेरी बेटी ने अपना यौवन अच्छे पात्र में धरा॥

आधिकरणिक। आर्य्य वेश्या आप की मित्र है॥

चारुदत्त। लज्जित हो नीचे सिर कर लेता है॥

शकार। अरे मिथ्याबिनीत धूर्त बक बसन्तसेना को मार अब छिपाने की चेष्टा करता है॥

सेठ और कायस्थ। आर्य्य इसमें लज्जा का काम नहीं है यह अदालत है॥

चारुदत्त। मैं क्या कहूं यौवन का इस में अपराध है मेरे चरित्र का नहीं॥

आधिकरणिक। आर्य्य इस मुकद्दमे में प्राण दण्ड की सम्भावना है यह खून का मुकद्दमा है लज्जा छोड़ तुर्त साफ साफ जवाब दीजिए यहां झुठाई और छल नहीं चलता व्यवहार तुमको पूछता है॥

चारुदत्त। किसके साथ मेरा व्यवहार है॥

शकार (गर्व से) मेरे साथ॥

चारुदत्त। तेरे साथ मेरा व्यवहार अतीव दुस्साध्य है॥

शकार। अरे स्त्री घातक रत्न के भूषणों से अलंकृत बसन्त सेना को मार कर अब कपट तपस्वी बन बैठा है॥

चारुदत्त। तू असम्बद्ध बकता है॥

आधिकरणिक। आर्य्य चारुदत्त इसे क्या सच कहो बसन्तसेना से आप की दोस्ती है॥

चारुदत्त। एवमेव॥

आधिकरणिक। आर्य्य बसन्तसेना अब कहां है?

चारुदत्त। घर गई॥

कायस्थ। कैसे गई किस समय गई जाते कौन उस्के साथ गया॥

चारुदत्त। घर गई और क्या कहूं॥

शकार। मेरे जीर्णोद्यान में ले जाकर भूषण के लिए फांसी दे उसे मार डाला अब कहता है घर गई॥

चारुदत्त। आः असम्बद्ध भाषिन् यह तेरा कहना सब झूठ है क्योंकि तेरा मुख तुषार का मारा कमल सा अति मलिन हो रहा है यह तेरा मुकदमा न सुनने योग्य न बिचारने योग्य है॥

आधिकरणिक (धीरे से) श्लोक। तुलनंचाद्रिराजस्य समुद्रस्यचतारणम्। ग्रहणंचानिलस्येव चारुदत्तस्यदूषणम्॥ जैसा हिमाचल का उठा लेना समुद्र को पैर के पार हो जाना और वायु को हाथ से पकड़ लेना असम्भव है (प्रकाश) अरे ये आर्य्य चारुदत्त हैं ऐसा अनुचित काम क्यों करेंगे॥

शकार। किसी का पक्षपात करना

निर्णेता के लिए बड़ा दोष है ठीकाठीक व्यवहार को देखना होता है ॥

आधि० । धिक् मूर्ख तू नीच ही वेद का अर्थ पढ़ता है तेरी जीभ नहीं गिर पड़ती मध्यान्ह में सूर्य्य की ओर देखते तेरी आंख फूट नहीं जाती जलती आग में हाथ डालता है तेरा हाथ नहीं जलता चारुदत्त को अपराधी ठहराते पृथ्वी फट तुझे निगल क्यों नहीं जाती चारुदत्त ऐसा अन्याय कैसे करेंगे जिन्हों ने समुद्र के रत्नों को निकाल मँगताओं को दे समुद्र को जलमात्रावशेष कर डाला ऐसे पुण्यात्मा महात्मा चारुदत्त थोड़े से गहनों के लोभ में आ इतना भारी पातक कर डालेंगे ॥

शकार । पक्षपात करने का काम नहीं है व्यवहार की ओर देखो ॥

वृद्धा । अरे नष्टपरलोक जिन्हों ने धरोहर के गहनों के चोरी हो जाने के कारण चारो समुद्र की सार रत्नावली दे दिया सो थोड़े से गहनों के लिए ऐसा अन्याय करेंगे, हा बेटी वसन्तसेना तू कहां चली गई (रोने लगी)

आधि० । आर्य्य चारुदत्त वसन्तसेना तुम्हारे घर से पांव पांव गई या रथ पर बैठ ॥

चारुदत्त । मेरे सामने नहीं गई मैं नहीं जानता कैसे गई पांव पांव या रथ पर बैठ ॥

(वीरक का प्रवेश)

वीरक । आर्य्य मित्र बन्धन तोड़ भागते हुए आर्य्यक गोपाल दारक को ढूंढ़ता पट से आवृत रथ आ रहा है चन्दनक तू इसकी तलाशी ले चुका मैं भी इसे देख लूं इस पर चन्दनक गालियां दे मुझे बहुत मारा है और रथ को भगा दिया इस बात की इत्तिला मैं अदालत को करता हूं ॥

आधि० । भला तू जानता है वह किसका रथ है ॥

वीरक । इसी चार्य्य चारुदत्त का ; वसन्तसेना उस पर सवार थी ; पुष्पक जीर्णोद्यान में क्रीड़ा करने को जाती है ऐसा रथवाहक ने कहा था ॥

शकार । आप लोगों ने फिर भी सुना ॥

आधि० । हा इस निर्मल कान्ति चन्द्रमा को राहु ग्रसे लेता है; वीरक तुम्हारा व्यवहार पीछे देखा जायगा द्वार पर घोड़ा खड़ा है उस पर सवार हो जीर्णोद्यान को जाकर देखो कोई स्त्री वहां मरी पड़ी है या नहीं ॥

वीरक । जो आज्ञा (बाहर जाय फिर

आ कर) मैं वहां गया था कुत्ता और सियारों से खाया हुआ एक स्त्री का शरीर देखा ॥

कायस्थ। तुमने कैसे जाना कि वह स्त्री का शरीर है ॥

वीरक। उसके बाल और हाथ पांव बच रहे हैं इसी से मैंने पहचाना ॥

आधि०। हा धिक् संसार के व्यवहार बड़े कठिन होते हैं जैसे २ इसे विचारते हैं वैसे वैसे इसमें सङ्कट ही दिखाता है इस मुकद्दमे की रूदात तो अच्छी नहीं है पर जी हमारा इस बात को साखी दे रहा है कि चारुदत्त निरपराध हैं कीचड़ में फसी गौ सी इस समय बुद्धि हमारी कुछ काम नहीं करती ॥

चारुदत्त। श्लोक ॥ यथैवपुष्पंप्रथमेविकाशे समेत्यपातुंमधुपा:पतन्ति। एवंमनुष्यस्यविपत्तिकाले छिद्रेष्वनर्थाबहुलीभवन्ति ॥ जैसे पहलेपहल फूल के निकलते ही भौंरे झुण्ड के झुण्ड उसका रस पीने को आते हैं इसी भांत मनुष्य को बिपत्ति काल में छिद्र पाय अनर्थ बहुतात से इकट्ठे हो जाते हैं। दुष्टात्मा परगुण में दोष देखने वाला बैर से दूसरे के मारने को जो झूठ बोले तो क्या उसे मान लेना होता है; इसका बदन सत्य या झूठ है इसे अपनी बुद्धि से क्या न तौल लेना चाहिए बिना बिचारे मुझ निरपराधी को दण्ड दो यह आप को उचित नहीं है; जो मैं फूली लता को भी निर्दयता से खींच कर फूल नहीं तोड़ता सो ध्यास केश में पकड़ रोती हुई नारी को मारूंगा ॥ श्लोक। योहंलतांकुसुमितामपिपुष्पहेतो राक्षथनैवकुसुमावचयंकरोमि। सोहंकथंभ्रमरपक्षरुचौसुदीर्घें केशेप्रगृह्यरुदतींप्रमदांनिहन्मि ॥

शकार (गर्व से) हंहो अधिकृता तुझे पक्षपात से क्या प्रयोजन व्यवहार की ओर देखो अभी तक इस नष्ट चारुदत्त को आसन पर बिठाए हो ॥

आधि०। भद्र शोधनक चारुदत्त को नीचे उतार दे ॥

(शोधनक वैसा ही करता है)

चारुदत्त। बिचार करो अधिकृत आर्य मिश्र न्याय पूर्वक बिचार करो (आसन से उतर नीचे बैठ जाता है)

शकार (हर्ष से स्वगत) मैंने पाप कर छल से चारुदत्त पर थाप दिया सो जहां चारुदत्त है वहीं ही जाकर बैठूं (बैठ कर) चारुदत्त मेरी ओर देख अब कह २ कि मैंने मारा ॥

चारुदत्त (सांस भर स्वगत) हा मित्र

मैत्रेय आज यह मेरा क्या विनाश हुआ हा ब्राह्मणी तू बड़े बिमल कुल में जन्म ले ऐसे कलङ्कित को व्याही गई जो धन के लोभ से नारी को मार कर बध दण्ड से बधा जायगा ; हा बेटा रोहसेन लड़काई ही से तुझ पर बिपत्ति पड़ी यह तेरे खेल कूद के दिन थे ; मैंने मैत्रेय को भूषण लौटाने को बसन्तसेना के पास भेजा था सो अब तक लौट के नहीं आया ॥

(गहनों की पिटारी लिए मैत्रेय का प्रवेश)

मैत्रेय। सोने की गाड़ी के लिए रोता हुआ रोहसेन को देख अपने गहनों को उसे दे भीतर भेज दिया था कि इसी को सोने की गाड़ी गढ़ा लेना ; आर्य्य चारुदत्त ने इन भूषणों को लेना उचित न समझ लौटाने के लिए बसन्तसेना के पास मुझे भेजा है सो मैं अब उसी के निकट जाऊं (चल कर और देख कर आकाश में) क्या भावरे भिल हैं क्यों रे तुम व्याकुल से क्यों दीखते हो (सुनकर) क्या कहते हो कि प्रियमित्र आर्य्य चारुदत्त अदालत में तलब किए गए हैं यह तलबी किसी साधारण बात के लिए न होगी (बिचार कर) तो बसन्तसेना के पास पीछे जाऊंगा पहिले अधिकरण मण्डप में चलूं (चल कर और देख कर) यह अधिकरण मण्डप है भीतर चलूं (जाकर) अधिकारियों का शुभ हो मेरे प्रियमित्र आर्य चारुदत्त कहां हैं ॥

आधि०। यह बैठे हैं ॥

मैत्रेय। मित्र तुह्मारी स्वस्ति हो ॥

चारुदत्त। होगी ॥

मैत्रेय। मित्र क्षेम तो है ॥

चारुदत्त। यह भी होगा ॥

मैत्रेय। मित्र किस कारण आज आप बड़े व्याकुल से दीखते हो और क्यों यहां बुलाए गए हो ॥

चारुदत्त। श्लोक ॥ मयाखलुनृशंसेन लोकद्वयमजानता। स्त्रीरतिश्वविशेषेण शेषमेषोभिधास्यति ॥

मुझ निर्दयी ने दोनों लोक को भय छोड़ स्त्री या साक्षात कामदेव की बधू रति को (शकार की ओर दिखाय) शेष यह कहेगा ॥

मैत्रेय। क्या क्या ॥

चारुदत्त (कान में) ऐसा ऐसा ॥

मैत्रेय। कौन ऐसा कहता है ॥

चारुदत्त। (शकार की ओर इशारा कर) यह कालरूप मुझे कहता है ॥

मैत्रेय। (धीरे से) ऐसा क्यों नहीं कहते कि घर गई ॥

चारुदत्त। कहता हूं पर बुरे दिनों के फेर से कोई नहीं सुनता ॥

मैत्रेय। भो भो आर्य्या जिसने पहले बुद्धदेव के मन्दिर बाटिका शिवालय कुआं तालाव और यज्ञ स्तम्भ से उज्जैयिनी को अलङ्कृत कर दिया वह अब असमर्थ हो द्रव्य के लिए क्या ऐसा भारी पाप करेगा (क्रोध से) अरे रे कुलटापुत्र राजश्यालक संस्थानक उच्छृङ्खल दोषपात्र बहु भूषण भूषित मर्कट मेरे आगे तो कह जो मेरे मित्र फूली हुई लता को पतीए टूटने के डर से झुका कर नहीं तोड़ते सो दोनों लोक बिरोधी ऐसा काम करेंगे खड़ा रह रे कुट्टिनीपुत्र तेरे हृदय की समान कुटिल इस दण्ड से तेरे माथे को मैं सौ टूक करता हूं ॥

शकार। आर्य्य मित्र सुनिए चारुदत्त के साथ मेरा बिवाद है यह काकपद मस्तक नीच क्यों मेरे सिर को सौ टूक करता है अरे दासीपुत्र दुष्ट ब्राह्मण तू मुझे मारेगा (उठ कर उसे लिपट जाता है)

मैत्रेय उसे मारने लगता है इसी मार में मैत्रेय के बगल से गहने की पिटारी गिर पड़ती है ॥

शकार (उसे उठा कर और देख कर हर्ष से) देखिए आर्य मित्र देखिए ये एसी तपस्विनी बसन्तसेना बेचारी के गहने हैं इसी के लिए वह मारी गई है ॥ (अधिकारियों ने सिर नीचा कर लिया)

मैत्रेय। मित्र आप सच सच क्यों नहीं कह देते ॥

चारुदत्त। मैत्रेय मैं सत्य ही कहता हूं कि बसन्तसेना को मैंने नहीं मारा पर कौन बिश्वास करता है ॥

सेठ (बसन्तसेना की मा से) आर्य्य तुम सावधान हो कर देखो यह गहना वही है या नहीं ॥

वृद्धा। उसी के समान है पर वह नहीं है ॥

शकार। हां यह कुट्टिनी नेत्र से सम्मति करती है पर बचन से छिपा रही है ॥

वृद्धा। दुर हो सुए ॥

कायस्थ। सावधान हो फिर देख कर कहो यह वही गहना है या नहीं ॥

वृद्धा। सोनार के बनाने की कारीगरी से वैसा ही देख पड़ता है पर वह है नहीं ॥

सेठ। तो चारुदत्त का यह भूषण होगा ॥

चारुदत्त। नहीं २ मेरा नहीं है ॥

कायस्थ। तो फिर किस्के हैं॥

चारुदत्त। इस वृद्दा की बेटी के॥

कायस्थ। तो यह भूषण उस्से अलग कैसे हुए॥

चारुदत्त। सोने की गाड़ी के लिए रोता रोहसेन को बसन्तसेना दे गई थी कि इस्की गाड़ी गढ़ा लेना इस तरह ये गहने बसन्तसेना से अलग हुए यह बात सब सत्य है॥

सेठ। चारुदत्त यहां सत्य बोलो देखो सत्य से सुख मिलता है सत्यबादी पातकी नहीं होता सत्य को मिथ्या से मत छिपाओ॥

चारुदत्त। ये आभरण वेही हैं या नहीं यह मैं नहीं जानता किन्तु मेरे घर से आए हैं यह जानता हूं॥

शकार। उद्यान में ले जाकर उसे मार डाला अब कपट का बेष बना कर छिपाता है॥

आधि०। आर्य्य चारुदत्त सच कहो नहीं तो अब तुम्हारे सुकुमार शरीर पर कड़े कोड़े निःशङ्क गिरेंगे॥

चारुदत्त। पुण्यात्मा के कुल में मैं जन्मा हूं मुझमें पाप नहीं है यदि लोग सम्भावना करते हैं तो मेरे कहने से क्या (स्वगत) बिना बसन्तसेना के मेरा जीना व्यर्थ है (प्रकाश) बहुत कहने से क्या फल है मुझ निर्दयी ने दोनों लोक की भय छोड़ स्त्री या साक्षात् काम की बधू रति को (शकार की ओर) और यह कहेगा॥

शकार। मारा, अरे तू भी कह मैंने मारा॥

चारुदत्त। तू कहता ही है॥

शकार। भट्टारक सुनिए सुनिए इसने मारा इसमें कुछ सन्देह न रहा अब इस दरिद्र को बधदण्ड दीजिए॥

आधि०। भद्रशोधनक जैसा शकार कहता है वह ठीक है अब राजपुरुषों से कहो इस चारुदत्त की मुश्कें कस लें॥

(राजपुरुष उस्की मुश्कें कस लेते हैं)

वृद्दा। जिसने चोरी गए गहनों के एवज रत्नावली दे डाला वह ऐसा पाप क्यों करेगा जो हुआ सो हुआ मेरी बेटी मारी गई तो गई यह दीर्घायु जीवे बादी प्रतिबादी में बिवाद होता है मैं बादी नहीं हूं आप इसे छोड़ दीजिए॥

शकार। चल गर्भदासी रांड़ तुझे इस्से क्या तू जा यहां से॥

आधि०। बुढ्ढी तू जा शोधनक इसे बाहर निकाल दे॥

वृद्धा। हा जात हा पुत्र (रोती हुई बाहर गई)

शकार। अपने माफिक जो कुछ मुझे करना था वह किया अब जाऊं (बाहर गया)

आधि०। चारुदत्त निर्णय करना हमारा काम था दण्ड देने में राजा प्रमाण है; शोधनक राजा पालक से जाय विज्ञापन कर यह ब्राह्मण पातकी है तो भी इसे मारना योग्य नहीं है इसका सब धन हर कुटुम्ब समेत राज्य के बाहर निकाल देना चाहिए मनु ने ऐसा कहा भी हैं॥ नजातुब्राह्मणंहन्यात्सर्वपापेष्वपिस्थितम्। राष्ट्रादेनंवहिःकुर्यात्समग्रधनमक्षतम्॥

शोध०। जो आज्ञा (बाहर जाकर फिर आय) आर्य्य राजा पालक कहते हैं जिसने भूषण निमित्त वसन्तसेना को मारा है उसके गले में वही भूषण बांध ढिंढोरा पीटते दक्षिण श्मशान में ले जाकर शूली दी जाय जो दूसरा कोई ऐसा पाप करेगा वह भी इसी भांत दण्ड पावेगा॥

चारुदत्त। अहो राजा पालक बड़ा अविचारकारी है मित्र मैत्रेय तुम जाकर अम्मा से मेरा अन्तिम प्रणाम कहना और पुत्र रोहसेन का पालन करते रहना॥

मैत्रेय। मूल छिन्न होने पर वृक्ष का पालन कहां॥

चारुदत्त। मित्र ऐसा नहीं लोकान्तर गए पुरुष का दूसरा शरीर पुत्र है मुझ में जो प्रेम था वह रोहसेन में कीजिएगा॥

मैत्रेय। मैं आप का प्रियमित्र हो कर आप के बिना प्राण न रक्खूंगा॥

चारुदत्त। अच्छा रोहसेन को तो दिखा दो॥

मैत्रेय। हां यह युक्त है॥

आधि०। भद्र शोधनक चारुदत्त को निकाल दे॥

(रोते हुए मैत्रेय और चारुदत्त को शोधनक बाहर निकाल देता है)

जवनिका पतन।

नवमोङ्कः॥

गरीबपरवर में समझ की उलटा पलटी।

यह शब्द हिन्दुस्तान में बहुत प्रचलित है उर्दू भाषा की बोल चाल में जिनको यथोचित अभ्यास है वे प्रायः गरीबपरवर और गरीबपरवर सलामत के शब्द का व-

र्ताव प्रसङ्गानुकूल करते हैं और बाजों को तो यह शब्द ऐसा सखुनतकिया हो गया है कि बात बात पर इस शब्द की धुनि बांध देते हैं परन्तु इस शब्द का पूर्ण बर्ताव साहिबान अङ्गरेजों के साथ होता है कोई अर्ज़ी वा सवाल ऐसा नहीं होता कि जिसके आदि में गरीबपरवर सलामत का शब्द न लिखा रहता हो प्रत्येक मुन्सिफ जज कलेकृर डिप्टी कलेकृर एसिस्टेंट कलेकृर और हर एक तहसीलदार और दूसरी कचेहरी के हाकिम लोग जिनके सामने प्रतिदिन लाखों अर्ज़ियां गुज़रती हैं सब पर गरीबपरवर सलामत लिखा जाता है; साधारण प्रकार पर इस पद का अर्थ लोग यही समझते हैं कि गरीब के माने दुखिया वा आरत निर्धन कंगाल या मुफलिस के हैं और इसी अर्थ के अनुमान से सब न्यायार्थी लोग इस पद का बर्ताव करते हैं पर इस पूर्वोक्त अर्थ पर दृष्टि देने और उसकी यथोचित चरितार्थता न होने से लोग इस भ्रांति में पड़े हुए हैं और उनको इस बात का बड़ा आश्चर्य है कि जिस सर्कार को सम्बोधन कर लाखों किम्बा करोड़ों प्रजा प्रतिदिन लिखे हुए पर्चों के द्वारा और जिह्वा के द्वारा गरीबपरवर सलामत की धूम मचाती रहती है इस आशीर्वाद सहित सम्बोधन पद को जिस अभिप्राय से कहती है उसके अनुकूल ठीक फल और परिणाम नहीं देखने में आता इसमें क्या भेद है; यदि गरीब परवर के माने दीन प्रतिपालक के हैं और प्रजा का तात्पर्य भी ऐसा ही है तो अवश्य इस सम्बोधन पद का उत्तम परिणाम होना चाहिए क्योंकि तेजस्वियों और महात्माओं का उपस्थान आश्रय उपासना किम्बा शरणागति व्यर्थ और निष्फल नहीं होती देखो जाड़े के दिन में निर्धन कंगाल दुखिये सूर्यनारायण को दीन प्रतिपालक जान कर शीत की व्यथा निवारण के लिये जहां उनके सामने बैठे थोड़े ही क्षण में उनकी कँपकपी और शीत की व्यथा मिट जाती है इसी प्रकार रात के समय शीतातुर लोग अग्निरूपी दीनवत्सल की उपासना से परित्राण पाते हैं; ऐसा ही धूप काल में वृक्षों को दीनवत्सल जान उनकी छाया सेवन से ऊष्म जनित परिताप को निवृत्त करते हैं और तृषा के दुःख में जब दुःखित होते हैं तो नदी कूप तलाव भी उन पर दीन प्रतिपालकता का फल प्रगट करते हैं; जब दीन दुखिये किसानों की खेती बारी अ-

वर्षण के कारण नष्ट होने लगती है तो तो आकाशचारी मेघ भी दीनप्रतिपालक के सम्बोधन को ठीक ग्रहण करते हैं इस में कुछ सन्देह नहीं है कि हमारी सर्कार अङ्गरेज़ी को दीनवत्सलता का अभिमान कुछ निरर्थक नहीं है और वास्तव में अपनी समझ के अनुकूल है पर भारतवर्ष की आर्त मण्डली जिस भाव जिस अभिप्राय जिस कल्याण प्राप्ति की वाञ्छा वा वरप्रदान की लालसा से गरीबपरवर सलामत के पद का बर्ताव जिस दीनप्रतिपालकता के बिचार से करती है उसकी संसिद्धि का लेश मात्र भी नहीं पाया जाता तो इसमें कुछ धोखा है कि प्रजा कुछ और समझ के पुकारती है सर्कार सुन कर कुछ और ही समझती है और अपनी समझ के माफिक काम करती है प्रजागरी व परवर के शब्द से यह जताती है कि हम दीन पौरुष हीन धन सम्पत्ति और बिद्या गुण से छीन हैं हमारी रक्षा कर और हमारे आशीर्वाद से तू सलामत अर्थात् कुशल रह। परन्तु इस स्थल पर ठीक और सच्ची समझ सर्कार की है क्योंकि सकार प्रजा के इस सम्बोधन वाक्य पर यथोचित ध्यान दिये हुए है उसमें तिल मात्र का भी अन्तर नहीं पड़ने पाता। अर्बी भाषा में गुर्बत कहते हैं स्वदेश त्याग, वा अपनी जन्मभूमि को छोड़ दूसरे देश में जाने को और इसी शब्द से गरीब कर्तृवाचक शब्द बनता है अर्थात् स्वदेशत्यागी, परदेशी मुसाफिर, अपने देश से दूसरे देश का जाने वाला, जब गरीब के साथ परवर का शब्द लगा दिया तो यह अर्थ हुआ कि विदेशियों का पालने वाला। अब इस बात पर ध्यान देना चाहिये कि हमारी सर्कार कैसी गरीब परवर अर्थात् मुसाफिर परवर है देखिये जितने मातवर अङ्गरेज़ अपनी बिलायत छोड़ कर इस देश में आते हैं वे सब मुसाफिर हैं उनका प्रतिपालन कैसी तन्मयता से करती है नौकरी देती है तलब जल्दी २ बढ़ाती है भत्ता देती है और यहां तक बिदेशि प्रतिपालक है कि जब देखती है कि बहुत से गरीब याने मुसाफिर बेकार बैठे हुए हैं तो उनके प्रतिपालनार्थ एक न एक नया सरिश्ता खड़ा कर देती है पहले जेलखाने के सुपरिण्टेंडेंण्ट और पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट एक भी न थे यह सब काम साहब मेजिस्ट्रेट ही भुगताया करते थे और सड़क पुल आदि के बनने का काम भी भलीभांत होजाता था किसी इञ्जिनियर के बिना कोई काम

अटका नहीं रहा तो भी सर्कार ने गरीबपरवर शब्द के अर्थांश की पूर्ति के लिये बहुत से ओहदे बढ़ाये और अभी कुछ कम नहीं हुई यद्यपि स्वास्थ के कमिश्नर मद्यादि के कमिश्नर सफाई के कमिश्नर रुई के कमिश्नर परमट किम्वा माल के प्राचीन कमिश्नर के पद हो चुके हैं परन्तु अभी बहुत से कमिश्नरों की गुञ्जायश है जैसे जल के कमिश्नर अग्नि के कमिश्नर पवन के कमिश्नर आकाश के कमिश्नर। यह सब बातें जो ईस्टइण्डिया कम्पनी के राज्य के पश्चात हुई हैं वे सब केवल गरीबपरवर शब्द के चरितार्थ करने के निमित्त हुई हैं और नहीं तो सर्कारी काम इनके बिना न तब रुका रहा है न अब रुक सक्ता था बरन पुलीस आदि का वह सत्प्रबन्ध जो पहले था अब बहुत दुर्लभ है हां अब इतनी बात विशेष हुई है कि जिसके घर चोरी हो वही बेचारा कम्पायमान हो कि कहीं हमी न उलटे धरे बांधे जांय; हम समस्त हिन्दुस्तानियों से पुकार के कहते हैं कि जो तुम सब सचमुच सर्कार से परवस्ती किम्बा प्रतिपालन चाहते हो तो किसी और अच्छे असन्दिग्ध शब्द के साथ सम्बोधन करो करुणानिधान कहो दीनवत्सल कहो दीन दुख हरण दीन दुख मोचन दीननाथ दीनबन्धु कहि के रक्षा मांगो; हम इसी प्रयोजन से कहते हैं कि फारसी अरबी का पचड़ छोड़ दो हिन्दी की सीधी राह पकड़ो देखो गरीबपरवर सलामत के शब्द ने तुमको कैसा धोखा दिया है तुम सब जानते थे कि हमारे मतलब का है निकला अङ्गरेजों के मतलब का जो गरीब यानी मुसाफिर हैं. सर्कार पितर के स्थान में है और "पितरो वाक्य मिच्छन्ति" पितर शुद्ध वाक्य चाहते हैं इस बचन के अनुसार अपने प्रयोजन की शुद्ध बाणी जिसका अर्थ समझते हो कहो यद्यपि यह प्रचलित शब्द उन बिदेशियों के मारे कि जिनके प्रयोजन के अनुकूल है बड़ी कठिनाई से बदलने पावेगा परन्तु हमारी सर्कार अत्यन्त न्यायशील है जो तुम चाहोगे तो तुम्हारा विशेष हित सूचक कोई सरल हिन्दी शब्द का सम्बोधन अङ्गीकार कर लेगी और इस गरीबपरवर शब्द के धोखे से अब भी विनिर्मुक्त हो जाओगे तो सब प्रकार की तुम्हारी लालसा और बाञ्छा गवर्नमेण्ट के न्याय पूर्ण कृपा कटाक्ष से संसिद्ध हो सक्ती है॥

इज़्ज़त क्या चीज़ है ?

जूजू हैं ? हौत्रा हैं ? काट लेगा ? काला नाग हैं ? डँस लेगा ? बीघ है ? भख लेगा ? तो फिर इसे क्यों ऐसी डर रहती है लोग कहते हैं मोती सी आब उतर गई पानी मरा नाक कट गई बात देनी पड़ी बास्तव में न कुछ उतरी न चढ़ी न कोई मरा न जिया न कुछ देना पड़ा न लेना पड़ा फिर यह आई गई उतरा चढ़ी लेनी देनी कैसो ? सब थोथा कारखाना लोग कहते हैं इज्जत गए इज्जत नहीं मिलती उनसे कोई पूछे क्या गांठ का गया जो ढूढ़ने से भी नहीं मिलता झूठी ठांय ठांय व्यर्थ की दांतकिट्टन क्या हम क्या तुम सब इस खयाल में पिसेमान हैं जग में बात बनी रहे भगवान पत रक्खे जिसमें मुंह उजागर रहे " उम्र की किश्ती हमारी देखिए किस घाट लगती है। रहेगी डूब कर दरिया में या उस पार जाती है " भीतर भीतर पोले पड़ गए हींग निकल गई महक बची है पुरखों का बड़ा नाम था दिवाल सब ओर से घुन गई लोंना चारों ओर चाटे हुए है फिर भी लट्टूदार की शरम लिए दिवाला न पिटै इस लिए पोली दीवाल को ऊपर से लीपते पोतते जाते हैं और दिन रात इसी सोच में व्यग्र है कि इज्जत न जाने पावे ; घर में सैकड़ों छिद्र और कलङ्क होते जाते हैं पर इज्जत न जाय कुल में दाग न लगे इस भय से ऊपर से तोप ताप करते दिन ठेल रहे हैं न हम तुम्हारी कहें न तुम हमारी इस नीति पर क़दम रख पञ्चहजारी सबके सब बने बैठे हैं ; घर में फांकेमस्त और कड़ाके पर कड़ाके होते हैं बाहर तेलपनियां किए पट्टा चिकनाए टेढ़ी टोपी डांटे नौवाब वाजिदअली के नाती बने फिरते हैं हम बड़े इज्जतदार खानदानी और कुलीन हैं इस नशे में चूर चूर हैं फाके पर फाके होते रहें तूम तड़ांग और नोक झोक में कभी हटने वाले नहीं ; संख के कुल में कोई एक पाञ्चजन्य हो गुज़रे कहीं से कोई खिताब या उपाधि पा गए तो उसे धरोहर थाती सी कुगए हुए हैं अब चला उसी खिताब का ढर्रा बीसों पुश्त होगई दानों को तरसते हैं पर उस पुरानी इज्जत और खिताब के नाम रोते चले जाते हैं ; बड़ों की बड़ी बात निबही जाय नोक न झरने पावे समाज में सुर्खरू रहें इस खयाल से हज़ारों तरद्दुद और पशेमानी भुगतते हैं पर नाक की जगह नहीं छूटने काढ़े मुसे लिए दिए जैसे बने उस समय

बात बनी रहे पीछे दिवाला पिटी जा-ज़ात नीलाम हो भूखों मरें कुछ चिन्ता नहीं धिक ऐसी इज्जत और ऐसी बात को हज़ार लानत ऐसों की सुर्खरूई पर हिन्दुस्तान को राख में मिलाने के लिए जहां बहुत सी बेहूदगी इकट्ठी हो रही है उनमें यह इज्जत का खयाल भी एक महा चौपट चरन हो रहा है॥

विद्वज्जन समागम।

गत मास में यहां विद्वज्जन शि-रोमणि पूज्यपाद काशी के एक-मात्र रत्नरूप श्री बालशास्त्री जी सुशोभित हुए थे इनकी प्रतिष्ठार्थ जालौन के महाराज ने अचल पण्डितों तथा अन्यान्य शिष्टजनों की एक मण्डली इकट्ठी की थी उक्त शास्त्री जी उस समाज में सबों के अनुरोध से मुक्ति मिलने की क्या उपाय है इस विषय पर संस्कृत में एक बड़ी वृहत् वक्तृता की हम सब सुनने वालों को उस समय यही प्रतीति होती थी कि क्या प्रत्यक्ष सरस्वती इस सभा में आज आ कर नाच रही हैं अ-थवा चतुरानन हम लोगों को अपनी चतुराई प्रगट करने को ब्रह्मलोक से यहां आ उतरे हैं धन्य है काशी जहां अब भी इस टूटी दशा में संस्कृत की प्रतिष्ठा रखने को दो एक ऐसे महापुरुष इसकी पुराने नाम को उजागर किए हुए हैं उपरान्त श्रीमान् म-हाराजा ने शास्त्री जी तथा और विद्वानों को श्रद्धानुरूप पुरस्कार पूर्वक सभा का बिसर्जन किया हम विद्या रसिक महाराज को अत्यन्त धन्यवाद देते हैं जिनके द्वारा हमारे कर्णकुहर को यह आनन्द प्राप्त हुआ ईश्वर ऐसों को चिरायु करे॥

प्रेरित।

जैसा वृक्ष में जब वायु लगता है तब वह हिलता है यों हीं बहुत से कारण हैं उनसे चित्त हिलता है वृक्ष को स्थिरता प्रकृति या स्वभाव है हिलना विकार है इस लिए चित्त का स्थिर रहना ही उसका प्रकृतिस्थ या स्वभावस्थ होना और चित्त का हिलना ही विकार अनुमान में आता है; चित्त की स्थिरता सुख की अवस्था है उसका हिलना क्लेश है जब भूख लगी रहती है तो चित्त स्थिर नहीं रहता क्षुधा की निवृत्ति हो जाय सुखी होवे जब तक क्लेश है तब तक उसके निवृत्यर्थ प्रवृत्ति होती है जिसमें स्थिरता आवे और सुख हो जब तक चित्त को स्थिरता नहीं तब तक सुख नहीं चाहो जिस तरह वह स्थिरता चित्त को आ सके; पहले तो हम यही कहेंगे कि संसार में परोपकार कुछ वस्तु नहीं जो परोपकार मान लिया गया है वह भी एक तरह अपना ही उपकार है अस्तु हो पर हमारे आत्मा को उससे क्या कल्याण पहुंचा उपकार या अनुपकार जो कुछ है वह सब फलानुसन्धान की इच्छा से होता है रहा यह कि उपकार का फल मीठा और अनुपकार का फल कडुआ होता है पर हम तो चित्त की स्थिरता उसी को कहेंगे कि किसी प्रकार का विकार चित्त को कभी उत्पन्न ही न हो जैसा वृक्ष में मन्द वायु के लगने से भी हिलना विकार उसमें पैदा हो उठता और इच्छा जिसे एक प्रकार की क्षुधा कहना चाहिये सो निवृत्ति के बदले स्वभावानुकूल अधिक अधिक बढ़ती ही जाती है तब चित्त को वास्तविक प्रसन्नता और शान्ति कहां रही॥ नमोद्योनभसःपृष्ठे नपातालिनभू-

तये। सर्वाशासंचयेच्चित्तः चयोमो चइतीष्यते ॥ चित्तंजानीहिसंसारो बन्धश्चित्तमुदाहृतम्। पादपः पवनेनैव देहश्चित्तेनचाल्यते ॥ मनोहिजगतांकर्त्तृ मनोहिपुरुषःस्मृतः। मनःकृतंकृतंलोके नशरीर कृतंकृतम् ॥ इसी बुरा या भला उपकार या अनुपकार चित्त दोनों से फंस जाता है इस लिए शांति के विरोधी दोनों हुए ॥

एल एन वी।

कृतज्ञता स्वीकार।

यह बात प्रायः समस्त देशहितकारियों के स्मृति पथ में विचरण कर रही होगी कि, दरभंगाधिप श्री लक्ष्मीश्वरसिंह महाराज बहादुर ने ई० १८८० अगस्त महीने में विज्ञापन दिया था कि "हिन्दी भाषा में सब से उत्तम पदार्थ विद्या की पुस्तक बनाने वाले को २००) गद्यकाव्य उपन्यास (नोवेल) बनाने वाले को १५०) और पद्यकाव्य बनाने वाले को भी १५०) कोई देशोपकारी प्रबन्ध (ऐसे) बनाने वाले को १००) पारितोषिक मिलेंगे यदि १ली फरवरी के पूर्व ही हमारे पास पहुंच जावे" इस विज्ञापन को देख कई एक मित्रों की भी प्रेरणा से मैंने भी एक नवीन "अमृतचरित्र" नामक उपन्यास बना कर महाराज बहादुर को दिया था; उसका मुख्य तात्पर्य्य नीचे के श्लोक से प्रसिद्ध है—

येषांविद्याबुद्धि र्नचभारतस्यभीति
भिन्नतायै। अमृतचरित्रेतेषांस्मृत
समविदुषांचरित्रमस्ति ॥

सो इस उपन्यास के पुरष्कार में मुझे १५०) सौ रुपये मिले ॥

अब मैं श्री महाराज बहादुर को कोटि २ आशीर्वाद देता हूं कि उनके राजभवन में भारतवर्ष

का दुख दूर करने के निमित्त दिन प्रतिदिन सुरुचि, सुमति, लक्ष्मी और सरस्वती मनोहर रूप धर धर क्रीड़ा करैं। उनके प्रधान प्रधान कृतविद्य पण्डित और परम उत्साही स्वदेशानुरागी कर्मचारी गणों का भी कोटि कोटि आशीर्वाद देता हूं कि दिन प्रति दिन सरस्वती और लक्ष्मी जी की पूर्ण कृपा से सुयशी हों और महाराज बहादुर की बिमल कीर्ति को विस्तार करैं। फिर समस्त भारत भूपालों को भी यही आशीर्वाद करता हूं कि महाराज दरभङ्गाधिप की कीर्ति देख सुन सब कोई भारतवर्ष के एक एक अभाव के पूरण करने पर स्वभाव को नियुक्त कर कर विद्वानों की सहायता करैं तो क्या आश्चर्य है कि फिर भी भारत भारत हो जाय॥

देवकीनन्दन त्रिपाठी,
प्रयाग।

पुस्तक प्राप्ति॥

(देव वाणी)

श्रीमद्गोस्वामि गोवर्द्धन लाल जी महाराज के निदेश से रचित यह पुस्तक व्याकरण पाठी संस्कृत छात्रों के प्रयोजन की है इसमें पाणिनि के सूत्रों का आशय श्लोकबद्ध कर ग्रन्थकर्ता महाशय ने अपनी पद्य रचना चातुरी खूब झलकाया है वास्तव में जो पूछिए तो क अक्षर का पाणिनि का सूत्र न मुखाग्र कर एक एक सूत्रों के प्रति एक एक लम्बायमान दंडक श्लोकों के कण्ठ करने में विद्यार्थियों के लिए कौन सा लाघव है जो हो ग्रन्थ यह उत्तम है और अच्छे पुष्ट अक्षरों में छपा है; हम गोवर्द्धन लाल जी महाराज को विशेष २ धन्यवाद देते हैं जिनकी रुचि ऐसे कामों में बहुत अधिक पाई जाती है "रत्नंसमागच्छतिकाञ्चनेन" जैसे को तैसे मिल भी जाते हैं जैसे महाराज विद्या रसिक थे तदनुरूप कृतविद्य सिरमौर श्री दामोदर शास्त्री भी इन्हें मिले इन दोनों की गङ्गा जमनी से हमें बहुत कुछ लाभ की आशा है; जैसे ये महाराज सत्प्रवृत्ति की ओर प्रवण चित्त हैं ऐसे ही यदि और भी इस कुल वाले व्यर्थ का ऐश जैस छोड़ ऐसे २ देशहितैषी बातों में सयत्न होते तो हम सरीखे नसूरियों की आंख में क्यों यह कुल खटकता; यह किस्से कहैं और कौन सुनता है कि इनके पूर्वज तथा आचार्यों का मान और प्रतिष्ठा केवल अद्भुत विद्या

और सुचरित के कारण चिरस्थायी हुई नकि मथुरा के या बम्बई के महाराजों से यह बात इस घराने को हासिल हुई थी ; सच पूछिए तो इन महाराजों को पतित रूप नष्ट भक्तों ने सचानाम्न में सि-लाया भक्त जन इन्हे साक्षात् कृष्ण रूप मानने लगे इन्हों ने समझा कि अब तो हम स्वयंसिद्ध हैं हमें कर्त्तव्य अकर्त्तव्य कुछ नहीं मन मानता कलोलें करें परिणाम में इस उन्नीसवीं शताब्दी ने भक्त और म हाराज दोनों की कलाई खोल दी वे बीत गए और न अब भी कुछ चेत करवट लेते हैं हे ईश्वर इनका क्या होने वाला है हिंदुस्तान को दिन दिन बढ़ती हुई सभ्यता के साथ यूरोप का मुकाबिला क-रने में हमारे ये महाराज लोग इण्डियन पोप कहलाने के योग्य हैं॥

क्षत्रिय पत्रिका॥

इसका अभ्युत्थान बहुत उत्तम और प्रशंसनीय हुआ है क्षत्रियों की ऐक्यता तथा उनकी उन्नति इसका मुख्य उद्देश्य है भाषा भी इसकी बहुत सरल और कोमल है जो विषय अब कि बार इसमें मुद्रित हुए हैं वे ऐसे कोई नहीं हैं जिन्हें हम मोहनच-न्द्रिका समान खुशीर की भरती कहैं यदि सदा इसके लेख ऐसे ही हुआ करें; पहले हमें भी ऐसे ही आरम्भशूर बनने का बड़ा उत्साह था पर कोई लक्षण हम ऐसे हतो त्साह के उत्साह बढ़ाने का अब तक दृष्टि गोचर न हुआ परिणाम में मस्तिष्क अब कुछ ऐसा रिक्त और दुर्बल पड़ गया है कि कोई बात ही नहीं सूझती जिस पर लेखिनी का अनुपम हाव भाव प्रगट कर रसिक पाठकों का मन आकर्षण और सके अन्त को गले पड़े बजाए सिद्ध अब यह पत्र हमें अयान हो रहा है किसी तरह भरती कर कराय पूरा कर देते हैं; इसी इसके एडिटर से हमारी यही प्रार्थना है कि यदि सदैव इस पत्रिका को उत्तम लेख से सम्पन्न कर सकें तो निकालें नहीं तो अब भी इस शैतानी काम से हाथ खींच लें और यही परामर्श हमारा दो एक गर्भान्तरस्थ मासिक पत्रिकाओं के प्रति भी है नहीं तो भारतदीपिका भार-तबन्धु सज्जनकीर्तिसुधाकर आदि कई एक पत्रों के समान गिनती गिनाने से हिन्दी को कोई लाभ नहीं है॥

अग्रिम मूल्य … … …	२।)
पश्चात देने से … … …	४)
एक कापी का … … …	।)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

837

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD,—1st July 1881. } { प्रयाग आषाढ़ शुक्ल ४ सं० १९३८
Vol. IV.] [No. 11. } { जि० ४] [संख्या ११

हम सा निकम्मा दूसरा कौन है?

कोई नहीं ; हम सा निकम्मा हमी हैं "गगनंगगनाकारं सागरःसागरोपमं" यदि किसी काम का हमें होना होता तो इस पशु समाज में न पैदा हुए होते पैदा भी भए थे तो समझदारी का पुछ्ला हमारे पीछे न लगा होता खैर वह भी लग गया था तो मनी मन बैठे बैठे कुढ़ा करते कुढ़न भी थी तो भीतर ही भीतर सुलगा करती पर उपदेश कुशल बनने की हमें क्या ज़रूरत थी यह हवकपन न सूझा होता कि पत्र चलावैं या दूसरे इसी किस्म के निकम्मे काम में व्यर्थ पच्चमान हो देशानुरागियों के बीच हम भी खून लगाय शहीदों में दाखिल

किए जांय; बड़े बड़े बहे जांय भिझको कहै थाह लेडँ, कितने लोग इस्के पीछे सिर पची कर मर गए कुछ लाभ न हुआ तो हम किस गिनती में हैं "पिसी किस पकवान में सेहिगल किस जिजमान में" दो कौड़ी के भी महँगे हमें कौन पूछता है; न इस्मे कामयाब हुए थे लोकरञ्जन दुनियासाजी ही में बड़े पण्डित होते तो भी एक प्रकार किसी काम के ठहरते सो पहले कभी किया नहीं अब भल २ यत्न करते हैं कि दुनियासाज़ों के लक्षण हमारे में सब आ जांय बक वृत्ति वैडाल वृत्ति छल छिद्र कुटिलता में निपुण हो जांय पर बनता ही नहीं; चाहिए कि ऊपर से खूब चारदासी के साथ लोगों से मिला करें भीतर ईर्षा और असूया की आग चाहो सुलग रही हो; जो वे आप के खून के प्यासे हों बोलें तो हँस के बोलें; जितनी दगाबाज़ी फरेब पर वित्त बञ्चन उपाय हैं उसी का सब मनसूबा बैठे बैठे गिना गुथा करें पर हाथ में एक सुमिरिनी या माला ज़रूर लिए रहैं; "माला फेरत युग गया मिला न मनका फेर। कर का मनका छाड़ि के मन का मनका फेर" संसार का क्रम है आदमी कैसा ही बे ढङ्ग हो चार पैसा पास हो उस्की बराबर इस अन्धी समाज में योग्य सुपात्र और काम का कोई नहीं है सो उस चार पैसे का अभाव यहां और ही से होता आता है तो यह सोचना कि हम किसी काम के नहीं हैं सर्वथा असङ्गत है पर क्या करें समाज का औंधा बरताव हमारे साथ जैसा हो रहा है सब समझदारी पस्त कर ऐसे ऐसे खयालात पैदा करता है॥

मुसल्मानों का पक्षपात।

हाल में इन्द्रमणि के मुकद्दमे में स्ट्रेट साहब के अन्तिम फैसले से यह निश्चय हो गया कि हिन्दू और मुसल्मानों के मुकाबिले में सरकार हम हिन्दुओं का कभी पक्ष न करेगी और न्याय अन्याय के खयाल को उस समय हिन्द के महासागर में डुबो देगी; और २ समाचार पत्रों ने इन दो विषयों को गो बध और इन्द्रमणि के बारे में कोड़ियों वरक़ रङ्ग डालें पर हम आरम्भ ही से मौन साधे हुए हैं कभी अपनी लेखिनी को अरण्यरुदन समान इन विषयों पर नहीं नचाया; हम तो अपने बछवा के दांत खूब समझे हुए हैं कि मत सम्बन्धी विषय में हम आर्यों के ये सब के सब विरोधी हैं मुसल्मान हों

या अङ्गरेज़ हीं या चाहो जो हीं दूसरे यह कि हम निस्तेज हीन दीन हिंदुओं से किसी प्रकार की भय नहीं है इन्हें जैसे चाहो वैसे रक्खो मुरड़ मुरड़ कर सब तरह रह सके हैं डर तो उनसे है जो भरपूर घटनी सिखा सके हैं इस लिए यह सर्वथा नीति सङ्गत है कि जहां तक हो सके मुसल्मानों की खातिर होनी ही चाहिए ; अभी हाल में काबुल के मुसल्मानों से सरकार की लड़ाई ने इस सबक को खूब पक्का कर पढ़ा दिया और फिर यह पक्षपात एक तरह पर अनुचित भी नहीं है माना कि मुसल्मान और बातों में महा जघन्य नीच और पक्के सिरे के दुष्ट हैं पर सतेजस्कता बन्धु प्रेम और ऐक्यता का ज़ोर भरपूर इनमें कायम है यह उसी का फल है कि हमारे मुकाबिले में सदैव उनकी बिजय होती है॥

परमाणु और आत्मा

(Mind and matter)

आत्मा क्या है ? अर्थात् क्या यह कोई चैतन्य और स्वतन्त्र कर्ता है जो इस मनुष्य देह जन्तु देह या इस देह में रह कर इसे सजीव रखता है और जब इसे त्याग देता है तब यह शरीर मृतक हो जाता है या यह आत्मा परमाणु के समवाय का फल है ?

यद्यपि यह प्रश्न बड़ा पुराना है और प्रायः सब देश के दार्शनिक हर एक समय कुछ न कुछ इस विषय पर सोचते चले आए हैं परन्तु अनेक कारणों से विशेष कर प्राकृतिक विज्ञान Physical science की सम्यक् उन्नति न होने से इसका आज तक कोई दृढ़ सिद्धान्त न हुआ ; इधर दो डेढ़ शताब्दी में बहुत सी वैज्ञानिक बातें आविष्कृत हुईं जिससे वर्तमान काल के विद्वानों को बहुत कुछ सहायता मिली और अब वे सब लोग thinking सोचने की हद्द से आगे बढ़ रहे हैं ; इस प्रश्न की मीमांसा होने पर दूसरा कारण यह भी प्रगट होता है जिससे लोग जी खोल इसके बिचार में तत्पर नहीं हुआ चाहते वह यह है कि आत्मा को परमाणुओं का फल मानने वाले या इस पक्ष में युक्ति देने हारे सब के सब विधर्मी और नास्तिक कहलाने लगते हैं और अज्ञ मण्डली उनका तिरस्कार करती है; जब तक विज्ञानशास्त्र की उत्पत्ति तथा इसकी श्री वृद्धि नहीं हुई थी तब तक मनुष्य मात्र जिस जिस घटना का कारण नहीं निश्चय कर सके उसे ईश्वरेच्छा क

हते रहे ; जैसा तूफान क्यों आया ? ईश्वरेच्छा ; झूरा क्यों पड़ा ? ईश्वरेच्छा ; मरगी क्यों भई ? ईश्वरेच्छा इत्यादि ; लेकिन जब से उत्ताप का धर्म और उसका वायु के साथ विशेष सम्पर्क लोगों को मालूम भया तब से सिवा अज्ञों के कोई विज्ञानवित् इसे ईश्वरेच्छा नहीं कहते भिन्न २ स्थान में साल भर के उत्ताप की समष्टि जोड़ कर अब लोग आगे ही से तूफान और वर्षा आदि का हाल मालूम कर लेते हैं ; यन्त्र के भीतर का पारा ४८ घण्टा पूर्व ही वायु का आगमन सूचन कर देता है ; पताका दिशा बता देती है और वायु नियामक यन्त्र उसका वेग और वज़न भी ठीक २ कह देता है सो अब इन प्राकृतिक घटनाओं को ईश्वरेच्छा कहने का मौका न रहा; इस तरह जिन २ बातों का कारण लोगों को मालूम होता जाता है उसे उसे दैवेच्छा या ईश्वरेच्छा कहना उठता जाता है ; साधारण मूर्खों की कौन कहे जो लोग इन दिनों देशी या बिदेशियों के बीच बड़े पण्डित और आलिम फाज़िल प्रसिद्ध हैं वे भी जब किसी विषय का विचार करते हैं तब आत्मा को देह से अतिरिक्त एक चेतन पदार्थ मान लेते हैं और फिर इस सिद्धान्त को सर्वथा अभ्रान्त समझे बैठे हैं जो खूब सोच कर देखा जाय कि इस तरह मान लेने का सबब क्या है तो कुछ पता नहीं लगता अन्ध परम्परा के सूत्र से बद्ध हो सब लोग इसे ऐसा ही मानते हैं क्योंकि आगे के लोग मानते आए हैं आगे के लोगों ने ऐसा क्यों मान लिया क्योंकि वे लोग इसे सोच कर इसकी कुछ थाह न पा सके इन्हों ने देखा अभी तो यह जन्तु चेष्टा कर रहा था अभी झटपट निश्चेष्ट हो गया इससे यही सिद्धान्त होता है कि देहातिरिक्त कोई पदार्थ इसमे उपस्थित था जिसने इस देह को सचेष्ट कर रक्खा था अब उसकी अनुपस्थिति से वह चेष्टा जाती रही परन्तु किसी ने इस बात पर ख्याल न दौड़ाया कि देह के भीतर की वस्तुओं से भी यह चेष्टा हो सकती है या नहीं इस तरह साधारण लोगों ने बे समझे बूझे आत्मा को शरीर से एक पृथक् पदार्थ मान लिया परन्तु न तो कोई इस विषय की कोई युक्ति मांगता है न कोई युक्ति देखलाने की चेष्टा करता है खैर हम इस विषय में दो एक युक्ति कहते हैं वह यदि असङ्गत हो तो पाठकगन उसका संशोधन कर हमें कृतार्थ करेंगे ॥

जो लोग आत्मा को एक स्वतन्त्र पदार्थ मानते हैं वे आत्मा के अजड़त्व अनश्वरत्व अविभाज्यत्व नित्यत्व आदि गुणों के भी बड़े पक्षपाती हैं और इस पर बहुत कुछ व्याख्यान भी करते हैं परन्तु आश्चर्य का विषय यह है कि किसी ने आत्मा का तत्व Realself आज तक न बताया; सब से पहले हमारा यह निवेदन है कि यदि आत्मा कोई स्वतन्त्र पदार्थ है औ इस शरीर से कुछ सम्बन्ध नहीं रखता तो भी इस जन्तु देह में अवस्थान करता है तब यह सोचना चाहिए कि वह अजड़ पदार्थ इस जड़ पदार्थ जन्तु देह से कैसे और कब संयुक्त भया; मान लो कि एक लड़का और एक लड़की अभी पैदा हुए हैं और उन दोनों की देह में एक ही एक आत्मा है १५ या १६ वर्ष में दोनों पुष्टता को पहुंच जब परस्पर संयोग करेंगे तब एक सन्तान उत्पन्न होगा इसमें सन्देह नहीं कि उन दोनों के देह का कुछ २ हिस्सा मिल कर इस सन्तान का देह बना परन्तु दोनों के आत्मा के व्यतिरिक्त तीसरा आत्मा कहां से और कब आकर बालक के इस छोटे से देह में संयुक्त भया; क्या यह आत्मा वीर्य में अवस्थान करता रहा कि पतन होते ही जरायु शैया में दाखिल हो गया; या यह आत्मा माता की देह में रहता था रज के साथ ही उस जगह पहुंच गया; यह बात सच है कि पुरुष के वीर्य में एक प्रकार सजीवता का लक्षण देख पड़ता है अर्थात् हम ध्यान लगा कर या अनुवीक्षण यन्त्र के द्वारा देखने से मालूम पड़ता है कि जैसा कोई कीड़ा रेंगता हो वैसा ही एक प्रकार की तरह की सी गति इसमें मालूम पड़ती है डाक्टर लोग इसी गति को उत्पादिका शक्ति कहते हैं जिस पुरुष के वीर्य में यह उत्पादिका शक्ति नहीं रहती उसके सन्तान कभी नहीं पैदा होता; अब यदि इस शक्ति को आत्मा या आत्मा की उपस्थिति का चिन्ह कहिए तो भी सङ्गत नहीं होता क्योंकि यह शक्ति मनुष्य के वीर्य में बाल्य अवस्था से नहीं रहती वरन प्राय जब शरीर पुष्ट होता है तब यह शक्ति भी उत्पन्न होजाती है; यदि कहिए वीर्य पुष्ट होने पर आत्मा भी उसे जा मिलता है तो यह बात भी सङ्गत नहीं होती क्योंकि वीर्य तो परमाणुओं के समवाय से क्रम क्रम पुष्ट होता जाता है लेकिन आत्मा की उपस्थिति कभी क्रम से नहीं हो सक्ती क्योंकि आत्मा तो अविभाज्य

पदार्थ है जहां कहीं यह उपस्थित होगा वहां पंछी के माफिक एकबारगी उड़ कर जा बैठेगा लेकिन इस तरह आत्मा का देह के भीतर जाना क्या मुख से क्या ना सिका से क्या रोमकूप से किसी तरह साबित नहीं होता और न कोई दार्श-निक इस प्रकार के संयोग को समर्थन करते हैं ; जो कहिए कि लड़के के जन्म था गर्भाधान ही से शरीर में आत्मा मौ-जूद रहता है सिर्फ वीर्य की पुष्टता से नज़र पड़ने लगता है तो यह बताइए कि उस देहस्थ आत्मा के भीतर फिर आत्मा कहां से आया क्योंकि वह देहस्थ आत्मा भी तो जब देहधारी होगा तब स न्तान पैदा करेगा और फिर आप आत्मा के भीतर इस तरह आत्मा कहां तक मा नते जाइएगा और इस जञ्जीर की कड़ी को कहां पर खतम कीजिएगा जो क-हिए इसी तरह अनन्त संख्या तक चला जाय हमारी क्या हानि है तो अकिल को फिर जगह नहीं मिलती तर्क और विचार की कसौटी में बुद्धि को न कसिए मान लेने को तुम्हें कौन वारण करता है घर बैठे जो चाहिए माना कीजिए; फिर जब प्राणी जीता रहता है तब भी आत्मा परमाणुओं का दासवत अनुसरण करता है जब शरीर दुःखी होता है तब आत्मा भी अवश्यमेव क्लेश पाता है यदि आत्मा कोई अजड़ और स्वतन्त्रकर्ता होता तो क्यों इस जड़ पदार्थ भौतिक देह के वशी-भूत रहता है और भी आज तक किसी ने इस देह में आत्मा के रहने की जगह न बताया जो कहिए कि यह सम्पूर्ण देह में व्याप्त होकर रहता है तब हाथ पांव आदि कोई एक अङ्ग के कट जाने के बाद भी जब उसका आधार छोटा पड़ जाता है तो भी आत्मा बना रहता है इस तरह इसका रहना न मस्तिष्क में न कलेजे में न किसी दूसरे खास अङ्ग में साबित होता है क्योंकि इस शरीर रूपी यन्त्र के हर एक हिस्सों की विकलता या अभाव से भी प्राणी सजीव रहते देखे गए हैं ; जन्तु को दो खण्ड या बहु खण्ड किए पीछे भी उसका प्रत्येक खण्ड चेष्टा करता है और सजीवता का लक्षण प्रकाश करता है परन्तु कोई आत्मवादी नहीं कह सके कि आत्मा किस हिस्से में है और किसमें नहीं ; अकसर देखा गया है लड़के मक-ड़ी की टांगें तोड़ तोड़ नचाते हैं और वे प्रत्येक खण्ड कुछ देर तक सजीव रहकर नाचा करते हैं अब बताइए किस अङ्ग को सजीव कहना चाहिए और किस अङ्ग को

मुरदा यदि चेष्टा करने वाले सब अङ्ग को सजीव कहिए तब एक आत्मा की एक ही समय कई स्थान में उपस्थिति कैसे मानिएगा ; यह बात केवल कीड़ों मकोड़ों ही में नहीं बरन सयन्त्र देह Organized body मात्र में प्रतीयमान होती है बलि बलिदान दिए पीछे बकरे का धर और सिर दोनों अलग अलग थोड़ी देर तक सजीव और चेष्टा युक्त देखाई पड़ता है फरासीसियों का सुप्रसिद्ध बधयन्त्र गिलोटाइन से शिरच्छेद हुए पीछे शरीर के दोनों हिस्से में कुछ काल तक सजीवता बनी रहती है एक समय एक मनुष्य ने गिलोटाइन का चक्र घूमने के समय जीभ मुख से बाहर निकाल दिया था जो लोग वहां उपस्थित थे उनमें से एक ने परीक्षार्थ उसकी जीभ में सुई गड़ो दिया वह सिर एकाएक जीभ भीतर सकेल लिया और धर नीचे पड़ा पड़ा न्यारा फड़फड़ा रहा था इसी तरह एक समय एक स्त्री का कटा सिर जब गिलोटाइन पर धरा था लोगों ने उसका नाम लेकर पुकारा तो वह सिर आंख फेर क्रोधसूचक तिरछी भौं से देखा ऐसे ऐसे कितने दृष्टान्त हैं जिन से यही प्रतिपन्न होता है कि यदि आत्मा एक अविभाज्य पदार्थ इस देह में है तो इसका खण्ड हुए पीछे तत्क्षणात् इसे छोड़ जाता या इसमें से एक हिस्से का आश्रय कर लेता दो भिन्न २ टुकड़ों को एक ही समय सजीवन कर रखता ॥

आत्मा के अस्तित्व और अनस्तित्व के विषय में यूरोपीय विद्वानों की राय एतद्देशीय पण्डितों से न्यारी है ये लोग केवल मनुष्य के देह में आत्मा का होना मानते हैं इतर जन्तु और उद्भिज्जों को जड़ पदार्थ समझते हैं परन्तु वर्तमान समय की विज्ञान की उन्नति ने उन लोगों के इस खयाल को कच्चा कर दिया जितने अङ्ग चिकित्सा विद्यावित् anatomist हैं सब एक वाक्य हो कहते हैं कि पुच्छहीन बन्दर और मनुष्य के देह में कुछ अन्तर नहीं है फिर एक को आत्मा रहित और दूसरे को आत्मा युक्त कहने का क्या सबब है इसी तरह यूरोप वालों का यह मत कि आत्मा मस्तिष्क में रहता है उसका भी खण्डन हो चुका है अब यदि आत्मा कोई स्वतन्त्र चेतन्य पदार्थ नहीं है तो यह क्या भै है? यह आत्मा केवल परमाणुओं का गुण है अर्थात् शरीर के हर एक परमाणुओं में उन गुणों के चन्द हिस्से नित्य वर्तमान हैं जिसे सर्व साधारण आत्मा कहते हैं और

शरीरस्थ परमाणुओं के गुणों के कार्य्य के समवाय को ज़िन्दगी कहते हैं यह बात विज्ञान Science की वृद्धि से अच्छी तरह साबित हो गई है सृष्टि के आदि में जब यह पृथ्वी उद्भिज्ज और प्राणियों के वासो पयोग्य हुई तब पहले उद्भिज्जों की सृष्टि में काई पैदा हुई जो भिन्न भिन्न जल वायु में रह कर छोटा और बड़ा तरह तरह का रूप धारण किया उपरान्त सड़ सड़ कर वेही सब परवर्ती उद्भिज्जों के सार बनाते गए और उन्हीं से बीज की भी सृष्टि होती गई जिस्से उनका विस्तार जल्दी बढ़ा जब वे सब उद्भिज्ज सड़े तब उनमें से जीवों की भी उत्पत्ति भई वे फिर दूसरे जीवों को पैदा किया वेही जीव जुदी २ आब हवा में रह कर भिन्न भिन्न रूप धरते गए फिर एक जाति वाले दूसरी जाति के साथ संयोग कर यहां तक तरक्की किया कि मनुष्य जाति की सृष्टि हुई इस तरह बिचार कर देखो तो साफ मालूम होता है कि जन्तु और उद्भिज्ज दोनों सगे भाई हैं एक काई से सब की उत्पत्ति है ; वृक्षों के कोई स्वतन्त्र आत्मा नहीं है यह इस तरह साबित होता है कि बहुतेरे पेड़ों की डालियां काट कर न्यारे २ लगा दो तो वे सब डालियां एक एक वृक्ष हो फूलैं फलैंगी यदि असल पेड़ में कोई आत्मा होता तो इन नए पौधों में आत्मा कहां से आया क्योंकि आत्मा तो अविभाज्य है ; इसी तरह पुरभुज polybus नामे एक जन्तु है उसे कोई वृक्ष और कोई जन्तु कहते हैं इसे जो दो टुकड़े करो तो दोनों जी जाते हैं वास्तव में यह जन्तु प्राणी और वृक्ष दोनों के जोड़ने वाली बीच की कड़ी है ; बहुतेरे लोग ऐसा भी कहते हैं कि कोई जन्तु नया आप से नहीं पैदा होता वायु मण्डल में वृक्षों के बीज और जन्तुओं के अण्डे सर्वत्र व्याप्त हैं समय पा कर संयोगानुकूल वेही सब बीज और अण्डे फूट निकलते हैं इसके उत्तर में हम यह कहते हैं कि जब यह पृथ्वी ग्यास के आकार में थी माध्याकर्षण Attraction of gravitation से स्थूल पिण्ड बनी उस समय बीज या अण्ड कहां से आए और जो पहिला जीव या पहिला उद्भिज्ज बिना बीज और अण्डे के हुआ अब क्यों नहीं पैदा होता क्योंकि प्रकृति का नियम सदा एक सा रहना चाहिए; जन्तु शरीर जो वृक्ष के नाईं खण्ड होने पीछे जीता नहीं रहता इसका कारण यही है कि वृक्ष की बनावट भिन्न किस्म की है कि

वह मिट्टी और वायु से रस खींच जीता रहता है इस लिए जब डार काट जड़ा ज़मीन में लगा दिया गया वह रस खींचने लगा और सजीव बना रहा परन्तु जन्तुओं की बनावट ऐसी नहीं है इसके खास हिस्से को जुदा किए पीछे शरीर पोषण की प्रक्रिया बन्द हो जाती है तब वह मर जाता है कुछ आत्मा की उपस्थिति इसमें कारण नहीं है ॥

उपसंहार में हमारा यह कहना है कि यदि आत्मा जड़ पदार्थ से कोई न्यारा पदार्थ होता तो इसे जड़ पदार्थ से अधिक या उसके तुल्य कुछ अधिकार रहता परन्तु वास्तव में ऐसी कोई शक्ति आत्मा में नहीं देखी जाती आत्मा शरीर के इतना ताबे में है कि जब कोई जन्तु मरने पर होता है तब चिकित्सक उसके देह की परीक्षा कर कब मृत्यु होगी यह निश्चय कर सक्ते हैं किन्तु मनोविज्ञान वाले केवल मानसिक वृत्ति की परीक्षा करके नहीं कह सक्ते कि अब आत्मा देह में न रहैगा यदि यह कहो कि शरीर और आत्मा के बीच एक समवेदना Sympathy है अर्थात शरीर दुखी होने से आत्मा दुखी होता है और आत्म क्लेशित होने से शरीर को कष्ट पहुंचता है सो सत्य नहीं मालूम होता प्रत्युत आत्मा को शरीर का दास बनते देखा जाता है; जब बन्दूक की गोली जन्तु की देह में प्रविष्ट हो शरीर के पोषणोपयोगी किसी यन्त्र को तोड़ डालती है या जब किसी तरह देह की धमनी रुधिर बाहर फेंक देती है तब वह जन्तु कितनी ही जीने की इच्छा करै लेकिन हरगिज़ नहीं जी सकता फिर आत्मा को इतना भी इख़तियार नहीं है कि शरीरस्थ जड़ पदार्थों के अनुपात propertion विशृङ्खल हुए बिना जब चाहे इस देह को छोड़ के निकल जावे यदि ऐसा होता तो आत्मघात करने वालों को विषपान या उद्बन्धनादि न करना पड़ता यह सब उपाय सिर्फ़ शरीर के नष्ट करने के हैं जिस्के नष्ट होने से अहं ज्ञान का भी ध्वंस हो जाता है क्योंकि कारण के न रहने से कार्य का नाश आप से आप हो जाता है ॥

क, च, ट, त, प ।

मृच्छकटिक ।

दशम अङ्क ॥

स्थान

(उज्जयिनी में राजमार्ग)

दो डोमड़ों के साथ चारुदत्त का प्रवेश ॥

दोनों डोम। वध्य का सिर काट लेने और उसे जल्द शूली पर चढ़ाय प्राण हर लेने में हम दोनों बड़े चतुर हैं यह तो हमारी जीविका ही है तब क्यों न चतुर हों ; हे राह के चलवैये हट जाओ हट जाओ लाल कनैल की माला पहिने इस चारुदत्त को हम दोनों दक्षिण श्मसान में शूली देने को लिए जाते हैं यह मन्द स्नेह दीपक समान धीरे २ विनष्ट होगा॥

चारुदत्त। (विषाद से) हा मेरे इस शरीर को जो मार्ग की धूलि से रूखा औ श्मसान की माला से वेष्टित है कौए और कुत्ते बलि समान भोजन करैंगे॥

डोम। हट जाओ आप सब लोग हट जाओ यह सज्जन द्रुम जो कुलीन पक्षियों का सहारा था काले फरसा की धार से काटा जायगा आवरे चारुदत्त आव॥

चारुदत्त। पुरुष के प्रारब्धों का प्रभाव विचार में नहीं आता जिसके दोष से मैं ऐसी दशा को पहुंचा कि सकल शरीर में रक्त चन्दन का थापा लगा है पिसान और कुंकुम से रञ्जित मुझ पुरुष पशु को पशु बनाया है ; (आगे देख) हा मुझे देख कोई कुछ कहता है कोई धिक्कारता है कोई आंसू गिराता है कोई आंख बन्द कर लेता है पर मुझे इस शूली से बचा लेने में सब असमर्थ हैं॥

एक डोम दूसरे से। अरे आहीन्ता देख देख उज्जैयिनी में सब से उत्तम पुरुष इस चारुदत्त का राजा पालक की आज्ञा से बध होते देख क्या आकाश रोता है जो बिना मेघ के बर्षा हो रही है॥

दूसरा डोम। अरे नहीं रे गोहा न आकाश रोता है न बिन मेघ की बर्षा होती है अटारियों पर बैठी स्त्री जनों के नेत्रों से आंसुओं की धारा बह रही है जिसके सिँचाव से मार्ग की धूर सब जम गई है ; आवरे चारुदत्त आव यह घोषणा का स्थान है यहां डुग्गी पीट कह दे॥

दोनों डोम (डुग्गी पीट) आर्य लोगो आप कान लगा कर सुनो यह सार्थवाह (सौदागर) विनयदत्त का नाती साग रदत्त का बेटा चारुदत्त नाम है इस पापी ने बसन्तसेना वेश्या को गहनों के लोभ से जीर्णोद्यान में फांसी दे मार डाला है इस लिए राजा पालक की आज्ञा से इसे शूली होती है जो दूसरा कोई भी दोनों लोक विरुद्ध ऐसा अकार्य करेगा वह भी इसी तरह दण्ड पावेगा॥

चारुदत्त। हा सैकड़ों यज्ञों से पवित्र जो मेरा गोत्र पहले यज्ञशाला और पूजा

के स्थानों में वेदनाद के साथ पुकारा जाता था अब मरती समय वही मेरा गोत्र इन पापिष्ट चाण्डालों की घोषणा में उच्चारण किया जाता है हा यह अत्यन्त मर्मघाती दुख है ॥

श्लोक ।

मखशत परिपूतं गोत्र मुद्भासितं मे सदसि निबिड़ चैत्य ब्रह्मघोषैः पुरस्तात । मम मरणदशायां वर्तमानस्य पापैस्तदसदृश मनुष्यै र्घुष्यते घोषणायाम् ॥

हा प्रिये बसन्तसेने हा चन्द्रमुखी शुभ्रदन्ती विद्रुमोष्ठी तेरे मुखासव अमृत को पान कर पराधीन कैसे अयश विष को पीऊं ॥

डोम । हटो आर्य लोगो हटी यह गुण रत्नाकर सज्जन दुखतारक सेतु अब नगर से बाहर होता है "दोहा । सुखी मनुज के होत हैं जग में बहुत सहाय । विपद पड़े पर बिरल जन हित कर मित्र देखांय ॥

चारुदत्त । (सब ओर निहार) ये हमारे सब मित्र लोग बस्त्र की ओट से मुंह ढांप दूर भागे जाते हैं, हा विभव में धनी के शत्रु भी मित्र हो जाते हैं और दरिद्र का विपत्ति में कोई भी साथ नहीं देता ॥

नेपथ्य में । हा तात, हा प्रियमित्र ॥

चारुदत्त । (सुन कर) हे अपनी जाति में श्रेष्ठ चाण्डालो तुम से कुछ मांगता हूं ॥

चाण्डाल । क्या मेरे हाथ से कुछ प्रतिग्रह दान लिया चाहता है ॥

चारुदत्त । नहीं नहीं दुराचारी राजा पालक से अविचारकारी तुम दोनों नहीं हो इस्से परलोक जाने के पहले पुत्र का मुख देखना तुम से मांगता हूं ॥

दोनों डोम । अरे पुरबासी लोगो इतनी भीर क्यों किए हो एक के ऊपर एक गिरे पड़ते हो तनिक हट जाओ यह चारुदत्त अपने बालक का मुख देखा चाहता है (नेपथ्य की ओर) आवरे दारक आव ॥

बालक को साथ लिए मैत्रेय का प्रवेश ।

मैत्रेय । बेटा तुर्त चलो तुम्हारे पिता को शूली देने को लिए जाते हैं ॥

बालक । हा तात, हा बाप ॥

मैत्रेय । हा प्रिय मित्र अब मैं कहां तुम्हें देखूंगा ॥

चारुदत्त । हा पुत्र हा वत्सल हाय बेटा हा मित्र मैत्रेय परलोक में मैं तुम्हारे मुख के दर्शन का प्यासा ही रहा जाता था अब इस समय इसे क्या दूं (देह की

निहार यज्ञोपवीत देख कर) बिन सोना मोती के ब्राह्मणों का यह परम भूषण है बेटा इसे ले (यज्ञोपवीत देता है)

बालक। अरे तुम दोनों हमारे बाबा को कहां लिए जाते हो॥

डोम। दीर्घायु राजा की आज्ञा ही ऐसी है हम दोनों का क्या अपराध॥

बालक। मुझे मारो मेरे बाबा को छोड़ दो॥

डोम। दीर्घायु तोतरी बोली से ऐसा कहते तुम हम कठोर हृदय चाण्डालों को भी दया पैदा करते हो क्या करें हमारा कुछ बश नहीं है॥

चारुदत्त (रोता हुआ पुत्र को गले से लगा कर) आहा पुत्र स्नेह का सर्वस्व और आढ्य दरिद्र दोनों को समान प्रीति उत्पादक होता है बिना चन्दन रस के आलिप और उस के हृदय को ठण्ढ पहुंचाता है॥

डोम। अरे आहीन्ता फिर दुग्गी पीट घोषणा कर (दूसरा डोम पहिले समान फिर घोषणा देता है)

एक कोठे के छज्जे पर हाथ पांव बँधा स्थावरक चेट का प्रवेश॥

स्थावरक (व्याकुलता से) हा यह निरपराध मारा जाता है) शकार ने मुझे रस्सियों से जकड़ रक्खा है अब क्या उपाय करूं अच्छा पुकारूं तो (सुनो आर्य लोगो सुनो तो मुझ पापी ने रथ के बदल जाने से जीर्णोद्यान में बसन्तसेना को ले गया वहां मेरे मालिक शकार ने मुझ से प्रीति नहीं करती इस लिए फांसी दे कर जबरदस्ती बसन्तसेना को मार डाला है ; हा भीड़ के हुल्लड़ के कारण कोई नहीं सुनता अब क्या यतन करूं यहां से कूदूं जो ऐसा करूंगा तो ये आर्य चारुदत्त न मारे जांयगे मैं मरूं तो अच्छा पर कुलपुत्र विहङ्ग का आश्रय वृक्ष ये आर्य चारुदत्त जीते रहैं ऐसे काम में जो मरूंगा तो मुझे स्वर्ग मिलेगा (कूद पड़ता है) आहा मरा नहीं और बन्धन भी टूट गया अब इन डोमड़ों से जा मिलूं ; अरे मुझे रास्ता दो रास्ता दो॥

डोम। यह कौन रास्ता मांगता है॥

स्थावरक (पास जाय) सुनो सब लोग॥

(पहले के समान सब कह गया)

चारुदत्त। अरे मुझे कालपाश से बँधा देख यह कौन दयालु सज्जन आया जैसे अनावृष्टि से सूखते धानों को जान वृष्टि कर्ता मेघ आवे ; आप सब लोगों ने सुना

श्लोक। नभीतोमरणादस्मि केवलंदूषितंयशः
विशुद्धस्यहिमेमृत्युः पुत्रजन्मसमोभवेत्॥

मैं मरने से नहीं डरता केवल सोच इतना ही है कि झूठा कलङ्क लगता है बिन कलङ्क की मेरी मौत पुत्र जन्म समान हर्ष बढ़ाने वाली है ॥

डोम । स्थावरक यह सच कहता है ॥

स्थावरक । हां सच ही कहता हूं यह किसी से कह न दे इस लिए मुझे बांध रक्खा था ॥

(शकार का प्रवेश)

शकार । सेर भर मिर्चा मिला इमली के रस के साथ आज मैंने मीठा भात मास और मछली खूब छका है फूटे कांसा सी खनखन डोमड़ों की बोली और ढिँढोरा की आवाज सुनाई पड़ती है मालूम होता है उस दरिद्र चारुदत्त को शूली देने को लिए जाते हैं चल कर देखूं शत्रु के बिनाश में मुझे बड़ा आनन्द होता है मैंने ऐसा सुना है कि जो कोई शत्रु का बध होते देखता है उसे दूसरे जन्म में आंख का रोग नहीं होता सो अब अपनी महल पर बैठ अपना पराक्रम देखूं (जा कर और देख कर) आहा इस दरिद्र मनुष्य को शूली देने के लिए ले जाते समय तो इतने मनुष्यों की भीर इकट्ठी हुई है जिस बेला हम सा कोई श्रेष्ठ मनुष्य बध के लिए चलेगा उस समय कितने लोगों की भीर होगी ; आहा यह कैसा नए बैल सा लाल चन्दन के थापाओं से भूषित दक्षिण श्मसान को चला जाता है ; क्या कारण जो मेरे महल के नीचे इस गली में घोषणा धर दी गई और सब लोग चुप हो रहे (देख कर) क्या है स्थावरक चेट भी यहां नहीं है ऐसा न हो जा कर मन्त्र भेद कर दे सो उसे खोजूं (नीचे उतर आता है चेट से) अरे स्थावरक आ चलें ॥

चेट । अरे नष्ट बसन्तसेना को मारकर नहीं तृप्त हुआ सज्जन के कल्पवृक्ष आर्य्य चारुदत्त को भी अब शूली दिलाया चाहता है ॥

शकार । निखालिस कुन्द सा बेदाग स्त्री को मैंने नहीं मारा ॥

सब लोग । नहीं २ तूही ने मारा है आर्य्य चारुदत्त ने नहीं ॥

शकार । कौन ऐसा कहता है ॥

सब लोग । (चेट को दिखा कर) यह साधू कहता है ॥

शकार (स्वगत) इसे मैंने खूब कस के नहीं बांधा था यह मेरे पाप का साक्षी है अब ऐसा करूं (प्रकाश) आप लोग इसे कभी न पतिआओ यह सर्वथा झूठा है इसे मैंने सुवर्ण की चोरी में पकड़ा था

और मार पीट निकाल दिया था उसी खार से यह झूठ बोल मुझे फसाया चाहता है (ओट से चेट को सोने का खड़ुआ देता हुआ धीरे से) बेटा स्थावरक इसे ले और अब बात पलट दे॥

स्थावरक (लेकर) देखो २ भट्टारक यह दुष्ट मुझे सोने का खड़ुआ दे झूठ बोलने को लुभाता है॥

शकार (खड़ुआ छीन कर) यही खड़ुआ है जिसके कारण मैंने इसे बांध कर मारा था चोट का दाग इसकी पीठ पर अब तक होगा चाहो देख लो॥

दोनों डोम। (पीठ देख कर) ठीक कहता है जला हुआ मनुष्य खार से क्या नहीं करता॥

स्थावरक। हा दासभाव ऐसा होता है कि सच कहो तो भी कोई नहीं पतिआता (चारुदत्त के पांव परगिर) आर्य जितनी मेरी सामर्थि थी उतना यतन किया अब कुछ नहीं कर सक्ता॥

चारुदत्त। साधु जन पक्षपाती बिना प्रयोजन परहित शील तुमने मेरे छुटाने का बड़ा यत्न किया मेरा भाग्य ही न चाहे तो तुम क्या करो॥

शकार। अरे पीट कर इसे निकाल दे॥

डोम। निकल रे निकल (निकाल देता है)

शकार। अरे अब क्यों बिलम्ब करते हो इसे जल्द मारो॥

डोम। जो ऐसी जल्दी है तो तूही आकर मार॥

बालक। मुझे मारो मेरे बाप को छोड़ दो॥

शकार। अच्छा है लड़का समेत इसे मार॥

चारुदत्त। इस मूर्ख से सब हो सक्ता है मित्र मैत्रेय रोहसेन को ले जाओ॥

मैत्रेय। मित्र तुम समझते हो तुम्हारे बिना मैं इस हतजीवन को रक्खूंगा॥

चारुदत्त। मित्र तुम स्वाधीन हो तुम्हें प्राण त्यागना योग्य नहीं है॥

मैत्रेय (स्वगत) यद्यपि आत्मघात अनुचित कर्म है पर मित्र के बियोग से कैसे जी सकूंगा इस्से पुत्र रोहसेन को ब्राह्मणी को सौंप तुर्त आ कर प्राण छोड़ मित्र के साथ जाऊं (प्रकाश्य) मित्र इसे पहुंचा आऊं (गले से लग पांव पर गिर रोता है रोहसेन भी रोता हुआ पांव पर गिरता है)

शकार। अरे कहता हूं बेटा समेत इसे मार॥

डोम। हम को राजा की ऐसी आज्ञा

नहीं है निकल रे बालक जा तू अब (दोनों डोम बालक समेत चारुदत्त को निकाल देते हैं)

पहिला डोम। अरे गोहा आज मारने की तेरी पारी है॥

दूसरा। नहीं २ तेरी है॥

पहिला। जो मेरी वारी है तो थोड़ा ठहर जा॥

दूसरा। अरे क्यों?

पहिला। अरे मरते समय मेरे बाप कह गए हैं पुत्र वीरक जब तेरी पारी हो तो साहस कर बध्य को तुर्त न मार डालना॥

दूसरा। क्यों?

पहिला। इस लिए कि कदाचित् कोई दयावान् द्रव्य दे बध्य को छुटा ले, अथवा कदाचित् राजा के बेटा हो उस महोत्सव में सब बध्यों का मोक्ष हो; या हाथी बन्धन से खुल जाय उस घबराहट में सब बध्य मुक्त किए जांय; या राज विराजी हो उठे तो भी सब बध्य छोड़ दिए जांय॥

डोम। चारुदत्त महराज राजा को आज्ञा ही ऐसी है हमार पचन का कौन कसूर है, जिसे सुमिरना हो सुमिरो॥

चारुदत्त। भाग्य दोष से मुझे झूठा कलङ्क लगा जो मुझ में सत्य धर्म हो तो बसन्तसेना स्वर्ग में हो या जहां हो आ कर मेरा कलङ्क दूर करे॥

शकार। अरे क्योंरे डर गया॥

चारुदत्त। मूर्ख मरने से नहीं डरता किन्तु कलङ्क से डरता हूं॥

डोम। चारुदत्त मसान के पास अब आ पहुंचे कलङ्कित हो चाहो अकलङ्कित हो यह तो राजा जाने मैं तेरा जल्द ही छुटकारा किए देता हूं गोहा तू पहले से चल कर शूली गाड़ रख मैं इसे लिए आता हूं चल रे चारुदत्त चल (सब गए)

क्रमशः—

साहित्य जन समूह के हृदय का विकाश है।

साहित्य जिस देश के जो मनुष्य हैं उस जाति की मानवी सृष्टि के हृदय का आदर्श रूप है जो जाति जिस समय जिस भाव से परिपूर्ण या परिप्लुत रहती है वह सब उसके भाव उस समय के साहित्य की समालोचना से अच्छी तरह प्रगट हो सक्ते हैं; मनुष्य का मन जब शोक सङ्कुल क्रोध से उद्दीप्त या किसी प्रकार की चिन्ता से दोचित्ता रहता है तब उसकी मुखच्छवि तमसाच्छन्न उदासीन और मलीन रहती है उस समय

उसके कण्ठ से जो ध्वनि निकलती है वह भी या तो फुटही ढोल समान बे सुरी बे ताल बे लय या करुणा पूर्ण गद्गद विकृत स्वर संयुक्त होती है ; वही जब चित्त आनन्द की लहरी से उद्वेलित हो नृत्य करता है और सुख की परम्परा में मग्न रहता है उस समय सुख विकसित कमल सा प्रफुल्लित नेत्र मानो हँसता सा और अङ्ग अङ्ग चुस्ती और चालाकी से फिरहरी से फरका करते हैं कण्ठध्वनि भी तब वसन्त मदमत्त कोकिला के कण्ठ रव से भी अधिक मीठी और सोहावनी मन को भावती है ; मनुष्य के सम्बन्ध में इस अनुल्लङ्घनीय प्राकृतिक नियम के अनुसार देशीय साहित्य भी है जिसमें कभी को क्रोध पूर्ण भयङ्कर गर्जन, कभी को प्रेम का उल्लास, कभी को शोक और परिताप जनित हृदय विदारी करुणा निस्वन, कभी को वीरता गर्व से बाहुबल के दर्प में भरा हुआ सिंहनाद, कभी को भक्ति के उन्मेष से चित्त की द्रवता का परिणाम अश्रुपात आदि अनेक प्रकार के प्राकृतिक भावों का उद्गार देखा जाता है इस लिए साहित्य यदि nation जन समूह के चित्त का चित्रपट कहा जाय तो सङ्गत है ; किसी देश का इतिहास पढ़ने से केवल बाहरी हाल हम उस देश का जान सक्ते हैं पर साहित्य के अनुशीलन से कौम के सब समय समय के आभ्यन्तरिक भाव हमें परिस्फुट हो सक्ते हैं ; हमारे पुराने आर्यों का साहित्य वेद है उस समय आर्यों की शैशवावस्था थी बालकों के समान जिनका भाव भोलापन उदार भाव निष्कपट व्यवहार वेद के साहित्य को एक विलक्षण पवित्र माधुर्य प्रदान करते हैं ; वेद जिनके हृदय की भाषा थी वे लोग मनु और याज्ञवल्क्य के समान समाज का आभ्यन्तरीन भेद वर्ण विवेक आदि के झगड़ों में पड़ समाज की उन्नति या अवनति की तरह तरह की चिन्ता में नहीं पड़े थे ; कणाद या कपिल के समान अपने अपने शास्त्र के मूलभूत बीजसूत्रों को आगे कर प्राकृतिक पदार्थों के तत्व की छान में दिन रात नहीं डूबे रहते थे ; न कालिदास आदि कवि संप्रदायानुसार वे लोग कामिनी के विभ्रम विलास और लावण्य लीला लहरी में गोते मार २ प्रमत्त हुए थे ; प्रातःकाल उदितोन्मुख सूर्य की प्रतिभा देख उनके सीधे सादे जीने बिना कुछ विशेष छान बीन किए इसे अज्ञात और अजेय शक्ति समझ और इसके द्वारा अनेक प्रकार

का लाभ देख कानन स्थित विहङ्ग कूजन समान कलकल रव से प्रकृति के प्रभात वन्दना का साम गाने लगे ; जल भार पूर्ण श्यामला मेघमाला का नवीन सौन्दर्य देख पुलकित गात्र हो कृतज्ञता उपहार स्तोत्र का पाठ करने लगे ; वायु जब प्रबल वेग से बहने लगा तो उसे भी एक शक्ति समझ उसके शान्त करने को वायु की स्तुति करने लगे इत्यादि वेही सब ऋक् और साम के सूक्त हो गए ; उस समय अब के समान राजकीय अत्याचार कुछ न था इसी से उनका साहित्य राजनीति की कुटिल उक्ति युक्ति से मलिन नहीं हुआ ; हाल के आये आर्यों को नूतन स्थापित समाज के संस्थापन में सब तरह की अपूर्णता थी पर सब का निर्वाह अच्छी तरह होता जाता था किसी को किसी कारण से किसी प्रकार का अस्वास्थ्य न था ; आपस में एक दूसरे के साथ अब का सा बनावट का कुटिल बर्ताव न था इस लिए उस समय के उन के साहित्य वेद में भी केवल भक्ति अभिम औदार्य कपट रहित बनावट और दुबासुनी का ख्याल नहीं पाया ; उन आर्यों का धर्म अब के समान मला चौटने वाला न था सब के साथ सब की खान परव द्वारा सहानुभूति रहती है न उनके बीच धार्मिक व्यक्ति अब के धर्मध्वजियों समान दाम्भिक बन महा व्याधि सदृश लोगों के लिए गलग्रह थे ; योगियों में अग्रगण्य महात्मा यीशुख्रीष्ट एक सुकुमार मति बालक को अपनी गोद में बैठाय शिष्यों की ओर इशारा कर बोले जो कोई बालकों के समान भोला न बने उसका स्वर्ग के राज्य में कुछ अधिकार नहीं है ; हम भी कहते हैं जो सुकुमार मति वेदभाषी इन आर्यों की नाईं पद पद में ईश्वर की भय रख प्राकृतिक पदार्थों के सौन्दर्य पर मोहित हो बालक समान सरल मति न हो उसका स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना अति दुष्कर है ; इन्हीं प्राकृतिक पदार्थों का अनुशीलन करते करते इन आर्यों को ईश्वर के विषय में जो २ भाव उदय हुए वेही सब एक नए प्रकार का साहित्य उपनिषद के नाम से कहलाए ; ज्यों ज्यों इनकी समाज बढ़ती गई और लोगों की रीति नीति बर्ताव में विभिन्नता होती गई तब इन सबों को ऐक्यता के सूत्र में बद्ध रखने को और अपने अपने गुण कर्म से लोग चल विचल हो सामाजिक नियमों को जिसमें किसी प्रकार की हानि न पहुंचावें इस लिए स्मृतियों का साहित्य

हुआ मन्वत्रि हारीत याज्ञवल्क्य आदि ने अपने नाम की संहिता बनाय बिविध प्रकार के राजनैतिक सामाजिक और धर्म सम्बंधी बिषयों का सूत्रपात किया इन्ही के समकालीन गौतम कणाद कपिल जैमिनि पतञ्जलि आदि हुए जिन्हों ने अपने सोचने का परिणाम दर्शन शास्त्रों की बुनियाद डाला ; यहां तक जो साहित्य हुए यद्यपि बेद की भाषा का अनुकरण उनमें होता गया परन्तु क्रिम २ उनकी भाषा अधिक अधिक सरल कोमल और परिस्कृत होती गई तथापि इनकी गणना वैदिक ही भाषा में की जाती है या इन स्मृति और आर्ष ग्रन्थों की भाषाओं को इन वैदिक भाषा और आधुनिक संस्कृत के बीच की भाषा कह सक्ते हैं ; अब से संस्कृत के दो खण्ड होते चले बेद और लोक पाणिनि जिनके सूत्र संस्कृत पाठियों के लिए कामधेनु का काम दे रहे हैं और जिनसे वैदिक और लौकिक सब प्रयोग सिद्ध होते हैं उनमे लोक और बेद की निरख अच्छी तरह की गई है और इसी बेद और लोक की अलग २ तमरीक से साबित होता है कि संस्कृत किसी समय प्रचलित भाषा थी जो लोगों के बोल चाल के बर्ताव में लाई गई थी इसे हम आगे चल सिद्ध करेंगे अब प्रस्तुत का अनुसरण करते हैं॥

बेद के उपरान्त रामायण और महाभारत साहित्य के बड़े अङ्ग समझे गए रामायण के समय भारतीय सभ्यता का प्रेमोल्लास परिप्लावित नूतन यौवन था वही भारत के समय भारतीय सभ्यता क्षति ग्रस्त हो वार्द्धक्य भाव को पहुंच गई थी ; रामायण के प्रधान पुरुष रघुकुलावतंस श्री रामचन्द्र थे और भारत के प्रधान पुरुष बुद्धि की तीक्ष्णता के खरधार कूट युद्ध विशारद भगवान वासुदेव श्रीकृष्ण या उनके हाथ की काठ की पुतली युधिष्ठिर थे ; रामायण के समय से भारत के समय में लोगों के हृदत भाव में कितना अन्तर हो गया या कि रामायण में दो प्रतिद्वन्दी भाई इस बात के लिए बिवाद कर रहे थे कि यह समस्त राज्य और राज्यसिंहासन हमारा नहीं है यह सब तुम्हारे ही हाथ में रहै अन्त को रामचन्द्र ने भरत को बिवाद में पराभूत कर समस्त साम्राज्य उनके हस्तगत कर आप आनन्द निर्भरचित्त हो सस्त्रीक बनवासी हुए ; वही महाभारत में दो भय्यादी इस बात के लिए कलह करने पर सन्नद्ध हुए कि जितने में सुई का अग्रभाग ढँक

जाय इतनी पृथ्वी भी बिना युद्ध के न देंगे "सूच्यग्रंनैवदास्यामि बिनायुद्धे नकेशव" परिणाम में एक भाई दूसरे पर जयलाभ कर भाई की जङ्घा में गदा घात और मस्तक पर पदाघात से बध कर भाई के राज्यसिंहासन पर आरूढ़ हो सुख में फूल अनेक तरह के यज्ञ और दान में प्रवृत्त हुए; रामायण और भारत के आचार्य कविकुल गुरु बाल्मीकि और व्यास थे पृथ्वी के और और देशों में इनके समान या इनसे बढ़ कर कवि नहीं हुए ऐसा नहीं है; यूनान देश के होमर रूम देश के वरजिल इटली के डेण्टी इङ्गलैण्ड के चासर और मिलटन अपनी २ असाधारण प्रतिभा से मनुष्य जाति का गौरव बढ़ाने में कुछ कम न थे परन्तु विचित्र कल्पना और प्रकृति का यथार्थ अनुकरण से चिरन्तन वह बाल्मीकि के समान होमर तथा मिलटन किसी अंश में नहीं बढ़ने पाए जिनकी कविता के प्रधान नायक श्री रामचन्द्र आर्य जाति के प्राण दया के अमृतसागर गाम्भीर्य और पौरुष दर्प की मानो सजीव प्रतिकृति थे प्रीति और समभाव से महा नीच जाति चाण्डाल तक को गले से लगाते थे और लङ्केश्वर से प्रबल प्रतिद्वन्दी प्रभु की भी कभी तक नहीं समझा स्वर्ण मण्डित सिंहासन और तपोवन में पर्णकुटी जिन्हें एक सी सुखकारी हुई भिन्नपूर्वा विभाजित्व अथच जिनकी बोल चाल की सुख माधुरी पर मोहित हो दण्डकारण्य की असभ्य जाति भी अपने को जिनका दास मानना चाहा धन्य श्री रामचन्द्र का अलौकिक माहात्म्य धन्य बाल्मीकि की कल्पना सरसी जिसमें ऐसे ऐसे स्वर्ण कमल प्रस्फुटित हुए॥

काल के परिवर्तन की कैसी महिमा है जो अपने साथ ही साथ मानुषी प्रकृति के परिवर्तन पर भी बहुत कुछ असर पैदा कर देती है बाल्मीकि ने जिन जिन बातों को अथगुण समझ अपनी कल्पना के प्रधान नायक रामचन्द्र में बरकाया था वेही सब व्यास के समय गुण हो गईं जिनकी कविता का मुख्य लक्ष्य यही था कि अपना मान अपना गौरव अपना प्रभुत्व जहां तक हो सके न जाने पावे भारत के हर एक प्रसङ्ग का तोड़ अन्त को इसी बात पर है इस के अनेक प्रमाण हैं कर्ण की बाण वर्षा से त्रस्त युधिष्ठिर अर्जुन को संग्राम भूमि से लौटे देख जब उनकी गाण्डीव धन्वा की निन्दा किया था उस समय अर्जुन ने युधिष्ठिर का यहां तक तिरस्कार किया कि उनके वध करने

पर उदात हो गए लक्ष्मण के आश्लेष से यह बात कितना विरुद्ध है ॥

शत्रु संहार और निज कार्य साधन निमित्त व्यास ने भारत में जो जो उपदेश दिए हैं और राजनीति की काट छांट कैसी २ दिखाई है उसे सूक्ष्म विचार के साथ देखें इस समय की राजनीति के मर्म में कुशल राजपुरुषों की अकिल चरने चली जाती होगी इसे निश्चय होता है कि प्रभुत्व और स्वार्थसाधन तथा प्रवचना पर वश भारतवर्ष उस समय कहां तक उदार भाव समवेदना आदि उत्तम गुणों से विमुख होगया था; युधिष्ठिर धर्म के अवतार और सत्यवादी प्रसिद्ध हैं पर उनकी सत्यवादिता निज कार्य साधन समय सब खुल गई "अश्वत्थामाहत: नरो वा कुञ्जरो वा" इत्यादि कितने उदाहरण हैं विस्तार भय से नहीं लिखते; महाभारत के युद्ध के उपरान्त भारत और का और ही हो गया इसी दशा के परिवर्तन के साथ ही साथ साहित्य में भी बड़ा परिवर्तन हो गया उपरान्त बौद्धों का जोर हुआ ये सब वेद और ब्राह्मणों के बड़े विरोधी थे वेद की भाषा संस्कृत थी इस लिए इन्हों ने संस्कृत को बिगाड़ प्राकृती भाषा जारी किया तब से संस्कृत सर्व साधारण के बोल चाल की भाषा न रही फिर भी संस्कृत भाषी उस समय बहुत लोग थे जिन्हों ने इस नई भाषा को प्राकृती नाम दिया जिसके अर्थ ही यह हैं कि प्राकृत अर्थात् नीचों की भाषा अतएव संस्कृत नाटकों में नीच पात्र की भाषा प्राकृती और उत्तम पात्र ब्राह्मण या राजा आदि की भाषा वही संस्कृत रक्खी गई है; कुछ काल उपरान्त यह भाषा भी बहुत उन्नति को पहुंची और सैनी महाराष्ट्री मागधी अर्द्धमागधी पैशाची आदि इसके अनेक भेद हैं इसमें भी बहुत से साहित्य के ग्रंथ बने गुणाढ्य कवि का प्राकृत आर्यावृत्त लक्ष श्लोक का ग्रंथ वृहत्कथा सरित्सागर प्राकृत ही में है सिवा इसके शालिवाहन सप्तशती आदि कई एक उत्तम उक्ति युक्ति के ग्रंथ और भी मिलते हैं नन्द और चन्द्रगुप्त के समय इस भाषा की बड़ी उन्नति की गई जैनियों के सब ग्रंथ प्राकृती ही में हैं उनके स्तोत्र पाठ आदि भी सब इसी में हैं इससे मालूम होता है कि प्राकृती किसी समय वेद की भाषा समान पवित्र समझी गई थी अब हम इस विषय को यहीं पर समाप्त करते हैं विक्रम के समय से साहित्य की समालोचना यथावकाश फिर करेंगे ॥

धूमकेतु ॥

इन दिनों संध्या समय उत्तर दिशा में एक बड़ा पुछल्लेदार तारा दिखाई देता है संस्कृत में इसे धूमकेतु कहते हैं अगले समय ऐसे २ ग्रहों का उदय युद्ध, मरगी, दुर्भिक्ष, तथा किसी राजा महाराजा के मृत्यु की सूचना देने वाला समझा जाता था ; केवल हिन्दुस्तानियों ही का ऐसा ख़याल न था बरन यूरोप आदि सभ्य देश के लोग भी इसे दैवकृत उत्पात का हेतु समझते थे ; १४५६ ई॰ में एक धूमकेतु देख कर लोग इतना घबराए कि उस समय के रोम के पोपने इसकी शान्ति निमित्त एक विशेष उपासना की आज्ञा लोगों को दी ; इस प्रकार के ग्रहों का इतना भयानक होने का कारण यह है कि यह देखने में किसी प्रकार के ज्योतिर्विद्या के नियम से नहीं बँधा हुआ मालूम पड़ता सिवा इसके इसका एकाएक निकल पड़ना, इसका असाधारण वेग, बड़ी भारी पुछल्लेदार शकल, अनियमित गति और हर एक दिशा में सूर्य की ओर दौड़ना साधारण लोगों की कौन कहे विद्वानों को भी आश्चर्य दिलाता है ॥

इसका असर अब और २ मुल्कों के लोगों के दिल पर आगे का सा तो नहीं होता परन्तु हिन्दुओं के जी से वह ख़याल अब भी नहीं गया क्योंकि ये लोग अपने को हर वक़्त ग्रहों से बड़े नैकट्य सम्बन्ध से बँधा समझते हैं और हर एक बात में शुभाशुभ परिणाम रूप ग्रहों की गति विधि दरियाफ़ किया करते हैं सन १८५८ के साल में जो एक बड़ा धूमकेतु दिखाई पड़ा था लोग उसे बलवा होने का हेतु कहते थे ऐसा हो यह तारा भी यदि कुछ दिन पहले उगता तो निश्चय है कि काबुल युद्ध का बानी समझा जाता ; खैर इस समय धूमकेतु के विषय में कुछ लिखना ज़रूर है इस लिए संप्रति इनके ख़यालात पर तर्क वितर्क करना मुनासिब नहीं समझते ; कोई २ ऐसा कहते हैं कि यह केतु वही है जो बलवे के साल दिखलाई दिया था परन्तु वास्तव में यह कहना सर्वथा निर्मूल है ; केतु की गति विधि बहुत दिनों तक मालूम न होने से लोग इसे अनियत ग्रह समझते थे लेकिन दो तीन सौ वर्ष के परिश्रम और यत्न के उपरान्त यह सप्रमाण हो चुका है कि जितने धूमकेतु दिखलाई पड़ते हैं सब की एक एक नियत कक्षा है और ठीक अपने २ नियत समय पर दिखलाई देते हैं यदि यह केतु ५८ के साल वाला होता तो पहले भी यह हर एक २२ वर्ष पर दिखलाई पड़ता जाता परन्तु तवारीख़ या किसी ज्योतिष के ग्रंथ में इसके पहले उगने का कहीं कुछ हाल नहीं लिखा मिलता इससे निश्चय होता है कि यह केतु पहले वाला नहीं है ॥

यद्यपि पहले के लोग इस प्रकार के ग्रह को अनियत गति का समझ रक्खा था पर ज्ञानी लोगों की राय तब भी

ऐसी ही थी सुप्रसिद्ध रोम देशीय पण्डित सेनेका तब भी कहते थे कि एक दिन ऐसा आवेगा जब ये सब अनियत ग्रहों का भी हाल मनुष्य अच्छी तरह समझ लेंगे तारकावली के मध्य होकर इनसबों की कक्षा का भी पता लग जायगा और ये भी और२ ग्रहों के समान Solar system सौर जगत् के एक अङ्ग समझे जांयगे; काल पाय वेई सब बातें देखने में आने लगीं; जब न्यूटन साहब ने माध्य कर्षण Attraction of gravitation का आविष्कार किया तो उन्हों ने इस माध्याकर्षण का असर धूमकेतुओं पर भी अजमाना चाहा इसी उम्मेद में थे कि १६८० ई० में एक बड़ा भारी धूमकेतु दिखलाई पड़ा यह सूर्य की कक्षा के ठीक ऊपर से लम्ब हो कर उतरा और प्रति घण्टे में १०००,००० दश लाख मील की वेग गति से सूर्य के इतना समीप पहुंच गया कि सूर्य की सतह अर्थात् धरातल केवल सूर्य के व्यासार्द्ध का दसवां हिस्सा बाकी रह गया तब वह सूर्य की प्रदक्षिणा कर पीछे हटने लगा और १००,०००,००० दस करोड़ मील का एक पुच्छा दिखलाता हुआ धीरे २ अदेख होगया; गणना करने से मालूम हुआ कि इसको फिर लौटने में ६ सौ वर्ष के लगभग लगैगा इस लिए इसका अनुसन्धान कर कुछ प्रयोजन न निकला॥

इसके उपरान्त १६८२ ई० में दूसरा एक धूमकेतु दिखलाई पड़ा इसने लोगों की आशा सफल कर दिया यह केतु अप ने आविष्कर्ता हैली साहब के नाम से विदित है हैली साहब ने बहुत परिश्रम से निश्चय किया कि यह केतु अण्डाकृति कक्षा में भ्रमण करता है और सूर्य्य से ३५००,०००,००० दूर तक जाता है इसे अपनी कक्षा पर घूमने में करीब पचहत्तर वर्ष लगता होगा इस लिए हैली साहब पुराने ज़माने के हालों को दरियाफ़ करने लगे और यहां तक कि मिथ्रेडेटीस के सम्म समय अर्थात् ईसा के जन्म के १३० वर्ष पहले तक का सब हिसाब देख डाला तो मालूम हुआ कि सन ई० २८८, ३२८ और ३९९ में बड़े भारी २ धूमकेतु दिखलाई पड़े थे इन सबों के उदयास्त में ७५ वर्ष का अन्तर देख हैली साहब को बहुत कुछ आशा हुई इन्हों ने फिर हिसाब कर देखा कि ऐसा ही एक केतु १००६ ई० में १४५६ ई० में १५३१ और फिर १६०७ ई० में दिखलाई पड़ा इन सब बातों से उक्त साहब की दिलजमई हो गई तब उन्हों ने छाती ठोंक कहा कि यह केतु अवश्य १७५८ ई० के अन्त में या १७५९ ई० के आरम्भ में फिर देख पड़ेगा। जब इसके उदय होने में २५ वर्ष बाकी रहा तब योरोप के ज्योतिर्विद लोग बड़े यत्न से इसकी गति विधि गिनने लगे परन्तु समय निकट आ जाने से उन्हें बहुत सी सूक्ष्म बातों को छोड़ देना पड़ा और क्लेअरट नामी फरासीसी पण्डित ने प्रसिद्ध कर दिया कि इस ग्रह के आने

में शनैश्वर के साथ आकर्षण के सबब उसे १०० दिन की देर लगेगी फिर बृहस्पति के साथ आकर्षण से ५१८ दिन की और देर लग जायगी अन्त को ऐसा ही हुआ १७५८ ई० को १४ नवम्बर को यह ग्रह जार्ज पैलिच साहब को दिखलाई पड़ा पूर्व निश्चित समय से केवल १९ दिन का अन्तर पड़ा सो यह भूल क्लेअरट साहब की ग्रहों की कक्षा के गिनने के सबब से न थी किन्तु यूरेनस और नेप्चून नामी दो मह्रा ग्रह जो हाल में प्रगट किए गए हैं वे तब तक नहीं प्रगट हुए थे उन्हीं दोनों की कक्षा के साथ आकर्षण से इसे १९ दिन की देर हो गई; इसके उपरान्त १८३५ ई० में जब यह केतु ७५ वर्ष बाद फिर आने पर हुआ तब बहुत से नए २ यन्त्र काम में लाए गए यहां तक कि आकाश में इसके दिखलाई पड़ने की ठीक जगह भी निश्चय कर दी गई और १८३५ ई० को ५ अगस्त को रोमान कालेज के ज्योतिर्विद्या विभाग के डइरेक्टर डिउमाउचेल साहब ने जब उस पते से दूरबीन लगाया तो देखा कि केतु आ पहुंचा गणित की सचावट से सब लोग बड़े प्रसन्न हुए इस बार भी गिनती में ९ दिन का अन्तर पड़ा इसका कारण यह था कि नेपचून ग्रह का आविष्कार तब तक नहीं हुआ था; अब निश्चय है कि ७५ वर्ष उपरान्त यह केतु जब फिर लौट कर आवेगा तब कोई भूल इसके उदयास्त के ठीक ठीक गणित में न रह जायगी; इस तरह देखिए कि जिस बात को लोग अनन्त समय से अनिश्चित मानते आते थे वह धीरे धीरे आप ही आप संपूर्ण मनुष्य की बुद्धिगोचर होती जाती है॥

इसी तरह माध्याकर्षण शक्ति की सहायता लेकर और २ धूमकेतुओं की गति बिधि का निश्चय किया गया है उनमें से एक प्रोफेसर ऐङ्की साहब के नाम से प्रसिद्ध है यह केतु बिना दूरबीन के नहीं दिखलाई पड़ता इससे आम लोग इसे नहीं जानते सन १८१८ ई० में पोन साहब इसे पहले खयाल में लाए तब बरलिन नगर के प्रसिद्ध ज्योतिषी ऐङ्की साहब ने इसकी कक्षा का ठीक निश्चय कर बतलाया कि यह केतु केवल तीन २ वर्ष में फिर २ लौट आता है इससे लोगों को केतुओं के बाबत इसकी गति और कक्षा आदि के निश्चय का बड़ा सुबीता हुआ लेकिन जब सूक्ष्म बिचार किया गया तो मालूम हुआ कि साधारण गति के सिवा इसकी एक बिशेष गति भी है अर्थात इस के घूमने का समय क्रम २ से कमती होता जाता है और इसकी कक्षा का बिस्तार भी उसी हिसाब से घटता जाता है परिणाम में जब इसकी कक्षा बहुत छोटी हो

जायगी तब यह ग्रह एक दिन सूर्य में गिर कर ध्वंस हो जायगा ॥

तीसरा केतु विला नामक है जो हाल में प्रगट किया गया है यह भी बिना दूरबीन नहीं देख पड़ता और ६ वर्ष ८ महीने में अपनी कक्षा में एक बार सूर्य के चारो ओर घूम आता है इस केतु के कारण एक समय यूरोप में बड़ा हलचल मच गया था सन १८३२ के साल में जब इसके फेरा करने का समय आया तो गणना करने से मालूम हुआ कि उस साल २९ अक्तूबर को यह ग्रह हमारी पृथ्वी की कक्षा के भीतर होकर जायगा यह बात प्रसिद्ध हुई तो लोगों ने समझा कि उस दिन धूमकेतु का पृथ्वी से टक्कर लगेगा तब जहां पर यह टकरायगी उतना हिस्सा पृथ्वी का पुरजे २ उड़ जायगा यह समझ कितने लोग फ्रान्स से अमरिका को भाग गए उपरान्त अरागो साहब ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि यद्यपि केतु पृथ्वी की कक्षा सभाय के जायगा परन्तु पृथ्वी उस समय दूसरी जगह ५ करोर मील पर रहेगी यदि यह केतु ३० दिन बाद आता तो अवश्य टक्कर लगती तब जो होना होता सो होता तो भी लोग ऐसे भविष्य टक्करों का बड़ा ख्याल रखते थे तब ओलबर्ज साहब ने इसकी बड़ी खोज किया और केतुओं की बनावट आदि सब बातों को दरियाफ़ कर सिद्ध कर दिया कि यदि कोई केतु कभी पृथ्वी से टकरावेगा भी तो सिवा ऋतु के कुछ परिवर्तन के और कुछ हानि न होगी; केतुओं की गतिविधि पढ़ लोगों को यह श्रद्धा होगी कि इनकी उत्पत्ति कहां से भई और किस कारण से इन सभों में बड़े बड़े पुच्छ लगे रहते हैं इसका विचार यहां पर थोड़ा सा किया जाता है; ज्योतिर्विदों ने केतुओं के ३ भेद लिखे हैं पहिला वह जिसमें एक उज्वल सितारा और दुम हो दूसरा वह जो और सब बातों में पहिला स[illegible] इतना फर्क है कि इसका [illegible] चश्मे के आइने के माफिक स्वच्छ transparent होता है याने जो सब सितारे इसकी आड़ में पड़ जाते हैं सो इसके भीतर हो साफ नज़र आते हैं; इसकी तीसरी किस्म वह है जिसमें कोई उजला सितारा नहीं होता केवल धुआं के गुबार सा दिखलाई पड़ता है ॥

शेषभागी ।

अग्रिम मूल्य … … …	२।/)
पश्चात् देने से … … …	४/)
एक कापी का … … …	।)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahivapur, Allahabad

3/9/81 851

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD,—1st Augt. 1881. Vol. IV.] [No. 12.

प्रयाग श्रावण शुक्ल ५ सं० १९३८ जि० ४] [संख्या १२

हमें जो कुछ करना हो आप करें।

हमें जो करना हो आप करें अपनी तरक्की के लिए गवर्नमेण्ट का मुंह ताकना भूल है ; माना कि सामयिक प्रभु बड़े उदारचित्त और सभ्य हैं पर राजनीति के इस दृढ़ नियम का क्या संयम हो सक्ता है कि "विदेशी राज्य के आधीन रह कर देशी लोगों की अपनी तरक्की की आशा केवल मन की बहुरी का चबाना है" यह उदारता और सभ्यता सब वहीं तक है जहां तक तुम लुञ्ज के लुञ्ज बने रहो पर न जमने पावे नहीं तो फिर किसकी धरे थाभे रह सकोगे ; यह जुदी बात है कि घुणाक्षर न्याय से बेजाने चाहे रोज़ के साथ बथुआ भी सिंच जाय

पर लक्ष्य उसी गौरहिं ही के सोचने का है जो कुछ अब तक हुआ वह धोखे से हो गया ; सिवा इसके बिना उतना किए काम भी तो न चल सक्ता तो उस्का एहसान हम पर किस बात का है वह तो सब अपने ही फाइदे के खयाल से किया गया किया जाता है और किया जायगा ; हम हिन्दुस्तानियों ही के निरे "कनवीनिएण्ट" आराम आशाइस और फाइदे का खयाल कब और किस बात में किया जाता है जब कभी कुछ हुआ भी है तो उस्का चौगुना हम से नाक तोड़ के भर लिया गया है एक २ बातों का पत्रा खोल गाई गीत को कौन गाए तो भी इतने ही का सरकार को धन्यबाद देते देते हमारी जीभ खियाती जाती है क्या भया जो हम राजभक्त नहीं समझे जाते ; खैर चतुर के लिए इशारा काफी होता है हम यदि किसी ढङ्ग के और समझदार होते तो इतनेही से ले उड़ते पर हम हिन्दुओं की बसड़ कौम पुराने लग्घड़ हांके २ भी कभी राह पर आने वाले नहीं जब तक पेट भर को सत्ती आधे पेट भी किसी तरह खाने को मिलता जाता है कांखते कूंखते पौनक को झोंक में खटिया तोड़ते हो जाते हैं कैसी तरक्की कैसी उन्नति सब मियां शेखचिल्ली का खयाल ; हज़ार में लाख में दो चार दस पांच कहीं २ ऐसे हुए भी हैं जिनकी पौनक जाती रही है और चाहते हैं कि हम आगे बढ़ने को कुछ करैं पर उनके समूह में अभी इतनी शक्ति न रहने से तथा कई एक और और कारणों से उन्हें अपनी उन्नति के लिए गवर्नमेण्ट का मुह ताकना ही पड़ता है पर गवर्नमेण्ट की पालिसी दिन दिन बदल कर कुछ और की ओर ही होती जाती है इसी से हम कहते हैं कि जो कुछ करना हो हम आप करैं॥

समझ की भूल।

विदेशियों की हुकूमत के तहत में रह कर देशी लोगों को अपनी भरपूर तरक्की की आशा रखना समझ की भूल है ; पुलिस को प्राणहारक यमराज का सहोदर भाई न समझ जान माल की रखवाली करने वाला महकमा समझना भूल है ; म्युनिसिपालिटी को प्राण ग्राहक न समझ सफाई आदि से शहर की रौनक देने वाली समझना भूल है ; हिन्दू मज़हब की बेहूदगी और हिन्दू समाज की भांत भांत की कैद रख मुल्क या कौम की तरक्की चाहना समझ की भूल है ; हम

आर्यों के एकान्त विरोधी मुसल्मानों को अपना भाई समझना भूल है; इस राज्य में गो बध उठ जाने की आशा से भांत२ का यत्न करना समझ की भूल है; मुसल्मानों के मुकाबिले हिन्दुओं को भी सरसब्जी हासिल होगी समझना भूल है; तालीम की झलक मात्र भी जिनमें नहीं आने पाई ऐसे ६० वर्ष के बुड्ढों को समझाय बुझाय हम अपनी राह पर लावेंगे समझना भूल है; पश्चिमोत्तर ऐसे पोच देश में रह कर हिन्दी अखबारों की तरक्की चाहना समझ की भूल है; अब तक नई रोशनी वाले इनलाइटेण्डो की जैसी चालगी देखने में आई उस्से यह समझना कि इनके ज़रिए हमारी कभी बेहतरी होगी समझना भूल है; प्रतिमा पूजन को पाप तथा इसके उठ जाने से देश की उन्नति समझना भूल है; क्योंकि इसके उठ जाने की कोशिश वैसी ही है जैसा कोई शेर के मारने का सा बड़ा आडम्बर बांध फिदुकी का शिकार करे यह भूल स्वामी दयानन्द की गांठ में बेतरह बँध रही है जिस्से देश का शोधन जो उनका मुख्य उद्देश्य है उसमें बड़ा अन्तर आ पड़ा है; बाल्य बिवाह बिन उठाए बिधवा बिवाह जारी होने में लाभ समझना भूल है; सरकार बिना हिकमत अमली काम में लाए सब काम निरे हमी लोगों के फाइदे के लिए करती है समझना भूल है; इत्यादि कितनी बाते हैं कहो गिनाते रहें पर डर लगती है कि भूल गिनाते २ जो कहीं भुलनी आदत पड़ गई तो हम एडिटरी किस माथे करेंगे जो कुछ लिखने बैठेंगे भूल जांयगे तो बस हो चुका किसी काम ही के न रहे दो कौड़ी के भी महँगे हो उठेंगे इस्से बस॥

"सर्वनाशेसमुत्पन्ने अर्द्धंत्यजतिपण्डित:"

हे कुलाभिमानी हमारे भाइयो झूठी हाड की उत्तमता के अभिमान में अन्ध; हे पेड़ा कौल कौल खाने वालो दम्भ के अवतार; हे दक्षिणा लोलुप मूर्खता को गिरों रक्खे मोटी तोंद वाले पुरोहित तथा पाधाओ; हे कमबख्ती की निशानी अकिल के कोतै तरक्की के दुश्मन बाबा आदम के वक्त के खूंत हिन्दुओं के बुड्ढे "सब जाता हो तो आधा देकर पिण्ड छुटावैं" सर्वनाशेसमुत्पन्ने अर्द्धंत्यजतिपण्डित:। यह नीति समझदारी के तराजू पर बावन तोला पाव रत्ती तुली हुई है

कहीं एक चावल का भी फरक इसमें नहीं है यह खाने पीने का परहेज़ जिसे तुम हिन्दूपन की नाक समझे बैठे हो उस्का नई रोशनी की करतूत से अब सर्व नाश होने पर आया है इस लिए उचित है कि इस्का क्रम अब कुछ ढीला कर दो नहीं तो पछताओगे फूटी सहोगे आंजी सहना तुम्हें मंजूर नहीं है बङ्ग देशियों के समान तुम्हारे सन्तान भी इस खाने पीने के परहेज़ से जो 'वास्तव में कांच है पर तुमने उसे बेशकीमत मोती समझ रक्खा है' एकबारगी हाथ धो बैठेंगे और सब के साथ खाने पीने में कभी जाति जाने का खयाल न करेंगे वह तुम्हें मञ्जूर है पर यह नहीं कि एक एक जाति वालों का सब के साथ सब को सहभोजन में किसी प्रकार का कभी किसी को कुछ उज़ुर न रहे; कैसे न रहे किसी कारण से वर्षों की जमी हुई मन की मैल ईर्षा द्रोह तथा किसी दूसरे प्रकार के चित्त के वैमनस्य का बुखार निकालने का यही तो एक मौका है कि काम पड़ने पर अपने एक छोटे भाई को कह डालें कि तुम नीच हो जाति में हेठे हो ररी हो षट् कुल में नहीं हो न तीन में न तेरह में तुम्हारे साथ हम न खांयगे हमारा धर्म जाता रहेगा; गाज पड़े ऐसे धर्म पर और ऐसी समझ में ऐसे भगोड़े धर्म को हम कब लौं बांध कर जकड़बन्द किए रहेंगे जो ज़रा ज़रा में जी छोड़ भागा जाता है; बर्फ पी लिया धर्म गया, बाज़ार की मिठाई दांत तले दाबा धर्म धूर में मिल गया, दूसरे के लोटे में पानी पी लिया भ्रष्ट हो गये; वेश्या संसर्ग दूषित हो धर्म कुन्दन सा झलकता रहेगा दासी गमन करते रहो धर्म कभी न बिगड़ेगा पुरुष मैथुन में कमालत रखते हो धर्म में कभी फर्क न पड़े बेइमानी फरेब जालसाज़ी झूठ बोलना इसमें तो धर्म का कुछ ज़िकिर ही नहीं है और दिवाला पीटना तो परम धर्म सब है ठौर से सिकुरते सिकुरते हम हिन्दुओं का धर्म केवल रसना इन्द्री में आ टिका है; बुद्धे और अशिक्षितों को तो निस्सन्देह यह हमारी बात ज़हर मालूम हुई होगी पर हम अपनी इस उक्ति को बालभाषित समझ प्रार्थना ही चाहते हैं ज़रा बुद्धि को काम में लाय सोचिए तो सही हम क्या बुरा कहते हैं सिवा दम्भ और भेद बुद्धि के सबों के सहभोजन की बाधक बर्तमान समय की यह हम लोगों की खान पान की प्रणाली में और क्या मूल है; इसमें

क्या बुराई है कि ब्राह्मण मात्र का एक सहभोजन हो जाय इसी तरह क्षत्री और वैश्य भी आपस में बेधड़क खाने पीने लगें ऐसा ही बारहो जाति कायस्थों की एक रोटी हो जाय उस्से तो यह बहुत अच्छा है कि लोग छिप छिप होटलों में पाव-रोटी और बिसकुट उड़ाते हैं बाप बड़े ओछी फूंक २ पांव रक्खें बेटा अनाचार की गठरी सिर पर लाद लें; उचित ही है जब कोई बस्तु अधिक दाब खायगी अवश्य छिटक कर अलग जा गिरेगी नव सुशिक्षितों का एकबारगी हाथ से निकल बेकाबू हो जाने से यह बहुत अच्छा है कि देश काल के अनुसार समाज से उन्हें इतनी आसाइश और स्वच्छन्दता दे दी जाय; अभी अच्छा है पहले से इस्की तदबीर कर रक्खो नहीं तो बङ्गाल मदरास और बाम्बे तुम्हारे लिए नमूना तैयार है खानपान के मामिले में उनसे बुरी दशा तुम्हारी होनहार है पर तुम्हारी कूढ़ बुद्धि में काहे को यह बात कभी धसने वाली है न मानो समयराज आप से आप सब बात तुमसे करा लेंगे; औमें आई यह आशय हमने लिख तो डाला पर कितनेजवह हिन्दुओं को बुरा लगेगा और हमारी ओर से बहुत बुरा २ खयाल उनके जीमें जमेगा अस्तु हमारा काम है कि जिसमें किसी तरह की भलाई समझ पड़े उस बात को समय समय तुम्हें चिताते रहैं मानो चाहो न मानो॥

एक नए नबी की नबूवत।

गन्धर्व नगर में एक नए नबी प्रगट हो यह नबूवत किया है जिसे हम नीचे दर्ज करते हैं॥

ये नबी साहब बन्ध्या के पेट से पैदा हो कछुई का दूध जो नायाब होता है पी कर पले थे; झुठाई का जामा और खपुष्प की माला पहिने थे; इनके ३ भुजा थी एक में बिजली की तलवार दूसरी में खरहा के सींग की ढाल और तीसरी भुजा में झाड़ू लिए थे और एक बड़ा सा बिन्दा सिर पर दिए थे निराधार बीच आकाश में खड़े हो यह नबूवत कर गए हैं॥

(नबूयत)

नवम्बर महीने के लगभग पश्चिम के एक शहर में राजाओं का एक बड़ा जमघट होगा अगलबन यह आलीशान जमघट अक्बर शाह की पुरी को पवित्र करेगा इसके बहुत से शुभाशुभ फल हैं उनमें एक बड़ा फल इस का यह है कि हिंदुस्तान के राजा तथा और छोटे मोटे रईस वित्तशाठ्य को जिस माफिक हो वैभवोन्माद प्रगट करने में कसर न रख सदा कोरे के कोरे बने रहें कभी पनपने न पावें कितने रजवाड़े दिल्ली राजसूय के ऋण से अब तक छुटकारा नहीं पा चुके थे कि एक दूसरी बला उन्हें आन घेरा चाहती है मुल्क को इस्से फाइदा ज़ोरो है जिस्की निशानी बिन्दा के रूप से हमारे सिर पर मौजूद है और जो भाड़ू है इसी बढ़नी से वह सब फाइदा बटोर लिया जायगा पहले तो हमारी नबूयत सच होगी पर पयोनियर नाही करता है कदाचित् झूठ हो इसी लिए झुठाई का जामा पहिन हम आए हैं॥

मृच्छ कटिक।

दसवां अङ्क॥

(दूसरा गर्भाङ्क)

स्थान—राजपथ।

[बसन्तसेना को साथ लिए भिक्षुक का प्रवेश]

भिक्षुक। अब मेरा संन्यास सफल हुआ बुद्धोपासिका तुझे कहां ले चलूं॥

बसन्तसेना। आर्य चारुदत्त के घर, उनके चन्द्रमुख का दर्शन कर कुई' समान मैं अपना जन्म सफल किया चाहती हूं॥

भिक्षुक (सुन कर) क्या है राजमार्ग में आज बड़ा कोलाहल हो रहा है सम्पूर्ण उज्जैयिनी एक ओर झुक रही है॥

डोम। यह पांचवां घोषणा स्थान है (घोषणा देता है)

भिक्षुक (सुनकर घबड़ाहट से) बुद्धोपासिका तुझे चारुदत्त ने मारा है इस लिए सूली देने को उन्हें लिए जाते हैं॥

बसन्तसेना। हय हय मुझ अभागिनी के कारन आर्य्य चारुदत्त मारे जाते हैं आर्य्य वहां हीं मुझे भी ले चलो॥

डोम। चारुदत्त सीधा खड़ा हो एक ही प्रहार में मैं तुझे स्वर्ग पहुंचाऊं (प्रहार किया चाहता है तलवार को मुठिया हाथ से गिरना देख) ऐं यह तलवार क्यों हाथ से गिर पड़ी इसे जानता हूं चारुदत्त न मारा जायगा हे सह्य पर्वत बासिनी भगवती प्रसन्न हो जो यह बध्य न मारा जाय तो हम डोमों के कुल पर बड़ी क्रपा हो (फिर उसे मारने का इरादा करता है)

चारुदत्त। प्रबल पुरुष शकार के कहने से या भाग्य दोष से मुझे यह झूठा कलङ्क लगा तो भी जो मुझमें सत्य धर्म हो तो वही बसन्तसेना स्वर्ग में हो या जहां हो आकर मेरा कलङ्क दूर करे॥

बसन्तसेना (जाकर और चारुदत्त को देख कर) आर्य्य आप न मरोगे २ यह मैं अभागिनी आ गई जिसके कारण आप की यह कदर्थना हो रही है॥

डोम। गले पर बाल छिटकाए नहीं नहीं पुकारती यह कौन इधर ही आ रही है॥

बसन्तसेना। प्रियबर यह क्या है (गले से लग जाती)

डोम (भय से हट कर) क्या बसन्तसेना है बहुत अच्छा हुआ जो मैंने इस साधु को न मारा जा कर यह हाल राजा पालक से कहूं (दोनों गए)

शकार। (भय से) हाय किसने इस गर्भदासी को जिलाया हा मेरे प्राण गए अब भागूं (जाता है)

दोनों डोम (फिर आकर) हम को राजा की यह आज्ञा है कि जिसने बसन्तसेना को मारा है उसे सूली दो सो अब शकार को जा कर ढूंढ़ूं (दोनों बाहर गए)

चारुदत्त। मृत्यु के मुख में मैं आ गया था शस्त्र भी मारने को निकाले गए ऐसे समय अवर्षण में सूखते धान पर जल की दृष्टि सी यह कौन आई है (देख कर) क्या यह दूसरी बसन्तसेना है या वही स्वर्ग से उतर आई है॥

बसन्तसेना। आर्य्य मैं वही पापिनी हूं उस दुष्ट शकार ने फांसी दे मार डाला था इस महात्मा ने फिर से जिलाया है॥

चारुदत्त। (देख कर) आंसुओं की धारा से स्तनों को स्नान कराती मृतस-

जीविनी विद्या सी मुझे जिलाने को तू कहां से आई; प्रिए तुह्मारे लिए यह देह सूली पर धरा गया था तुमने आकर छुड़ाया (भिक्षुक से) आर्य्य निष्कारण बन्धु आप कौन हो॥

भिक्षुक। आर्य्य मुझे आप नहीं जानते मैं आप ही का चरण सेवक हूं जुआरियों ने १० मोहर के लिए मुझे पकड़ा तब इस आर्य्या ने आप का सेवक जान सोने का खडुआ दे उन जुआरियों के हाथ से मुझे छुड़ा लिया उसी जुआ में हार की ग्लानि से मैं बौद्ध संन्यासी हो गया यह आर्य्या रथ के परिवर्तन से जीर्णोद्यान में गई थी मुझको नहीं भजती इस ईर्षा से शकार ने इसे फांसी लगा मार डाला था मैंने देख जल देकर इस्की रक्षा किया॥

(नेपथ्य में) राजा आर्य्यक की विजय हो जिसने राजा पालक को मार कर कैलाश पर्य्यन्त पृथ्वी अपने बस में कर लिया है (बाहर आ कर) मैं शर्विलक ने नीच राजा पालक को मार कर उसके राज्यासन पर आर्य्यक को राजा किया अब दुर्दशा में पड़े आर्य्य चारुदत्त को चल कर छुटाऊं (आगे देख) जहां यह भीर इकट्ठी है वहांही आर्य्य चारुदत्त होंगे (भीर को हटाता) हटो रे हटो (आगे देख) आहा बसन्तसेना सहित आर्य्य चारुदत्त जीवते हैं ईश्वर ने बड़ी कृपा की; मैंने इन्ही के घर में सेंध दी थी सो अब इनके सामने कैसे मुहँ दिखाऊं अथवा सरल चित्त हो इनसे मिलूं क्योंकि सरलता सब ठौर शोभा देती है (सामने जा कर) आर्य्य प्रणाम करता हूं॥

चारुदत्त। आप कौन हैं॥

शर्विलक। श्लोक—येनतेभवनंभित्वा न्यासापहरणंकृतम्। सोहंकृतमहापापस्त्वमेवशरणंगतः॥ जिसने आप के घर में सेंध दे बसन्तसेना के धरोहर गहनों को चुरा लाया था वही महापापी मैं आप के शरण आया हूं॥

चारुदत्त। ऐसा नहीं मित्र तुमने बड़ी अनुग्रह की (उसे गले से लगा लेता है)

शर्विलक। और भी सुनिए कुल और मर्य्यादा का पालक आर्य्यशील आर्य्यक आप के रथ पर बैठ जो पहले आप के शरण हुआ था सो आज यज्ञशाला में बैठा पालक को पशु समान मार डाला॥

चारुदत्त। क्या वही आर्य्यक जिसे राजा पालक ने अहीरों के गांव से पकड़ बुला बिना अपराध कैद में रक्खा था॥

शर्विलक। हां वही; कोई है उस पापी धूर्त शकार को पकड़ लाओ॥

(नेपथ्य में) जो आज्ञा ; आ रे राजश्यालक शकार अपने किए का फल भोग (दो राजपुरुषों से घिरा हुआ मुश्क बँधी शकार का प्रवेश)

शकार। छन्दान से छुटा गदहा सा मैं इतनी दूर भाग गया तौ भी बन्धकर कुत्ता सा पकड़ आया (सब ओर देख) सब ओर मेरे शत्रु ही शत्रु दिखाई पड़ते हैं अब अशरण मैं किसकी शरण जाऊं (सोच कर) अब इस समय शरणागत पालक उसी चारुदत्त का शरण लूं (पास जा चारुदत्त के पांव पर गिर) हे अशरण शरण रक्षा कीजिए ॥

नेपथ्य में। आर्य चारुदत्त आप इसे छोड़ दीजिए हम इसको सूली दें ॥

चारुदत्त (दया से) नहीं २ शरणागत को अभय हो ॥

शर्विलक (क्रोध से) उसे पकड़ (चारुदत्त से) आर्य्य कहिए इसका क्या किया जाय पांव में रस्सी बांध इसे डोम घिरावें या कुत्तों से चिथावें या सूली दें या यह आरा से चिराया जाय या इसको तिल तिल मास काट चीलों को लुकावें॥

चारुदत्त। क्या जो मैं कहूं वह किया जायगा ॥

शर्विलक। इसमें क्या सन्देह ॥

शकार। आर्य्य मैं आप के शरण में आया हूं रक्षा कीजिए आप अपने नाम गुण के सदृश जो उचित है वह कीजिए फिर मैं ऐसा न करूंगा ॥

नेपथ्य में। इसे जल्द सूली दो अब यह पापी किस लिए जीता है ॥

बसन्तसेना। बध्यमाला चारुदत्त के गले से उतार शकार के ऊपर फेंकती है॥

शकार। गर्भदासी प्रसन्न हो कृपा कर अब तुझे फिर न मारूंगा ॥

शर्विलक (रोक कर) ठहरो ठहरो आर्य्य चारुदत्त आज्ञा कीजिए इस पापी का क्या किया जाय ॥

चारुदत्त। जो मैं कहूं वह सच सच किया जायगा ॥

शर्विलक। हां किया जायगा ॥

चारुदत्त। जो ऐसा है तो जल्द यह·

शर्विलक। क्या मारा जाय ॥

चारुदत्त। नहीं नहीं छोड़ दिया जाय ॥

शर्विलक। किस लिए ॥

चारुदत्त। इस लिए कि अपराध कर शत्रु जो हीन दीन हो आकर शरण हो और पांव पर गिरै तो उसे शस्त्र से मारना उचित नहीं ॥

शर्विलक। तो क्या कुत्तों से खिलाया जाय॥

चारुदत्त। नहीं २ उपकार की मार से उसे मारना चाहिए इस्से इसे छोड़ दो॥

शर्विलक। जा रे जा आर्य चारुदत्त ने तुझ पर कृपा की (छुड़वा देता है)

शकार। भला जिया तो (राजपुरुषों के साथ बाहर गया)

शर्विलक। आर्य बसन्तसेने राजा आर्यक प्रसन्न हो तुझे बधू की पदवी देते हैं॥

बसन्तसेना। मैं कृतार्थ हुई॥

शर्विलक (चारुदत्त से) आर्य्य इस भिक्षुक का क्या किया जाय॥

चारुदत्त। भिक्षुक तुझे क्या इष्ट है॥

भिक्षुक। संसार की ऐसी अनित्यता देख बैराग्य में मेरा दूना आदर होगया॥

चारुदत्त। इनका यह दृढ़ निश्चय है इस लिए पृथ्वी में जितने बौद्ध मन्दिर हैं सब के अधिपति इन्हें कर दो॥

शर्विलक। जो आर्य्य की आज्ञा॥

बसन्तसेना। अब मैं जिलाई गई॥

शर्विलक। इस स्थावरक चेट का क्या किया जाय॥

चारुदत्त। यह दास्य भाव से छुटा दिया जाय; उन डोमों को सब डोमों का चौधरी कर दो: चन्दनक दुष्टों के दण्ड देने का अधिकार पावे; और उस शकार का जैसा पहिले मान था वैसाही रहे॥

शर्विलक। तथास्तु, कहिए और आप का क्या प्रिय करूं॥

चारुदत्त। इस्से भी अधिक और क्या प्रिय होगा मैं कलङ्क से छुटा, बैरी शकार आकर पांव पर गिरा, शत्रु के वंश को जड़ से उच्छेद कर आर्यक राजा पृथ्वी के पालक हुए, यह बसन्तसेना मुझे और आप सरीखे उपकारी मित्र राजा आर्यक को प्राप्त हुए, अब और क्या शेष है जिसे मांगूं तथापि यह चाहता हूं॥

(भरत वाक्य)

श्लोक॥

क्षीरिण्यः सन्तु गावो, भवतु वसुमती सर्व सम्पन्नशस्या। पर्जन्यः कालवर्षी, सकलजन मनोनन्दिनो वान्तु वाताः॥ मोदन्तां जन्म भाजः, सततमभिमता ब्राह्मणाः सन्तु सन्तः। श्रीमन्तः पान्तु पृथ्वीं प्रशमितरिपवो धर्मनिष्ठाश्च भूपाः॥

गैया दूध बहुत दें, धरती सब भांत के अन्न से पूर्ण हो, मेघ समय समय पर जल बरसैं, सबों के मन को सुखदायी वायु बहा करै, प्राणी मात्र सदा प्रसन्न रहैं आचारवान् ब्राह्मण सदा सब को इष्ट

हो कर आदर पावें, श्रीमन्त धर्मात्मा राजा शत्रुओं को जीत नीतिपूर्वक पृथ्वी का पालन करें (सब गए)

जवनिका पतन॥

(दशमांङ्कः)

इति।

निरी कानून की पाबन्दी और इन्साफ दोनों में बड़ा अन्तर है।

शहनाई का बजाना और बहुरी का चबाना दोनों एक साथ नहीं हो सक्ता चाहो कानून की बारीकी ही देख लो चाहो इनसाफ कर लो मिर्जापुर में पार साल बकरीद में गौ के लिए जो हिंदू और मुसल्मानों में झगड़ा हुआ था उसमें कोई एक हिंदू कैद हुए पर वह गौ मारने से बची रही और जिस मुसल्मान ने उसे खरीदा था उसे दिला मिली पर हुक्म हुआ कि यह मारी न जाय; इस साल उसने फिर दरखास्त दिया है कि वह गौ हमारी मिल्कीयत है इस लिए हमें इजाजत हो हम उस्की कुर्बानी करें इस पर हाल में जो वहां मेजिष्ट्रेट हैं उन्हों ने ६ हफ्ते की मोहलत दिया है कि इस अरसे में हिंदुओं से जो कुछ करते बन पड़े करें बाद इस्के जिस्की वह गौ है उसे इख्तियार है अपनी मिल्कीयत को जो चाहै सो करै अब यह मुकद्दमा हाईकोर्ट में पेश है देखें क्या होता है; वाह रे मेजिष्ट्रेट साहब का इन्साफ सौ लानत है ऐसे इन्साफ और ऐसी समझ पर; मिल्कीयत है यह कानूनी बात तो देखी गई और हजारों लाखों हिंदुओं के जी feelings को कैसा भारी सदमा पहुंचेगा यह कुछ न सोचा गया; हाईकोर्ट से भी क्या होना है क्या वहां कानून जा कर जज्जों की छाती पर न सवार होगा इन्द्रस-

खि के मुकद्दमे में तो अभी बानगी देख ली गई थी पर क्या किया जाय हम हिंदुओं को बेहया जात बार बार मुहभरे गिरते हैं फिर भी सम्हल कर उठने का मन करते हैं ॥

रहस्य कथा उपन्यास।

शहर की गन्दी बस्ती से आध मील दूर नवे सड़क हर एक ऋतु के फूल और फलों से भरा रास्ता एक बाग था जिस्में सुथरे और साफ कई एक मकान बने थे ये मकान यद्यपि हिन्दुस्तानी वज़ा के चारो ओर दीवालों से घिरे हुए थे पर बीच के कमरे बड़े लम्बे चौड़े और हवादार थे जिनके आगे दालाने ऊंचे पाटन की बहुत वसीह और सहनदार अँगनाई थी सब ओर चटकीली सुफेदी पुती हुई ऐसी चमचमा रही थी मानों ये मकान बिल्लौर के बने हुए हैं और ऐसे ढङ्ग से बनाए गए थे जिनमें रहने वालों को सब ऋतु में बाखूबी आराम मिले; इस में दक्षिण देश की एक स्त्री कुछ दिनों से आ कर टिकी थी इस्का पहिनाव सब मरहठों का सा था रङ्ग ढङ्ग पहिनाव ओढ़ाव से किसी तरह पहचान न होती थी कि यह कुंआरी है या बिवाहिता वयक्रम इस्का देखने से तेईस के ऊपर और पचीस के भीतर मालूम पड़ता था रङ्ग भी बहुत गोरा न था पर इस्के एक एक अङ्ग पर सुन्दरापा बरस रहा था बात चीत वज़ेदारी और चाल ढाल से यह किसी बड़े अमीर या राजा के घराने की जान पड़ती थी एक तो; मरहठों में परदा करने का दस्तूर आप ही नहीं है दूसरे यह अच्छी तरह सुशिक्षिता भी थी इस कारण इस देश की स्त्रियों के समान इस्को पोच और भद्दी समझ न थी इल्म ऐसी ही चीज़ है जो आदमी को खराद पर चढ़ा देता है; यह विद्युल्लता सी देदीप्यमान अपनी घन केश जालों में अलकावली की गूथन तथा विकसित पुण्डरीक नेत्रों से वर्षा और शरत् ऋतुओं का अनुकरण कर रही थी; वय: सन्धि के कारण यह बाल्य बाल भाव के पुष्ट का और समझ मानों उसे छोड़ रही है और बिना किसी के दिए भी मन्मथ के आवेश से परबश हो यौवन की बन पड़ी जो आप से आप आकर यह इस्के हस्त गत हुई; इस्की चढ़ती उमर का जोश और सुन्दरापा क्या था मानो देखने वालों

के नेत्रों के आकर्षण का अञ्जन था, मन के वशीकरण का मन्त्र था, नव यौवन युवराज के विजय का कीर्ति स्तम्भ था, ब्रह्मा के बार बार सृष्टि बनाने के अभ्यास का फल था, रूप खजाने की रखवाली के लिए सिपाही था, जिसे कामदेव ने तैनात कर रक्खा था या हर नेत्र हुताश दग्ध अनङ्ग के फिर जिलाने को सञ्जीविनी औषधी थी ; यह सुन्दरी क्या थी मानो यौवन चन्द्रोदय की चांदनी थी, रति रसामृत की महा नदी थी, कान्ति की कौमुदी थी, गरूआपन की गुरुशाला थी विनय की बीजभूमि थी, गुण की गोष्ठी थी ; इसकी भौं मानो कामदेव की कमान थी, पद्मराग मणि समान लाल और पतले होंठ, गोल ठुड्डी, ऊंचा चौड़ा माथा कुन्द की कली से दांत, सीधी और बराबर उतार चढ़ावदार नासिका, गोल कपोल, सब मिल एक अनोखी छबि और रोब उसके चेहरे से झलका रहे थे ; नाम इसका सौदामिनी था एक दिन सांझ को सात बजे की जून यह कुछ घबड़ाई सी बार बार दरवाजे तक आ फिर चली जाती थी कभी बैठी बैठी खड़ी हो टहलने लगती थी कभी घड़ी की ओर ताक यह कह उठती थी क्या कारण समय हो गया वह अब तक न आया ; थोड़ी देर ठहर सिङ्गार के कमरे में जा इसने घण्टी बजाया और तुर्त एक दासी आ खड़ी हुई यह इसी की हमउमर थी लम्बी पतली दुबली और डील डौल में बहुत सुडौल थी रङ्ग इसका काला तो था पर ऐसा काला न था जो सोहावना न मालूम पड़ता हो इसकी आंख बड़ी तीखी और होंठ पतले थे दांतों में मिस्सी की धजी और लिलार पर श्याम मच्छनी का तिलक बहुत ही भला लगता था ऊपर से बहुत कुछ भलमनसाहत की मुद्रा बनाए हुए थी पर जी की बड़ी खोटी थी नाम इसका चम्पा था ; सौदामिनी ने पूछा कह चम्पा लखनऊ की बहुत दिनों से तारीफ सुनती थी देखा ? यहां की कौन कौन बात तुझे पसन्द आई ? यह बोली राजकुमारी मैंने यहां की हर एक बातों को अभी इतना कम देखा भाला है कि अपनी ठीक ठीक राय नहीं दे सकी कि यहां क्या क्या अनोखापन है तौ भी इतना तो कह सकी हूं कि राजकुमारी सी तरहदार चतुर प्रवीण के रहने लायक यह जगह है ; सौदामिनी उसे रोक कर बोली देख इस बात को समझे रह यह अपना देश नहीं है यहां

मैं बहुत छिप कर रहा चाहती हूं इससे मेरे प्रति उस प्रकार का भाव जो घर पर तू मुझे राजकुमारी समझ रखती थी सब छोड़ दे और यहां साधारण रीति पर रहा कर; इतने में दरवाज़े पर किसी के खटखटाने का शब्द हुआ दरबान ने फाटक खोल दिया और हाथ में नए फैशन की एक दस्ती लालटेन लिए हीराचन्द भीतर चले आए॥

सौदामिनी इसे देखते ही उठ खड़ी हुई और ऐसा प्रसन्न हुई मानो कोई खोई वस्तु फिर से मिली या कहीं से कभी की गड़ी गड़ाई सम्पत्ति हाथ लगी वा शरीर से प्राण जा कर फिर लौट आए इनका हाथ पकड़ कुरसी पर बिठाय बोली; प्रियवर कुशल तो है अब मुझे कब तक आप आसरेही आसरे में रखिए गा क्या आप के शील औदार्य्य आदि गुणों की छटा में एक यह भी है कि आसरा दे पीछे से धोखा देना; न जानिए मेरे बाप के घर से आप कैसे और कब भाग आए क्या यह रुखापन भी आप की सभ्यता का एक अङ्ग है मैं तुम्हारे बिरह में व्याकुल हो देश देशान्तर छानती लौ लगाए यहां भी आई हूं अब क्या आज्ञा है; यह बोला राजकुमारी कुलीन जन निंदित यह मार्ग है जिस पर तुम चल रही हो तुम सरीखी कुलवती को यह शोभा नहीं देता; यह क्रम जिस पर तुम आरूढ़ हो रही हो इसे किस गुरु से सीखा है, या यह तुम्हारे सुशिक्षिता होने का परिणाम है, या कुलीन जनों में बड़ी प्रतिष्ठा पाने की कोई उपाय तुमने इसे सोचा है; तुम पढ़ी लिखी हो बुद्धि को काम में लाओ उत्तम कुल में पैदा हो मैं एक परदेसी तुम्हारे यहां विपत्ति का मारा जीविकावश जाकर टिका था बिना मेरा कुल शील समझे एकबारगी ऐसा साहस कर उठने से कुल में दाग लगता है; अब तुम्हारे ऊपर बाप मा भी कोई न रहा तुम स्वच्छन्द हो इससे ऐसी चाल चलो जिसमें लोकापवाद न हो; प्रियवर यह सब बात आप उसे सिखलाइए जिसे बुद्धि हो ज्ञान हो नेक और बद की पहचान हो जो आप की शिक्षा सुनने की जिज्ञासू हो बुद्धि ज्ञान विवेक मैं सब तुम्हारे कारन खो बैठी केवल आशा ही मात्र से जी रही हूं जिस दम आप ने इनकार किया उसी समय इस हतजीवन से हाथ धो बैठोंगी; हीराचन्द यह बोल उठ खड़ा हुआ मैं इससे हां नाहीं का

निश्चय अभी कुछ नहीं कह सका सोच समझ लो कुछ होगा एक अठवारे में कहूंगा इतना कह बाहर निकल आया और अपने घर की राह ली ॥

शेषआगे ॥

अं० ५ नं० ८ पृष्ठा २३ देखो

धूमकेतु ॥

गत संख्या के आगे से।

इस प्रकार के ग्रहों की उत्पत्ति भी ठीक उसी तरह से हुई है जैसे पृथिव्यादि ग्रहों की ; लेकिन इतना कहना काफी नहीं है क्योंकि वैज्ञानिक रीति से ग्रहों की उत्पत्ति का हाल बहुत कम लोगों को मालूम है इस लिए यहां पर सौर जगत् की उत्पत्ति का संक्षेप सा हाल लिखना अवश्य है ॥

(सौर जगत् Solar system)

जितने सूर्य भौम शुक्र पृथ्वी आदि ग्रह चन्द्रमा धूमकेतु उल्का meteor प्रभृति इन दिनों आकाश मार्ग में विचरण कर रहे हैं उन सबों की प्रथम अवस्था Original chaotic condition मानिन्द धूमकेतु की पुच्छ के परमाणुओं की सी थी ; अर्थात् वे सब के सब वाष्प रूप से आकाश मार्ग में स्थित रहे; माध्याकर्षण शक्ति से वे सब परमाणु अलग अलग एक एक सौरजगत् का केन्द्र नियत कर जमा होते गए और जमा होने के समय हर एक परमाणु हर एक दिशा से विभिन्न वेग के अनुसार चल कर वाष्प समूह भर में एक गति पैदा कर दी जिस्से वह वाष्प राशि मण्डलाकार बन गया ॥

जब फिर इस वाष्प मण्डल से क्रम २ गरमी बहुत सी निकल गई जिस्के कारण वे फैले हुए थे तब वेही सब परमाणु ठण्डे हो हो घनता को प्राप्त हो छोटे होने लगी और चक्र गति के नियम अनुसार (अर्थात् कोई वस्तु जो वज़न में कम न हुई हो सिकुड़ कर छोटी हो जाने पर पहले की अपेक्षा विशेष वेगवान हो जाती है) उन मण्डलाकार वाष्प राशियों की में भी अधिक अधिक वेग बढ़ने लगा अन्त को यह चक्रगति यहां तक बढ़ी कि उस मण्डल अर्थात् जो इस सौर जगत् का केन्द्र था उस्की विषुव रेखा equator पर उस्की केन्द्रापसारिणी शक्ति Centrifugal force माध्याकर्षण से भी बढ़ गई तब विषुव रेखा के निकट जो सब वाष्प रूप परमाणु थे वे केन्द्र वाले मण्डल से न्यारे हो हो उस मण्डल के चारो तरफ मानिन्द एक छल्ले ring के

बन गए फिर इस छल्ले की भी सब परमाणु एक दूसरे से मिल मिल पूर्वोक्त क्रम के अनुसार घनता को प्राप्त हो हो मण्डलाकार बन गए और बीच वाला मण्डल अर्थात् सूर्य्य जिस धरातल plane की कक्षा पर घूमता था करीब करीब उसी धरातल की कक्षा पर घूमने लगे; इसी तरह केन्द्र वाला मण्डल और घना हो छोटा पड़ा तब उसके घूमने की गति और भी बढ़ी और पहले कहे क्रम के अनुसार केन्द्रापसारिणी शक्ति माध्याकर्षण से अधिक हो एक वाष्पमय छल्ला और अलग किया उससे एक दूसरा ग्रह बना और बीच वाले मण्डल अर्थात् सूर्य्य ही की कक्षा के अनुसार वह भी घूमने लगा; इस तरह से एक एक कर सब ग्रह बनते गए जब बीच वाला मण्डल कड़ा ठोका बन गया तब नए ग्रह बनने मौकूफ हुए और वह बीच वाला कड़ा ठोका सूर्य्य कहलाया; इस क्रम के अनुसार जो अति दूरस्थ ग्रह य्रानस या नेप्चून हैं वे छल्ले के आकार बन सूर्य्य वाले मण्डल से पहले छुटे हैं और बुध या शुक्र जो सूर्य्य के बहुत निकट हैं वे छल्ले के आकार हो सब के पीछे छुटे हैं; ऐसा ही आकाश मार्ग में जितने fixedstars स्थिर तारों के नाम से प्रसिद्ध हैं वे सब एक एक सौर जगत् हैं और अपने बनने के समय वे भी ऐसा ही छल्ले छोड़ते गए हैं जो सब उन उन सौरजगतों के ग्रह हो अपने अपने सूर्य्य के साथ भ्रमण किया करते हैं इस तरह यह ब्रह्माण्ड अनन्त और असंख्य सौरजगत् से पूर्ण है॥

इस प्रकार जब ग्रह सब ठंडे हो हो ठोंके बन रहे थे उसी समय प्रागुक्त नियमानुसार ये ग्रह जो छल्ले फेंकते गए उन्ही से उनके उपग्रह अर्थात् चन्द्रमा बने; पाठकजन इसे पढ़ अचम्भित होंगे बल्कि इसे एक अमूलक कल्पना मानेंगे परन्तु बिचार कर देखो तो इस सौरजगत की बनावट से यही सिद्ध होता है कि किसी खास नियम का अनुसरण कर बने हैं; सूर्य्य अपने व्यास axis पर उसी तरफ को घूमता है जिस तरफ और और सब ग्रह अपनी अपनी कक्षाओं पर घूम रहे हैं और ये सब ग्रह समूह भी अपने अपने व्यास के उसी तरफ पलटा खाते हैं; ये सब के सब प्राय: वृत्ताकार कक्षाओं पर एक ही ओर से सूर्य्य की प्रदक्षिणा करते हैं और उन सबों की कक्षाओं का धरातल plane भी लगभग सूर्य्य की विषुव रेखा equator के धरातल से मिलता

है; ऐसा ही ग्रहों के चन्द्रमा भी सब प्राय: वृत्ताकार कक्षाओं पर अपने अपने ग्रहों की विषुव रेखा पर झुकावट रखते हुए उसी तरफ घूमते हैं॥

जिस नियम को अवलम्ब कर हमारा सौरजगत् बना है उसी का अनुसरण कर और सब सौरजगत् भी बने हैं ऐसा ही धूमकेतु भी वाष्पमय परमाणु समूह के जुट जाने से बने हैं परन्तु प्रत्येक उन में से दो वा अधिक सौरजगत् के बीच में पड़ जाने से बहुत दिनों तक प्राय: निश्चल रहे फिर जब किसी सौरजगत् का आकर्षण इन पर प्रबल पड़ा तब ये उधर को सरकने लगे इसी कारण केतु हरएक दिशा से सूर्य्य की ओर दौड़ते हैं और इतर ग्रहों के समान वे भी सूर्य्य की प्रदक्षिणा करते हैं पर उलटे हो; केतुओं के धूमाकार होने का सबब यह है कि इन के परमाणु सब अभी तक तितर बितर हो रहे हैं माध्याकर्षण की अल्पता से उन का ढौंका अभी तक नहीं बँधने पाया; इनमें माध्याकर्षण की अल्पता का कारण यह है कि जब कोई धूमकेतु सूर्य्य से दूर हो जाता है तब ठंडा हो कर किसी कदर जमने लगता है परन्तु जब वह फिर सूर्य्य के समीप आता है तब मारे उत्ताप के इसके परमाणु फिर अति सूक्ष्म और हलके हो बिखर जाते हैं ऐसा सदैव होता रहता है इससे इन केतुओं को जम कर ढौंका बनने का अवसर ही नहीं मिलता॥

अब इन केतुओं के विषय में सब से भारी प्रश्न यह है कि इस प्रकार के ग्रह की इतनी बड़ी पुच्छ कैसे बनी है न्यूयार्क के ज्योतिर्विदों ने गिन कर कहा है कि इस वर्तमान धूमकेतु का पुच्छा ५० लाख मील के लगभग की लम्बाई का है; इस के बारे में सरजान हर्सेल साहब ने बहुत कुछ सोच विचार कर कहा है कि केतुओं की पूछ केवल माध्याकर्षण की सहायता से नहीं बन सक्ती इसके लिए कोई दूसरी शक्ति भी मानना अवश्य है; वह शक्ति सूर्य में है जिस्से सूर्य केतुओं के खास किस्म के परमाणुओं को दूर फेंकता है इसे Repulsive force दूरापसारिणी शक्ति कहते हैं; जित ने धूमकेतु दिखलाई पड़ते हैं उन सबों की दुम सूर्य के उलटे तरफ लट्ठी सी सीधी दिखलाई देती है और सूर्य के गिर्द घूमने के समय दुम भी इतना घूम जाती कि इतना प्रचण्ड वेग किसी ग्रह की गति से नहीं है; १६८० ई० में जो केतु उगा

था वह सूर्य्य की प्रदक्षिणा करने के बाद केवल ५ दिन मे अपनी पूछ इतनी बढ़ा था कि हमारी पृथ्वी की कक्षा से भी बढ़ गई और उन ५ दिनों मे अपनी पूछ का १५० डिगरी का कोण बनाता हुआ घूमा, अब कहिए ऐसे असाधारण वेग का कारण सूर्य्य का आकर्षण कहा जाय या केतु के सितारे का आकर्षण समझा जाय; हर्सैल साहब सूर्य्य में ऐसी एक शक्तिमान ने के बारे में और एक युक्ति देते हैं कि केतु के सितारे से जौन सब परमाणु निकल कर पूछ के सिरे की ओर अर्थात् सूर्य्य के ठीक उलटे तरफ दौड़ते हैं उन सबों का वेग ऐसा द्रुत है कि सूर्य्य चाहो किसी वस्तु को कितनोही दूर से खीच लावे पर इतना वेग नहीं पैदा कर सक्ता इस्से साफ मालूम पड़ता है कि मध्याकर्षण के सिवा और दूसरी कोई प्रबलतर शक्ति न होने से ऐसी घटना न होती; इस शक्ति रिपल्सिव फोर्स के सहारे से वर्तमान् समय के ज्योतिर्विंदों ने अनेक नई २ बातें सिद्ध कीं; वे सब कहते हैं कि ऐनकी साहब के केतु का भ्रमण समय कम हो जाने का हेतु भी यही है कि सूर्य्य जब केतु की पुच्छ के परमाणुओं को दूर फेंकता है तब अत्यन्त वेग के कारण कितने परमाणु ऐसे दूर चले जाते हैं कि उस केतु का माध्याकर्षण फिर उन्हे नहीं समेट सक्ता इसी से वह केतु दिन २ छोटा पड़ा जाता है और डील के छोटे होने से उसके घूमने का समय भी कम होता जाता है; वे लोग यह भी कहते हैं कि वर्ष के खास २ वक्त पर जो आकाश में एक किस्म की रोशनी कभी २ दिखाई देती है वह सिर्फ केतुओं की पुच्छ के छुटे हुए परमाणु हैं; अब वर्तमान केतु का हाल यह है कि यह दक्षिण दिशा से करीब ५० लाख मील की एक पूछ लिए दौड़ रहा है उत्तमसा अन्तरीप cape of good hope और दक्षिण अमेरिका के लोगों ने इसे पहिले देखा था ब्रेजिल देश के सम्राट (धन्य हैं वह देश जहां ऐसे राजा राज्य करते हैं) सब से पहले इसकी गति विधि वेग का नियम और डील डौल का ब्यौरा खुद आप दरियाफ्त कर फ्रान्स देश की ज्योतिर्विद सभा को लिख भेजा; यह ग्रह जब पहले दिखाई पड़ा तब दूर के कारन इसकी चमक कुछ मन्द थी पर ज्यों २ समीप आया और योरोप मे भी देख पड़ने लगा तब इसकी चमक पांच गुना बढ़ गई पर अब ज्यों २ सूर्य्य के निकट पहु

घता जाता है चमक और पुच्छ का विस्तार धीरे धीरे बढ़ता जाता है यकीन है जब यह सूर्य की प्रदक्षिणा कर लौटेगा तब चमक और पूछ का विस्तार बढ़ाता हुआ दक्षिण दिशा मे फिर दिखलाई पड़ेगा।

हक कहै सो मारा जाय

हक कभी कोई न कहै हक कहने वाले को अन्त प्रतिष्ठा लियाकत सब खाक में मिल जाती है हाल में इसके दृष्टान्त मि॰ ब्राडहर्स्ट हुए हैं कहां तो उक्त साहब की यहां तक लियाकत समझी जाती थी कि दो बार हाईकोर्ट के कायम मुकाम जज हुए फिर ऐसे विश्वास के पात्र समझे गए कि पं॰ हरसहाय के मुकद्दमे मे जो एक प्रकार का कौमी झगड़ा आ पड़ा था जिस्मे जित और जेता के बीच में विवाद था उस्मे दो हिन्दुस्तानी तीसरे ये साहब पंच बदे गए सो अब कि बार जसटिस पियर्सन के रिटायर होने पर बिलकुल भुला दिए गए और एक ऐसे आदमी किए गए ये जिनकी सम्भावना इस पद पर होने की कभी न थी; माना कि इनकी योग्यता ब्राडहर्स्ट साहब से बहुत अधिक है और मुस्तकिल नहीं हुए केवल चन्दरोज के लिए कायम मुकाम थे पर जब तक पं॰ हरसहाय का मुकद्दमा नहीं हुआ था उस्के पूर्व इनकी योग्यता किस कन्दरा में छिपी हुई थी जो तब तक काम में न लाई गई फिर एक नहीं दो दो बार हाईकोर्ट की जजी का पद खाली हुआ और दोनो दफे और २ लोग हुए ब्राडहर्स्ट बेचारे हक करने के अपराध में बंधुआ हो मुहताकतेही रह गए; धन्यवाद है होम गवर्नमेंट को जिसने न्याय को इतना आदर दिया कि मि॰ ब्राडहर्स्ट के हक में हक किया और जिस हक करने के पीछे ये मारे जाते थे उसी हक ने इन्हे बचा लिया; और अब ये हाईकोर्ट के मुस्तकिल जज हो गए सच पूछिए तो यह तकर्रुरी बहुतही अच्छी हुई और गवर्नमेंट को बड़ी भारी बदनामी से बचा रक्खा नहीं तो आयन्दा से काहे को कोई हम लोगों के लिए काम पड़ने पर न्याय करने का मन करता; अब उन दो हिन्दुस्तानियों में जो पंच थे जिनकी तरक्की इसी सबब से रुक रही है और मौका पड़ने पर भी बरका दिए गए हम आशा करते हैं उनके लिए भी ऐसाही न्याय किया जायगा और छिपिछिपक

लोगों के मुकाबिले में उनकी खुशामद में न आकर कौमी हमदर्दी और जोश कायम रखने का उनका महापराध क्षमा किया जायगा।

बे दखली और इजाफा लगान।

इलाहाबाद के ज़िले में इस साल इस किस्म के मुकद्दमे बहुत दायर हुए हैं विशेष कर उन इलाकों में जो गैरवारिस होने वा कोर्ट आफवार्डस के सबब सरकार के हाथ में हैं इस्से भी अधिक उन इलाकों मे जो सरकार ने ठीकेदारों को सौंप दिए हैं ठीकेदार क्या हैं साक्षात् यमदूत हैं जहां उनके हाथ में कोई इलाका आया दूना तिगुना करने की फिक्र मे हुए जैसे कोए डांगर बैल या भैसों की मांस नोच २ खाते हैं वैसेही ये ठीकेदार और जमीदार असामियों की मांस नोच २ खाते हैं जब कानूनही ऐसी आज्ञा देता है तो ये क्यों चूकें अन्धा चाहै दो आंख जब देखा असामी से एक कौड़ी नही वसूल होती और खेत खराब है जबरदस्ती उस्से जोताते हैं जिसे देखा यह मक़दूर वाला है मेहनत और खर्च कर खेतों को दुरुस्त किया है और अब कुछ उपज बढ़ चली है उस पर बे दखली लगा दी वा इजाफा लगान का दावा लगा दिया गरीब किसान जो कचहरी के नाम से डरते हैं साहब सूबा का स्वरूप देख कांपते हैं उन पर बे दखली का इत्तिला नामा लेकर सरकारी चपरासी पहुंचा मानो प्रलय का सामान बंध गया क्या औरत क्या मर्द क्या लड़के सब भय भीत हो जाते हैं खाना पीना छोड़ देते हैं प्राणी प्राणी के जी पर ऐसी बिकलता छा जाती है कि उनकी व्यथा वही जानते हैं वा परात्पर नियामक सर्वज्ञ प्रभु जानता होगा जिसने उन्हे मनुष्य जाति में पैदा कर भी सारी स्वतंत्रता ज़मीदारों के अन्याय रूप कारागार मे बन्द होने दिया; उस समय उनके अश्रुपात से पृथ्वी को भी ज्वर चढ़ आता है उनके मुख से यही आर्तनाद निकलता है कि हा जगदीश्वर जिस भूमि को हमने दस ग्यारह वर्ष तक सजाया घूरों की दुर्गन्ध करती सड़ी गली खाद और पांस अपने सिर से ढो ढो खेत को बलिष्ट किया ऊंचे टीलों को खोद नीचा किया गढ़ों को ठिकरों को चुन २ फेंका पानी की तीखी धार से कहीं पर खेतों को बचाया कहीं पानी लाके सूखी भूमि को ओदी किया जिस्से

पीछे जेठ की कड़ी धूप सावन की बसांत और माघ पूस के जाड़े को कुछ न समझा जिसे हमने इष्ट देव कुलदेव से भी बढ़ कर माना जिसको न्योछावर किये महीनों पहले ठाकुर को घर बैठे दे आए सो हमारे प्यारे खेत पूरे १२ वर्ष होने के कारण छूटे जातेहैं; हे कानून के कर्त्ता श्री तुम हमारे दुःख को क्या जानो जब से जन्म लिया आनन्द से समय बिताया जहां खस की टट्टी पंखा की हवा फिटिन की सवारी हरदम मौजूद है वहां हमारी गरीबी की सुध कहां; क्या यह धरती जमीदारों के पुरखों की गढ़ी हुई है? जङ्गलों के वृक्ष क्या इन्ही के खोदाए हैं? पानी इन्हे के मन्त्रा से क्या बरसता है? जङ्गलों के वृक्ष क्या इन्ही के जमाए हुए हैं? सरकार ने मनुष्य विक्रय लौंडी गुलाम का व्यौहार बन्द कर दिया पर इन अन्यायी जमीदारों के अनीति जाल में फंसे हुए हम सबो को विविधि दुर्गति भोगते देख क्यों कुछ उपाय नहीं करती? जिस गांव के जमीदार मुसलमान हैं वहांकी विपत का हाल तो कुछ पूछनाही नहीं गांव के चौकीदार नाम मात्र को सरकारी चौकीदार कहलाते हैं परकाम धन्धा सब जमीदारोंही का किया करते हैं रात को उन्ही के घर की रखवाली करते उन्ही के भरोसे जिसका चाहा खेत उजाड़ लिया किसी ने कुछ कहा तो धमकाते हैं ठाकुर के पास ले चलेंगे तो तुम्हारी एक गत न बाकी रहेगी; प्रायः चौकीदार पासी होते हैं चोरी चिकारी जिनकी बपौती विद्या है जमीदारों के सहाड़े से बे धड़क शिकार किया करते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं जमीदार साहब के नौकर चाकर या कोई दूसरे लवाहिक जिनसे ठाकुर का कुछ भी सम्बन्ध है, रावण के पूतही समान तपते हैं और गरीब किसानो पर जो जुल्म करते हैं उसको लिखते लेखिनी भी लजाती है मानो अङ्गरेजी कानूनों की गन्ध भी इनके पास नहीं पहुंची अब भी सदा नवाबी ही इनके यहां राज कर रही है; उद्दण्ड प्रतापवती सरकार जो सदा प्रजा पीड़ा के दमन की भरपूर रुचि रखती है न जानिए क्यों इस ओर से बेफिक्र हो शिथिल और मन्दादर हो रही है।

प्रेरित पत्र ।

महाराज दरभङ्गा की सूचना
और हिन्दी ग्रंथ प्रणेता ।

श्री युत सम्पादक महाशय

परोपकार समझ के निम्न लिखित आशय को प्रकाशित कीजिये ।

श्री मन्महाराजाधिराज दरभङ्गा धीश के विज्ञापनानुसार मैंने भी एक छोटा सा काव्य अनेक छन्दों में रचा जिसमें समय प्रभु के राज्य प्रबन्ध के सद्गुण और भारतीय जनों की शिक्षा संबंधी आशय संक्षेप रूप से निविष्ट किए गए हैं कई एक ऐसे सत्पुरुषों को परीक्षा की भांति दिखाया जो स्वजातीय और विजातीय सभ्यता और विवेक से सम्पन्न थे सभों की यही सम्मति ठहरी कि वास्तव में यह ग्रंथ मनोरञ्जन और लाभ दायक है अवश्य महाराज को पसन्द होगा भेज दो वहां से लौट आने पर छपवाइयेगा ; उन सत्पुरुषों के परामर्श को उचित जान कर ग्रंथ सम्बन्धी एक प्रार्थना पत्र और उस सार्टीफिकट की नकल जो डइरेकटर केमसन साहब से कई ग्रंथ रचनाओं के मध्ये मुझे प्राप्त हो चुका था ग्रंथ के साथही भेज दिया २० जनवरी को डाकखाने में रजिस्टरी हुई और २२ जनवरी को उक्त ग्रंथ दरभङ्गा में पहुंचा क्योंकि जो रसीद दरभङ्गा के डाकखाने से मेरे पास आई उसमें वह तारीख मुद्रित है तदनन्तर इतस्ततः और मित्रों के द्वारा महाराजा के गुण गणों की प्रशंसा और विद्या की रुचि बहुत कुछ सुनी गई परन्तु मेरे ग्रंथ पहुंचने की रसीद और प्रार्थनापत्र का उत्तर जब स्वप्न में भी न प्राप्त हुआ तो मैंने एक चिट्ठी टूटी फूटी संस्कृत में लिखी और उसमें जहां तक बन पड़ा श्री सरस्वती जी की बहुत खुशामद की और उन्हे लालच भी दिखाया कि मुझ गरीब की सिफारश जो कर दोगी तो तुम्हें बड़ा पुण्य होगा और संसार में फिर प्रकाश पावोगी ; फिर हम को क्या मालूम कि वह हमारा पत्र महाराज तक पहुंचा वा बीचही में कालवश हो गया जो महाराज तक पहुंचता तो सरस्वती जी अपनी सामर्थ्य भर अवश्य कहतीं सुनतीं और समझातीं वह बिदेह जी का देश किसी काल में रहा हो पर साम्प्रतिक नरेश के प्रभाव से पग पग पर चैतन्यता प्रकाश कर रही है ।

कारण यह जान पड़ता है कि कदाचित् वह ग्रंथ और तद्विषयक पत्र महा-

राज तक नहीं पहुंचे क्योंकि जो रसीद रजिस्टरी के द्वारा वहां से आई है उस पर ग्रंथ ग्राहक ने ऐसे हस्ताक्षर किए हैं कि वे किसी से पढ़े नही जाते इसी कारण वह रसीद पोष्टमाष्टर जेनरल की दफ्तर में भेजी गई है वह संस्कृत पत्र सज्जनों के अवलोकनार्थ नीचे लिखा जाता है।

श्लोक।

श्रीराजेन्द्रकुलाम्भोजरविर्विजयतेतराम्। स्वजातिदेशजड़ता ध्वान्तनाशनतत्पर: ॥ १ ॥ चितीश्वरगुणै: शुभ्रैरेक एव विराजते। देशोपकार कार्येषु दाक्षिण्येषु दयासुच ॥ २ ॥ सम्यक् नकाशते काशी यद्विश्लेषाश्रुधारिणी। सूरयस्तेसु शोभन्ते साम्प्रतं यस्य संसदि ॥ ३ ॥ साक्षाद्रमापतेरंशादवतीर्णोमहीपतिः। समुद्यतोहि तत्कर्तुं भाषया सुरभाषया ॥ ४ ॥ सर्वत्र यद्गुणान् वक्ति शोभनान् कीर्ति देवता। वायुमण्डलमारुह्य चन्द्रिकाम्बर भूषिता ॥ ५ ॥ राष्ट्र देवालये तीर्थे शैले ग्रामे सरित्तटे। सर्व्वे शृण्वन्ति तद्गाथां कर्णरन्ध्रसुखावहां ॥ ६ ॥ यशसा पूरितो लोकः शोका जग्मू रसातलं। नव्यभोजन्टपंज्ञात्वा मोदन्ते गुणलोलुपा: ॥ ७ ॥ श्री सरस्वति भद्रं ते भविष्यति भविष्यति। कृपया कुरुमे दौत्यं पुण्ये सदसि भूपते: ॥ ८ ॥ राजकार्य निमग्नानां श्रीमतां सूक्ष्म दर्शिनाम्। नियोक्तुं क: समर्थोन्यस्त्वा मृतेसुर सुन्दरि ॥ ९ ॥ प्राप्नोमि परतन्त्रत्वा न्नावकाशंयथेप्सितं। दूरस्थस्य च मे वाणि दुर्लभं भूप दर्शनम् ॥ १० ॥ नृपाज्ञापत्र ला भाय न्यायतश्चार्थं सिद्धये। नृणां प्रयत्न शून्यानां त्वमेव परमागतिः ॥ ११ ॥ उदेष्यतिरविर्नूनमिति जानाति पङ्कजः। नविनाद्दर्शनाद्भानो र्विकाशमुपगच्छति ॥ १२ ॥ सिद्धिं लप्स्ये ध्रुवमिति वेत्यनुष्ठान तत्परः। किन्त्विष्टाप्तिं

विनातस्य नक्ष्यति सुख प्रभा ॥ १३ ॥ आशापाश निवद्धानां नृणां तद्गतचेतसां । जितेन्द्रियाणां धीराणामपि धैर्य्यं सुदुस्सहम् १४ पुनस्त्वां प्रार्थयेदेवि सदारक्षनरेश्वरं । षड्वर्गेभ्योऽविभागेभ्य: समयस्य विशेषत: ॥ १५ ॥ तस्मै प्रज्ञां सुखं देहि बलमारोग्यमायुषम् । सुतं वंश धरं धीरं प्रजा पालन तत्परम् ॥ १६ ॥ गङ्गा यमुनयोर्मध्ये त्वङ्गुप्तेति जन श्रुतिः। तद्यत्नाद्चिरेणैव प्राकाश्यमुपयास्यसि ॥ १७ ॥ नूनं लक्ष्मीश्वरो वीरो मूर्खतामपनेष्यति । भारते दरभङ्गाख्या दुःख भङ्गा भविष्यति ॥ १८ ॥

इत्यलम् ।

इस पत्र के पीछे कई पत्र अङ्गरेज़ी में भेजे गये पर आज तक किसी का उत्तर नहीं आया देखें साहब पोस्टमास्टर जनरल उस पुस्तक गृहीता का नाम कबतक बतलाते हैं कि जिसने महाराज की तरफ से दस्तखत किये ; हम महाराज और उनके समस्त प्रकृतिगण के बारम्बार धन्यवादी होते जो हमारे ग्रन्थही को लौटा देते क्योंकि 'भोजने यत्र संदेह: धनाशा तत्र को हशी' जहां जवाब मिलना दुर्लभ हो रहा है वहां और प्रकार के लाभ की कौन कहै पर कुछ आश्चर्य नहीं कि हमारी दीनता और नम्रता पर कृपादृष्टि करके अवश्य हमारे कार्य का निबटेरा कर देंगे दूर तक हमको भ्रमित न होने देंगे ।

रामप्रसाद तिवारी
बादशाहीमण्डी
इलाहाबाद ।

सूचना ।

अग्रिम मूल्य	२।)
पश्चात् देने से	४।)
एक कापी का	।)

National Library, Calcutta-27.

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

Laminated in Laboratory Division
on 19.7.76
By -
Sree- Nani Gopal Dey
,, Sadhan Ch. Deb
,, Ram Ch. Das